# Оттуда. Тюремные хроники

*Наталия Верхова*

## Оглавление

2017 ..... 15
-1. Арестовали. 4.11.2017 ..... 15
0. Ходыкин. 8.11.2017 ..... 15
2. Бытовуха. 30.11.2017 ..... 16
1. Начало. 30.11.2017 ..... 16
Открытый поединок Президента с Системой. 30.11.2017 ..... 17
Радости и огорчения. 1.12.2017 ..... 17
Воскресные будни. 2.12.2017 ..... 18
Социальный контракт. 3.12.2017 ..... 18
Часы. 4.12.2017 ..... 19
Часы – решение. *5.12.2017* ..... 19
Социальная адаптация. 6.12.2017 ..... 20
Зеркало. 7.12.2017 ..... 20
"Образование". 7.12.2017 ..... 21
Болезнь и общество. *8.12.2017* ..... 21
Шахматы. 9.12.2017 ..... 21
Воспоминания о суде. 9.12.2017 ..... 21
Узбечка. 10.12.2017 ..... 25
Брат и сестра. Тюремные истории ..... 25
Ангар. Тюремные истории. 11.12.2017 ..... 25
Пакет. 14.12.2017 ..... 26
Лыжня. 15 .12.2017 ..... 26
День рождения. 16.12.2017 ..... 27
Старик и девушка. 17.12.2017 ..... 27
Свидания, передачи и магазин. 18.12.2017 ..... 27
Бабушка. 20.12.2017 ..... 28
Кто и почему разрушил кооператив «Семейный капитал» . 21.12.2017 ..... 28
Отцы и дети. Не дают позвонить отцу. 22.12.2017 ..... 29
Начала учить узбекский. 24.12.2017 ..... 29

Воровство. Тюремные истории. 26.12.2017 ..... 30
Кто и почему разрушил кооператив «Семейный капитал». 25.12.2017 ..... 30
Розенбаум. 27.12.2017 ..... 31
Врач. 27.12.2017 ..... 31
Новый год. 29.12.2017 ..... 32
2018 ..... 32
Женщины. 03.01.2018 ..... 32
Заявка в библиотеку. 03.01.2018 ..... 32
НаркоперА. 08.01.2018 ..... 33
Чувство справедливости. 09.01.2018 ..... 33
Люди! 09.01.2018 ..... 33
«Семейный капитал»: мираж или факт природы? 10.01.2018 ..... 34
Уголовка. 13.01.2018 ..... 40
Понты. 16.01.2018 ..... 40
Курение. 17.01.2018 ..... 40
Блокада. Следователь два месяца отказывает в телефонном звонке отцу-блокаднику. 18.01.2018 ..... 40
Новости Древней Греции. 22.01.2018 ..... 41
Суд о продлении заключения. 24.01.2018 ..... 42
Тюремные прогулки. 25.01.2018 ..... 44
Тюремные истории, мать-одиночка. 27.01.2018 ..... 45
Зачем закон человеку, которого посадили. 28.01.2018 ..... 45
Тюремные истории. Про любовь. 29.01.2018 ..... 45
Тюремные хроники. Настроение. 30.01.2018 ..... 46
Оттуда. Сложности. 31.01.2018 ..... 46
Власть — обязанность вести свой народ к лучшей жизни. 01.02.2018 ..... 46
Шах и мат. 02.02.2018 ..... 47
Суть обвинения. 06.02.2018 ..... 47
Счастье дышать. 08.02.2018 ..... 48
О чём не напишет Наталия. Друзей пост. 09.02.2018 ..... 48
Этап. 10.02.2018 ..... 48
Сто дней. Тюремные хроники. 11.02.2018 ..... 48
Обращение в Минюст. 13.02.2018 ..... 49
Страшные тайны следствия. 14.02.2018 ..... 51
Письма из СИЗО. 15.02.2018 ..... 51

Турфирмы и ст. 159 УК РФ. 16.02.2018 ..... 52
Слово о пайщике ..... 53
Плюсы и минусы кооператива «Семейный капитал». 18.02.2018 ..... 54
Тюремные хроники. Мотивация. 19.02.2018 ..... 55
Тюремные хроники. Толпа бездельников. 20.02.2018 ..... 55
Театр абсурда. 22.02.2018 ..... 55
Подушка. 23.02.2018 ..... 56
Законы. 23.02.2018 ..... 56
Карма. 25.02.2018 ..... 57
Анекдот про блоху и 159 статья. 26.02.2018 ..... 57
Дыхание врагов. 27.02.2018 ..... 58
Гимнастика для глаз. 28.02.2018 ..... 58
Планы. 01.03.2018 ..... 58
Сергей Азимов. 02.03.2018 ..... 59
Версия. 03.03.2018 ..... 59
Женская тюрьма — реалии. 04.03.2018 ..... 60
Не бывает действия без последствий. 05.03.2018 ..... 62
Аграрный. Дело за малым. 06.03.2018 ..... 62
Им можно предоставить интеллектуальную свободу, потому что интеллекта у них нет. 07.03.2018 ..... 63
Заблуждение, свойственное всем нам. 08.03.2018 ..... 63
Система. 09.03.2018 ..... 63
СИЗО. Пять вопросов прокурору. 10.03.2018 ..... 63
Следователь и статья 29 Конституции РФ. 11.03.2018 ..... 65
История и современная цензура. 12.03.2018 ..... 65
Тюремный словарь. 13.03.2018 ..... 66
Испанка. 14.03.2018 ..... 67
В мире животных. 15.03.2018 ..... 67
Если приходится всё начинать сначала. 16.03.2018 ..... 68
Вечная история. 17.03.2018 ..... 68
Запреты и логика. 18.03.2018 ..... 68
Арестовали 500 р. 18.03.2018 ..... 69
Народная мудрость. 20.03.2018 ..... 69
Детдомовка. 22.03.2018 ..... 69
Обращение И. Н. Белоусова к пайщикам, март 2018. 22.03.2018 ..... 70

Системные ошибки: конверты. 23.03.2018 ....70
Запретить заключение в СИЗО людей, не судимых ранее и физически не опасных обществу. 25.03.2018....71
Всё уладить. 24.03.2018 ....72
Тюремный огород. 26.03.2018 ....72
Радости жизни. 28.03.2018 ....72
Председатель правления. 30.03.2018....73
Следователю 4 отдела Д.Д. Карчаве на №3/187800663809 от 26.02.2018 ....74
Истеричка. 01.04.2018 ....75
Золотой песок. 03.04.2018 ....76
Душ. 04.04.2018 ....77
Око государево. 04.04.2018 ....77
Несостоявшийся звонок. 05.04.2018....77
Развод и девичья фамилия. 06.04.2018....78
Пирамиды и фараоны. 08.04.2018 ....78
Давление на свидетелей. 09.04.2018....80
Секреты домушников. 10.04.2018....80
Молния. 12.04.2018 ....81
Планирование. 14.04.2018....81
Тюрьма и возраст. 15.04.2018 ....83
Чёрно-белое кино. 16.04.2018....83
Большая разница. 17.04.2018....83
Ученье — свет. 18.04.2018 ....85
Перед рассветом. 19.04.2018 ....85
Хурма запрещена. 20.04.2018 ....86
Рассвет. 21.04.2018....86
Путешествие из Петербурга в Москву :) 22.04.2018 ....87
Как пайщикам КПК защитить себя от произвола чиновников ЦБ. 23.04.2018....88
Высшая мера. 26.04.2018....88
В Москве всё иначе. 25.04.2018 ....88
Скорая помощь. 27.04.2018....89
Светское государство. 28.04.2018 ....89
Детская болезнь. 30.04.2018 ....89
Полгода. 02.05.2018 ....89
Бордюр и поребрик. 03.05.2018....90

Эпидемия. 04.05.2018 ....90
Расписание. 05.05.2018 ....90
«Нападение» . 06.05.2018 ....91
Развилка. 07.05.2018 ....91
Крепкий сон. 08.05.2018 ....91
День Свободы. 09.05.2018 ....91
Точка Выбора. 10.05.2018 ....91
Не ходите, дети, в камеры гулять. 11.05.2018 ....92
Чётки. 12.05.2018 ....92
Бешеные нарды. 13.05.2018 ....92
СМИ писали… 14.05.2018 ....92
Двенадцатая заповедь. 15.05.2018 ....93
Несвобода. 16.05.2018 ....93
Око близорукое. 17.05.2018 ....94
Тюремные истории. Показатели. 18.05.2018 ....94
Новая метла. 19.05.2018 ....94
Библиотекарь. 20.05.2018 ....95
Ивашка. 21.05.2018 ....95
Загадка. 22.05.2018 ....95
Московское долголетие. 23.05.2018 ....96
Истинный полдень. 24.05.2018 ....96
Адвокаты. 25.05.2018 ....97
Мать Тереза. 26.05.2018 ....100
Сговор. 27.05.2018 ....100
Жалоба в Конституционный суд 22.04.2018 ....101
Весенние мелодии. 29.05.2018 ....102
Корысть. 30.05.2018 ....103
Государство. 31.05.2018 ....103
Судейский интеллект. 01.06.2018 ....104
Девочки и пальчики. 02.06.2018 ....105
Иллюзорный мир. 03.06.2018 ....105
Жизнь после. 04.06.2018 ....106
Самоцветы по-русски. 05.06.2018 ....107
Музыка понятий. 06.06.2018 ....107
Моральная сила. 08.06.2018 ....108

Тюрьма. Краткое содержание. 09.06.2018 ..... 108
Энцефалит против наркотиков. 10.06.2018 ..... 110
Связи. 11.06.2018 ..... 111
Концерт. 12.06.2018 ..... 111
Одиночка. 13.06.2018 ..... 111
Мышцы и органы. 14.06.2018 ..... 112
Тюремное питание. 15.06.2018 ..... 112
Две столицы. 16.06.2018 ..... 113
Наблюдение. 17.06.2018 ..... 116
Невозможные тюремные мечты. 18.06.2018 ..... 116
Этика и психология тюремной жизни. 19.06.2018 ..... 117
Вешать или вязать. 20.06.2018 ..... 117
Волки в законе. 21.06.2018 ..... 118
Криминальное чтиво. 22.06.2018 ..... 118
Легально и нелегально. 23.06.2018 ..... 118
Их разыскала милиция. 24.06.2018 ..... 119
Собачник.fm. 26.06.2018 ..... 119
Свободная пресса. 27.06.2018 ..... 119
Кирпичный снег или Ода Кирпичу. 28.06.2018 ..... 120
Тюремный быт. 29.06.2018 ..... 120
Мексиканочки. 30.06.2018 ..... 121
Цепочка. 02.07.2018 ..... 121
Братский шмон. 03.07.2018 ..... 121
Я не унываю. 04.07.2018 ..... 122
Сотрудники СИЗО или Вечные узники. 05.07.2018 ..... 122
Драгоценности. 06.07.2018 ..... 122
Дневничок — начало. 11.07.2018 ..... 122
Дневничок. Непрогулка. 12.07.2018 ..... 123
Что делать. 13.07.2018 ..... 123
Дневничок. Повязка. 16.07.2018 ..... 123
Дневничок. Сантехник. 17.07.2018 ..... 123
Амнистия или… 18.07.2018 ..... 123
Дневничок. Практика — критерий истины. 19.07.2018 ..... 124
Обвинение как форма отрицания Конституции. 20.07.2018 ..... 124
Дневничок. Пятница. 21.07.2018 ..... 125

Пересчет. Пытки антиздравым смыслом. 23.07.2018 ....125
Дневничок. Торжество юридической практики. 24.07.2018 ....125
Сказка про улыбку. 25.07.2018 ....125
Дневничок. Тлен и барахло. 26.07.2018 ....126
Оптина пустынь. 27.07.2018....126
Дневничок. Суббота. 30.07.2018 ....127
Сожаление. 31.07.2018....127
Дневничок. ОБЖД. 01.08.2018....128
Революция. 02.08.2018....128
Фольклор. 03.08.2018....128
Дневничок. Полиморфность бытия. 04.08.2018 ....129
Дневничок. Сказ про белого бычка. 06.08.2018 ....129
Дневничок. День в рисунках. 07.08.2018 ....129
Рывок. 09.08.2018 ....130
Тюремный фольклор. Стихи о прокуратуре. 11.08.2018 ....130
Судный день. Везучие будни обвиняемой девушки. 14.08.2018....131
Футбол. 18.08.2018 ....132
Холостые обороты. 22.08.2018 ....133
Сколько меня будут держать в СИЗО — зависит от желания Генеральной прокуратуры и уровня беспредела. 23.08.2018....134
Фотомодель. 27.08.2018 ....134
Хищения, мошенничество и Пенсионный фонд. 29.08.2018 ....135
Состязательность процесса. 31.08.2018 ....136
Бревно. 02.09.2018 ....136
Квартирники. 04.09.2018....137
Следственное наплевательство и судебный пофигизм. 06.09.2018 ....138
Судебная небайка. 08.09.2018....139
Здравый смысл и свежий взгляд. 12.09.2018....139
1 сентября. 13.09.2018 ....140
Форсайт. 16.09.2018 ....140
Непечатный орган. 17.09.2018 ....141
Ещё одна небайка. 19.09.2018....141
Дневничок. Клеточки и полосочки. 20.09.2018 ....141
Манифест. 21.09.2018 ....141
Хуруджи респект! 25.09.2018 ....142

Дневничок. Серенький не тот. 27.09.2018 ..... 142
Шпаги и пистолеты. 30.09.2018 ..... 142
Законы Мёрфи. 04.10.2018 ..... 143
Крайние меры — голодовка. Письмо Игоря Белоусова. 03.10.2018 ..... 144
Жалоба в Конституционный суд от 11.09.2018 ..... 144
Тюремные истории. Защита клиента или статья для юристов. 07.10.2018 ..... 146
Планы по направлениям. 08.10.2018 ..... 146
Дневничок. Зелень. 09.10.2018 ..... 148
Честь и достоинство. 10.10.2018 ..... 148
Тюремные истории. Работяга. 14.10.2018 ..... 148
Люблинский суд ответил на моё заявление. 14.10.2018 ..... 149
Регламент оформления и содержания томов уголовного дела. 20.10.2018 ..... 149
Перегрызть пуповину или роды по-ФСИНовски. 23.10.2018 ..... 149
Апелляция на решение Люблинского суда. 23.10.2018 ..... 150
Пресса за правду. 24.10.2018 ..... 150
Вши и тараканы в уголовно-процессуальном производстве. 25.10.2018 ..... 151
Четвёртая власть. 26.10.2018 ..... 151
Дело о нормативах. 27.10.2018 ..... 154
Решение по незаконным арестам. 27.10.2018 ..... 154
Дневничок. Видит око, да мозг неймёт. 27.10.2018 ..... 155
Умирать бесполезно. 31.10.2018 ..... 156
Пять томов. 01.11.2018 ..... 156
Мелочи. 02.11.2018 ..... 156
Дико. 03.11.2018 ..... 156
Боулинг. 04.11.2018 ..... 157
Дневничок. Сотрудники СИЗО. 05.11.2018 ..... 157
Квартирный вопрос не только портит, но и сажает. 06.11.2018 ..... 158
Полной жизнью. 07.11.2018 ..... 159
Дневничок. «Теннисный» мячик. 08.11.2018 ..... 159
Директор. 09.11.2018 ..... 159
Рутина. 10.11.2018 ..... 160
Пайщики Семейного капитала требуют спасти жизнь Игоря Белоусова и справедливого расследования. 12.11.2018 ..... 160
Путь к счастью. 12.11.2018 ..... 160
Банковская риторика. Печать разума ЦБ. 12.11.2018 ..... 161

Тюремные истории. Куда пристроить наркотики. 14.11.2018 ..... 161
Дневничок. Котогенератор. 15.11.2018 ..... 162
Отсутствие в доступе законов. 15.11.2018 ..... 162
Выделение дела. 15.11.2018 ..... 162
Навыки общения с Конституционным судом. 19.11.2018 ..... 162
Уголовный кодекс РФ разрешает пытки тех, кто не признал вину. 20.11.2018 ..... 163
Ходатайство о проверке профессиональной пригодности. 20.11.2018 ..... 163
Розенбаум. 22.11.2018 ..... 164
Розенбауму Александру Яковлевичу. 13.09.2018 ..... 164
Главная сила Искателя Истины. 24.11.2018 ..... 165
Письмо в институт питания. 25.11.2018 ..... 165
Главному редактору «Российской газеты» о статье «Тюрьма просит добавки» - 1.09.2018 ..... 166
Правительство РФ, прошу рассмотреть Постановление правительства №205 — 02.09.2018 ..... 168
Какими нормативными документами регламентируется работа конвоя? 27.11.2018 ..... 169
Людоеды и каннибалы. 27.11.2018 ..... 169
В газету «Ведомости» для Ирины Четвериковой о статье «Кого не надо сажать в СИЗО». 29.11.2018 ..... 169
Заявление о нарушении допуска адвокатов в СИЗО Москвы. 01.12.2018 ..... 171
Жалоба в Генпрокуратуру на неоказание медицинской помощи в СИЗО-5 СПб. 02.12.2018 ..... 171
Дневничок. Про дочку. 04.12.2018 ..... 172
Письмо В.И.Матвиенко. 05.12.2018 ..... 172
Помощь зала. 05.12.2018 ..... 176
Дневничок. Метод употребления резинок для волос в СИЗО. 07.12.2018 ..... 178
Весёлая продлёнка или околосудебная жизнь. 08.12.2018 ..... 178
Легализованные пытки или как выжить по дороге в суд. 08.12.2018 ..... 179
Сто четвёртая тогда и сейчас. 10.12.2018 ..... 180
Милицейская волна. 11.12.2018 ..... 180
Бить или не бить. 12.12.2018 ..... 180
Переписка с Конституционным судом. 14.12.2018 ..... 181
Добро пожаловать или посторонним вход запрещён. 16.12.2018 ..... 181
Чернильница. 17.12.2018 ..... 181
Экспертизы по уголовному делу. 18.12.2018 ..... 182
Дневничок 4 кв.м. 19.12.2018 ..... 182
Защита от дурака. Как писать законы. 20.12.2018 ..... 182
Дневничок. Споры. 21.12.2018 ..... 183

Дневничок. Воробей. 22.12.2018 ....183
Прокурорщина. 23.12.2018 ....183
Равноправие сторон. 23.12.2018 ....184
Дневничок. Розетка. 25.12.2018 ....184
Анонс. 26.12.2018 ....184
Где в квартире спрятать ценности. 27.12.2018 ....185
Кооператив «Семейный капитал» — бывшее вероятное будущее России. Или кто кому на что наступил и где перешёл. 28.12.2018 ....185
Дневничок. Хлеб. 29.12.2018 ....186
Рука власти. Как быстро раскрыть преступление. 30.12.2018 ....186
Дневничок. Песни. 31.12.2018 ....186
2019 ....187
Дневничок. Генерал. 01.01.2019 ....187
Живой труп. 02.01.2019 ....187
Дневничок. Проститутка. 04.01.2019 ....187
Взятка. 05.01.2019 ....187
Книги-2. 06.01.2019 ....188
Расщепление пространственно-временного континуума. 07.01.2019 ....188
Иностранные слова. 08.01.2019 ....189
Дневничок. Тайм-менеджмент. 09.01.2019 ....189
Модель поведения. 10.01.2019 ....189
Дневничок. Лампочки. 11.01.2019 ....190
Некорректный характер. 12.01.2019 ....190
Дневничок. Ритуалы. 14.01.2019 ....190
Правила для обвиняемых изменили. Минюст «жжот». 15.01.2019 ....190
Аналитика слухов. 15.01.2019 ....191
Капуста в СИЗО. Тюремные хроники. 17.01.2019 ....191
Дневничок. Речёвки. 18.01.2019 ....192
Дневничок. Темно. 18.01.2019 ....192
Состав преступления. 19.01.2019 ....192
Дневничок. Азу. 20.01.2019 ....193
Судебная защита. 21.01.2019 ....193
Квази и Кайнозой. 23.01.2019 ....194
Крокодил или путь в один конец. 24.01.2019 ....194
Сбалансированное питание на 72 руб. в день. Кисель жизни. 24.01.2019 ....195

Питание-2. 25.01.2019 ....196
Дневничок. В жизни всегда есть место тюрьме :) 26.01.2019 ....196
Павел Крашенинников. 27.01.2019 ....196
Цыганская группа или методы заполнения СИЗО. 29.01.2019 ....198
Старые песни. 30.01.2019 ....198
Электрик. 31.01.2019 ....199
Национальная идея России. 01.02.2019, Главное, Статьи и аналитика ....200
Ремарка. 03.02.2019 ....201
Чему не учат в школе, но учат в тюрьме. 04.02.2019 ....201
Небайка. Не тот приговор. 07.02.2019 ....202
Личные данные. 09.02.2019 ....202
Нетюремная история. Магазин-ловушка. 11.02.2019 ....203
Подвалы Мосгора. 13.02.2019 ....203
Комитет против пыток. 14.02.2019 ....204
Книги-3. 17.02.2019 ....204
СИЗО и зона — два фокуса нелогичности. 17.02.2019, Главное ....205
Надежда. 22.02.2019 ....205
Волокита от СД под прокурорским соусом. 26.02.2019 ....206
Убийца поневоле. 06.03.2019 ....207
Любимый город. 06.03.2019 ....207
Дисциплинарка. 10.03.2019 ....207
Небайка про медиков. 12.03.2019 ....208
Словарные неожиданности. 14.03.2019 ....208
Тюрьма и воля. Обмен опытом. 17.03.2019 ....209
Страшный сон. 19.03.2019 ....209
Адвокатский барьер. 20.03.2019 ....210
Необратимость. 22.03.2019 ....210
Скорая не поможет. 24.03.2019 ....211
Спасибо алкоголикам. 26.03.2019 ....212
Наводчик. 28.03.201 ....212
Дневничок. Борщ. 31.03.2019 ....212
Следствие и предметы. «Ейной мордой в харю тыкать». 01.04.2019 ....212
Цифровые технологии в МВД. Мартышка и очки. 03.04.2019 ....213
Прикосновение к чуду. 05.04.2019 ....213
Незнание и наказание. 07.04.201 ....213

СИЗО как мера пресечения. 08.04.2019....214
Посылки счастья. 08.04.2019....214
Отзывы и дополнения. 09.04.2019....215
Форма поддержки. 11.04.2019....215
Флэшка. 13.04.2019....215
Нищета и воровство. 14.04.201....216
Ответственность Центробанка. 17.04.2019....217
Правоохранительная система и ФСИН. Парадоксы и решения. 18.04.2019....217
Дневничок. Логика ФСИН.....220
Дневничок. Тайный пароль. 20.04.2019....220
Пиджак. 21.04.201....220
Следственная веранда. 24.04.2019....221
Недосмотр Патриарха. 25.04.2019....221
Комиксы для органов. 27.04.2019....222
Арбитраж для СИЗО. 29.04.2019....222
Пасха. 30.04.2019....223
Клетка правосудия. 01.05.2019....223
Дневничок. Вселенная мячиков. 02.05.2019....224
Российская система наказаний в литературе. 03.05.2019....225
Законный свет. 04.05.2019....225
Таблетки судьбы. 05.05.2019....225
Обзор 2. Тюремные истории. Избранное. 06.05.2019....225
СИЗО и великая русская литература. 07.05.2019....227
Круизы по-фсиновски. 10.05.2019....227
Дневничок. Возврат. 11.05.2019....228
Пенсия. Если вам дороги рассудок и жизнь… 12.05.2019....228
Манёвр Бастрыкина ведёт в СИЗО? 13.05.2019....229
Жёлтые ответы следователя. 14.05.2019....230
“Попрать закон с суровой рожей — маневр, на следствие похожий”. 14.05.2019....232
Дневничок. Подслушано: конвоиры. 16.05.2019....233
Книги как звуки. 18.05.2019....234
Кого защищает прокуратура. 20.05.2019....234
Обвинительное заключение. Вот и сказочке конец. 21.05.2019....235
Тюремная переписка. 22.05.2019....236
Особый порядок — взгляд из-за решётки, часть 1. 23.05.2019....237

Малыши за решёткой. 24.05.2019....238
Первый блин или суд без обвиняемых. 25.05.2019....239
Особый порядок — взгляд из-за решётки, часть 2. 26.05.2019....241
Уголовное дело “Семейного капитала”. Обзор-3.26.05.2019....243
Дневничок. Цветная пропаганда. 28.05.2019....245
Оценка блога. 29.05.2019....246
Суррогатное материнство в трактовке уголовного кодекса. 29.05.2019....246
Дневничок. Как не умереть на шконке. 31.05.2019....246
Почта России. 02.06.2019....246
Формула тюрьмы. 04.06.2019....247
Особый порядок — взгляд из-за решётки. Часть 3. 06.06.2019....248
Дневничок. Брови. 08.06.2019....249
Тайная кнопка журналистов. 09.06.2019....250
Разбойники. 14.06.2019....250
Чатлане и пацаки. Это наша страна. 15.06.2019....250
Для кого прямая линия президента. 16.06.2019....252
Суд идёт, а мы сидим. 17.06.2019....252
Арсеналка — профилактика туберкулёза. Гиппократ против погон. 18.06.2019....253
Как раскрыть преступление за пять минут. 19.06.2019....253
Тэги. 19.06.2019....254
Банковский АУЕ. 20.06.2019....257
Дневничок. Тюремный аскетизм. 21.06.2019....259
Тюремный глянец. 22.06.2019....259
Аксиома. 23.06.2019....260
Аргамак. Что мы думаем про небо. 24.06.2019....261
Дневничок. СИЗО на страже морали. 25.06.2019....262
Хранители планеты. 27.06.2019....262
Инструменты пыток, доступные судьям. 28.06.2019....263
Глухонемая переписка. 29.06.2019....264
Революция правосудия. 01.07.2019....265
Судебная небайка. Отношения обвиняемых. 02.07.2019....266
Тэг #суды. 02.07.2019....267
Модный приговор в СИЗО. 03.07.2019....267
Системник на крови. 04.07.2019....267
Дневничок. СИЗО. Советы врача. 05.07.2019....268

Небайка. Что курил Пушкин. 07.07.2019 ....268
Смертельный арест. 08.07.2019 ....268
Дважды снятые трусы унижением не считаются. 09.07.2019 ....269
Дневничок. Свободное время. 10.07.2019....270
Что мы можем, когда ничего не можем. 11.07.2019 ....270
Берлинское СИЗО. Почувствуйте разницу. 13.07.2019....271
Тайны конвоек в судах. 14.07.2019....274
Широко закрытые глаза как подтверждение шизофрении. 16.07.2019 ....274
Как забеременеть в СИЗО. 17.07.2019....275
Газлайтинг от СИЗО. Велкам. 20.07.2019....275
Тюремная сказка на ночь. 22.07.2019 ....276
Зубы на полку. 25.07.2019 ....276
Потерянные герои. 27.07.2019....276
Фантастика из СИЗО. 28.07.2019 ....277
Вопросы без ответов. Наркотики. 31.07.2019....278
Дневничок. Размышления. 29.07.2019....278
Подгоревшая вода. 01.08.2019....279
The usual end. 03.08.2019....282
Вести из СИЗО. 05.08.2019 ....283
Дневничок. Дорогие гости. 07.08.2019....283
Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР). 09.08.2019 ....283
Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР) — часть 2. 11.08.2019....284
Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР) — часть 3. 13.08.2019....286
Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР) — часть 4. 15.08.2019....289
Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР) — часть 5. 15.08.2019....289
Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР) — часть 6. Окончание. 19.08.2019 ....291
Почта России — удивительная организация… 29.08.2019....292

# 2017

## -1. Арестовали. 4.11.2017

*#оттуда*

Сбылись страхи друзей и исполнились мечтания недругов. Арестовали. Обвинение потрясающе безграмотное, выглядит чушью даже для непрофессионала. Короче, взяли чужое обвинение и вставили мою фамилию. Получилось очень смешно при всей серьезности ситуации.

Но сейчас не об этом.

В каждом положении есть плюсы и минусы.

Из минусов, пожалуй, только … навязанная компания.

Плюсы тоже есть:

1.Кормят. Абсолютно бесплатно.

2.Нет неожиданностей. Никто не ворвётся в дверь. Безопасность на уровне. Охраняют от всего.

3.Не надо заботиться ни о будильнике, ни о вовремя поданной еде.

4.Никто (за исключением тех, о ком сказано в минусе) не отвлекает от работы. Книжка, ручка, тетрадка – твори, учись сам и просвещай других.

5.Физподготовка. Всё на что не хватало времени в текучке, теперь доступно.

6.Дольше сидишь – больше результатов.

Плюсов еще много, но об этом в следующий раз. Пишите письма. Пока всё.

Берегите себя.

## 0. Ходыкин. 8.11.2017

На что может пойти человек ради спасения собственной жизни? На всё – в границах своей порядочности.

Откровенно сфабрикованная липа в отношении меня требовала хотя бы оговора кем-нибудь. Арестовали четверых: Белоусова, его жену, его сына и финансового директора Группы компаний «Семейный капитал» - Ходыкина Д.Б.

Жизнь в СИЗО и так не сахар. Давление было страшным. Предлагали свалить всё на Верхову и разойтись.

Сломался Ходыкин. У него 4 стадия рака. На свободу он мог вообще живым не попасть. Несмотря на все справки. Теперь он на домашнем аресте и может проходить лечение.

Хотите знать – как это было в 37 году? Как умные и порядочные люди обвиняли друзей в шпионаже в пользу Англии и Германии? Теперь я знаю как. Легко и просто. Глядя в глаза.

Верхова с 2011 г. Руководила КПК, а чтобы обмануть пайщиков и вывести активы – организовала НПО. И неважно, что нет ни одного документа подтверждающего это. Теперь у следствия есть «показания очевидца преступления». Верхову можно закрыть. Очередной «успех» в расследовании. А Ходыкин… Это его жизнь и его выбор, не могу винить его. Человек готов на всё, ради спасения жизни. В границах своей порядочности.

Берегите себя.

*#оттуда*

## 2. Бытовуха. 30.11.2017

*#оттуда #тюремные записки*

Через пару дней стало доставать, что кроссовки без шнурков. Ну не положено, что уж тут. А физкультура необходима. Босиком холодно и грязно. Задачка: как сделать шнурки в камере, в которой нет ничего. Совсем. Кроме еды три раза в день. Эту задачку я решила. Шнурки получились на загляденье. Причем с первой попытки я накосячила - получились слишком длинные. Так не смогла порвать!! )) Хоть вешайся, хоть души кого-нибудь. Секрет рассказывать не буду, чтобы сохранить возможность для следующего поколения изобретательных узников.

Отмечу, что ни бельё, ни одежду - не использовала для этого. Главное в шнурках - не забывать вынимать на ночь из кроссовок и прятать от утреннего шмона. Спрятать в камере с голыми стенами? Вообще не вопрос! :)))

Вообще, мне кажется, что Система совершила ошибку, дав мне возможность обрести тюремный опыт - чувствую небывалое развитие креативности! :)))

А это еще только начало.

Продолжение следует.

## 1. Начало. 30.11.2017

*#оттуда #тюремныеХроники*

Пока допросы, пока поездка в больничку - обследование, справки. В ИВС приехали в 2 часа ночи. И еще два часа стояли в очереди на лестнице, чтобы сдаться. Ха-ха. В первую ночь одеяла мне не досталось, куртку отобрали. Завернулась в простыню и почувствовала себя памятником. Холодным мраморным памятником, медленно переходящим в ледяную скульптуру.

Здание тюрьмы - уникальное. Построено в начале XIX века как тюрьма. Метровой толщины стены, толстые железные двери с глазками и засовами. Изысканная планировка и дизайнерский потолок не без чувства юмора. Минимализм, достойный восхищения. Раздражают ли решётки на окнах? Вовсе нет. Прикольно - не более. У нас в куче офисов решётки на окнах, не слышала о депрессиях по этому поводу.

Продолжение следует.

## **Открытый поединок Президента с Системой.** 30.11.2017

*#sk #уголовноедело*

Произошло событие, который не каждый выделил в череде новостей. Путин призвал ужесточить наказание за привлечение к уголовной ответственности заведомо невиновных (https://og.ru/economics/2017/10/30/92419).

Есть ли шансы что-то изменить? Есть, но только при выполнении нескольких условий:

1. Призыв должен быть искренним. Как это проверить напишу чуть ниже.

2. Система должна быть готова к глобальным кадровым перестановкам. Судя по новостям и просачивающимся слухам о перераспределении власти - это есть.

3. Должны быть очевидные случаи привлечения заведомо невиновных, на базе которых можно устроить громкие разборки и запустить процесс оздоровления системы.

А вот к этому условию написан пост. Вот он - совершено очевидный случай на блюдечке. Обвинение в неисполнении договоров и похищении денег и документы свидетельствующие о вымышленности обвинения.

Посмотрите сами. Вот обвинение с определёнными календарным рамками "преступления", а вот заключение профильной организации, проводившей проверку: на срок окончания преступления" неисполненные обязательства отсутствуют. Вторая часть обвинения. Тоже с календарным рамками. И тоже документ, по которому до 31.12.2017 нет и не может быть не исполненных обязательств. http://freeverhova.ru/docs/

А теперь возвращаемся к первому условию. Вот и проверка искренности призыва: если не будет реакции даже на очевидные случаи, значит мы наблюдаем очевидные "придворные игры".

Делайте Ваши ставки!

Максимально распространяйте информацию. Всего 1000 репостов, и появится шанс изменений в масштабе страны.

Репостите, размещайте на своих сайтах и форумах, сгружайте знакомым и незнакомым журналистам. Шанс есть. Шансище!

## **Радости и огорчения.** 1.12.2017

#оттуда, #тюремныеХроники

Огорчилась серьёзно один раз — когда на третий день закончился стержень в ручке. Практически трагедия. Но… очередная благодарность бойцам охраны — выручили.

Не могу не отметить бойцов охраны. Внимательны и, не побоюсь этого слова, заботливы. И это не синдром заложника. Уважаю их. Когда часа в три ночи, окончательно замёрзнув, стукнула в дверь, меня вежливо спросили: «Что случилось?» А на мою просьбу — налить кипяточку — лишь

уточнили, в курсе ли я, что отбой :)) Кипятку налили, попила согревающего и счастливо уснула до завтрака. Много ли человеку надо для счастья? :)

## **Воскресные будни.** 2.12.2017

*#оттуда #тюремныеХроники*

Делать нечего особо. Книжек нет. Зато добрые люди дали листов А4. Ничего. Чукча не читатель, чукча писатель. :))

От обеда до ужина всего 3 часа. Очень удобно для тренировки. Вообще можно представить себя в монашеской келье с обетом невыхода. или в хижине в горах, заметённой снегом. И… полный пансион! Сколько бомжей мечтают о такой участи! :)))

В выходные очень тихо. Осталась на этаже одна, поэтому перевели в другую камеру — этажом ниже. Так и хочется сказать: «Все разъехались на выходные». :))

Третью ночь встретила вооруженная двумя одеялами. Но и погода не сдавалась. Вступила в договор с чуть тёплыми батареями и обеспечила в камере температуру на грани пара изо рта. Градусов 13-14, не более. В неподвижном состоянии организм напрочь отказывался функционировать. Теперь я физиологически знаю — что такое «кровь стынет в жилах».

Завернулась в оба одеяла и трудолюбиво ходила по камере, мрачно размышляя о генерале Карбышеве. Потом мысли перешли на древних славян и состязание тысячи полотенец. Для этого поединка не требовалось ни сила, ни мастерства владения оружием, только уверенность в своей правоте. Поединщики, по пояс обнажённые, вставали на берегу моря под ледяным ветром. Полотенца мочили в море и оборачивали вокруг голого торса. Кто своим телом высушивал больше полотенец, тот и признавался правым.

И сразу настигли вопросы: «Стоит ли правда „Семейного капитала“ борьбы за неё? Стоит ли жалеть о попытке изменить страну к лучшему, если попытка не удалась?» Вспомнился Сергей Лукьяненко: «Если моя честь зависит от силы врага, вправе ли я называть её своей честью?»

Холод ушёл. Ровное тепло растекалось по телу. Всё не зря. ничего не зря. Всё будет хорошо и правильно. Я выиграю и этот поединок.

## **Социальный контракт.** 3.12.2017

*#оттуда #тюремныеХроники*

Люди ходят на работу без права отлучиться с рабочего места, зарабатывают себе на еду. Большинство живёт от зарплаты до зарплаты. Работа — дом, работа — дом. Жизнь за решёткой не сильно отличается. Нормальная удобная постель. Еда бесплатная, без сбоев. Да, никуда не уйти, но ведь и работать не заставляют.

Что-то не так с этой системой наказаний. Дома престарелых, больницы, армия — куча мест, иногда гораздо более неприятных для пребывания. Да, имеет место пытка холодом, но… так сложилось. Издеваются в данном случае не люди, а сама система. Почему не используют заключенных на благо обществу? Я именно про тех, кто в СИЗО. Ведь это не одна сотня тысяч относительно здоровых людей. А такие как я, сами приходящие на арест, и бежать никуда не

собираются, поскольку — нормальные законопослушные граждане. На свободе я бы хоть налоги платила. А здесь — какой с меня толк? Очередная нагрузка на общество.

На пятый день в одиночной камере поняла, что мне вполне комфортно без людей. И вполне достаточно заглядывающих людей в погонах. И необходимость телесного контакта полностью закрывается утренними досмотрами и обысками. :)))

Продолжение следует.

## **Часы.** 4.12.2017

*#оттуда, #тюремныеХроники*

На шестой день в камере-одиночке всерьёз озадачилась изобретением часов. На первый взгляд - задача нерешаемая. Но меня в детстве учили, что нерешаемых задач нет. Про солнце забудьте - я в Питере. :))

Итак, что есть под рукой: авторучка, карандаш, вода, одноразовые стаканчики, одноразовые ложки, мои чудесные самопальные шнурки. Ну в общем всё. Ещё гладкие ровные стены и лампочка под потолком.

Задачка решилась на удивление быстро. Жаль, часов не было - измерить скорость моей гениальности. :)) Быстро собрала необходимую конструкцию и с нетерпением стала ждать завтрака, чтобы начать разметку временной шкалы.

Ответ будет опубликован завтра, а пока наслаждайтесь изобретением часов! :))

Продолжение следует.

## **Часы – решение.** ***5.12.2017***

*#оттуда #тюремныеХроники*

Итак, берём четыре стаканчика, четыре ложки и авторучку. :) Начинаем делать часы. :))) Помните, был такой мультик "80 дней вокруг света". Там мистер Фогг говорил Паспарту, что надо взять. Вот. Напомнило.

Ложку в стаканчик, и так четыре раза. Дно верхнего стаканчика оказывается на уровне края нижнего. В дне каждого стаканчика, кроме нижнего, авторучкой протыкиваем дырочку. Завтрак в 8 - делаем нижнюю отметку, наливаем воду в верхний стакан. В обед смотрим уровень воды - ставим вторую отметку. Вуаля!

Имея эти часы, можно собрать и "минутную стрелку". :))) Собираем вторую такую конструкцию, но дырочки делаем больше. Вода протекает быстрее - вот и минуты.

Погрешность, конечно, есть. Ведь даже охрана тут без часов. Приходится ориентироваться только на время завтрак-обед-ужин: 8 - 13 - 18. Но с каждым днём часы будут всё точнее. Улыбаемся и машем. :)

Продолжение следует.

## **Социальная адаптация.** 6.12.2017

*#оттуда #тюремныеХроники*

Несмотря на решение суда с указанием места содержания под стражей, содержат меня-таки в другом месте. Спросила у сотрудников ИВС — как известить близких о моем местонахождении. Ответ замечателен: «Мы этим не занимаемся». Как будто у меня тут большой выбор — кого озадачить. :))

Но мои близкие и сами не промах. Вечером принесли передачу. Впервые за шесть дней причесалась. :)) Термобельё и носки — супер ценнно. Усилием воли разделась — отмылась под раковиной. Надела чистое и тёплое. Сидела счастливая на кровати, чувствуя как уходит тревоживший последние пару дней ледяной ком из груди. Изматывающий кашель тоже притих, оценивая изменившуюся ситуацию. А ещё через полчаса стёкла в окне запотели. Всё. Согрелась! Буду жить дальше. Уже ночью прикинула, что обкуренное следствие даже столь длительное нахождение моё в одиночке использует как аргумент для заключения: социально не адаптирована. :) Смеялась так, что чуть с кровати не свалилась. :)))

Берегите себя. :)

Ноябрь 2017

## **Зеркало.** 7.12.2017

*#оттуда #тюремныеХроники*

Зачем людям зеркало? Ответ не так прост, как кажется. Кружок умелые ручки получил сегодня задание от шила в заднице на изготовление зеркала. В исходниках, как обычно, ничего. Но когда это нас останавливало? :)

Восьмой день. Камера-одиночка. Полы помыты. Утренняя тренировка отработана. Несколько совсем примитивных задумок на сегодня ждут своего часа. Не скучно. :)

Итак, зачем человеку себя видеть?

1. Рациональное. Познавательно-прикладные цели: Чтобы потом опознать себя на фотографии, нарисовать что-то на лице /макияж/, медицинские потребности.

2. Одиночество. В зеркале мы видим известного и достаточно безопасного человека. Что успокаивает и вселяет уверенность. Понятно, что это вариант для разной степени ипохондриков.

3. Зеркало нужно нам для налаживания связи с внешним миром. Оно помогает нам увидеть себя глазами других людей. А зачем нам мнение других людей? :) Вопрос для отдельного разговора.

Берегите себя.

:)

Продолжение следует.

## "Образование". 7.12.2017

*#оттуда #тюремныеХроники*

Тюремное образование продвигается с каждым днём. :)) Я знаю теперь кучу разновидностей наркотиков, как их употреблять, как готовить. Из каких лекарств что можно сделать. Знаю, как искать и делать закладки. Про кучу специальных слов даже распространяться не буду. :)))

Это всё, конечно, интересно и развивает, но... неправильно это. Тюремные университеты должны быть другие.

Вообще тюрьма очень похожа на армию. Режим, дисциплина, куча милых маразмов типа - нижний ряд кроватей заправляется одеялом кверху, верхний ряд - простыней кверху. Есть смены караула, которые на поверке требуют цитировать ПВР /правила внутреннего распорядка/. Ну как Устав в армии. :)) Сержантские наезды в полный рост по поводу и без повода. Бывает очень смешно. Потому что столько анекдотов вспоминается сразу, а весёлое настроение арестанта не каждый конвой может вынести. :) Деревянные табуретки, прибитые к полу. :)))

Не унывайте! :)

Продолжение следует.

## Болезнь и общество. *8.12.2017*

*#оттуда #тюремныеХроники*

Знаю, что болезни связаны с мировоззрением. Всегда было интересно — какие дефекты характера заставляют болеть спидом. У нас в камере есть ВИЧ-инфицированная, так что получить ответ на этот вопрос представился.

Что скажу. Иммунитет — это налаженное взаимодействие нападающих и защитных вирусов. Вирусы — условное слово. Так вот когда человек не устанавливает связи с обществом, когда он отрицает само существование общества людей, то иммунная система разрушается. Примерно так.

Берегите себя.

Ноябрь 2017. Продолжение следует.

## Шахматы. 9.12.2017

*#оттуда #тюремныЗаписки*

Сегодня дошли руки до любимого занятия узников всех времён и народов: поделки из мякиша. Решили сделать шахматы. Предыдущие поколения уже расчертили на столе доску, дело за фигурками. Взяли мякиш, размочили в миске, добавили соли для крепкости. И… закипела работа. На редкость уродливые изделия получились :)) Ничего, время есть — научимся. :)

## Воспоминания о суде. 9.12.2017

*#оттуда #УголовноеДело*

Всё было на 200% решено заранее, но потребовалась пара дней, чтобы боль от непонятной надежды на правосудие утихла.

В общей сложности провела в суде 11 часов. Не стоит и говорить, что поить и кормить в этот день меня никто и не собирался. Но это мелочи. Суть мероприятия была интересной только с одной точки зрения: как именно судья создаст видимость соблюдения закона при всех его нарушениях? Теперь обо всём по порядку.

Ходатайство следствия об избрании меры пресечения поступило в суд на 40 минут позже назначенного времени суда и на 2 (два) часа позже обозначенного законом срока. Что поделаешь — стряпали-с. :))) Но «суд не считает это существенным нарушением сроков, установленных ч.3 ст. 108 УПК РФ.» Ха-ха. Что тут существенного — поступило же. А закон — ерунда.

Идём дальше. В суде было много по-настоящему забавных моментов. Для тех, кто понимает. Поскольку суд рассматривал обоснованность подозрения следствия в мой адрес, пройдусь по обвинению.

Следак совершенно не стеснялся — при мне взял обвинение Белоусова и вставил туда мою фамилию. Однако, суд этого абсурда предпочел не заметить. Оказывается, ещё с 15.02.2011 я, не будучи, кстати, еще знакома с Белоусовым, уже по предварительному сговору убедила целую толпу в необходимости вступления в КПК. Факт очень интересный — с какой стороны ни смотреть. Я никогда не являлась не только сотрудником, но и даже пайщиком КПК. Хорошо, допустим, граждане покажут, что я их убедила туда вступить. Моих фото в сети много, укажут именно на меня. Ладно. Про ст. 303 УК РФ напишу отдельно. :)

Но мне-то какая разница, что они вступят? Вступят и ладно — будут пайщиками, это совсем не уголовное преступление. Читаем дальше: сотрудники КПК, действуя по моей (!!!) указке, оформили с пайщиками договора. Тут целый букет замечательных сведений.

1. У сотрудников в должностных инструкциях прописано — договора оформлять, для этого ничья указка не требуется. Да и оформление договоров — не преступление.

2. С чего бы это вдруг сотрудники стали слушать человека из улицы? У следствия нет на это ответов, как нет и соответствующих вопросов к этим сотрудникам.

Дальше. Договора оформили, деньги в кассу получили и… очередной шедевр: договора не исполнялись, средства не вернули, то есть похитили. Потрясающая логика. Такое впечатление, что следствие что-то курит. Всем четвертым отделом ГСУ МВД по СПб.

1. Договора не со мной, и даже не с Белоусовым, а с КПК, с чего вдруг какие-то личные обязательства возникают? Кстати, ни одного «неисполненного договора» в деле нет.

2. Следствие располагает документом — актом проверки СРО «Микрофинанс» [см. http://freeverhova.ru/docs/], в котором четко обозначен вывод: на 31.12.2015 у КПК «Семейный капитал» НЕТ неисполненных обязательств. Так что вообще сам факт не исполнения договоров подтасован. Надо ли говорить, что акта проверки СРО в деле нет.

3. Внесенные в кассу организации деньги не так легко похитить. Но на этом фокусе следствие даже не заморачивается.

Читаем обвинение дальше. Следующая часть Марлезонского балета. Период преступления.

С 9.07.14 по 20.07.17 Верхова на Садовой, 92, продолжила действовать. Удивительно, но в деле есть протокол о моём избраннии председателем правления КПНО «Семейный капитал» от 15.06.15. То есть год до этого опять используется версия «человека с улицы». И дальше повторяется чушь про оформление договоров, неисполнение обязательств и т.д. Понятно, что все голословно, без единого подтверждающего документа. Обратите внимание на адрес преступления, вернусь к этому позже.

Умиляет формулировка: денег по договорам не вернули, то есть похитили. Просто класс! Во-первых, договора не со мной, чего бы это я лично чего-то не вернула. Во-вторых, возвращать деньги до наступления срока возврата никто не обязан, даже организация. Недаром в деле нет самих «невыполненных» договоров.

В-третьих, в кооперативе НПО с 20.11.16 Общим собранием пайщиков принят режим финансового оздоровления, исключающий выплаты по договорам до 31.12.17, обязывающий пайщиков продлить срок действия своих договоров [см. http://freeverhova.ru/docs/]. А решение общего собрания обязательно для выполнения не только Совету и Правлению Кооператива, но и каждому пайщику.

Ну и в-четвёртых. А похитили-то вдруг чего? Все движения денежных средств в Кооперативе идут строго по закону и документально зафиксированы. И нет такой статьи в расходах Кооператива — «отдать деньги Верховой для похищения»! :)

Был замечательный светлый момент — истечение срока задержания. :) Пересела из-за решетки к адвокату, передала письма родным и близким, как свободный человек. :))) Но особо это ничего не поменяло: до окончания заседания находилась под присмотром. Как объяснили — если что — задержат даже просто за отсутствие паспорта. :)))

Все показания свидетелей, кроме одного — Ходыкина, свидетельствуют об осуществлении мною предпринимательской деятельности — вела финансово-хозяйственную деятельность, организовывала работу офисов, управляла предприятиями и т.д. И даже постановление на обыск, приложенное к делу, ясно свидетельствует об обыске именно на действующих предприятиях — по адресу, по которому кооператива никогда не было.

Единственные показания, которые противоречат ВСЕМ очевидцам — показания Ходыкина Д. Б. Уже писала про него [http://freeverhova.ru/khodykin/].

Примечательно, что все 1,5 года следствия Ходыкин молчал от этом, а тут вдруг 11.10.2017 решил высказаться. Прямо накануне заключения своего судебного соглашения.

А потому — суд не имеет «оснований для вывода о том, что инкриминируемое Верховой Н. Д. деяние совершено в сфере предпринимательской деятельности». Три раза ХА!

Дальше шли обычные разборки — почему надо именно посадить и никак иначе.

1. Может скрыться.

Очень смешно. 18 месяцев следствия, потом аресты, а Верхова такая наивная. Хотела бы скрыться — не пришла бы на допрос, после которого последовало задержание. Не догадывались, ага. Именно поэтому пришла в удобной одежде, с пустыми карманами и без телефона. :)))

2. Не имеет легального источника дохода. Логика убойная и видимо такая: Верхова — преступница, поэтому её официальная зарплата на предприятии, где она генеральный директор, не может быть легальным источником дохода! Точно курят! :)))

3. Не имеет постоянного места жительства. Тут ваще огонь! Следователь на допросе просил сообщить о всех местах, где я могу ночевать, кроме места моей прописки. Вопрос логичный — надо же обыски проводить. :))) Я и сообщила честно, что могу ночевать у сестры, а могу в загородном доме. Только уважение к суду не позволяло в голос ржать над выводом следствия об отсутствии постоянного места жительства. Дачники, будьте осторожны! По версии ГСУ — вы все бомжи!

Ещё поржать. Следствие заявило, что поскольку Верхова ознакомлена с делом, то теперь она может противодействовать, а значит надо посадить. На что я предложила посадить всех, кто ознакомился с делом, раз уж так. Чудесный способ сажать — ознакомим с делом и — за решетку! Тут уже и судья не выдержал — улыбался.

Отдельно наехала на прокурора. Этот служивый решил, что должен обвинять, и активно говорил о моей преступной деятельности. Как он умудрился забыть, что на этом суде его функция — надзор за соблюдением закона? Наверное, не знал. :)) Потому что про соблюдение закона вообще речи не шло.

Прокурор, кстати, тоже посмешил. В суд поступило коллективное ходатайство пайщиков в мою защиту. На что прокурор сказал, что пайщики — лица заинтересованные, а поэтому их ходатайство не надо принимать во внимание. Умереть не встать! )) А пайщики, что против меня, значит, незаинтересованные, и будем опираться на их показания. Было реально смешно.

И ещё один перл от прокурора: про справку мою медицинскую он сказал, что диагноз носит вероятностный характер. Так и хотелось его просветить, что точные диагнозы у нас только в морге! :)))

Всех выслушав, суд удалился на совещание. Было интересно. Особенно вопрос о подсудности дела. Адрес преступления помните? Садовая, 92. Это ни разу не Невский суд. «Совещание» длилось более 1,5 часов. И не зря! Вопрос о подсудности был решен блестяще!! Требования закона — ерунда. В решении суда появилась информация о постановлении начальника ГСУ МВД Антропова О.В. от 30.10.17 (!!!!!) об определении местом предварительного расследования — Невский район. Вуаля!

Я валяюсь. Вот шло себе следствие 18 мес, а потом — раз, и начальник ГСУ решил начать новую жизнь. С понедельника, как водится. :))) Прямо накануне моего задержания. Взял и написал — отныне так. И какая муха его укусила? :))) Ставлю на то, что чудо-постановление появилось за полтора часа «совещания». То-то сотрудники ГСУ удивились на следующий день! :))) Зато теперь я точно знаю, что Антропов О.В. — в деле и принимает непосредственное участие в попытках сфабриковать дело и привлечь заведомо невиновных. Записала его в список тех, кого буду привлекать по ст. 303 УК РФ и прочим.

Вот так весело закончился этот суд. Судье — респект. Поставленную задачу выполнил, и максимально корректно.

http://freeverhova.ru/court/

Продолжение следует.

## Узбечка. 10.12.2017

*#оттуда #тюремныеИстории*

Сериал про тюрьму — очень может быть увлекателен, но неправильно пропагандировать это заведением. :) Тем не менее, судьбы и истории буду писать под тэгом #ТюремныеИстории. Вопросов может быть много, но они бесполезны. Некому отвечать. Все истории абсолютно реальные.

Жила-была девушка-узбечка. Работала в супермаркете. Кассиром. Всё просто и обыденно. Один из покупателей после оплаты забыл свою банковскую карту. По инструкции — необходимо вызвать старшего смены и сдать, но девушка лишь приткнула к стеклу карту и продолжила обслуживать очередь. Вернулась забывчивая покупательница, обрадовалась, найдя свою карту. А потом… обвинила девушку-кассира в том, что с карты сняты деньги. Девушку арестовали. Четыре месяца в тюрьме. На суд пришла покупательница и сказала, что перепутала, что ошиблась, что деньги все целы. Девушку отпустили, но… четыре месяца.

Будьте осторожны.
Продолжение следует.
http://freeverhova.ru/prison-story-uzbechka/

## Брат и сестра. Тюремные истории

Жили-были брат с сестрой. Жили отдельно, общались редко. Брат бухал, а сестра была достаточно успешна. Брат обижался. Как-то раз сильно напился с незнакомыми собутыльниками. Его побили. Привезли в больницу. Когда проспался - ничего не помнил. Но решил, что сестра похитила его и мучала. О чём, недолго думая, написал заявление в полицию. Сестру арестовали. Полтора года в тюрьме. Идёт следствие. Брат уже давно отказался от своих показаний. Перспективы неопределённые.

Будьте осторожны.

Продолжение следует.

http://freeverhova.ru/tag/prison-stories/

## Ангар. Тюремные истории. 11.12.2017

*#оттуда #ТюремныеИстории*

Жила-была женщина. И решила она завести свой бизнес. Не спешите понимающе вздыхать. До бизнеса дело не дошло — всё проще и страшнее. Женщина арендовала ангар, чтобы обеспечить своему бизнесу юр. адрес. В ангар залезло несколько мигрантов, развели там костёр и угорели. Насмерть. Женщину арестовали. Грозит до шести лет лишения свободы.

## **Пакет.** 14.12.2017

*#оттуда #тюремныеИстории*

Девушка была счастлива. Любимый муж. Недавно родила двойню. Пусть пока не восстановилась от родов: анемия, запавшие глаза - трудные дети мало оставляют времени на себя. А ещё двое - трёх и шести лет. Вышла из магазина, увидела пакет на асфальте. Подняла, чтобы повесить повыше - для "потеряшки".

Опомнилась с заломанными руками. На вопрос оперативников - что в пакете - не смогла ответить. Наркотики. Постродовая анемия - обозначили наркоманкой. Тюрьма. Суд. 4 года реального срока. Муж и четверо детей будут ждать дома...

Будьте осторожны.

Продолжение следует.

http://freeverhova.ru/bag/

## **Лыжня.** 15 .12.2017

*#оттуда #тюремныеХроники*

Задержанный по обвинению по ст.159 ч.4 просто обречён на различные методы давления. И "пресс-хата" - не самое страшное, хотя и она - в обязательной программе. :))

Есть такой термин: "поставить на лыжи". Это когда заключённый переводится из камеры в камеру каждые 2-3 дня. Забава не так безобидна. В новой камере приходящий последним - человек без прав. Нельзя присаживаться на кровать, нельзя разговаривать ни с кем, кроме старшей по камере, во всех жизнеобеспечивающих процедурах - последний и много других милых мелочей. И в случае "лыжни" это всё повторяется не один раз.

Но есть противоядие. :)

Система направлена на ломку человека, а если человек крепок - ломается система. Зачем тюрьме человек, обладающий уважением во всех камерах? Вообще не нужен. :) Пусть сидит в одной, ограничив своё влияние кругом сокамерников.Остановилась в третьей по счёту камере, обретя добрых знакомых во всех трёх.

А вообще, судя по рассказам бывалых, раньше было гораздо хуже. Потому что беспредел в камерах дополнялся беспределом сотрудников. Сейчас от неадекватных сотрудников избавились. Все очень корректны и большинство даже доброжелательны. Много того, что они в принципе решить не могут - перенаселённость, отсутствие врачей и тому подобное. Так что... живы будем - не помрём.

Берегите себя.

Продолжение следует.

http://freeverhova.ru/skiing/

## День рождения. 16.12.2017

*#оттуда #тюремныеХроники*

Очень экзотический День рождения в этом году. Благодарна судьбе за столь интересную и разнообразную жизнь. Соседи по заключению периодически ищут причины моего хорошего настроения и интереса к жизни. Сформированы три основные версии:

1. Я — рецидивистка, которая скрывает это, и тюрьма мне — дом родной.

2. Я исполняю роль «тайного покупателя»: выявляю недостатки и кому-то отчитываюсь.

3. Я заплатила денег, чтобы попасть в тюрьму и пройти этот квест.

Такие вот забавные штуки :) Вспомнился фильм «Поездка в Америку» с Эдди Мёрфи. С каким кайфом он мыл пол. :)

Свобода — она не снаружи, она внутри, и человек сам определяет свои границы. Свобода познания и свобода развития доступны всегда.

Берегите себя! :)

Продолжение следует.

http://freeverhova.ru/birthday/

## Старик и девушка. 17.12.2017

*#оттуда #тюремныеИстории*

Жил-был старик. Родственники где-то были, но не интересовались его жизнью. Помогала соседская девушка — приносила продукты, прибирала, разговаривала. Со временем оформили договор пожизненного содержания, переоформили квартиру на девушку.

Прошло еще три года. Внезапно объявились родственники старика. Несмотря на его протесты — забрали к себе. Следом — заявление в милицию: мошенничество, удержание в заложниках, истязания. Статьи 159, 117, 127 УК РФ. Девушку арестовали.

Бесплатный адвокат уговорил признаться, запугав отсутствием перспектив. Получила три года. Теперь родственники старика судятся, отбирают квартиру.

Будьте осторожны.

Продолжение следует.

http://freeverhova.ru/dedushka/

## Свидания, передачи и магазин. 18.12.2017

*#оттуда #ТюремныеХроники*

Забавно наблюдать, ка система иногда заходит в тупик. Уроборос давится. :)

СИЗО переполнен, и… ни адвокатам, ни следователям не попасть без значительных усилий. Адвокат ко мне записался с вечера, ночью отмечались (!!!) Попал. А вот следователь из Белгорода — попасть не смог. Ну разве не смешно? СЛЕДСТВЕННЫЙ изолятор, куда следователям не попасть. Тут можно сидеть вечно, ведь следствию ты недоступен. Чудесная закольцовка.

Про передачи — та же песня. Люди с 4:30 занимают, и могут не попасть. Жесть.

А ещё у заключённых есть возможность что-то заказать в тюремном магазине, если родственники или друзья положили денег на лицевой счёт. И тут.. внимание! Это можно сделать только ОДИН раз в неделю. При том, что я не вижу ни одной причины, кроме маразма абсурда, мешающего сделать это в ежедневном режиме. Учитывая, что цены в магазине выше городских на 40-200%, перестаю понимать совсем. Очередной глоток уробороса.

Берегите себя!

Продолжение следует.

## Бабушка. 20.12.2017

*#оттуда #ТюремныеИстории*

Жила-была бабушка. 78 лет. Ещё войну помнила. Высокая квартплата, дорогие лекарства. Подумала бабушка и продала одну из комнат своей квартиры. Новые жильцы оказались… недочеловеками. Стали откровенно гнобить старушку. Портили еду, раскидывали вещи, не пускали в туалет.

Неизвестно, чем бы всё закончилось, но к старушке приехал сын в гости. Слово за слово, кулаки, нож. Один из жильцов получил рану. Полиция. Бабулька заявила, что это сделала она. Спасала сына. Закрыли обоих. Ст. 111 УК РФ.

Полгода бабушка в тюрьме. Еле ходит, рассказывает молодежи про войну, про социалистические стройки. Расследование не спешит.

Будьте осторожны.

Продолжение следует.

## Кто и почему разрушил кооператив «Семейный капитал» . 21.12.2017

*#оттуда #репост*

Готовые ответы редко воспринимаются людьми. Потому — только здесь и сейчас — информация об исходниках этой войны.

Кооператив «Семейный капитал» работал более пяти лет и показал, что:

1. Сельское хозяйство может быть прибыльным и без субсидий.

2. Натуральные и вкусные продукты могут быть доступны всем.

3. Вертикаль производства и торговли может приносить доход до 30% годовых. Народные деньги должны работать в народном хозяйстве, а не «лежать» в банках.

4. Каждая деревня может не только прокормить себя, но и жить богато, поставляя в город результаты своего труда.

5. Кооператив как форма объединения людей может полностью удовлетворить материальные и иные потребности граждан.

Всё это проверено на практике. Всё.

О тех, кого не могут устраивать такие результаты работы кооператива «Семейный капитал», и тех, кто любой ценой стремится уничтожить кооперацию — догадайтесь сами.

И, это... берегите себя. :)

Продолжение следует.

## Отцы и дети. Не дают позвонить отцу. 22.12.2017

*#оттуда #тюремныеХроники*

Месяц следствие не реагирует на мои просьбы о звонке отцу. Написала очередное письмо. А заодно и в прокуратуру. Пусть подтвердят свою заинтересованность. :) Подожду несколько дней и подыщу в УК РФ подходящих статей — привлечь к ответственности. Тут букет просто потрясающий. А учитывая, что отцу 88 лет и два инфаркта у него было, за последствия придётся отвечать. Сейчас радуюсь, что на свободе не слишком часто звонила…

Чтобы отвлечься — сочиняла жёлтые заголовки на эту тему. :)) Написала три десятка, дала почитать сокамернице. Долго ржали над профессией журналиста. :))

Берегите себя.

Продолжение следует.

## Начала учить узбекский. 24.12.2017

*#оттуда #ТюремныеХроники*

Начала учить узбекский. Во-первых, мозгам полезно. Во-вторых — пригодится обязательно. А в-третьих — просто интересно.

Сначала составила небольшой разговорник. Но быстро поняла ошибочность направления. Ментальность узбеков другая, поэтому русские выражения переводить на узбекский — неверно. Они поймут, но сами так не говорят. Например, «хочу есть» — можно перевести. Но если сформулировать по-узбекски, то это: «Хочу еда кушать».

В общем, не скучно :)

Продолжение следует.

## Воровство. Тюремные истории. 26.12.2017

*#оттуда #тюремныеИстории*

Жил-был парень. 23 года, трое детей, жена погибла. И пошёл он промышлять воровством, не видя других возможностей обеспечить детей. Первый раз попался - отпустили. Второй - дали условно. Сейчас прошёл третий суд. 250 эпизодов. Дали полгода поселения.

Не раскаивается. Детей обеспечил, можно и посидеть. Всяко выгоднее, чем за зарплату.

Будьте осторожны.

Продолжение следует.

## Кто и почему разрушил кооператив «Семейный капитал». 25.12.2017

*#оттуда #репост*

Разрушение кооператива «Семейный капитал» вошло в финальную стадию. Разорены и обанкрочены предприятия, документы изъяты различными органами, офисы разграблены и закрыты, руководители арестованы.

*Что делать пайщикам в этой ситуации*

1. Гордиться тем, что мы сделали, у нас получилось очень многое. Годы успешной работы показали реальность задумок и планов, возможность поднимать народное хозяйство на народные деньги на благо народа.

2. Защищать доброе имя кооператива. Распространять правду о кооперативе в реальности и в интернете. Информацию и документы можно взять на сайтах http://freeverhova.ru и http://sk-npo.ru.

3. Противодействовать правовому беспределу органов. Писать заявления в высшие органы, правозащитные организации, политические партии и общественные движения.

За образец можно взять моё заявление (http://freeverhova.ru/docs/), добавив своих фактов и эмоций. Не довольствуйтесь полученными отписками, направляйте жалобы в вышестоящие инстанции. Используйте предвыборную ситуацию для донесения нашей правды до всех.

Присылайте свои заявления и ответы на них на info@sk-npo.ru

*Есть ли шансы получить деньги, вложенные в кооператив?*

Шанс — только один: деньги пайщиков можно вернуть, наказав истинного виновника, разрушившего кооператив (http://freeverhova.ru/history/), прикрывшись должностными полномочиями и поправшему закон.

Всё. Других вариантов нет. Предприятия уничтожены, имущество разграблено. Все заказные публикации о выведенных деньгах и имуществе за границей — не имеют под собой основания.

Руководители кооператива не имеют за душой ни денег, ни имущества. Руководство «Семейного капитала» считало, что «Раньше думай о Родине, а потом о себе.» Плохие люди пока побеждают.

Но каждый пайщик в силах изменить ситуацию: своей гражданской позицией, своими усилиями, своей честью. Выбор делает каждый сам. Удачи!

Берегите себя!
24 декабря 2017
http://freeverhova.ru/shareholders-sk/

## Розенбаум. 27.12.2017

*#оттуда #тюремныеХроники*

Первый раз за 26 лет пропущу питерский концерт А. Я. Розенбаума [Розенбаум Александр] в БКЗ. Так сложилось. Билет, заботливо купленный дочкой давно-давно, не пропадёт, кто-то будет счастлив вместо меня.

Концерты А. Я. – это особые даты, особые состояния и особые рубежи. Это точки анализа, осмысления, принятия и движения дальше.

Но зато я уже освоила несколько барабанных ритмов, и в этот день я буду… барабанить, и внутри у меня будет звучать его бессмертная музыка.

В новогодних письмах прошу друзей написать слова песен А. Я. И цеплять его фотки. Скучаю.

С наступающим! :)

## Врач. 27.12.2017

*#Оттуда, #Тюремные истории*

Жила-была женщина. Всю жизнь работала спортивным врачом при горнолыжной команде. 1952 года рождения. Как-то раз, гуляя, на детской площадке увидела женщину с четырьмя детьми. У мальчика одна нога была короче другой. Разговорились. Никто не берётся лечить. Приехали из Ростова-на-Дону. Пожалела. Обратилась по старым связям — у нас очень сильна спортивная медицина. Консультации врачей очень дорогие, но авторитет заслуженного человека помог. Мать инвалида предлагала деньги, но решили купить бутылку виски — в качестве подарка тому, кто проконсультирует мальчика. И 200 руб. бабуля попросила на проезд — пенсия маленькая, даже съездить — договориться требует затрат. Договорились. В назначенное время пришла с этой бутылкой за мальчиком и матерью — ехать на консультацию. Была встречена оперативниками. Мошенничество. Ст. 159 ч.2.

Сейчас женщина в СИЗО. Пять часов врачи в больнице сбивали давление, чтобы можно было сдать человека в тюрьму.

6 тысяч 200 руб. Человеку 65 лет. Тюрьма.

Будьте осторожны.

## Новый год. 29.12.2017

*#оттуда*

Новый год настраивает на романтический лад. Галогеновые фонари за окном прикидываются луной, решётки на окнах кажутся мощными морозными кружевами. Все читают. В камере тихо. Рядом мирно посапывает кот, прижавшись ко мне тёплым боком.

Думаю о прошедшем годе. Чистое железо не бывает без ржвачины. Законы, люди, обстоятельства… — это всё лишь кусочки мозаики. Победит та правда, за которую будут отчаяннее бороться. так было всегда. И если добро должно быть с кулаками, то справедливость с чем? Мир не станет лучше или хуже, он просто станет другим.

Вспоминаю Лукьяненко:

Трудный путь к цели выбираешь лишь тогда, когда лёгкий кажется оскорблением мечты.

Как бы судьба не повернулась — я знаю, это будет лучший вариант для меня. Всё будет хорошо, семь раз отмерим, один отрежем. Не в свои сани не сядем, хотя… как пойдёт. :) Да и труд приложим к пруду ради рыбки.

С Новым годом! Берегите себя.

# 2018

## Женщины. 03.01.2018

*#оттуда*

Женщины — слабый пол. И потолок. И днище. И котелок. На сегодня всё.

Продолжение следует.

## Заявка в библиотеку. 03.01.2018

*#оттуда #тюремныеХроники*

В тюрьме есть библиотека. Предложили поучаствовать в написании заявки на книги. Написала: Фейнман, Стругацкие, Булычёв, Ленин, Сталин, Николай Носов, Кжижановский, Дарелл, Гарри Гаррисон, Некрасов, Маринина, Злотников, Пелевин, История XIX — XX в.в., машиностроение, сельское хозяйство, Юлиан Семёнов, Леонид Пантелеев, книжки про пионеров, Агата Кристи, Сергей Лукьяненко, юридическая литература, Жюль Верн, Майн Рид, Александр Иванов, Виктор Суворов, Оруэлл, Платон, Томас Мор, Маяковский, Дюма, Ремарк, Чехов, Гарри Поттер, Архипелаг Гулаг, шахматы, математика, физика, военное дело, биографии, менеджмент, эзотерика, Берия, Булгаков, Браун, Гримм, Спартак, Анхель де Куатье, Мураками, О’Генри, Пикуль, Марк Твен, английский, Мифы и легенды Петербурга.

После молчания сокамерницы только поинтересовались — кто я по профессии. :)

Продолжение следует.

## НаркоперА. 08.01.2018

*#оттуда #тюремныеИстории*

Жила-была девушка. Воспитывала ребёнка. Как агент торговала косметикой. Одна из «подруг» задолжала деньги. Никакие напоминания не действовали. И сумма-то небольшая — 600 руб. всего, но неприятно.

И тут подруга звонит — хочу деньги вернуть, спустись, пожж, на улицу. Вышла, взяла 600 руб. и… наручники на руках. Контрольная закупка. И наркотики «обнаружились».

Оказывается, «подруга» — наркоманка со стажем, а тут задержали, предложили кого-то сдать. Та, недолго думая, «убила двух зайцев».

В итоге: подруга на свободе, у оперов — раскрытие, а девушка поехала на 8 лет на зону.

Будьте осторожны.

## Чувство справедливости. 09.01.2018

*#оттуда #тюремныеХроники*

Есть у меня с собой папочка с историей кооператива «Семейный капитал». Редко достаю её, но бывает. Дала почитать сокамерницам, и… реакция была неожиданной. Меня спросили: «Есть ли возможность сейчас вступить в кооператив?» Спрашиваю: «Зачем». Отвечают: «Потому что это правильно».

Всё.

## Люди! 09.01.2018

*#Оттуда*

В тюрьме есть по-настоящему страшные вещи. Это настолько ужасно, что даже в фильмах этого не увидишь. Расскажу о самом большом потрясении на сегодняшний день. Да что там потрясение — тупо шок.

Делать тут особо нечего. И еда три раза в день. И… люди превращаются в животных. Спать и есть. Всё. Ещё телевизор: камеди клаб, орёл и решка, сериалы.

Смотрела за новичками. Примерно за неделю-две тухнут глаза. Ещё через пару недель тело становится неподвижным, лицо опухает и обвисает. Человек перестаёт чем-либо интересоваться, встаёт только поесть и в туалет. Уровень разговоров тоже понятно какой.

Вылечить это состояние очень сложно. Дисциплина и физкультура. Поэтому жёсткие режимные хаты, по сути, полезны.

О второй, не менее жуткой штуке, ломающей людей в тюрьме, расскажу в следующий раз.

Берегите себя.

# «Семейный капитал»: мираж или факт природы? 10.01.2018

Telegra.ph

Магазин с логотипом «Семейного капитала». Настоящий

Если открыть сервис Яндекс.Картинки и набрать в поиске «Магазины Семейный капитал», то увидишь много фотографий: магазины внутри и снаружи, с названиями; ценники и продукты с логотипами; продавцов; адреса магазинов, рекламу продуктов питания и все такое прочее. Многие петербуржцы до сих пор помнят эти магазины и без Яндекс.Картинок, своей собственной незамутненной памятью.

Продавец и продукция с логотипами. Фотошоп? Не думаю

Почему так происходит? Откуда это все берется?! Потому что эти магазины **были**! Они работали, продавали мясную, молочную и разную другую продукцию, и многие наши сограждане затаривались в них в течение долгого времени. Они существовали в природе.

А теперь взгляните на фрагмент постановления о привлечении в качестве обвиняемого Натальи Верховой, одного из ключевых сотрудников кооператива «Семейный капитал». Кстати, такие же и у других фигурантов: основателя Игоря Белоусова и прочих.

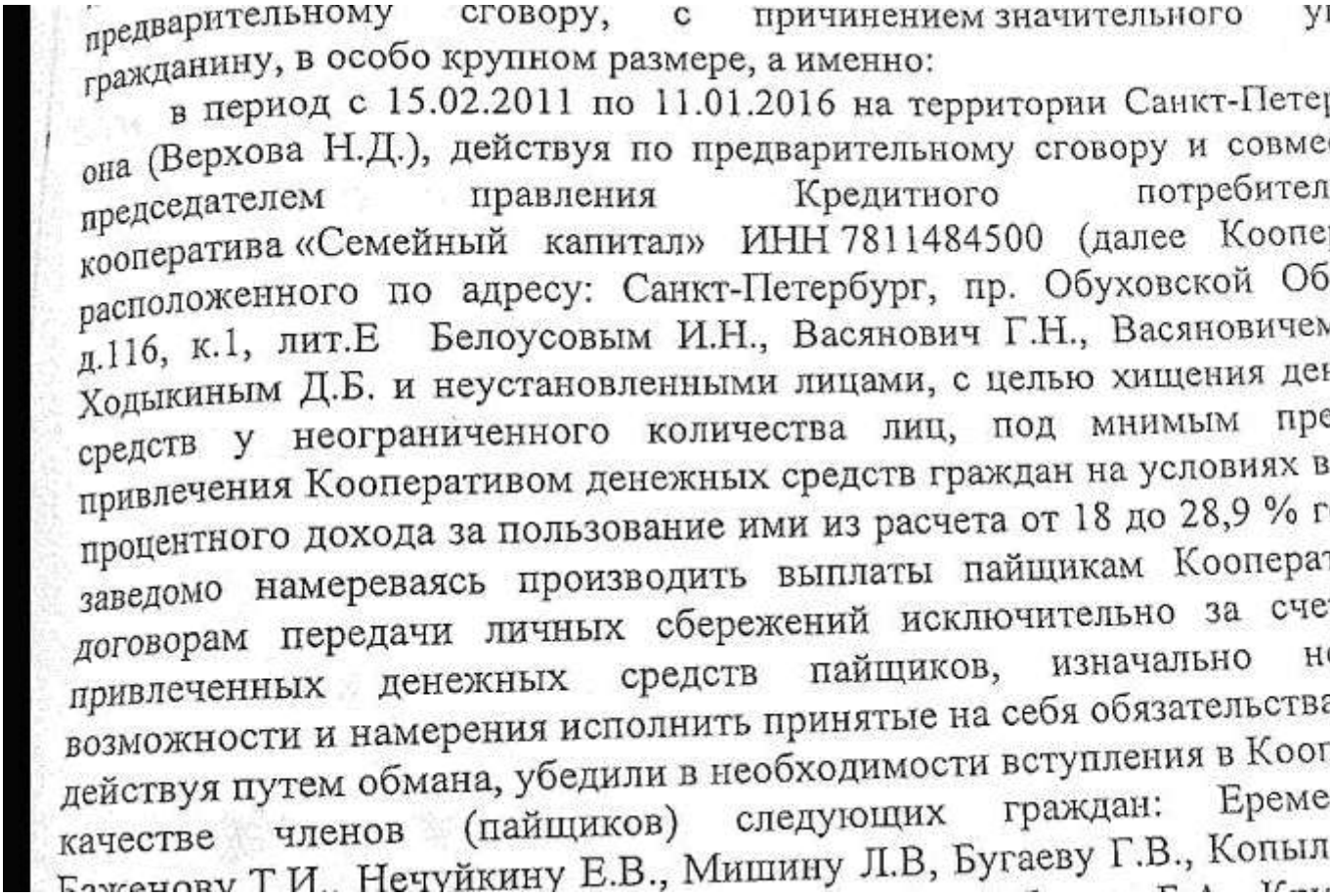

предварительному сговору, с причинением значительного у
гражданину, в особо крупном размере, а именно:
в период с 15.02.2011 по 11.01.2016 на территории Санкт-Петер
она (Верхова Н.Д.), действуя по предварительному сговору и совме
председателем правления Кредитного потребител
кооператива «Семейный капитал» ИНН 7811484500 (далее Коопе
расположенного по адресу: Санкт-Петербург, пр. Обуховской Об
д.116, к.1, лит.Е Белоусовым И.Н., Васянович Г.Н., Васяновичем
Ходыкиным Д.Б. и неустановленными лицами, с целью хищения де
средств у неограниченного количества лиц, под мнимым пре
привлечения Кооперативом денежных средств граждан на условиях в
процентного дохода за пользование ими из расчета от 18 до 28,9 % г
заведомо намереваясь производить выплаты пайщикам Кооперат
договорам передачи личных сбережений исключительно за сче
привлеченных денежных средств пайщиков, изначально н
возможности и намерения исполнить принятые на себя обязательства
действуя путем обмана, убедили в необходимости вступления в Коо
качестве членов (пайщиков) следующих граждан: Ереме
Баженову Т.И., Нечуйкину Е.В., Мишину Л.В, Бугаеву Г.В., Копыл

«Верхова Н.Д., действуя по предварительному сговору и совместно с председателем правления КПК «Семейный капитал» Белоусовым И.Н. <…> и неустановленными лицами, с целью хищения денежных средств у неограниченного количества лиц, под мнимым предлогом привлечения средств граждан на условиях выплаты процентного дохода, **заведомо намереваясь производить выплаты пайщикам за счет вновь привлеченных денежных средств пайщиков, изначально не имея возможности и намерения исполнять принятые на себя обязательства**, то есть действуя путем обмана…»

То есть вы видите? Они привлекали денежные средства, намереваясь восполнять их ТОЛЬКО из средств пайщиков — утверждают следователи. Строили пирамиду под названием «Семейный капитал». Никакого производства не было у них! МММ, схема Понци, сплошной обман и надувательство.

Как действует МММ, очень точно описали Ильф и Петров в «Золотом теленке»: *«Через два месяца на Сретенском бульваре открылось новое заведение под вывеской «Промысловая артель химических продуктов „Реванш“, Артель располагала двумя комнатами. В первой висел портрет основоположника социализма — Фридриха Энгельса, под которым, невинно улыбаясь, сидел сам Корейко в сером английском костюме, продернутом красной шелковой ниткой. В задней комнате находилось производство. Там стояли две дубовые бочки с манометрами и водомерными стеклами, одна — на полу, другая — на антресолях. Бочки были соединены тонкой клистирной трубкой, по которой, деловито журча, бежала жидкость. Когда вся жидкость переходила из верхнего сосуда в нижний, в производственное помещение являлся мальчик в валенках. Не по-детски вздыхая, мальчик вычерпывал ведром жидкость из нижней бочки, тащил ее на антресоли и вливал в верхнюю бочку. Закончив этот сложный производственный процесс, мальчик уходил в контору греться, а из клистирной трубки снова неслось всхлипыванье: жидкость совершала свой обычный путь — из верхнего резервуара в нижний»*.

Белоусов и Верхова утверждают, что ничего подобного, мол, они купили на средства пайщиков крупные сельскохозяйственные предприятия: агрофирму «Тукса» (Карелия), Медвежьегорский

молокозавод, молочный завод «Чекмагуш» в Башкирии, а также построили ряд перерабатывающих заводов и открыли сеть магазинов. Но это мы с вами никак не можем проверить. Может, купили, а может, и нет. Может, все врут, фотки оттуда подделали: мало ли кто на фоне коров может стоять?

**Но магазины-то куда вы денете?! Были же магазины!** Изо дня в день работающая сеть магазинов — это ж не «две бочки» из «Реванша»! Продавалась в них еда, люди же помнят! Откуда-то бралась? С характерными логотипами и этикетками. И доход какой-то да приносили же эти магазины. Значит, не только «за счет вновь привлеченных денежных средств»? Значит, была хозяйственная деятельность?

В общем, одно из двух: либо сляпать пирамиду и постараться успеть сбежать, либо организовывать производство. Не может мошенник про между делом, для отвода глаз выстраивать сложную и функционирующую производственную цепочку, а сам тем временем заниматься исключительно обманом пенсионеров.

Сейчас Верхова, Васяновичи и Белоусов сидят в СИЗО. Пишут оттуда заявления, что никаких следственных действий с ними не проводятся, но при этом проводится целенаправленная работа по уничтожению всех бумажных следов этой самой хозяйственной деятельности. Надо думать, постараются, все уничтожат, что найдут. Что-то конечно по квартирам соратников останется, но…

Белоусов пока был на воле, до последнего катался по сельскохозяйственным выставкам и семинарам. Не сам организовывал семинары для привлечения лохов-пайщиков, а его звали — опытом поделиться, рассказать о том, как наладить производство еды. Звали те, кто видел предприятия «Семейного капитала» и был уверен, что они работают хорошо. Видимо, кое-кому глаз в итоге намозолили. Кому — этого мы, к сожалению, не знаем. Может, сами сидельцы что расскажут, когда выйдут.

Тем не менее, кооператив «Семейный капитал» был целенаправленно разрушен. Сначала ударил Центробанк — ни за что ни про что ввели внешнее управление. Якобы были какие-то недоимки по налогам — можно было легко взыскать их через Арбитраж, если действительно были. Вместо этого внешний управляющий полностью заморозил деятельность кооператива, просто перестал платить зарплаты и аренды.

Кооперативщики еще пару лет посопротивлялись: создали НПО (некоммерческое потребительское общество) вместо КПК (кредитный потребительский кооператив). Тогда, чтобы их добить, открыли уголовные дела. Летом 2017 года на офисы в Питере устроили несколько рейдерских налетов с помощью судебных приставов. Там вообще смешно получилось!

Дознаватель Григорьев вломился в офис и украл там все: документы, компы. На основании им же вынесенного постановления об обыске. Вот только приставы на тот момент дела своего дела против «Семейного капитала» не возбудили, был только материал доследственной проверки. А значит, обыск нельзя было проводить. Постановление об обыске было отменено!

**ПОСТАНОВЛЕНИЕ**

**об отмене необоснованного постановления дознавателя о производстве обыска**

Санкт-Петербург «15» июня 2017 г.
(место составления)

Заместитель начальника Адмиралтейского отдела УФССП России по
(должность следователя (дознавателя),
Санкт– Петербургу советник юстиции 3 класса Фёдоров И.А.
классный чин или звание, фамилия, инициалы)

в соответствии с п.1 ч.3 ст. 40.1 УПК РФ осуществил проверку материала проверки сообщения о преступлении, № 61 от 22.05.2017, находящегося в производстве дознавателя Адмиралтейского отдела УФССП России по Санкт-Петербургу Григорьева Ю.А.,

**У С Т А Н О В И Л :**

22.05.2017 в Адмиралтейский отдел УФССП России по Санкт-Петербургу поступило заявление Куц М.А., о привлечении руководителя кооператива НПО «Семейный Капитал» к уголовной ответственности по ст.177 УК РФ. В тот же день, производство проверки в порядке ст. 144-145 УПК РФ поручено дознавателю Адмиралтейского отдела УФССП России по Санкт-Петербургу Григорьеву Ю.А.

14.06.2017 дознавателем Григорьевым Ю.А. вынесено постановление о производстве обыска. В тот же день указанным должностным лицом в офисе кооператива НПО «Семейный Капитал», расположенном по адресу: Санкт-Петербург, ул. Садовая, д.92, лит.А, пом.4Н произведен обыск в ходе которого были изъяты бухгалтерские документы компании, два компьютера, копии учредительных документов компании.

Согласно ст.182 УПК РФ основанием производства обыска является наличие достаточных данных полагать, что в каком-либо месте или у какого-либо лица могу находиться орудия, оборудование или иные средства совершения преступления, предметы, документы и ценности, которые могут иметь значение для уголовного дела. Учитывая, что в настоящее время уголовное дело в отношении руководителя кооператива НПО «Семейный Капитал» Адмиралтейским отделом УФССП России по Санкт-Петербургу не возбуждалось, считаю, что постановление о производстве обыска дознавателем вынесено не обосновано.

15.06.2017 в порядке ст. 40.1 УПК РФ, по настоящему материалу проверки дознавателю даны указания, а именно, возвратить изъятые 14.06.2017 в ходе производства обыска предметы и документы, принадлежащие кооперативу НПО «Семейный Капитал», срок исполнения дознавателю установлен до 16.06.2017. Указание получено дознавателем 15.06.2017.

На основании изложенного и руководствуясь ст. 40.1 УПК РФ,

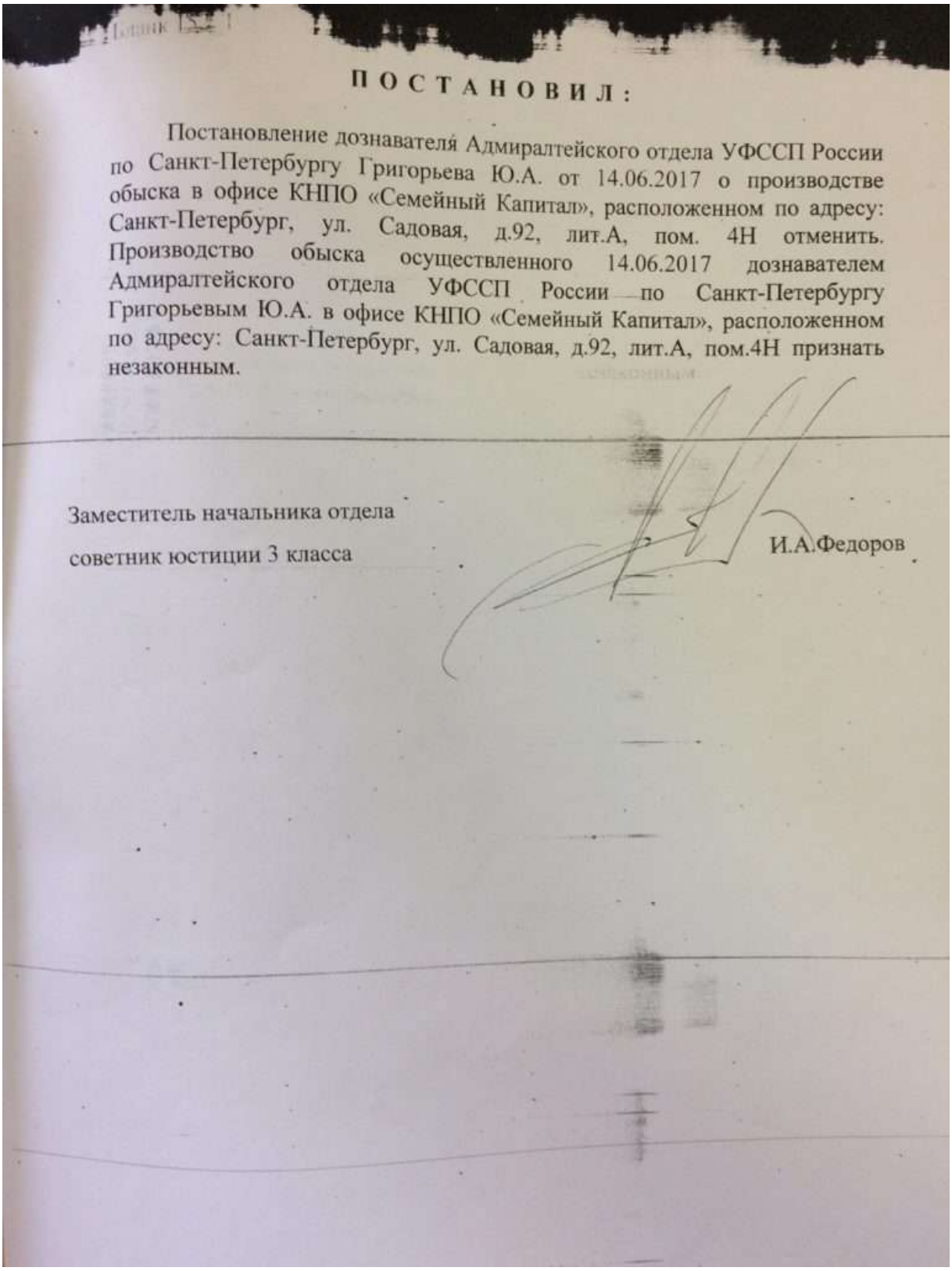

ПОСТАНОВИЛ:

Постановление дознавателя Адмиралтейского отдела УФССП России по Санкт-Петербургу Григорьева Ю.А. от 14.06.2017 о производстве обыска в офисе КНПО «Семейный Капитал», расположенном по адресу: Санкт-Петербург, ул. Садовая, д.92, лит.А, пом. 4Н отменить. Производство обыска осуществленного 14.06.2017 дознавателем Адмиралтейского отдела УФССП России по Санкт-Петербургу Григорьевым Ю.А. в офисе КНПО «Семейный Капитал», расположенном по адресу: Санкт-Петербург, ул. Садовая, д.92, лит.А, пом.4Н признать незаконным.

Заместитель начальника отдела

советник юстиции 3 класса И.А.Федоров

Пришлось дознавателю Григорьеву вернуть все украденное на место. Представляете, какое унижение? И разве мог такое порядочный дознаватель снести? Пришлось ему бедному сделать финт ушками.

Григорьев дождался, пока в офисе не остался один Белоусов, скрутил его и сдал ментам якобы за то, что тот на него не то напал, не то ругался нехорошими словами. И после этого те же самые

документы опять украл, оформив «изъятие в рамках осмотра места происшествия». Ну не красава ли дознаватель Григорьев? Просто ух!

А фигуранты сидят. Успешное сельхозпредприятие разрушено, сотни людей потеряли работу. Как это у нас называется? Сейчас вспомню… А, да! Импортозамещение.

*10 января 2018*
*Telegra.ph*

## Уголовка. 13.01.2018

*#оттуда #тюремныеХроники*

Почитала внимательно Уголовный кодекс РФ. И знаете что? :) Я, конечно, не ангел ни разу. Но только статью 159 ко мне никак не «пришить». Ну нет у меня допуска в характере на обман и злоупотребление доверием. От слова совсем. Слышала информацию, что по ст. 228 и 159 выпущены методички для правоохранителей. Вот и стали эти статьи самыми распространёнными.

Грустно, конечно, но всё равно смешно — ведь в доказательной базе: «Мы знаем, что ты думал, когда начинал действовать.» :)

Берегите себя.

## Понты. 16.01.2018

*#оттуда #тюремныеХроники*

Сидельцы в камерах бывают разной степени распальцовки. Мне иногда их беседа напоминает анекдот.

Сидят два дебила в дурдоме. Один: «Я — посланник Бога». Второй: «Я никого не посылал».

## Курение. 17.01.2018

Прочитала в МК, что правила противопожарного режима дополнились в 2018 новыми требованиями. Теперь запрещается курение (вне спец. мест) лицам, задействованным на уборке зерновых культур и заготовке кормов.

Только помолчать :)

Не, я, конечно, за любые ограничения по курению, но… тот, кто сочинял, вообще заготовку кормов видел? Ну или колхозника хотя бы вживую? Дай Бог, чтобы они не пили. А ещё и не курить на работе. В чистом поле. По 16 часов в день. Идея хорошая, но пока выглядит насмешкой или диверсией. И вообще. Предлагаю запретить курить в тюрьмах! Тут есть люди в форме, которые проследят. ☺ Берегите себя.

*#Оттуда*

## Блокада. Следователь два месяца отказывает в телефонном звонке отцу-блокаднику. 18.01.2018

*Метки: #карчава, #оттуда, #репост, #Тюремные хроники*

В далеком, тревожном военном году,

Под гром батарей у страны на виду.

Стояли со взрослыми рядом

Мальчишки у стен Ленинграда.

Мой отец — блокадник. 1929 г.р. Перенёс инфаркт. Он не в курсе ни моих дел, ни нынешнего положения. Учитывая состояние здоровья, от потрясений надо беречь. Мои частые командировки и редкие звонки и раньше случались. Но не настолько. Два месяца следователь Карчава Д.Д. отказывает мне в телефонном звонке отцу.

Я готова говорить по громкой связи, в присутствии сотрудников по заранее согласованному конспекту — на любых условиях, нужно просто позвонить отцу, который беспокоится, что я давно не звоню. И содержание разговора абсолютно неважно. Разговоры всегда о здоровье, самочувствии. Да ещё сказать, что у меня всё в порядке.

На парте осталась раскрытой тетрадь

Не выпало им дописать, дочитать,

Когда навалились на город

Фугасные бомбы и голод.

Я не поздравила отца с Новым годом. Не получается поздравить и с Днём снятия блокады — священным днём для каждого блокадника. Я не пропускала этого поздравления сызмальства.

Я не знаю, есть ли в следственной бригаде ленинградцы, я не знаю степень порядочности руководства ГСУ. И даже не буду говорить, что настоящие мужчины не ввязывают детей и стариков в свои разборки.

Я просто надеюсь, что кто-то увидит абсурд происходящего и спросит следователя: не стыдно ли ему перед предками за такой позор.

И мы никогда не забудем с тобой,

Как наши ровесники приняли бой.

Им было всего лишь двенадцать

Но были они ленинградцы!

Берегите близких. И… позвоните родителям.

## Новости Древней Греции. 22.01.2018

*#оттуда #ТюремныеХроники*

Перечитываю Н.А.Куна — «Легенды и мифы Древней Греции». Фоном бурчит радио — новости. И знаете что? Постоянные совпадения!! Кто-то кого-то убил, кто-то обиделся и отомстил, драки, раздоры, самоубийства, войны, подкупы, интриги.

И… боги сверху наблюдают, переживают, иногда вмешиваются, иногда ссорятся между собой. И ссоры богов отмечаются всплесками насилия и смертей. Такая вот Древняя Греция.

Берегите себя.

## Суд о продлении заключения. 24.01.2018

Пролетел Новый год и новогодние каникулы. Пошла ежедневная рутина. Теперь можно поговорить о недавних событиях: суд о продлении меры пресечения состоялся.

Продление меры пресечения — стандартная процедура, а в нашем случае ещё и достаточно формальная. Понятно, что следователь может бесконечно говорить, что основания для меры не изменились, прикрываясь числом пайщиков. Понятно, что основания, точнее, их отсутствие, и правда не изменились. Но также понятно, что не закон главенствует в нашем процессе. В общем, сплошные понятки. :)

Следователь Карчава Д.Д. отрастил бороду. Это очень примечательный факт. Очень. Бездна информациии в этом событии. :)

Приятной новостью стало, что ГСУ читает мой блог. :) Это значит, что все нарушения закона, которые имеют место, делаются сознательно, а не по недомыслию. Когда придётся за это отвечать, наивность не прокатит. :)

Потерпевшие тоже пришли с распечатками блога, и это тоже порадовало. Читают. Значит, когда-нибудь и увидят неоднозначность происходящего.

Было и телевидение. Поскольку для интервью их интересовали потерпевшие и прокурор, ничего объективного от них не жду. :)

Вообще, весь суд крутился вокруг интернета, что придавало происходящему налёт просто-таки пикантного абсурда. :)

В своём слове я опиралась на две статьи УПК РФ:

Ст. 47 п.3. Обвиняемый вправе защищать свои права и законные интересы и иметь достаточное время и возможность для подготовки к защите.

Заключением в СИЗО меня лишают возможности защищаться. Здесь нет даже доступа к Законам (и в передачах они запрещены), и совсем нет уверенности, что письма и заявления доходят до адресатов.

Возможность защищаться, находясь в СИЗО, тесно связана с финансами, ситуация с которыми, мягко говоря, не очень.

Ст. 97. Основания для избрания меры пресечения. В моём случае они отсутствуют все! :)

Скроется от дознания, предварительного следствия или суда.

Очень смешно. Для такого заявления необходимы факты. А их нет. И в прошлый суд, кстати, следователь признал это. 20 месяцев идёт следствие. Никогда не скрывалась, приходила по первому звонку.

А вот в СИЗО, между прочим, следствию сложнее. Тут такие очереди на следственные мероприятия, что следователь из другого города не смог ко мне попасть и уехал. Хочешь скрыться от следствия — прячься в СИЗО! :)

Может продолжить заниматься преступной деятельностью.

Опять смешно. Преступной следователь называет деятельность кооператива. Но кооператив прекратил свою работу, а мои полномочия в нём закончились ещё 26.08.2017. Опять неувязочка.

Может угрожать свидетелю, иным участникам уголовного судопроизводства, уничтожить доказательства либо иным путём воспрепятствовать производству по уголовному делу.

Пункт замечательный, ибо он объясняет всё!

Показания свидетелей только дают доказательства моей невиновности, угрожать им может только следствие. :) Все материалы, документы и доказательства находятся у следствия — обыски, выемки, а местами и действия, похожие на откровенный грабёж, привели к тому, что больше нет нигде и ничего. Если только не фабриковать. :)

Единственная угроза моего нахождения на свободе — только недалёким нарушителям закона в погонах. Факт.

Мою просьбу решить вопрос с разрешением на звонок отцу суд проигнорировал. Напомню, следователь два месяца не даёт разрешения позвонить 88-летнему отцу. Понятно, что интересов следствия тут и близко нет. Самоуправство, превышение служебных полномочий и прочий набор статей буду предъявлять следователю в своих жалобах во все подобающие инстанции. А в случае… необратимых последствий добьюсь реального срока для нарушителя закона. Кстати, в законе есть замечательные слова: содержание под стражей не должно сопровождаться действиями, имеющими целью причинение физических и нравственных страданий.

Порадовало слово прокурора. Возможно, он тоже прочитал материал по предыдущему суду и сделал выводы. И не вышел в своём выступлении за рамки надзорной функции. Ну а то, что нарушений не заметил, так это не его вина. :)

Ходатайство следователя — вот главный номер программы. И замечательно, что что оно своими главными перлами вошло в постановление суда — будет основание привлекать к ответственности «за базар». :)

Думаю, ходатайство следователя Карчавы Д.Д. о продлении меры пресечения когда-нибудь взять за образец, характеризующий как ситуацию в целом, так и уровень профессионализма участников.

Самая страшная тайна следствия — то, что оно не ведётся. Никто ничего не расследует. Вместо этого факты подгоняются под придуманную картину. Если факт не подходит, то что с ним надо сделать? :)

Местонахождение денег не установлено

— Потрясающе! Следствие имеет в своём распоряжении ВСЕ бухгалтерские базы, все документы, все договора за шесть лет деятельности кооператива. (Если, конечно, не уничтожили). И что же? :) Выводы делайте сами.

Потерпевшим тоже дали слово. И они радостно подставились под нарушение закона, обвинив меня в воровстве какой-то кучи миллионов. Опасались давления на свидетелей? Ха! Никакого давления нет и быть не может. Свидетелей надо беречь, именно они подтверждают абсурд сфабрикованного дела.

А вот лжесвидетелям придётся ответить. Их ответственность и мера наказания прописана в законе. Протокол всё зафиксирует, и за оговор с клеветой придётся ответить. И ни возраст, ни умственное и психическое состояние не будут служить оправданием.

Время написать соответствующие заявления в соответствующие органы у меня есть. :) Машина правосудия не знает сбоев. «Коготок увяз, всей птичке пропасть». Жаль, что следователь так грубо использует пожилых людей. В силу возраста многим уже трудно воспринимать и оценивать информацию. И следователь это знает, недаром указывает в каждом ходатайстве: «Потерпевшими преимущественно являются пенсионеры и лица преклонного возраста, то есть представители социально незащищённых, юридически неграмотных слоёв населения.» Следователь знает, о чём говорит. И очень много этими словами говорит про себя и свои методы.

И… жемчужина дня:

Следствием установлено, что Верхова Н.Д., находясь под стражей, продолжает пользоваться информационной сетью «Интернет».

Всё. Туши свет, опускай занавес, … что тут ещё скажешь.

Следователь любыми путями пытается меня опорочить. «Следствием установлено» — эти слова теперь навсегда для меня потеряли свой смысл. Следователь полностью дискредитировал следствие. Теперь вы понимаете — чего стоят слова: «Следствием установлено, что Верхова вела преступную деятельность»?

А как вам главный аргумент ходатайства:

«Верхова в СИЗО пользуется интернетом, поэтому её надо там оставить.

?! :))) Эта фраза сделала мой день!!!

Срок содержания под стражей мне продлён до 05.02.2018. Дата обусловлена датой окончания срока следствия. Продлят срок следствия, продлят и дальше заключение.

Вспоминаю прочитанное в книжка про психопатию: борода у мужчины — признак глубокого внутреннего конфликта, попытка избежать ответственности и боязнь будущего.

Всё.

До новых встреч!

берегите себя.

## Тюремные прогулки. 25.01.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Отдельная тема тюремной жизни, безусловно, прогулка. Это, конечно, совсем не так, как в буржуйских фильмах про тюрьму. Дворик 3×5м. Трёхметровые бетонные стены. Сверху решётка, сетка и егоза. Романтика та ещё. :) Гулять ходят далеко не все. Обычно из большой камеры 3-5 человек. Больше — уже становится тесно.

Прогулка — шанс перекинуться приветствиями с другими камерами — узнать новости, передать приветы и т.д.

Одного человека на прогулку не выводят. Минимум должно быть двое. В плохую погоду это становится задачкой — подбить кого-нибудь гулять.

Зато когда снегопад, то есть чем заняться.

## Тюремные истории, мать-одиночка. 27.01.2018

*#оттуда #тюремныеИстории*

Жила-была женщина. Мать-одиночка. Двое детей двух и пяти лет. Однажды, когда она гуляла с детьми, подошла старая знакомая — попросила сдать драгоценности в ломбард — срочно нужны деньги, а паспорта нет. Ничего плохого не подозревая, женщина сдала драгоценности в ломбард, принесла знакомой деньги и квиточки. Но той не понравилась сумма. Заявление в полицию. Мошенничество ст. 159 ч. 2. Суд. Полгода поселения. До этапа — под стражу в СИЗО. Дети без матери. Будьте осторожны.

## Зачем закон человеку, которого посадили. 28.01.2018

Очень забавный аспект существует, если Вас вдруг, тьфу-тьфу-тьфу, посадили. Вам недоступны законы. Представляете? Да, Вы можете писать жалобы и заявления, но если адвокат Вам не поможет, то шансов использовать законы для своей защиты совсем немного. В передачах допустимо передать УК, УПК. Конституция даже не проходит! :)

Есть небольшая надежда на бандероли. УИК пришёл. А вот распечатки законов — уже нельзя. А ведь далеко не все законы есть в виде книг.

Первое заявление с просьбой предоставить мне текст закона написала ещё 13.11.17. Конечно, результата не было. Видимо, ситуация несколько необычна. :) Ну правда, зачем закон человеку, которого посадили? :)) Но у меня достаточно креативных вариатов. Буду двигаться разными направлениями. Расскажу потом.

:)

Продолжение следует.

*#оттуда, #Тюремные хроники*

## Тюремные истории. Про любовь. 29.01.2018

*#оттуда, #Тюремные истории*

Жила-была девушка. Приличная еврейская семья. Воспитание. Образование. Студентка престижного вуза. Влюбилась. А девушка — загляденье: глазищи, коса, фигурка. И гуляют они с парнем по городу. И ей всё равно — где гуляют, что за друзья парня периодически встречаются им.

Парень оказался распространителем наркотиков. И взяли обоих. Прямо на улице. Она — ни сном, ни духом про наркотики. И парень честно сказал, что она не в теме. Не помогло. Получила 10 лет.

Берегите себя.

## Тюремные хроники. Настроение. 30.01.2018

Да, у меня тоже бывает плохое настроение. Но недолго, и всё равно заканчивается смехом.

Например. Сижу, разбираюсь в документах по уголовному делу, смотрю тексты законов, пишу. Злюсь. Абсурд, беспредел, коррупция, подлость, глупость, продажность — все эти слова относятся к ситуации с преследованием Кооператива и заводят, бесят, злят, огорчают и т.д.

И тут начинает щёлкать замок камеры — кто-то идёт по нашу душу. Встаю из-за стола и начинаю в голос возмущаться: да что такое! Могут меня хоть в тюрьме оставить в покое! Какого чёрта работать не дают! Достали уже со своими посещениями! Тюрьма называется! Проходной двор!

Короче, все ржут, плохое настроение заканчивается.

*#оттуда, #Тюремные хроники*

## Оттуда. Сложности. 31.01.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Сижу за столом, стиснув зубы. У меня несколько минут, прежде чем боль отправит меня на койку. Внутренние голоса весьма разнообразны: к цинику, романтику и аналитику добавился медицинский закадровый голос, использующий все известные медицинские термины, чтобы сбить меня с толку. :)

Пишу сдержанную докладную начальнику СИЗО, пытаясь не свалиться в упрёки и эмоции. СИЗО тут ни при чём. Я просто… не убереглась. Видела сегодня себя в зеркале :) 12 дней нездоровья украсили меня аристократической бледностью :) Зато в пограничных состояниях чудесно ищутся свежие решения старых проблем.

Всё в жизни к лучшему, и это пройдёт. :) Берегите себя.

Продолжение следует.

## Власть — обязанность вести свой народ к лучшей жизни. 01.02.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Власть — обязанность вести свой народ к лучшей жизни.

На сегодня всё.

Берегите себя.

## Шах и мат. 02.02.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Мат в камере — обычное дело. На первый взгляд — непреодолимое. Но, как говорится: «Нет ничего невозможного для человека с интеллектом». :) Задачка имеет пошаговое решение.

Вначале просто реплики, ни к чему никого не обязывающие: «ну давайте хоть утром без мата», «за едой только не надо вот матом ругаться», «не надо на ночь глядя-то». :)

Следуюший этап — фраза:

Дамы матом не ругаются.

Задача: сделать её присказкой. Как только это сказал кто-то, кроме меня — уже победа.

Ну и по мере роста авторитета достаточно только поморщиться при мате в сторону виновницы, чтобы она была повнимательнее. :)

Короче, оно работает. Медленно, но верно.

Это тюрьма, детка.

Берегите себя.

Такие вот замечательные новости.

## Суть обвинения. 06.02.2018

*#SK, #карчава, #оттуда, #репост, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

На прошедшем суде был такой замечательный момент, что напишу о нём отдельно. Судья (дай бог ему здоровья) в полном соответствии с законом спросил у следователя: в чём конкретно Верхова обвиняется. Ему пришлось три раза повторить вопрос, но он всё-таки добился ответа. Даже не знаю, что рекомендовать при прочтении этого: либо стоять — из уважения к судье, либо сидеть — чтобы не упасть от ответа следователя. :)

Итак, следователь Карчава Давид Джумберович из 4 отд. ГСУ ВМД по СПб и ЛО Верхову конкретно обвиняет в том, что:

Проводила собрания пайщиков и агитировала их вступить в Кооператив.

Делала попытки возрождения Кооператива.

Финита! Аудио есть!

Во-первых, ни то, ни другое не является преступлением.

Во-вторых, пайщиков агитировать к вступлению в кооператив не надо — они УЖЕ пайщики!

В-третьих, теперь понятно — кому и как поставлена задача. Поставлена задача следователю — уничтожить Кооператив. Только в этом случае попытка возрождения Кооператива становится преступлением.

Всё. Больше слов нет. Есть бесконечное уважение к профессиоанлизму и терпению судьи. Судье Харитонову за его вопросы по делу — памятник слеплю. Ни один судья до него на это не решался.

## Счастье дышать. 08.02.2018

Перевели меня в некурящую камеру. Это счастье, скажу я вам — дышать. И дышать. И вообще дышать. Утром вдруг почувствовала — насколько вся одежда пропитана табачным дымом. Придётся всё перестирывать. А жизнь-то налаживается! :)

Узбечек, правда, здесь нет — а я только начала разбирать отдельные слова в их говоре. :) Ничего, пока буду повторять изученное. Зато тут есть русско-испанский разговорник! Испанский язык мне всегда нравился. И похож на «родной» французский. Будет интересно.

Берегите себя!

*#оттуда, #Тюремные хроники*

## О чём не напишет Наталия. Друзей пост. 09.02.2018

Перед заседанием суда Наташе опять стало плохо, вызывали скорую, откладывали суд — провели в результате не в десять утра, а в шесть вечера. Врач скорой сделал уколы, выписал лекарства, суд всё-таки состоялся.

Дальше — купили лекарства и пыталась передать Наташе в СИЗО, но получили отказ: «Пишите заявку». Заявка — это неделя. Через неделю, если врач соблаговолит, разрешат заказать лекарства (жизненно необходимые!), и еще через неделю Наташа их получит. Напоминаем, Наталия не осуждена, а только находится под следствием в следственном изоляторе. Интересно, не способ ли это избавиться от неудобных подследственных и закрыть дело?

*#SK, #репост, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

## Этап. 10.02.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Подготовительный период закончен. Информация собрана, проанализирована. Кое-где проведена разведка боем. Ряды проверены. Два дня тупо отдыха. Кровать, книжки, расслабуха. Очень удачно зшла библиотека: Вербер, Мураками и ещё кое-что. :) Планы просчитаны, цифры сошлись, звёзды встали. Передышка перед следующим этапом и… продолжение следует. :)

## Сто дней. Тюремные хроники. 11.02.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Пролетели сто дней с момента ареста. Очень насыщенные сто дней. Можно поставить промежуточную точку и зафиксироваться. Промежуточные выводы:

1. Жить можно и нужно. Уважение окружающих — лишь следствие уважения к себе.

2. Суды могут мало, но по кусочкам можно набрать необходимое. Провоохранительную систему надо почистить. Здоровые элементы там есть.

3. Друзья и близкие перетряхнули свой состав. Много неожиданностей, но стало проще. А ещё тюремные связи сулят интересные перспективы.

4. Остановка, переосмысление, анализ и планирование. Тюрьма — замечательное место для этого.

5. Потребностей у человека значительно меньше, чем он думает.

Примерно так :)

## Обращение в Минюст. 13.02.2018

*#оттуда, #репост, #Тюремные хроники*

Прошу разъяснения по Приказу Минюста РФ от 14.10.05 №189 «Об утверждении правил внутреннего распорядка следственных изоляторов уголовно-исполнительной системы» (ПВР). Список разрешённых предметов /Приложение №2/ противоречит Конституции РФ, Федеральному закону #103-ФЗ от 15/07/95, УПК РФ и здравому смыслу.

Авторучка — единственное число — то есть одна. И что делать, когда она закончится? Ждать поставки из магазина? Которая по закону — не реже 2-х раз в месяц? П.46 Приказа предусматривает выдачу бумаги и авторучки только для написания заявлений, жалоб и подобного. А выстраивать свою защиту, выписывать нужное из документов и законов уже не получится. Да и обеспечение этого пункта требует финансирования. Что тут: плановая растрата бюджета или плановое нарушение закона?

Стержни — не вариант. В магазине стержней не бывает, а ручки одноразовые. Адвокаты и родственники есть не у всех.

Правила должны давать возможность не ограничивать свои права вне зависимости от наличия адвокатов, родственников и материальных ресурсов.

Далее, разрешён карандаш. Тоже один — какое совпадение! В списке разрешённых предметов нет ничего, чем этот карандаш можно было бы наточить. Может, конечно, у меня фантазии не хватает для творческого подхода для нестандартного применения разрешённых предметов. А может, специально заключённых вынуждают нарушать правила: карандаш острый? — нарушитель.

Творческого подхода хватает только на то, чтобы догадаться, что термобельё — это, видимо, футболка с чулками — ничего более подходящего нет. Понимаю, что список писали мужчины, причём одинокие. Попробуйте дать список женщине, поместить её в голое замкнутое пространство и предложить пожить с этим хотя бы месяц. Быстро станет понятно — чего не хватает.

Прошу обратить внимание на один(!) комплект постельного белья. В чём смысл? Как стирать и сушить? Даже третья простыня решила бы проблему. Не говоря уж о том, что пододеяльник — это не роскошь, и почему надо наслаждаться простынями — непонятно.

В чём спать ночью? Пижама не предусмотрена, температура в камерах далека от комфортной. Спортивный костюм или халат — не предлагать. :)

Смотрим на список разрешённых игр: шашки, шахматы, домино, нарды. Чем!? Чем провинились другие настольные игры? Почему нельзя играть в лото, например, или в ГО? Уже похоже на пытки, но про пытки — отдельно.

Книги. Разрешается иметь книги только из библиотеки СИЗО или купленные через администрацию СИЗО. Очередное противодействие Конституции РФ и 103-ФЗ. Ну нет в библиотеке нужных книг.

Те же тексты законов, дающие возможность заниматься своей защитой, недоступны. Соответствующая статья расходов постоянно урезается, законы постоянно меняются. Каждому для защиты нужен свой набор законов. Многие законы доступны только в распечатках, но у Администрации нет возможности распечатывать законы, у неё достаточно забот и без этого.

Подозреваемые и обвиняемые имеют право на образование и самообразование. Но ПВР разрушает и это. Как иметь при себе книги, которые нужны для учёбы, но не продаются в первом попавшемся магазине? Как взять книги в вуовской библиотеке илиу научного руководителя, а главное — как их потом вернуть?

Вопросы, требующие разъяснения:

Чем точить карандаш?

Почему авторучка и карандаш в единственном экземпляре? И что делать при окончании их ресурса и до поступления нового?

Как быстро высушить постельное бельё, не нарушая при этом остальных пунктов ПВР?

Как изменить список настольных игр?

Как легализовать книги, полученные в бандеролях и посылках, без их утраты для владельца?

Почему в разрешённых предметах отсутствует матрас, подушка и одеяло?

Почему запрещён дополнительный источник света? Он не опаснее разрешённого радиоприёмника. Право на защиту и право на здоровье страдают.

Почему возможность физических упражнений и спортивных игр предоставляется только несовершеннолетним? Остальным двигаться не надо? Любой врач подтвердит необходимость физических упражнений для лиц любого возраста.

И главное.

Эти правила не для преступников. Они для подозреваемых и обвиняемых. А посему ограничения прав не должны быть тотальными, не говоря уже о применении пыток в любой форме.

См. УПК РФ — ст. 07 — основания для избрания меры пресечения:

1) Скроется от дознания, предварительного следствия или суда;

2) может продолжать заниматься преступной деятельностью;

3) может угрожать свидетелю, иным участникам уголовного судопроизводства, уничтожить доказательства либо иным путём воспрепятствовать производству по уголовному делу.

Всё. И где тут связь с ограничением вещей? В законе прописано ограничение — 50 кг. на человека. И зачем детализировать трусы с носками и прочим? Как будто, если у меня четыре пары трусов — всё в порядке, а если восемь — то сразу смогу скрыться и оказывать давление на свидетелей.

Все подобные ограничения можно расценивать только как разновидность пыток.

«Содержание под стражей не должно становиться пытками, иными действиями, имеющими целью причинение физических или нравственных страданий подозреваемым и обвиняемым в совершении преступлений». Ст. 104-ФЗ от 15.07.95.

Жду ответов на вопросы и устранения противоречий ПВР Конституции, федеральным законам, УПК РФ и здравому смыслу.

## Страшные тайны следствия. 14.02.2018

Что можно сделать, изъяв ВСЮ документацию организации? Да практически всё. Утаивая часть документов, можно полностью изменить картинку деятельности.

Простой пример. Берём договор займа. И расходный ордер. Получаем: Кооператив выдал займ. А приходный ордер прячем. Что получается? Займ не возвращён, а следовательно — похищен. Вуаля!

И это только из простого. Следователь редко говорит правду, выдавая свои домыслы за факты. При этом абсолютное большинство фактов просто утаивается. Информация по деньгам Кооператива — самая горяча и важная для пайщиков. Но… «местонахождение денег следствием не установлено». Этой фразой легко прикрываться, если цели далеки от законных.

Пайщиков следователь использует втёмную. Заставляет стать потерпевшим, обвинить руководителей, чтобы никто не мешал растащить остатки имущества. Чтобы никто не мог доказать потом наличие обязательств перед Кооперативом. Потому и идёт «видимость деятельности» с арестом долей организаций-пустышек.

Зато самолёт, видимо, пригодится нужным людям — потому и не светится в документах.

Пустое израильское предприятие, созданное на перспективу, пытаются прилепить к версии вывода денег, а документы, по которым Кооперативу должны многие миллионы, прячутся.

И правда, страшные тайны следствия.

*#SK, #карчава, #оттуда, #репост, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

## Письма из СИЗО. 15.02.2018

Задачка на сообразительность: как, находясь в СИЗО, убедиться в том, что отправленные письма действительно отправляются?

Как вообще это устроено? Заключённый пишет письмо, прикладывает конверт, на вечерней проверке отдаёт дежурному. Письма родным и знакомым, заявления, жалобы, ходатайства, в суды, в прокуратуру, президенту, правозащитникам — процедура одинакова.

Дальше должно быть так: письма регистрируются, присваивается исх. номер, конверт заклеивается, подписывается, письмо отправляется.

Что из этого можно проверить? Можно приложить усилия и узнать исходный №. Но это не значит, что письмо отправлено. Весело, правда? Это всё к слову о возможности защищаться, находясь в СИЗО. :)

Но недаром мне тут попалась книжка О'Генри. :)) Решения нашлись, и даже несколько.

Пока я их проверяю на практике, подожду ваших вариантов. Попрошу не забывать, что речь идёт о тюрьме, и Вам тут никто ничего не должен. :)

Берегите себя.

*#оттуда, #Тюремные хроники*

## Турфирмы и ст. 159 УК РФ. 16.02.2018

*#Оттуда, #Тюремные истории*

Жила-была девушка. Организовала турфирму. Была в турфирме собственником и генеральным директором. Дела шли неплохо, клиенты были довольны, рекомендовали знакомым.

Но случилась беда — обанкротился туроператор — это структура с лицензией, под которой работают турфирмы, именно там бронируются чартерные рейсы и всё такое. Обычно их деятельность застрахована, но также обычно банкротство туроператора влечёт за собой банкротство страховой компании, и туристы остаются ни с чем.

Девушка напряглась, но ущерб своим туристам выплатила. Но это не спасло её от внимания органов, которые арестовали её по статье 159 («Мошенничество»). Как вы уже догадались, по версии следствия, она лишь делала видимость работы турфирмы, а на самом деле и не собиралась организовывать отдых честных граждан. И даже многочисленные ходатайства клиентов ничего не изменили. Пыталась бороться за право не находиться под арестом до суда, как предприниматель, но… слова следователя: «У вас тут не предпринимательство, а коммерция».

На основании этого случая писать памятку: «Всё, что Вам надо знать о ст. 159 УК РФ.»

Ну и чтобы окончательно прояснить недопрояснившееся, похожий случай: турфирма, директор, банкротство туроператора — всё так же. Только директор, мужик, кстати, просидев пару месяцев в Крестах, решил, что больше не хочет. И дал показания на двух девчонок-менеджеров, что работали с клиентами в офисе. Дескать, именно они продавали путёвки, а значит, по версии следствия, мошенничали. Директор оказался на свободе. А девчонкам дали по 5 лет. Реального срока.

Берегите себя.

## Слово о пайщике

*#SK, #оттуда, #репост, #Семейный капитал, #уголовное дело*

Во всей истории с кооперативом «Семейный капитал» есть однозначно пострадавшая сторона — это пайщики. Кооператив — это пайщики, пайщики — это Кооператив. Так прописано в законе, такова и логика кооперативного движения: люди собрались для достижения общих целей, объединили свои ресурсы, выбрали руководителей — и вперёд. И если страдает Кооператив — страдают и пайщики. Не может быть конфликта пайщиков и Кооператива — все отношения прописаны в Уставе. Не нравится руководство — собрались и выбрали другое, никто не хочет — скинулись и наняли управленца любого уровня.

Теперь про «Семейный капитал». На собрании 12.11.16 руководство получило безоговорочную поддержку пайщиков. А ещё было принято решение — общими усилиями вытащить кооператив из сложного финансового состояния, в котором он оказался. Было предусмотрено всё: и продажа активов, и заморозка выплат, и взносы на текущую деятельность. Это решение общего собрания — высшего органа Кооператива, эти решения обязательны для ВСЕХ пайщиков. Что же происходит дальше?

В любом коллективе, а «Семейный капитал» — очень большой коллектив — есть люди, для которых «своя хата с краю» важнее всего остального. Таких оказалось сравнительно немного, но достаточно, чтобы поставить на уши «компетентных» сотрудников компетентных органов. Берёт такой пайщик договор об участии в хозяйственной деятельности кооператива и идёт в суд: помогите, денег не возвращают.

И, думаете, суд будет спрашивать уставные документы, штудировать закон о кооперации, уточнять решения Общего собрания? Я Вас умоляю… Суд просто и прямо принимает решение: деньги взыскать. И проблемы, убивающие Кооператив, многократно усиливаются. Нет ресурсов, чтобы оспорить решения судов, увольняются сотрудники, арестовываются счета, описывается имущество.

Внимание органов, привлечённое к Кооперативу этими сравнительно немногими пайщиками-разрушителями, выливаются в обыски, изъятия, а порой и просто грабёж офисов. Жалобы в Прокуратуру, полицию и куда только можно — эффекта не дают. Всё. Акела промахнулся. Теперь выход шакалов.

Идейных разрушителей Кооператива немного. Абсолютное большинство побежало «за компанию».

И впрямь, трудно устоять, когда хочется вернуть свои деньги, а настойчивая реклама юридических фирм [организовавших под видом пайщиков и часть «гневных» групп вКонтакте], зазывает и обещает вернуть деньги. И некому их призвать к ответу за обман: а с каждого обратившегося пайщика они получат от 2 до 60 тыс. руб., заранее зная, что результата не будет.

А тут и уголовное дело, заведённое когда-то по жалобам на Временную администрацию, убившую КПК «Семейный капитал», оживилось. И уже следователи запугивают пайщиков: не напишете заявление против Кооператива — никогда своих денег не получите. Только следователи лучше других знают, что при нынешнем направлении «поиска» виноватых, деньги не получит никто и никогда. И можно тогда мариновать руководителей в СИЗО — ситуация только усугубиться.

Защитить Кооператив (=пайщиков) сейчас некому. Но ситуация пока ещё не безнадёжна. Ещё при должностях те люди, которые допустили грабёж народного Кооператива. Хотя… может, это и делает ситуацию безнадёжной.

Система должна заступиться сама за себя. Вытолкнуть из себя тех, кто сляпал не имеющий отношения к закону приказ о введении Временной Администрации, обозначить лиц, покрывавших Временную Администрацию в их разрушительной деятельности, опять-таки не имеющей отношения к Закону.

Проверить работу «компетентных» товарищей в погонах, которые закрывали газа на все нарушения закона в отношении Кооператива. Отогнать шакалов, добивающих остатки, и защитить интересы пайщиков. Именно защитить десятки тысяч людей, попавших под «обычные» рейдерские захваты. Но предприятие оказалось не обычным — народным.

И слова «обманутый пайщик» — всего лишь элемент пиара, уничтожающий пайщиков, которые попытались, объединившись, изменить страну к лучшему. И слова ЗАЩИТЫ и СПРАВЕДЛИВОСТИ уместны, как никогда.

## Плюсы и минусы кооператива «Семейный капитал». 18.02.2018

*#SK, #оттуда, #репост, #Семейный капитал, #Тюремные хроники*

Время «Семейного капитала» ушло. Вспыхнула и погасла звезда народной надежды на «доступные товары и услуги, меняющие жизнь к лучшему». Ещё не закончилась процедура банкротства Кооператива, ещё не развалилось уголовное дело, фабрикуемое, чтобы скрыть истинных виновников уничтожения народного предприятия. Но уже сейчас можно вспомнить плюсы и минусы «Семейного капитала» и подвести итоги — что дал стране этот гордый и отчаянный кооператив.

Плюсы

Знание. Многое из написанного в блоге Игоря Белоусова, стало своеобразной шпаргалкой на местах для людей, желающих действовать.

Сила. Транснациональные корпорации (а практически все продуктовые сети имеют зарубежных хозяев) оценили силу и скорость, с которой Россия может стать самодостаточной при объединении и координации внутренних ресурсов.

Перспективы. В планах развития кооператива, которые открыто публиковались, было очень многое, что сейчас только начинает планироваться и осуществляться на уровне государства: и поставка продуктов в Китай, и развитие малой авиации, и профессиональные конкурсы по всей старне для отбора будущих лидеров, и крепкие хозяйственные связи в вертикали производства и реализации, и многое другое.

Минусы

Коррупция. Очередной пример, что самое благое начинание без должной «крыши» будет разрушено.

Беззаконие. Слово кооперация стало означать опасность. Кооперативы по всей стране разрушаются вопреки законам.

Беззащитность. Попытка изменить мир к лучшему опять обернулась тысячами пострадавших людей.

Итоги

Многие корпорации выстраивают вертикали и горизонтали производства продуктов.

Люди знают, что есть настоящее молоко и помнят его вкус. Не только с советских времён, а ещё и со времён кооператива «Семейный капитал».

Берегите себя.

## Тюремные хроники. Мотивация. 19.02.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Тюрьма — великолепный мотиватор. Помню, когда Розенбаум писал альбом «На плантациях любви», он запер себя в одной из гостиниц, запретив тревожить. Слышала про специальные туры в хижину, где один, никто с тобой не разговаривает, только еду приносят.

Про экстрим с пребыванием в платной тюрьме последние несколько лет пишут много.

Выводы делайте сами

## Тюремные хроники. Толпа бездельников. 20.02.2018

Мы — толпа бездельников. Запертые в четырёх стенах. По разным причинам. Мы висим на шее у государства, чьи сотрудники в чём-то нас обвинили. Мы, в подавляющем большинстве, абсолютно не опасны для общества.

Домашний арест полностью закрывает требования закона к изоляции обвиняемых, пока идёт следствие. Но следователи как будто мстят детям и родителям. Дома волнуются близкие, отрывают от себя еду, вещи, время, эмоции. Они ни при чём в наших взаимоотношениях с сотрудниками органов, но страдают, в основном, они.

Мы не делаем ни-чег-го. Есть, спать, гулять. Нас следовало бы запереть дома и предоставить самим заботиться о себе. Но мы сидим здесь. На шее у государства. В четырёх стенах. Мы — толпа бездельников.

Такие вот ощущения…

*#оттуда, #репост, #Тюремные хроники*

## Театр абсурда. 22.02.2018

*#карчава, #оттуда, #Тюремные хроники*

Когда-то меня возмущали уголовные дела, которые навозбуждали судебные приставы по рапортам друг другу. Типа один пишет: что-то тут не так — похоже на преступление, а другой на основании этого рапорта возбуждает дело. И суд встал на их сторону: рапорт есть, значит, есть основания для возбуждения уголовного дела.

Но, как оказалось, есть и более замечательные примеры возбуждения уголовных дел. :) Читаю одно Постановление. Отбрасываю подробное название должности и подразделения — от фамилии — одна буква:

«Следователь Х, рассмотрев сообщение о преступлении, оформленное рапортом следователя Х, установил …. далее следует художественное описание дела… и постановил возбудить уголовное дело.»

Вуаля. Сам написал себе рапорт, сам рассмотрел, сам возбудил. Класс!

Берегите себя.

## Подушка. 23.02.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Подустав от взаимоотношений с тюремной подушкой, решила кардинально избавиться от этой проблемы. Подушка напоминала мешок с камнями, которые не поддавались дроблению. :)

Раздобыв ножницы и иголку, приступила к делу. Распорола шов и вытряхнула содержимое. А ещё говорят, в тюрьме впечатлений не хватает! :) Они просто не знают — где искать. :))

Когда-то в местном СИЗО был швейный цех. Вполне логично, что в подушке оказались отходы этого швейного производства. Со временем масса свалялась в плотные комки, размером с детский кулак, так что на предмет, обеспечивающий спокойный сон, сия подушка походила мало. Скорее, была похожа на тренажёр для сохранения бдительности во сне.

Несколько часов работы параллельно с воспоминаниями о Мамлакат Наханговой (пионер-герой, между прочим), и моя замечательная подушечка стала походить на пуховую. Надеюсь на хорошие сны.

Берегите себя :)

## Законы. 23.02.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Общения в тюрьме хватает. Как и времени для него. Люди разные: кто-то случайно оступился, кто-то сознательно делал, а кто-то просто попал под раздачу. И что показательно: абсолютное большинство считает, что зря соблюдали закон. Это страшно. Тюрьма генерит преступников со страшной силой. Я уже не говорю про обмен опытом, информацией, контактами, связями.

Система наказаний разрабатывалась юристами, а они — люди с усечёнными эмоциями. Соответственно, система наказаний не принимает во внимание эмоциональную составляющую человека, а соответственно, — не работает.

Постоянно слышу: «Я больше не хочу и не буду жить честно.» Понимаете? Закон потерял право на обязательность его соблюдения. Недалёкие исполнители в погонах в погоне за «палками» рушат правоохранительную систему страны.

В ближайшее время ждите статью о решениях этой ситуации.

Берегите себя.

:)

## Карма. 25.02.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

Что делают с исполнителями противозаконных действий, когда в них отпадает надобность? Их сливают.

Ввожу новый тэг: чужие мысли. Буду писать цитаты, созвучные теме размышлений. И вот первая:

«…меньше страдает тот, кто раньше других выбыл из игры. Бегемоты во время засухи прячутся в лужах грязи. Воды становится всё меньше, и среди животных вспыхивают тяжёлые драки. В конце концов остаётся один победитель. Он медленно умирает под лучами палящего солнца, окружённый трупами поверженных противников.»

Бернар Вербер «Дыхание богов».

И борода — это далеко не первый звоночек близкого финиша ситуации.

Что делают с исполнителями противозаконных действий, когда в них отпадает надобность? Их сливают.

Берегите себя.

## Анекдот про блоху и 159 статья. 26.02.2018

*#оттуда, #репост*

Есть старый анекдот про студента, который выучил только билет про блоху. А вытащив другие вопросы, переводил тему на выученное.

Порой кажется, что уровень образования ведущих следствие не позволяет им расследовать никакие преступления — вешается ярлык — мошенничество — ст. 159 УК РФ, и всё.

Анализирую документы по ст. 159 у разных людей (спасибо следователю за тюремные связи) и всё больше уверяюсь в существовании методички по этой статье.

Разные районы, разные судьи, разные следователи, разные дела, организации, разная суть дела, … . А формулировки одинаковые. И почерк абсурда ни с чем не спутать.

Ну что ж, друзья, а давайте добудем эту методичку, да опубликуем. И весь фарс, связанный со статьёй 159 будет очевиден. Да и защищать невиновных будет проще. Хуруджи, Титов, Ермаков (и другие ещё), включайтесь!

Имея методичку, можно создать и антиметодичку. :) «Как защитить себя от следователей-двоечников со шпаргалками» :) Правосудие от этого только выиграет, как и гос. власть.

По имеющимся материалам антиметодичку в целом уже написала и отдала в надёжное место. Давайте разыщем исходник и наведём порядок. Берегите себя.

## Дыхание врагов. 27.02.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

«Каждый человек, который на что-то решается, получает три разновидности врагов: тех, кто хотел бы это сделать вместо него; тех, кто хотел бы прямо противоположного; тех, кто ничего не делает — их большинство, и это самые яростные критики».

Бернар Вербер «Дыхание богов».

Очень точно сказано. Тут и про Кооператив, и про тюрьму, и про общество.

Продолжение следует.

## Гимнастика для глаз. 28.02.2018

*#оттуда, #репост, #Семейный капитал, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

Газета в тюрьме — редкость, хотя не запрещено. Читаю.

На переезд правительства СПб из Смольного требуется 20 млрд. руб. Глаза широко раскрываются, представляя эту горку. Может, дешевле купить новое? :)

В Российской армии возрождают политруков. Поочерёдная работа с веками — прикрывая-открывая глаза — попытка осознать цели и задачи замполитов в нынешней обстановке.

Дагестан — чистка элит. Глаза закрываем, представляя дальнейшую перспективу с таким стартом.

СПЧ выступил против арестов в зале суда. Кулаками трём глаза, пытаясь поверить в реальность этого.

Бизнесменов, скрывающихся в Британии, зовут обратно, в обмен на прекращение уголовного преследования. Чередуем взгляды — на небо с облаками и — на решётки с нарами. Вот как! Не сбежавшие не интересны.

Ткачёв — супер латифундист. 640 тысяч Га — не шутка. Вращение глазами по часовой стрелке и против. Капитал обеспечивается властью. Безграничность сопоставима. Отличие планов Кооператива «Семейный капитал» от реализованного некоей империей — два основных: Кооператив — за развитие территорий, а не убийство деревень агрохолдингами, и второе: всё имущество — земли, заводы, магазины и прочее — принадлежит пайщикам. Почувствуйте разницу. Крепко стиснуть веки и подержать так, сохраняя спокойствие.

Реформа судов. Расслабляем лицо. Веки прикрыты. Медленно дышим, обретая надежду на лучшее будущее.

Это была газета «Наша версия» №6/2018.

## Планы. 01.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Уголовный кодекс — настольная книга. Периодически перечитываю. У нас замечательные законы. У уголовного кодекса есть возможности для совершенствования, но и в этом виде он может многое.

Выписала номера статей, по которым собираюсь привлечь следователя к ответственности. Вот они: 127, 128, 201, 285, 292, 293, 297, 299, 301, 302, 303. И мне есть — чем доказывать его деятельность, похожую на преступную. :)

Ст. 19 Конституции Российской Федерации даёт мне надежду на успех. У меня есть время сейчас для этого. Всё у нас получится. Это наша страна. И те, кто не уважает законы этой страны, кто делает жизнь в этой стране хуже — должны нести за это ответственность.

Берегите себя.

## Сергей Азимов. 02.03.2018

Сергей Азимов — Мастер. Нет, не так. Азимов — МАСТЕР. Благодарна судьбе, что выпало учиться у него. Сейчас буду публично в любви признаваться.

Привет, Сергей! Забавно, но пишу из тюрьмы. Не могу ждать выхода — благодарность распирает. «Не могу молчать!» :)

Сергей, ты крут! Крут настолько, что… всё неважно. При обыске дома волновалась за твою суперкнижку. Слушай, не надо красить в золотой цвет торцы книги — ненужное внимание привлекает :)

Настоящее золото — внутри. Книга сохранилась, ждёт меня дома.

Знаешь, чем ты отличаешься от других, кто учит переговорам? Для тебя не нужна победа любой ценой. Иногда честнее уступить. Это начинаешь чувствовать на определённом уровне, когда уже можешь… очень много. Но никто, кроме тебя, не учит этому. Спасибо, Сергей. Считаю, что подозреваемые, обвиняемые, да и осуждённые — много теряют, что не учатся у тебя. :) Азимов, я тебя люблю. Ты — МАСТЕР. У меня впереди — самые трудные переговоры в жизни — мне надо доказать свою невиновность и защитить тех, кто нуждается в моей защите. Я готова. И не устану говорить тебе — СПАСИБО.

*#оттуда, #Тюремные хроники*

## Версия. 03.03.2018

*#оттуда, #репост, #Семейный капитал, #Тюремные хроники*

В детстве у меня была книжка В. Осеева «Васёк Трубачёв и его товарищи». Хорошая добрая книжка. Идеологически выдержанная. Так вот, в секретных записках, когда была опасность попадания информации к врагам, они пользовались простеньким детским шрифтом — добавляли лишние слоги: хве. Подпись Коля выглядела как хвекохвеля. Это я так, к слову. :)

Если собрать воедино в одно место разные версии и намёки на информацию, то получится следующее:

Есть версия, что программа развития регионов кооператива «Семейный капитал» была слишком простой и реальной по сравнению с программами экономического развития, разработанными… солидными группировками.

Есть версия, что всё началось с некой докладной записки, в которой излагались успехи и перспективы кооператива, влияние распространения идей кооперации на распределение бюджетных денег и возможность… нецелевого использования. Для коррупционеров, бандитов и… недобросовестных правоохранителей картинка получилась страшная.

Есть версия, что ЦентроБанк использовали втёмную, опираясь на алчность… некоторых сотрудников.

Есть версия, что операция по уничтожению Кооператива встала заказчикам значительно дороже, чем планировалось изначально. Чистота документов, легальные и открытые финансовые операции, действующие производства, огромная поддержка населения, юридически безупречный документооборот — всё это заставляло идти на всё более грубые нарушения закона с соответствующим возрастанием оплаты исполнителям.

Есть версия, что у 4 отд. ГСУ есть спонсоры, которые прикрывают их косяки и периодически оплачивают нужные материалы в СМИ.

Есть версия, что аппетиты следаков растут, как и страх неотвратимого наказания, и потому дело ведётся всё более небрежно, нарушений УПК и УК всё больше, а самое большое желание участников процесса — исчезнуть и забыть всё, как страшный сон.

Такие вот версии. Версии про хороших скрытых участников процесса будут позже.

Берегите себя.

## Женская тюрьма — реалии. 04.03.2018

*#оттуда, #репост, #Тюремные хроники*

Всё, что вы хотели знать о женской тюрьме и не знали — кого спросить. :) Расскажу про СИЗО. Здесь содержатся подозреваемые и обвиняемые.

1. Есть ли у заключённых ножи, ножницы, оружие?

Всё, что есть, тщательно досматривается и изымается. Ножницы и иголку можно брать под роспись днём у сотрудников. А оружие… оружием может быть всё, что угодно, поэтому табуретки привинчены к полу, и всё в малейшей степени подозрительно изымается. Так что безопасность на уровне.

Есть ещё одно обстоятельство, отличающёё женскую тюрьму от мужской: женщины — истерички. :)) Поэтому и что-либо запрещённое возможно, наверное, только в одиночной камере. Если женщин больше одной — заложат и гордиться будут. :)

2. Можно ли сбежать?

Сбежать можно откуда угодно. Фильмы, правда, всё усложняют. :) Но тут другой вопрос — есть ли смысл в побеге? На мой взгляд — никакого. Совсем. Проще было сбежать раньше. И вообще…

бежать, скрываться, прятаться — это всё на радость врагам. Разговаривали как-то с девчонками про побеги — общее мнение — нет смысла. Угу. Нас и здесь неплохо кормят. :)

3. Как питание?

Очень неплохое питание для такого заведения. С голоду точно не умрёшь. Многие толстеют :) Нет свежих овощей-фруктов и сладкого. Мясо, рыба, каши, супы — всё съедобно и в достаточном количестве. Дают и молоко ежедневно: 100 г. Из него можно и творог делать. Так что за питание можно особо не волноваться.

4. Правда ли, что есть побои и пытки

Нахождение в тюрьме, само по себе — та ещё пытка. :) Слушая рассказы «старших товарищей», понимаешь, что ситуация в СИЗО изменилась к лучшему и очень сильно, по сравнению, скажем, с тем, что было ещё 5 лет назад.

Никого никто не бьёт. Сотрудники очень внимательно относятся к любым следам на теле заключённых: синяки, порезы, ожоги и т.д. отсматриваются и фиксируются. Неадекватных сотрудников, о которых рассказывают «старожилы», убрали, бывалых стараются держать отдельно от новичков, так что физические угрозы минимальны. Конфликты в камерах тоже отслеживаются и гасятся по мере возможности.

Куда улучшить ситуацию — есть всегда. Потому что люди разные и ссоры в камерах неизбежны. Да ещё и среди женщин. Да ещё в «критические дни» :) Но если себя уважаешь и можешь за себя постоять — бояться особо нечего. Вот. Следите за своей физической формой! :)

5. Бытовуха

Душ — раз в неделю. Как и смена белья. Бельё казённое — страшненькое, но чистенькое. :) Стирка возможна в тазике в камере — сложновато, но реально. Сложнее с сушкой. Развешивать что-либо запрещено, да и сохнет плохо. Но и это решаемо. «Вонючки» в камере не одобряются. Не можешь поддерживать личную гигиену — научат, не хочешь — заставят. :) Так что чистенько кругом. Дежурство с мытьём и протиранием всего — вообще фетиш. :) Всё очень тщательно и несколько раз в день.

6. Прогулки

Заключённый имеет право на прогулку ежедневно не менее часа. Уже была инфа про прогулки. Забавно, но иногда проблема — никто не хочет гулять. Лень, самочувствие, отсутствие нужной одежды — отговорки могут быть любыми. Какая бы прогулка ни была — она нужна. Свежий воздух, проход по лестнице, вообще движение. Правда, есть люди, месяцами не гуляющие. Это страшно.

7. Наркотики и выпивка

Из-за озабоченных на этой почве — столько проблем при передачах. Как только ни пытаются передать. Тем более, что наркотики — вещь ни разу не объёмная, потому правила передач столь маразматичны порой. И в общем-то успех есть — обдолбанных в камерах нет. Как и выпивки. Перед праздниками бывает — специально ищут брагу, но… вспомним, что женщины стучат. :))

8. Телефон и интернет

В женской тюрьме среди новичков этого в принципе быть не может. Струсят и заложат сразу же. Бабы. :)

9. Времяпрепровождение

Видеокамер в камерах нет, а если бы были — была бы куча безнадёжных картинок: спать, болтать, курить, читать, смотреть телевизор (если есть) — вот практически и всё, что можно было бы увидеть из основных занятий. Единицы занимаются поддержанием спортивной формы. Ещё меньше — занимаются самообразованием. Атмосфера животной жизни и морального разложения. Это и к вопросу о пытках. :)

10. Медицина

С этим очень сложно. Лучше не болеть. А если болеешь — надо сражаться за своё здоровье. И это не всегда в силах сотрудников СИЗО — помочь. Врачей практически нет, стоматология доступна только в форме удаления зубов. Да, это всё нарушения закона, но на уровне СИЗО их не решить. Прокуратура тоже пока бессильна. Это выправится усилиями жалующихся, но небыстро. Так что лучше на медицину не надеяться и самим не плошать. :)

11. Что нельзя

Нельзя опускать руки и падать в слабость. У слабых жизнь невесёлая. Очень невесёлая..

12. Рекомендации :)

Быть сильными и здоровыми. Уметь вести переговоры и идти на компромисс. Обладать знаниями, полезными окружающим. Иметь хорошее настроение. Чувствовать других. Уметь прощать. Быть самодостаточными.

И это не только для тюрьмы! :)

Берегите себя! :)

## Не бывает действия без последствий. 05.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

Когда вы совершаете что-либо, думайте, как это отзовётся во времени и в пространстве. Не бывает действия без последствий. Когда вы плохо говорите о ком-то, вы меняете его в худшую сторону. Когда вы боитесь или лжёте, вы создаёте страх и превращаете ложь в реальность.

Бернар Вербер «Дыхание богов»

Мир тюрьмы усиливает как недостатки, так и достоинства. Чёрно-белый тренажёр. И генерируемое здесь добро очень быстро даёт результаты.

## Аграрный. Дело за малым. 06.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Я пошла учиться в Аграрный, уже обладая солидным опытом и собственного хозяйства, и управления агрофирмами кооператива. И… получила огромное удовольствие, укладывая свои практические знания в систему и заполняя пробелы.

Что думаю. Написать серию книжек для детей (да и взрослым не помешает), содержащую практическую информацию по физике, математике и сопутствующим дисциплинам. Тогда и школьная программа будет приносить удовольствие.

Название серии придумала. Дело за малым. :))

## Им можно предоставить интеллектуальную свободу, потому что интеллекта у них нет. 07.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

Начну с банальности: «Смотрю я на нынешнюю молодежь…» :)

В тюрьме, правда, определённая выборка. :)) Камеди клаб они смотрят, а Уральские пельмени — уже нет — «сложно у них там».

«Каких взглядов придерживаются массы и каких не придерживаются — безразлично. Им можно предоставить интеллектуальную свободу, потому что интеллекта у них нет».

Дж. Оруэлл «1984»

## Заблуждение, свойственное всем нам. 08.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

Совершенно неожиданно нашла подтверждение своим мыслям про следователя. :)

«Считать метафору доказательством, поток праздных слов источником истины, а себя оракулом — это заблуждение, свойственное всем нам».

Поль Валери.

## Система. 09.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

Система нуждается в свежей крови, иначе она обречена.

«Яйцеклетка выбирает тот сперматозоид, чья генетическая формула больше всего отличается от её собственной».

Бернар Вербер «Империя ангелов»

## СИЗО. Пять вопросов прокурору. 10.03.2018

*#оттуда, #репост*

СИЗО — очень интересное заведение, полное противоречий. Порой это вызывает искреннее восхищение. СИЗО контролируется прокуратурой. Есть моменты, которые на уровне СИЗО не могут быть решены. Отсюда и появились —

Пять вопросов прокурору

1. Лимиты воды и врачи

Кто устанавливает лимит употребления воды в СИЗО? Именно этот параметр не позволяет установить режим посещения душа чаще раза в неделю. Что это значит для физиологии и здоровья женщин — объяснять не надо. Условия в камерах позволяют заботиться о гигиене только вопреки им. :)

Стоматологическая помощь женщинам в СИЗО-5 недоступна. Проблема достаточно массовая. Зубная боль, не дающая спать по ночам, флюсы и прочие радости. В крайнем случае можно вырвать зуб — другого тут нет. А лишиться зуба, который можно вылечить — неправильно. Но проблема не решается, зубы прореживаются, закон нарушается. Право на медицинское обслуживание не исчезает с арестом.

Врачи практически недоступны. Люди месяцами пишут заявления с просьбой о враче. И чтобы вам ни говорили, люди умирают тут. Люди. Умирают. Да. Умирают без медицинской помощи.

2. СИЗО — следственный изолятор. Но человек, находящийся здесь, порой недоступен для следователей и адвокатов.

Люди занимают очередь вечером, ночью отмечаются — чтобы попасть. КО мне приезжал следователь по уголовному делу из другого города. Не попал. Уехал обратно. Абсурд! Та же история с передачами. Нет нужного числа сотрудников и помещений? Увеличьте диапазон времени работы. Сделайте возможность платно — без очереди. Хоть лампочек купите в СИЗО — половина не горит. Но это я уже к слову. :)

3. Заключённым доступны два сервиса: магазин и ФСИН-письмо.

Магазин

При такой наценке можно бы и повнимательней работать :) Заказать можно раз в неделю. Заказ никогда не выполняется полностью — нет в наличии. При том, что для многих магазин — единственная возможность приобрести необходимое, а про возможность передач уже писала — такая работа магазина требует внимания прокуратуры и ФАС. Расширить ассортимент до разрешённого списка вещей и продуктов, сделать возможность заказа каждый день, организовать доставку того, что отсутствует в магазине — это минимум нормальной работы.

Наверное, никого не удивит, что магазин не относится к СИЗО никак. Магазин — ФГУП «Промсервис» ФСИН России ФКУ СИ-5.

ФСИН-письмо

Установка цен на письма и фотографии требует пристального внимания прокуратуры и ФАС. Пошарившись в интернете — легко можно проследить — кому в карман текут эти деньги.

Как минимум, фотографии должны быть цветные.

А как максимум — должна быть возможность для заключённых использования этого сервиса с оплатой с лицевого счёта.

Недоступность платного подцензурного варианта использования электронной почты удивляет.

4. Сила и приговоры

Многие проблемы не были бы столь острыми при снижении населения в СИЗО. А вот интересно. Навскидку — половина заключённых неделями ждут приговоров и извещения о вступлении в силу. То есть, проходит суд, выносится приговор. Человек в СИЗО. Ждёт. Ожидание приговора не отвечает никаким законным нормативам. Проходит месяца полтора. Приходит приговор. Случай с апелляцией — отдельный, но если апелляция не пишется — начинают тянуться месяцы ожидания бумаги о вступлении приговора в силу. После этого сразу идёт отправка на зону.

Обычно объясняется это перегрузом судов и прочей ерундой. Родственники, адвокаты прилагают кучу усилий для ускорения процесса. Иногда это помогает.

Прокуратура должна помочь более необратимо. :)

5. Доступность законов

Нет возможности получить текст нужного закона даже для ознакомления. Возможность выстроить свою защиту, находясь в СИЗО, крайне ограничена. Передача в передачах возможна только УК и УПК. Конституцию уже нельзя!

Права на защиту нарушаются. Прокуратура в силах изменить ситуацию. Это был больше, чем намёк. :)

Прокуратура. Око государево. Наивно допускаю мысль о том, что эти нарушения законов им неизвестны.

А потому.

Пять вопросов прокурору.

:)

## Следователь и статья 29 Конституции РФ. 11.03.2018

*#карчава, #оттуда, #Тюремные хроники*

Следователь постоянно говорит, что я его дискредитирую. Я имею право защищаться любыми, не нарушающими закон, способами. А ещё есть моя любимая ст. 29 Конституции РФ. Все 5 пунктов *.

А следователь, если будет писать тупые документы с абсурдом вместо законности, то отношение к следствию будет негативное и без этих публикаций. И не надо перекладывать с больной головы на здоровую. :))

*) Статья 29 Конституции РФ

## История и современная цензура. 12.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

Если вспомнить историю, то Россия много раз спасала и Европу, и Америку, от больших проблем. Сколько войн предотвратила Россия, сколько стран спасла от разорения. Только… есть ли что

вспомнить нынешним молодым, которые и в библиотечном каталоге запутаются. Что уж говорить про историю.

Так отныне действует цензура. Не запретами, а перенасыщением. Лавина пошлости погребает под собой всё, что могло бы представлять интерес для публики.

Бернар Вербер «Империя ангелов».

## Тюремный словарь. 13.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Особое место, безусловно, имеет особый язык. Здесь это не настолько всеобъемлюще, в отличие от мужских зон, но общепринятый набор есть.

Итак.

Шконка, шконарь — кровать. Тут они двухъярусные, есть ещё 1957 года выпуска. Сделано на века. :)

Кормушка, кормухан — окошко в двери камеры, через которое поступает еда, передачи, документы, лекарства. Снаружи не имеет замка, только засов. Поэтому доступно и операм, и фельдшеру, и библиотекарю и т.д.

Шнифт — глазок в двери камеры. Это полоска со стеклом примерно 3×20 см, закрытое железкой снаружи. Сотрудники с коридора поднимают железку и смотрят за нами. :) Ночью — каждый час. Есть сотрудники бережные, тогда это нас не тревожит. А есть… другие. Тогда скрежет на шнифте и стук закрытия вносит разнообразие в наши сновидения. :)

Галёра — это чудесный коридор с камерами. Первая галёра — первый этаж, ну и так далее. И место романтичное, и название. Соответственно, дежурный сотрудник по этажу — галёрная. Галёрная — основной, а часто и единственный контакт для заключённых. Именно она реагирует в случае чрезвычайных ситуаций, выводит на прогулку, болтается на этаже, мешая перекрикиваться камерам. :)

Дачка — передача от друзей и родственников. Всегда праздник.

Малява — письмо. Есть внешние — через почту России, есть электронные, через ФСИН-письмо, а есть внутренние — по тюрьме. У внутренних — очень много вариантов перемещения. Подробности писать не буду :) Потерять, сдать или передать маляву — страшное западло. И расшифровывать не надо. :)

Баланда — это та еда, которая передаётся нам три раза в день. Вполне себе ничего так. Жить можно. Есть, конечно, иногда отдельные косяки типа прогорклой каши, ну ничего — голодание тоже полезно. :)

Человек, раздающий баланду — баландёр. И хотя возможности у него самые широкие, в силу обязательного контакта с каждой камерой, рисковать ради кого попало он не будет. За ними следят и чуть что — накроется их условно-досрочное освобождение. Баландёры — из ОПМ.

ОПМ — «отряд помощников милиции». Сейчас ещё употребляется название «хоз. отряд». Это те, кто остался отбывать наказание в СИЗО. Работают с утра до вечера на всяких хоз. работах. Разваливающаяся сантехника и электрика — тоже их рук дело. :)

Решка — очень просто. Это решётка. Когда в самом начале сотрудник мне сказал — двигай к решке, я зависла конкретно, пытаясь осознать суть команды. Пока не повернулась к сотруднику, шарахнув его своими круглыми глазами. Тогда мне любезно уточнили, что имеется ввиду. :)

Локалка — это решётка промежуточная. На этаже, на выходе из здания, с прогулки, отгораживающая сектора территории — короче, локальное заграждение. Грохот локалки обычно возвещает о появлении кого-то на этаже. Те, кто дежурит на шнифте, отслеживают это и предупреждают в камере.

Чифир — угу, это тот самый легендарный напиток. Далеко не каждый может сварить правильный. Но… гадость редкостная. :)

Кони — это передача/письмо через окна. Есть целый ритуал с использованием верёвок, носков, водопроводных труб т прочего, который позволяет это делать. А уж как это рискованно, романтично и захватывающе, даже рассказывать не буду, и так ясно. :)

Вот, вкратце, всё, что необходимо знать поначалу. :)

Дай Бог, чтобы Вам не пригодилось, но если что, будьте готовы. :)

Берегите себя.

## Испанка. 14.03.2018

*#Оттуда, #Тюремные истории*

Жила-была женщина. Спокойно жила в Испании. И дёрнуло её поехать в Россию. :)) Прилетела. Стоит, ждёт багаж свой. Хороший примечательный испанский пакет. Берёт она пакет с ленты, и… налетает на неё узбечка. Кричит, вырывает пакет из рук. Обе по-русски совсем не. Горячая южная кровь. Гордая Испания. Испанка даёт бой. С криками и ударами. Малые народы тоже не лыком шиты.

Подтянулась полиция. Досталось и полиции испанских выражений и не только. Повязали обеих. Да и пакеты приобщили.

Два одинаковых пакета. Испанке не повезло — схватила чужой, да ещё и драку со скандалом закатила. Не зная ни слова по-русски — обидела всех. Загремела на нары. Три месяца в тюрьме, четыре штуки евро на адвоката — цена темперамента.

Берегите себя. :)

## В мире животных. 15.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Перечитала ещё раз правила содержания животных в тюрьме. Животных содержать нельзя. Ладно. Птиц, видимо, можно :) Но клетки нет в списках разрешённых предметов. Подумала ещё немного и объявила сокамерницам о своём горячем желании завести… змею! Клетка ей не нужна,

да и не животное оно ни разу. Представили себе жизнь со змеёй и разные ситуации. Ржали весь день. Змейские планы повеселили. Не место красит человека :)

Продолжение следует.

## Если приходится всё начинать сначала. 16.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

У нас сейчас, как в том анекдоте «Всё было». :))

Но это не пугает. Впереди — гораздо больше.

«У человека есть одно замечательное свойство: если приходится всё начинать сначала, он не отчаивается и не теряет мужества, ибо он знает, что это очень важно, что это стоит усилий».

Рэй Брэдбери, «451° по Фаренгейту»

## Вечная история. 17.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Был такой человек — Савва Мамонтов. Создавал первую в России сеть железных дорог. Строил, выкупал и реконструировал заводы. Решил создать концерн для объединения в одних руках всего цикла: от производства техники и рельсов до строительства, собственно, дороги.

А дальше? Оказался под арестом по обвинению в незаконной передаче средств из одного предприятия в другое.

Суд оправдал Мамонтова, но на свободу он вышел банкротом. Принадлежавшие ему железные дороги отошли казне — именно на этом погрели руки нечистоплотные чиновники, прикрываясь интересами государства. А между тем, развитие России было серьёзно приостановлено этим судебным процессом над Мамонтовым.

Ничего не напоминает? :)) Есть многое на свете, друг…

## Запреты и логика. 18.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Эти два понятия не дружат от слова совсем. Зайду с козырей: нельзя одноразовую посуду. И это смешно. Во-первых, есть гораздо более опасные разрешённые предметы, а во-вторых, в наборах, которые выдают заключённым при поездках в суд, есть одноразовые ложки и стаканы. Наборы выпускаются специально для тюрем. И, прикиньте, как забавно наблюдать извлечение из них «запрещённых предметов».

Запрещена стирательная резинка. При том, что простые карандаши допустимы. Спросила начальника СИЗО — почему. Ответ замечателен: стирательные резинки можно использовать для изготовления печатей и штампов (!!!) Блеск! Да если понадобится — я из огурца печать сделаю! Только тс-с-с. А то огурцы запретят. :)

Свёкла запрещена. Типа требует термической обработки. А я, кстати, тут не единственная, кто любит сырую свёклу. :)

Про запреты буду периодически восхищаться, а пока — точилки запрещены! То есть карандаши можно, а точить его нельзя. При том, что у всех всегда карандаши заточены. :))

Берегите себя.

## Арестовали 500 р. 18.03.2018

*#SK, #оттуда, #Семейный капитал, #Тюремные хроники*

Приходил следак. Удивил своим появлением. Единственный раз за два месяца. Ознакомил с постановлением Невского районного суда о разрешении наложения ареста на имущество — доли в ООО «Агрокомплекс» «Семейный капитал». Это ООО было создано когда-то как акционерное общество для сотрудников, чтоб те, кто работал на благо кооператива, обладали дополнительной собственностью. В соответствии с законодательством ОАО было преобразовано в ООО. Доля 0,5% стоит 500 р., и никаких ни активов, ничего. Пошла атака на кооператив — задуманное не было осуществлено.

Только представьте: у меня арестовали 500 р.

Но это же целая работа следаков, куча бумаг, постановление суда… А на деле — пшик.

Понравились слова из Постановления:

Верхова и Ко «в целях совершения хищений денежных средств граждан путём создания видимости реальной и легальной деятельности КПК И КНПО «СК» приобретали на похищенные у граждан средства недвижимое имущество, которое оформляли в собственность специально учреждённых юридических лиц».

Наверное, как создавать видимость — следствие знает лучше всех. А то, что все юр. лица принадлежали кооперативу, а значит — пайщикам — стараются не замечать. Курят :))

Берегите себя. :)

## Народная мудрость. 20.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

Жизнь (и не только в тюрьме) состоит из компромиссов, нужно всего лишь понять для себя их допустимые границы.

«Как гласит народная мудрость, горбун не видит твоих бородавок, если ты не увидишь его горбов».

Андрей Кивинов «Целую, Ларин».

## Детдомовка. 22.03.2018

*#оттуда, #Тюремные истории*

Жила-была девочка в детдоме. Вышла. С квартирой не сложилось — чиновники всегда хитрее детей. Устроилась на работу администратором в баню. Работа нехитрая.

При бане, как водится, были и девушки. Тема отдельная со своим хозяином. И угораздило девчонку поцапаться с одной из девушек. Уже сама не помнит, по какой ерунде. Та, недолго думая, решила отомстить — написала заявление — принуждение к занятию проституцией. Ст. 240 УК РФ. Хозяин радостно подтвердил, что девушки не его, а девчонки. И отправилась девчонка в СИЗО с такой экзотической статьёй.

Восемь месяцев шло следствие и суд. Дали год. Скоро выйдет. Опять будет искать работу.

Берегите себя.

*#оттуда, #Тюремные истории*

## Обращение И. Н. Белоусова к пайщикам, март 2018. 22.03.2018

Дорогие пайщики!

Да. Случилось непредвиденное и нас, честно работающих, решили угробить. Всё просто потому, что мы показали реальный путь развития, реальную возможность управлять самим своей судьбой, стать хозяином.

Это-то и испугало кого-то! Но ничего. Мы уже победили.

В этот момент, когда меня арестовали по сфабрикованному делу — стало ясно: враг в панике и начал откровенно попирать законы. Из-за страха. А уж когда арестовали мою семью, а затем Наталью Верхову — это означает, что враги расписались в своей беспомощности.

Теперь, что я вам хочу сказать:

Мы (я, семья моя, Наталья Верхова) ни в чём не виноваты. Скоро будем на свободе. За год построим всё заново. Всем до единого пайщикам КПК «СК» и НПО «СК» начнутся выплаты. В полном объёме. Вынужденный простой будет оплачен по-честному: как договаривались. Никто из пайщиков ничего не потеряет в деньгах. Все проценты, как если бы ничего не случилось. Держитесь. Правда за нами, а значит и Победа. До встречи, дорогие друзья!

Белоусов Игорь Николаевич

*Март 2018*

*#SK, #оттуда, #репост, #Семейный капитал, #уголовное дело*

## Системные ошибки: конверты. 23.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Всегда смешно, когда система закольцовывается и готовых решений у неё нет.

Итак, задача: отправить письмо. Если у вас есть конверт с маркой — не проблема. Если у вас нет ни денег, ни конвертов — тоже решаемо — пишется заявление, и письмо отправляется за счёт заведения. В моём случае сложилось иначе: деньги у меня есть, но в магазине, доступном заключёным, конверты с марками отсутствуют. Весело! Тупик!!

Решения пока так и не нашли, но любезно пообещали «попробовать решить».

Победила дружба: мне родные прислали бандероль с конвертами. Ну всё. Письма полетели. Мне есть — что сказать миру! :)

## Запретить заключение в СИЗО людей, не судимых ранее и физически не опасных обществу. 25.03.2018

*#репост, #Тюремные истории, #уголовное дело, #чужие мысли*

Попасть в тюрьму легко: заявление недоброжелателя, конкурента, обиженного знакомого — и следователь пишет ходатайство о заключении под стражу. Суды обычно не возражают… и всё: пока суд не вынесет приговор по делу — люди томятся в СИЗО.

Требуем запретить заключение под стражу как меру пресечения для:

1. ранее не судимых;

2. не представляющих физической опасности для общества.

Это позволит:

— Разгрузить тюрьмы — сейчас они переполнены.

— Сократить бюджетные расходы — обвиняемые и подозреваемые месяцами и годами содержится за государственный счёт в ожидании приговора.

— Защитить невиновных людей от давления следователей — сейчас признательные показания в основном выбиваются в тюрьмах.

— Прекратить процесс криминализации общества — после содержания в тюрьме люди выходят, не уважая Закон, обученные преступному опыту.

— Дать возможность защищаться — в тюрьме нет такой возможности.

Пока человек не осужден, он не является виновным, но содержание в тюрьме — уже наказание, и это наказание серьезно влияет на физическое и психическое здоровье обвиняемых и подозреваемых.

Из-за того, что люди уже сидят, судьи выносят реальный срок там, где можно обойтись условным.

Люди, помещенные в тюрьму, лишаются возможности себя защищать: нет доступа к информации, к литературе, консультациям, даже возможность общения с адвокатами не обеспечивается ввиду переполненности тюрем.

Работа следствия:

1. работа со свидетелями;

2. сохранность улик;

3. доказывание виновности.

— НЕ ИСПОЛНЯЕТСЯ.

Следователи сажают людей в тюрьму и прекращают действия с ними — просто ждут, когда тюрьма сломает обвиняемых и подозреваемых.

Люди теряют работу, жилье, перестают платить налоги, зарабатывать пенсию, дети остаются без родителей, получая моральную травму на всю жизнь. Домашние животные погибают.

Люди теряют большую часть своих прав, хотя до приговора суда они — не преступники, а просто жертвы непрофессионализма следователей.

Подпишите и поделитесь, если хотите изменить ситуацию для сотен тысяч людей, несправедливо находящихся в тюрьме уже сейчас. При существующей системе среди них в любой момент можете оказаться Вы сами и ваши близкие.

Примеры — в репортажах из СИЗО: freeverhova.ru.

Пока беда не затронула вас и ваших близких — помогите тем, кого она не обошла… Прочитать, подумать и подписать — вам 2 минуты. А для кого-то это свобода, здоровье и жизнь. Подписать петицию

## Всё уладить. 24.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Всё уладить с помощью зонта действительно можно. Особенно если творчески подойти к процессу. :))

После общения со всякими… убийцами эта песня в исполнении Долиной в трюрьме звучит как никогда свежо.

Берегите себя.

## Тюремный огород. 26.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

При передачах овощи режут, что со страшной силой мотивирует их к прорастанию. Но проращивание лука и чеснока сотрудниками «не приветствуется». Могут отнять и выкинуть. Тут забавно. Через некоторое время огород переходит в категорию еда-зелень и уже не вызывает эмоций при шмонах.

Нашла решение: контейнер с водой, в нём — губка для мытья посуды. :) На губке чеснок чувствует себя превосходно — не гниёт и сосёт воду.

Вкусно и глаз радуется.

Берегите себя. :)

## Радости жизни. 28.03.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Окно моей камеры выходит на север. Солнца нет и не будет. В прогулочных двориках — высокие бетонные стены, узкое пространство — туда солнце тоже не достаёт. Простые радости связаны с

волей: письма, передачи, посылки, свидания. Но это есть не у всех. Самый простой путь — искать радости во сне и в еде. Большинство идет этим путем.

Сделайте паузу. Подумайте — какой источник радости вы сможете найти в маленьком замкнутом пространстве при практически полном отсутствие ресурсов извне.

Есть два источника радости, не зависящих от поступлений и доступных всем и всегда. Всё просто и банально.

1. Физические упражнения. Помимо общеизвестного появления эндорфинов вследствии движений, физические упражнения решают огромное количество чисто тюремных заморочек:

— Целеполагание — задать себе физические параметры и к ним стремиться — отличное лекарство от депрессии

— Занятость — долгие свободные часы легко пролетают;

— Статус — занятие физухой, особенно постоянное и упорное, повышают статус в камере — иногда не сразу :)

— Настроение — в здоровом теле здоровый дух — это понятно;

— Здоровье — зачастую физические упражнения — это не только самый надёжный, но и единственный способ сохранить здоровье;

и многое другое.

2. Интеллектуальное счастье.

Тут все виды удовольствий: хорошая книжка, разгаданная загадка, созданный текст, решённая задача, творчество и т.д.

И пара цитат напоследок:

«Долг каждого человека — культивировать в себе чувство радости».

Б. Вербер «Империя ангелов»

«Если настало время злых чудес — надо найти в себе мужество остаться добрым».

С. Лукьяненко «Черновик»

## Председатель правления. 30.03.2018

*#SK, #карчава, #оттуда, #Семейный капитал, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

Председатель правления Кооператива — так называлась моя должность. При всем сходстве с должностью генерального директора — есть и различия. Председатель правления подчинён общему собранию пайщиков кооператива и Совету Кооператива. Сфера деятельности председателя правления — обеспечение финансово-хозяйственной деятельности организации. Общее собрание — орган коллегиальный. Порядок принятия решений детально описаны и в федеральном законе, и в документах кооператива.

В промежутках между общими собраниями — главным органом кооператива является Совет Кооператива. Совет — тоже коллегиальный орган, все его функции прописаны в Уставе. Ни один член Совета (а члены Совета избираются одним общим собранием выборщиков), включая Председателя Совета — ничего в одиночку сделать не может. Кооператив, однако. Решения Совета оформляются протоколами. И вот именно эти протоколы, да протоколы общего собрания пайщиков и определяют всю работу председателя правления Кооператива.

Когда меня арестовали, многие удивились. И дело даже не в абсурдности наездов на Кооператив. Деятельность Председателя правления слишком не самостоятельна и зарегламентирована. Даже статьи 42 УК РФ достаточно, чтобы не трогать должностных лиц Кооператива. Ведь и у Председателя Совета Кооператива — аналогичная ситуация.

Но безграмотность следователя, нежелание ни изучать, ни понимать кооперативное законодательство и документы Кооператива приводят к тупым арестом и разрушениям успешных действующих предприятий. Карчава не один такой «умник». :)) Председателей Советов и председателей правления кооперативов в СИЗО хватает. Уровень юридической грамотности тех, кто должен служить закону, позволяет не только арестовывать, но и приговаривать руководителей кооперативов к реальным срокам. Кооперативы сильно отличается от ООО. Однако неграмотных это не смущает. И только через много месяцев, когда дело доходит до Верховного суда, дела пересматривается.

Но почему-то кажется, что грядут перемены. И за соблюдением закона будет надзирать не только Верховный суд. А значит, появится надежда на возможность работать в своей стране на благо страны.

## Следователю 4 отдела Д.Д. Карчаве на №3/187800663809 от 26.02.2018

30.03.2018

*#карчава, #Семейный капитал, #уголовное дело*

Главное следственное управление

Санкт-Петербург, Лиговский, 145, 191119

Следователю 4 отдела Д.Д. Карчаве на №3/187800663809 от 26.02.2018.

Моё заявление в СК РФ касается преступных действий работников Банка России В.В. Чистюхина, А.М. Медведева и временной управляющей О.В.Романчук, но не руководителей кооператива, как представлено.

На заявление о совершённом преступлении может быть два ответа: постановление о возбуждении уголовного дела и постановление об отказе в возбуждении уголовного дела с указанием порядка обжалования в случае отказа. В противном случае действия следователя характеризуются как уголовно наказуемое деяние – укрывательство преступлений.

Следователями, которые принимали присягу на верность делу и Родине и нарушившими её, будут заниматься военные следователи. Это письмо будет приобщено к делу как вещественное

доказательство. В письме указано, что следователь знал, понимал, мог исправить, прекратить уголовное дело, но не сделал, продолжал совершать преступные действия, преследуя свои цели.

Отсутствие оценки Приказа Банка России №ОД-3853 от 31.12.2015 года и Указания Банка № 3531-У от 12.01.2015года указывает на поверхностное рассмотрение дела. Это Указание и Приказ созданы после конфликта между работниками Банка и руководителями КПК «Семейный капитал», которые отказались исполнять завышенные требования Банка. Преступный умысел прослеживается, что является квалифицирующим признаком умышленного преступления. Оснований для назначения временной администрации не было, вмешиваться во внутренние дела кооператива запрещено законом. Банк имеет право регулировать финансовые нормативы, т.е. требовать достаточное количество резервов в кооперативе для покрытия выданных кредитов. Назначать временную администрацию в кооператив это равносильно назначению нового мужа в семью, при том что тёща(СРО) говорит ,что замечаний к мужу нет. Кооператив – автономное , некоммерческое объединение, все средства принадлежат пайщикам. Это не подразделение Банка. По тексту Приказа видно – работники банка решили загубить эффективно действующий кооператив.

После введения временного управляющего в кооперативе остановилась вся работа, начались образовываться долги и эти действия временной администрации привели кооператив к банкротству. Понятия « временная администрация», «банкротство» в кооперативе абсурд. Главный руководящий орган кооператива – Общее Собрание. Без решения Общего Собрания ни кто не имеет права вмешиваться в дела кооператива. Кооператив может самостоятельно увеличить паевые взносы, обратиться в СРО, взять кредит – обеспечить нормальную работу. Необходимо учесть, что в стране есть кредитные кооперативы, которые собрав деньги пайщиков, распадались, т.е. руководители кооператива были мошенниками.

В «Семейном капитале» пайщиками были юридические лица, действующие предприятия, предприятия успешно работающие, выпускающие сельхозпродукцию и имеющие доход. Причина разрушения действующего кооператива – преднамеренные действия работников Банка и исполнителя их преступных замыслов, руководителя временной администрации О.В. Романчук.

Далее, требование ст. 3 закона о потребительских кооперативах и их союзах – государственные органы и органы местного самоуправления не имеют права вмешиваться в финансовую, хозяйственную и иную деятельность кооператива! Следователь не имел права принимать заявление от пайщика без решения Общего Собрания. Принципы работы кооператива, объединения пайщиков, кооперативной собственности, ослепляют своей простотой. Это является преступной ошибкой работников Банка, следователей, судей и прокуроров.

Однако, незнание Закона не освобождает от ответственности.

Необходимо срочно освободить руководителей кооператива, прекратить уголовное дело и снизить вредные последствия. Городу Санкт-Петербургу не нужен мировой скандал.

29.03.2018 г

Н.М. Гребнев, г. Владивосток

## Истеричка. 01.04.2018

*#карчава, #оттуда, #Тюремные хроники, #уголовное дело, #чужие мысли*

Нам не хватает здравого смысла. Не хватает свежего взгляда. Информационный поток из рекламы, «авторитетных» мнений, телепередач, заголовков в интернете и прочего — приучает нас к абсурду. Когда мы начали терять здравый смысл? Может, с уходом советского образования? А может… с приходом свободы быть ненормальным?

И мало кто уже может посмотреть, например на документы от следователя просто и здраво. И… понять.

«Обратите внимание на данный тезис. Бессвязный, лишенный смысловой нагрузки бред. И уже в нём хороший психиатр безошибочно заметит ряд особенностей, присущих хроническим истеричкам. Поверхностность суждений — на лицо, склонность к фантазированию — есть, неустойчивость настроения — увидите скоро, стремление привлечь к себе внимание — однозначно. И плюс агрессия, немотивированная. Куда, спрашивается, ехать дальше?»

Ирина Крицкая «Истеричка»

## Золотой песок. 03.04.2018

*#оттуда, #репост, #Семейный капитал, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

Сейчас я вам начну рассказывать — где деньги кооператива «Семейный Капитал». Но не сразу. :) Постепенно. Для лучшего понимания ситуации — история с аналогами. Юр. лица — достаточно сложно, поговорим просто о людях.

Жил-был Ваня. И был у него в бизнес. Заработанными деньгами он помогал друзьям. Конечно, были и расписки, и другие обязательства для уверенности в возврате. Друзья строили красивые удобные дома на благо людям. Деньги были вложены надежно, приносили доход. Ничто не предвещало беды. Ваня гордился своим участием в хороших делах — везде стояло его золотое клеймо. Да вдруг наехали на Ваню, да в тюрьму посадили. У хороших дел всегда завистники найдутся. Бизнес, как водится, отжали, имущество разграбили. Да мало было захватчикам — стали они искать ванино золотое клеймо повсюду. Да особо напрягаться не пришлось — не скрывал Ваня своей деятельности ни от друзей, ни от врагов. Под удар попали друзья — кого-то распиской прижали, да заставили продать всё за бесценок, чтобы досрочно долг вернуть, кого-то запугали, а кого-то и просто убили. Разрушились дома без присмотра, опустели, были разграблены.

Но Ваня боролся за свое честное имя. Долго боролся, и получилось. Вышел он из тюрьмы гол, как сокол. Вышел, да стал деньги и виноватых искать. Да только виноватых слишком много, а значит — никого. Ясен только один злодей — тот, кто на Ваню напал, оговорил его. Именно он нанёс ту рану, на которую пираньи налетели да порушили всё у Вани, да у друзей его.

Сказка — ложь, да в ней намёк. :) Нет смысла искать деньги в мешках, да на счетах заграничных. Не было этого никогда. Все деньги, что были у кооператива «Семейный Капитал», вкладывались в заводы, фермы, магазины, да многие прочие благие дела во имя родной страны.

Следствие может всё. Может и главного врага найти, напавшего на кооператив 31.12.15, может и каждую пиранью вычислить да призвать к ответственности. Все документы есть у следствия, чтобы кооператив защитить, да деньги с врагов взыскать. Но нет у нынешнего следователя такой задачи. Боится он больших врагов, а с пираньями скучно возиться. Да и не выгодно. Выгоднее дружить с врагами, да остатками полакомиться. Так и пишется в документах: не всех еще друзей кооператива прижали да не всё имущество подобрали.

Ничего. Недолго им осталось. Собираются уже друзья и в Питере, и в Москве, и по всей стране — упырей до бандитов вычистить в государстве на благо себе и потомкам.

А деньги… Главный враг ответит за всё, и за всё заплатит.

Продолжение следует.

## Душ. 04.04.2018

*#оттуда, #Тюремные хроники*

Название соответствует процедуре, но не суть. Никакого душа здесь и в помине нет. Восемь труб на три четверти извергают струи воды непредсказуемой температуры. Хотя извергают только 4. И хотя большие камеры ходят партиями, труб на всех хватает не всегда. Это не вина СИЗО, а беда. Особое искусство — настроить температуру воды. Стоит кому-то даже дотронуться до крана — меняется всё и у всех. Время на душ — 15 минут. Этого вполне хватает, чтобы помыться, меньше не бывает. Страшнее, когда тебя в душе забывают. :)) Потому что, если не стоять под водой — холодно, а слишком долго стоять под жесткой струей, и к тому же с нестабильной температурой — весьма некомфортно.

Но несмотря на все эти мелкие неудобства — душ — одно из самых светлых событий недели. По-прежнему пока остается загадкой запрет на кондиционеры для волос. И уже почти не трогает, что в местном магазине гели для душа только мужские. Что такого? :)) Подумаешь — тюрьма женская :))

После душа в камерах кипит жизнь: стирка, маникюр, педикюр (плевать, что нет маникюрных ножниц и щипчики для ногтей тоже не принимают в передачах). А вечером приносят свежее белье. Первая встреча новичка со свежим бельем — всегда смешно. Но потом начинаешь ценить не цвет и форму, а просто чистоту. :) И вечер банного дня обычно спокойный и умиротворенный.

## Око государево. 04.04.2018

*#карчава, #оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

«Ты мне нравишься, Эдгар. У тебя есть вкус, у тебя есть интеллект, У тебя есть губы, чтобы целовать мне зад».

Стивен Кинг, Дьюма-Ки

Следователь запретил мне звонки отцу. Этот запрет имеет мало отношения к закону, поэтому написала жалобу в прокуратуру СПб. Особых чудес не ждала, но такой грубой работы тоже не ожидала. Прокуратура переслала следователю, следователь повторил мне текст отказа. Браво! Даже не буду задаваться вопросами — думал ли кто-нибудь при этих действиях. Но ситуация мне очень нравится. Следак косячит — жалоба в прокуратуру — прокуратура поручает следаку ответить — следак косячит. Чудесные Круг!

Что ж, подключим других действующих лиц. Возможно, они знают — как должна работать Око государево.

## Несостоявшийся звонок. 05.04.2018

*#карчава, #оттуда, #Тюремные истории, #Тюремные хроники, отец*

Мне так и не дали разрешение на звонок отцу. Не получилось донести до следствия, что брать в заложники в стариков — низко. Хотя, следователь следователь многое может оставлять непонятым. Он просто получил приказ. И, давно отучившись думать, просто исполнил его. Как он исполняет приказ об уничтожении даже доброй памяти о Кооперативе «Семейный Капитал».

Привет, па! Извини, что долго не звонила. Не было возможности. У меня всё в порядке. Как ты? Как здоровье? Я переписываюсь со всеми, они должны тебе рассказывать.

Прости, что не поздравила с блокадным праздником — не получилось. Что тебе нужно из продуктов? А что с лекарствами? Решим. К сожалению, сама заехать пока не смогу, Буду очень стараться. Не скучай. Пока, пап. Береги себя.

…..

Ты только дождись меня. Пожалуйста.

## Развод и девичья фамилия. 06.04.2018

*#оттуда, #репост, #Семейный капитал, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

Итак, что могло обнаружить следствие, если бы занимался расследованием, о не лепкой в мире фантазий.

В процессе подготовки к реорганизации Кооператива «Семейный Капитал» в форме присоединения КПК к НПО был подписан договор между этими юр. лицами. Тот самый. №459. На 4,5 млрд. руб. Именно по этому договору гасились обязательства перед пайщиками КПК, подписывались соответствующие документы всеми сторонами.

Арбитражный управляющий КПК через суд признал договор недействительным. Не помогла и апелляция. И что теперь? А теперь все пайщики КПК должны вернуть деньги КПК. Те деньги, что проходили по этому договору. Те деньги, что оформлялись при выходе из пайщиков КПК. НПО должен предъявить претензии к КПК на сумму договора, а КПК должен взыскать деньги с пайщиков. И теперь претензии к НПО, с момента признания договора №459 недействительным, нос практически призрачный характер. Пайщики должны КПК, КПК должен НПО, НПО должен пайщикам. Круг замкнулся, долги схлопнулась. Поскольку пайщики одни и те же, только они и пострадают. И атака на КПК всё же достигла своей цели, ограбив пайщиков.

Не потому ли арестовали руководителей Кооператива, чтобы вся придуманная недалекими и продажные людьми конструкция обвинения Кооператива рассыпалась в прах?

Не потому ли были срочно назначены виноватые — обвиняемые — чтобы отвлечь внимание пайщиков от истинного положения вещей? Не потому ли НПО срочной присоединили к уголовному делу, чтобы отвести глаза от КПК и того приказа ЦБ, который разрушил Кооператив?

Вопросов много. Но ответы тоже есть. И ответы становятся доступными всё бОльшему количеству людей.

Сколь веревочке не виться — всё равно кончик есть. Все документы у следствия есть.

## Пирамиды и фараоны. 08.04.2018

*#SK, #оттуда, #репост, #Семейный капитал, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

Как работает кооператив? Очень просто. Люди собираются, скидываются, определяются — куда будут вкладываться деньги, и что и как будет получать каждый. Это касается практически любого кооператива: потребительского, гаражного, строительного и так далее. Что происходит, если в процессе работы какой-то пайщик уходит? Его место занимает новичок. Всё. Предприятие, в которые вложены деньги, при этом не страдает. Новый пайщик делает взнос в паевой фонд, бывший получает деньги из паевого фонда. Если число новых пайщиков растёт быстрее оттока старых, то появляется возможность создания новых предприяти и модернизации существующих. Если отток пайщиков превышает приток новых, то планы развития приостанавливаются, расходы сокращаются, обороты уменьшаются.

Закон защищает потребительские общества от резких метаний. Деньги, вложенные в производство, мгновенно не вытаскиваются. Поэтому и в законе, и в Уставе НПО, и в прочих документах заложен значительный интервал между заявлением о выдаче денег из паевого фонда и выплаты их пайщику. Кооператив НПО — это не Банк. Это реально работающее объединение людей.

Что же происходит, если в дело вмешивается некомпетентные… личности? А ничего хорошего не происходит. Ни Федеральный закон 3085-1 никто не смотрит, не документы НПО, соответствующие закону. Просто и тупо говорится: деньги взяли? — верните. А как — не наше дело. И плевать на прописанную в законе в процедуру. Не можете вернуть? — мошенники.

По такой схеме было разрушено множество НПО по стране. Особенно яркий случай со строительными кооперативами — появление большинства «обманутых дольщиков» — результат рейдерских захватов и корыстолюбия отдельных лиц, в том числе и в погонах. Не избежал этой участи и один из самых больших кооперативов в стране — «Семейный Капитал». Попытка захвата активов через недобросовестных сотрудников ФСБ, массированная атака в прессе, включение рейдеров и людей с погонами… и вот результат: предприятия разрушенны, кооператив банкротится, руководителям предъявлено обвинение в мошенничестве. А чтобы не было возможности защитить честное имя Кооператива, сохранить остатки активов и рассчитаться с пайщиками — арест. И не важно, насколько он законен, такие «мелочи» сейчас — не главное. Сейчас тем, кто напал на Кооператив, важно, чтобы дело по разрушению народного предприятия было доведено до конца. И эмоции двадцати тысяч пайщиков и их семей никого не тронут — единичные всплески недовольство пока успешно направляют на дальнейшее разрушение.

Но ситуация меняется. Слепая вера в закон переходит в осознание необходимости защищаться. Пайщики понимают — шанс есть. Система тоже стремится к оздоровлению. Гнилые звенья надо убирать. Корыстные чиновники, продажные оборотни, необразованные решатели — разрушают государство, а значит — должны уйти.

Честная работа кооператива НПО «Семейный Капитал» зафиксирована документооборотом. Деньги вкладывались в предприятия. Качественная продукция, рабочие места, налоги, социальные программы, выгоды по счетам — всё было слишком честно, открыто и правильно. А ещё… В итоге добро побеждает всегда. Потому что только оно жизнеспособно.

Есть наработанный опыт, есть люди, которые воплощали планы развития на практике. И есть желание — развивать свою страну.

«Лёгкая жизнь ничему не учит нас. В конце концов, имеет значение только знания: чему мы научились и как мы выросли. Не бывает несчастья, которое не могло бы превратиться в благо…»

Ричард Бах, «Единое».

## Давление на свидетелей. 09.04.2018

*#оттуда, #Семейный капитал, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

Меня всегда смешил довод следствия к аресту: «Может оказывать давление на свидетелей». Чего на них давить? :) Меня устраивает любая правда в их показаниях. А за дачу ложных — есть статья. :)

На свидетелей давят два фактора: страх и совесть. Страхом активно пользуется следствие, запугивая свидетелей потерей денег, привлечением к ответственности и многим другим. Юридическая неграмотность свидетелей легко позволяет это сделать.

Есть у страха и другая природа. Все прекрасно понимают, как просто превратиться из свидетеля в обвиняемого. Достаточно, чтобы на тебя просто кто-то дал показания. Есть и такие свидетели, часто из числа бывших сотрудников, которые боятся, что арестованные будут давать на них показания. И количество людей за решеткой может увеличиться. :) Так что наше нахождение под стражей давит на свидетелей гораздо сильнее нашего пребывания на свободе. :)

Так каких же свидетели бережет следствие? Возможно, именно тех, кого можно испугать и вынудить дать ложные показания. Тех, кто пока не может сообразить, чем это грозит ему лично. Особенно интересны для следствия в этом плане регионы. Стоит только бывших сотрудников хорошенько припугнуть, заставить забыть о документах, которыми регламентировалась их работа, поднять на смех цели Кооператива и… готов соучастник преступления.

Интересны те, кто признается в преступлении. Пусть даже в форме пособничества. Вот им придется отвечать по всей строгости закона. Почему они, прикрываясь именем Кооператива, вершили свои темные дела.

Тема свидетелей богата и разнообразна. А в случае сфабрикованных уголовных дел именно свидетели становятся опорой домыслов следствия. И давит на свидетелей два фактора страх и совесть.

## Секреты домушников. 10.04.2018

Тюрьма — просто кладезь полезной информации. Общались тут с… домушницей. Про мастер-класс по открыванию замков подручными средствами рассказывать не буду. Главное — другое. Чтобы вскрыть любой замок необходимо знать один секрет. Предельно простой: не надо бояться неудач. Что бы у вас ни оказалось в руках, Вы должны быть уверены, что именно эта штука служит ключом для этого замка. И надо всего лишь догадаться — как ее использовать. Век живи — век учись. :)

Кстати, я не призываю открывать чужие замки. :) У каждого бывают проблемы со своими. :))

Забавно, но когда на следующий день на прогулке я подошла к двери дворика с твердым намерением подружиться с замком — дверь просто открылась передо мной. :)

*#оттуда, #Тюремные хроники*

## Молния. 12.04.2018

*#оттуда, #Семейный капитал, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

Рассказали мне тут о реакции одного мвд-шника на мой сайт: «На месте следаков я бы гнал её из тюрьмы немедленно. Была ошибкой её арестовывать, теперь за их погоны — гроша ломаного не дам». :)

## Планирование. 14.04.2018

*#SK, #оттуда, #Семейный капитал, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

«Когда долго ничего не ждешь, это ничто приходит».

Мураками.

Горизонт планирования пропорционален уровню ответственности. В детстве мы не планируем далеко — за нас решают взрослые. В юности начинаем задумываться на 3-5 лет вперёд. Появляются дети — мы начинаем думать о детских садах, школах: горизонт планирования расширяется. В обычной рутине мало кто загадывает дальше, чем на год-два. Руководители вынуждены думать дальше. Если будущее незапланированно — она любое. В организациях любое будущее обычно приводит к разорению, на территориях — к деградации.

Планы кооператива «Семейный Капитал» был разработана на 50 лет. Да. Мы думали не только о себе. Нам было важно, в какой стране будут жить наши дети и внуки. Некоторые аспекты уже описывались тут, по многим ещё буду писать. В основе кооперативного развития экономики — три кита: сельское хозяйство, строительство и образование. Эти три отрасли легко вытянут всё остальное. А долгосрочные планы сильно снижают издержки. Только представьте: заказ на 10-20 лет. Стабильный и регулярный. Не правда ли, можно вздохнуть и просто работать.

1. Сельское хозяйство

Большие фирмы, предприятия — спутники, подворья под крылом, вертикаль переработки и магазины.

Садоводства (фрукты-ягоды требуют стартовых затрат, но и потребность с рентабельностью бешеная), звероводство (встраивается в цепочку переработки отходов), птицеводство. Необходимость в возрождении своих нулевых линий, своих семеноводческих станций — всего этого катастрофически не хватает сейчас. Как отдельный бизнес — это сложно, одиночки не потянут расходы, а комплексный подход встречается пока редко.

Овощехранилища. Потери урожая и сохранения — до 15% — это колоссальная цифра. А прикиньте в масштабах страны. И опять: отдельно овощехранилища не выживают, а в цепочке производство-переработка-торговля займут достойное место.

Сахарные заводы у нас в стране старые и очень энергоемкие. В межсезон люди без работы. Тема очень интересная и перспективная. Подключение механизма кооперации сулит фантастические перспективы.

Отдельная тема — центры эко для коров. Нетелей не хватает. Быстро вырастить высокопродуктивные стадо возможно через эко и суррогатное стадо. А пока… идут бесконечные закупки за рубежом.

2. Строительство

Потребности огромные: фирмы, заводы, подворья, дома для сотрудников, дороги и многое другое. Необходимы и своя проектная организация, и заводы по производству стройматериалов, и мощная логистика. Открытость процесса производства, вплоть до транслируемого в интернет видео с завода — тоже было в планах.

Пайщики помнят экскурсии на кооперативное производство. В нашей колбасе было только мясо. Можно было посмотреть на процесс, а можно было посмотреть документы по закупкам: никаких суррогатов в принципе не покупалась. Выпуск продуктов только по ГОСТу — натуральных по качеству, вкусных и доступных по цене — вполне реален при правильной организации взаимодействия предприятий. И потребители магазинов «Семейного Капитала» знали — здесь только качественные продукты. Магазины — всего лишь витрина бизнеса, а не точка получения прибыли.

3. Образование

Для реализации планов необходимы кадры. Помню пример из книги про Стива Джобса. Когда американский президент предложил разместить заводы Apple в США, а не в Китае, Джобс указал ему, что для этого потребуется тридцать тысяч сотрудников со средним техническим образованием. А их нет.

Тема образования всегда была на особом контроле в «Семейном Капитале». Пайщики помнят и конкурс «Капитал-профи», и мероприятия для школьников, и программы повышения квалификации для сотрудников, наставничество и многое другое.

Отдельная программа касалась развития садоводства. Прием излишков продукции, юридическая помощь, возможность подработать для садоводов и прочее. Это программа начала реализовываться совместно с союзом садоводов.

Кооператив «Семейный Капитал» не мог обойти без внимания проблему транспортного сообщения. Тут был разработан Целый букет решений: от технологий по доступному строительству «вечных» дорог до развития малой авиации. Посмотрите в интернете ЭКИП — и это чудо скоро стала бы реальностью.

Это только малая часть планов. Кооператив честно работал на благо своей страны. Многое успел, но еще больше оставалось только в заделах. Где теперь эти документы? Подозреваю, что следствие, изъяв документы, компьютеры, флешки, переписку — доказательства реальных планов и действий, постаралось их уничтожить.

Иногда нам говорили — вы же берёте на себя функции государства. Нет. Мы брали на себя функцию помощи государству: налаживание экономики на местах, выстраивание хозяйственных связей, развитие территорий, работа и развитие для всех.

В каждом регионе мы взаимодействовали с местными администрациями, профильными комитетами правительств — отчитывались, предлагали, рассказывали о своих планах и действиях. Порой взаимодействие было очень успешным, а порой в нас видели угрозу спокойной жизни.

Все планы кооператива «Семейный Капитал» не подразумевали ни финансирования, ни субсидий с траншами от государства. Кооператив силён своими пайщиками. Мы гордились тем, что народные деньги идут на развитие народного хозяйства.

Планы на пятьдесят лет — это реально. Мировоззрение, образование, семейные ценности лежат в основе экономики, а формируются не одно поколение. Если мы не будем думать об этом, то об этом подумают другие.

## Тюрьма и возраст. 15.04.2018

В тюрьме нет возраста. Поначалу мне было это непонятно. А как же уважение к старшим и т.д.? Но в тюрьме ничего не бывает просто так. Больные и немощные — отдельная тема. Со временем стало понятно и про возраст.

Возраст сам по себе не является ценностью. Значение имеют опыт, ум, сила, психологическая зрелость. В тюрьме ты значишь ровно столько, сколько заслуживаешь. И возраст тут ни причём.

*#оттуда, #Тюремные хроники*

## Чёрно-белое кино. 16.04.2018

Сейчас я вам на пальцах, Уголовном кодексе и практики объясню разницу между легальным и нелегальным бизнесом. Если бизнес легален — зарплаты белые, люди оформлены, налоги платятся, должностные инструкции, штатное расписание и так далее, то будет у вас статья 159 УК РФ — мошенничество. Это до 10 лет лишения свободы.

А вот если работников Вы не оформляли, да и документообороту внимания не уделяли, то добавят Вам статью 210 УК РФ — организация преступного сообщества. А это уже до 20 лет лишения свободы. Испугались? Зря. Это всё цветочки. А сейчас будут ягодки.

При нынешнем уровне следственных процессов ярлык ОПГ вполне клеится к любой организации. Особенно, если есть филиалы. А что? Структура есть, обязанности каждого определены. Преступные умыслы подтягиваются из статьи 159 — там можно ничего не доказывать. Всё. Конфетка готова.

И это не выдумки. Примеры уже есть.

Берегите себя.

*SK, #оттуда, #Семейный капитал, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

## Большая разница. 17.04.2018

Содержание под стражей — достаточно суровая штука. По сути, тюрьма — это наказание. Но на этапе следствия преступников нет. Преступником вправе называть только суд.

Вот и получается, что наказание несут обычные люди. И дальше уже система начинает себя защищать.

Потому и оправдательных приговоров менее 1%. При том, что закон как раз предусматривает и нормальное развитие ситуации. Просто цели следствия из закона расходятся. Убедимся.

Цели содержания под стражей прописаны в уголовно-процессуальном кодексе (УПК):

Статья 97 «Основания для избрания меры пресечения». Если есть основания полагать что обвиняемый, подозреваемый:

Скроется

Продолжит преступную деятельность

Может угрожать свидетелям, уничтожать доказательства.

Причём статья 98 УПК указывает целых семь возможных мер пресечения. Но следователю нужен арест, потому что ему важно:

Лишить человека возможности защищаться; в тюрьме недоступны документы, законы, нужная литература

Сломать физический

Условия содержания достаточно жесткие, порой опасные для жизни

Раздавить психологически

Человека вырывают из привычного окружения, лишают возможности общаться с близкими, подвергают различным унижениям

Правда ведь — ни в одном законе такого не найти? :)

Есть ли путь, позволяющий изменить ситуацию? Безусловно. Можно ограничиться полумерами и пытаться изменить быт заключенных к лучшему, улучшить правовую защиту и т.д. Только всё это требует серьезных усилий и затрат. Есть решение проще: надо отменить заключение под стражу для всех, кроме тех, кто физически опасен для общества.

Домашний арест полностью соответствует целям стражи, прописанным в УПК. А возможность судов определять условия домашнего ареста (это прописано в том же УПК) сможет учесть интересы следствия, правда, только законные. А сколько бюджетных денег будет сэкономлено! А сколько семей будет сохранено. А сколько детей не лишатся родителей. Плюсы можно перечислять долго.

Есть еще важный момент. Человек, вынужденный бороться за свою физическую целостность, менее способен, как правило, к умственной деятельности.

Досудебные соглашения и особый порядок в абсолютном большинстве случаев выбиваются заключением под стражу. Этот приводит, в том числе, и к деградации следственных органов. А следовательно, вывод можно сделать неутешительный: ходатайство следователя об избрании меры пресечения в виде заключения под стражу может свидетельствовать о его непрофессионализме.

Многочисленные организации, которые пытаются стоять на защите прав человека, борются с последствиями проблемы, а потому — достаточно безуспешно.

Законодательство закрепив невозможность посадки в тюрьму людей, не представляющих физической опасности для общества, можно решить огромное количество задач. Куда там разрубателю Гордиева узла. :)

А главное — следователем придется заниматься реальным расследованием и поиском настоящих преступников.

Правоохранительная система нуждается в решениях.

*#оттуда, #репост, #Семейный капитал, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

## Ученье — свет. 18.04.2018

Необразованность рождает беспредел. Отсутствие чисто физической возможности оценивать ситуацию и находить решение низводит все действия к разрушению.

Совершенно замечательную историю опубликовала газета «Наша версия». Представьте себе человека, который предсказывает погоду. Такие мастера встречаются по всей земле. У них свои методики и многолетний опыт. Их предсказания практически достоверны. В отличие, например, от Росгидромета :) И что происходит, когда Росгидромет вдруг обнаружил «конкурента»?

Сначала о том — как могло бы быть. Можно было пригласить Мастера, упросить его научить сотрудников, изучить его методику, начать использовать по всей стране на благо людям. Ведь Мастер даже тайфуны предсказывал за 10 дней, а не за один, как прочие. Но ничего этого не случилось. Никто даже не думал о таком варианте. Нечем :) Да и навыка конструктивных решений давно нет.

Призвали Мастера к ответственности за «отсутствие лицензии на работу в области гидрометеорологии». Да и запретили ему погоду предсказывать.

Серые продолжают выигрывать.

У кооператива «Семейный Капитал» было проработанная программа по возрождению образования и обучения в стране. И не так трудно сдвинуть этот застой. Кооперативная форма взаимодействия позволяла бы не закрывать сельские школы, учить ребятишек думать и растить достойных граждан великой страны.

А пока… Умных проще запретить.

Такая вот «погода в доме».

*#SK, #оттуда, #Семейный капитал, #Тюремные хроники*

## Перед рассветом. 19.04.2018

«Преступления большинства не были доказаны, и суды выносили смертные приговоры, беря на веру показания свидетелей обвинения, уверявших, будто ощущают присутствие злых духов».

П. Коэльо «Ведьма с Портобелло».

Сейчас — смутное время. Следствия нет. Для судов не важны доказательства. Процветает оговор, наговор и подобное. Люди часто отправляются за решётку по показаниям одного «доброжелателя». Доказательства невиновности выкидываются из дела «за малозначимостью».

Ничего. Самое темное время — перед рассветом.

*#оттуда, #Тюремные хроники, #чужие мысли*

## Хурма запрещена. 20.04.2018

Очень забавляет запрет на передачу хурмы.

— Хурма запрещена.

— Почему?

— Потому что она с косточками

— Но это хурма без косточек

— Хурма запрещена.

…….

Повторите необходимое число раз :)

*#оттуда, #Тюремные хроники*

## Рассвет. 21.04.2018

Вдруг подумалось, что люди могут действовать… не очень хорошо ещё и потому, что не обладает нужной информации. Очень часто слышу от «сиделок», что те сотрудники органов, что когда-то начинали их уголовное дело, уже сами сидят. Понимаю, что правоохранительная система всё же пытается очистится. Но происходит это достаточно медленно. Да и тем, кто уже посажен, даже незаконно, уже помочь сложно. Проще предотвращать.

А посему — предложение.

У каждого из нас есть знакомые сотрудники органов. Просто скиньте им ссылку на мой сайт freeverhova.ru. Там написано достаточно, чтобы задуматься о правильности и порядочности своих действий. А кроме этого — сайт даёт именно ту обратную связь, которой обычно напрочь лишены сотрудники органов. Обратная связь, как известно, здорово облегчает работу. Пусть ему будет проще работать.

Это маленькое действие каждого. Но оно становится кирпичиком в основе обновления системы. Рано или поздно от работы «по понятиям» система перейдет к работе по закону. Путь долгий, но он начинается с первого шага. Я верю в то, что в правоохранительной системе много честных,

порядочных и любящих свою страну людей. Им просто надо помочь. А плохие… Плохим придется уйти.

Просто отправьте ссылку друзьям. Всё получится.

*#оттуда, #репост, #Тюремные хроники, #уголовное дело*

## Путешествие из Петербурга в Москву :) 22.04.2018

Вот и закончилась питерская тюрьма для меня пока. Дело переведено в Москву, и обвиняемых отправили туда же. Ладно, всё в жизни к лучшему. А ещё ведь и поездка — новые впечатления! Рано поутру нас забрали из камеры. Собачник. Куча формальностей, и мы двинулись в путь. Автозак, конечно жесть-машина. Всё-таки не привыкну к попыткам развить у меня в клаустрофобию. Стакан 0,5 х 1,7 м2, со всех сторон железный до потолка. Что-то всё-таки не так в этом.

Не прошло и четырёх часов, как мы добрались до вагона. Да-да, легендарный Столыпин. Практически купейный вагон, просто много решеток и всё из металла. Что нужно сделать, войдя в вагон, состоящий из металлических изделий? :) Правильно, хорошенько двинуться головой обо что-нибудь. Успешно с этим справилась. Три яруса полок. И очень-очень узенький проход перед ними. Народу было мало, поэтому разместили по одному. Терпимо. Дальше — об интимно-математическом.

Вот мне интересно, сколько процентов женщин способны справлять нужду в полной тишине, в полуметре от мужчины с пистолетом, который по долгу службы тщательно прислушивается? Не, я понимаю, что мужчин к физиологическому эксгибиционизму приучают с детства с помощью подсобных предметов (подворотня, дерево и др.), но у женщин процесс более замысловатый. А ещё вдруг мелькнула мысль, что Путин в незнакомые туалеты тоже вынужден ходить с охраной. На мысли о президентском уровне обслуживания и остановилась.

Следующий этап моей столыпинской жизни назывался «Спокойной ночи». Всё железное. Помните? Матрас тоже. Ха-ха. Шучу. Матраса вообще не было. Когда-то в общаге физфака мы спали на полу без матраса. Не помню, чем был вызван этот рахметовский задор, но считалось круто. Разница выявилась почти сразу — комнаты в общаге не мчалась по рельсам, качаясь и подпрыгивая. От серьезного избиения скамейкой меня спасли зимние штаны и пуховик — смягчали удары.

Побитая, но крепкая и помолодевшая, встретила рассвет. Привычно восхитилась изобретательностью ФСИН по превращению здоровых в больных на ровном месте. На ровном железном холодном месте. День в вагоне прошел спокойно. Три раза кипяток, три раза туалет. Всё логично.

Следующие утро уже встретила уже в Москве. Мороз, солнце. -15.

Но это уже совсем другая история.

*#оттуда, #Тюремные хроники*

## Как пайщикам КПК защитить себя от произвола чиновников ЦБ. 23.04.2018

Тысячи пайщиков в более чем сорока участках некоммерческой корпорации, кредитного потребительского кооператива (КПК СК) «Семейный капитал» пострадали от произвола, может по халатности, а может и по злому умыслу чиновников из ЦБ РФ.

Что надо делать чтобы победить? Продолжать писать письма-требования в органы прокуратуры о проверке деятельности временной администрации в КПК. Задавать им вопросы, как КПК, который по данным СРО, закончил 2015 год с прибылью. На счетах КПК на 11.01.2016 года находилось более чем 40 млн. рублей.

Читайте материал на сайте «Кооперативы против бедности»: https://pravo-wmeste.ru/kak-payshhikam-kpk-zashhitit-sebya-ot-proizvola-chinovnikov-tsb.html

*#SK, #репост, #Семейный капитал, #уголовное дело*

## Высшая мера. 26.04.2018

Нет более безжалостного тирана, чем боль. Стивен Кинг, «Дьюма-Ки»

Сегодня в камере одной девочке пришло известие: умерла мама. Рыдала вся камера. Это страшно. Все 50 человек.

Мы все боимся. Боимся никогда не увидеть близких нам людей.

Мне не разрешают позвонить отцу больше пяти месяцев. Ему скоро 89. Есть ли шанс нам поговорить в этой жизни?

Мы — не преступники. Мы — подозреваемые и обвиняемые. Но порой нас наказывают высшей мерой — необратимой разлукой с близкими без возможности прощания.

*#Карчава, Москва-Шестёрка, Отец, Оттуда, Тюремные хроники, Чужие мысли*

## В Москве всё иначе. 25.04.2018

В Москве всё иначе. Вообще всё, кроме квашеной капусты с рыбой на ужин :) Не иначе как кулинарные разработки ФСИН. Чтобы не делать скорых выводов - понаблюдаю недельку-другую. Так что сравнительный анализ СИЗО двух столиц - позже.

Камера большая. На 46 человек. Жильцов - 50. Место есть только боком между кроватями пройти. 41 человек курит. Много нерусских. Таких... Базар-вокзал. 1 душ, 1 туалет. Столовка на 16 мест плотной посадки. Работать и тренироваться будет очень тяжело. Но я что-нибудь придумаю. :) Где наша не пропадала!

*#Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Скорая помощь. 27.04.2018

Когда при такой скученности кто-то начинает чихать и кашлять, заболевает вся камера. Кто-то из новичков занес вирус, и первыми заболели старички. Тюрьма-с. Круглосуточный кашель несет в себе что-то… чеховское. :) А вот и очередное различие между СИЗО двух столиц. Не в пользу Питера.

Стоило мне на утренней проверке пожаловаться на температуру (и это, кстати, была суббота), как в тот же день меня доставили в медпункт, где осмотрели, померили температуру, выслушали, утешили, снабдили лекарствами (включая антибиотики!) и рекомендациями и вернули в постель. :)

Отвыкла я от такого всего за пять месяцев тюремных. И это не мелочь.

*#Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Светское государство. 28.04.2018

Был тут как-то церковный праздник. Выдали нам по платку на голову да букет тюльпанов на камеру. К безусловной радости и от цветов, и от платочка, примешивалось недоумение: ну почему, если цветы даёт церковь, то это можно? Почему не разрешаются другие варианты поставки цветов в камеры? Тут женщины. По разным причинам. И до вступления приговора в силу — невиновное, между прочим. Так почему никому (почти никому) нельзя передавать цветы невиновной женщине?

Ладно… Понятно всё с этим «почему». И… дарите цветы своим женщинам. Пока можно :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Детская болезнь. 30.04.2018

В СИЗО эпидемия кори. Понятно, что занесли какие-то малолетки, а дальше пошло гулять по камерам. Тяжело болеют взрослые мужики. Первым делом перекрыли вентиляцию в камерах. Решение спорное, но из благих намерений. Сотрудники в масках. Интерьер тут и так слегка… потусторонний, а маски добавляют колорита. :) Аромат «Секретных материалов». Через пару дней повели всех на прививки. Зная систему, бюджетное финансирование и прочие сложности — скорость реакции потрясающая. Прививки добровольные. Всё разумно. Что хочу сказать. СИЗО — очень сложно контора. По многим параметрам. И действия, направленные на блага арестантов, пусть спорные, вызывают уважение. Здесь, в Москве, очень многое в этом вызывает уважение. Конечно, ФСИНовского маразма хватает, нарушений закона — тоже. Но способность решать возникающие вопросы тут жива. А значит, будем жить. :)

*#Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Полгода. 02.05.2018

Полгода — достаточно знаковая дата для СИЗО. По негласной статистике люди ломаются либо в первый месяц, либо на полугодовом рубеже. Тем интереснее подвести итоги. Я — уже опытная зэчка :) Это были непростые полгода, но в претензии к себе у меня нет. :) Жила достойно. Не давала себя в обиду и не давала обижать других. Обросла самыми разнообразными

знакомствами :) Многому научилась. Позитив практически ни разу меня не покинул, щедро делилась им с окружающими.

Много прочитано, много написано. Увидела систему изнутри. Нашла кучу решений. Перезагрузилась, проанализировала прошлое и спланировала будущее. Вкратце прописала три замечательных проекта, которыми займусь после выхода. Перетряхнулся состав друзей и знакомых. Физической формой довольна, несмотря на отдельные сложности. Поняла, что не пропаду нигде и никогда. :)

Можно выходить. :))

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Бордюр и поребрик. 03.05.2018

Тюремный жаргон (помните тюремный словарь) Питера и Москвы имеет определенные различия. Питерский интеллигентнее, московский загадочнее :) Пять примеров:

1. Те, кто уже сидел. Питер — многоходы, Москва — краткие.

2. Дверь в камеру. Питер — дверь, Москва — тормоза

3. Медсанчасть. Петер- санчасть, Москва — медка.

4. Коридор, вдоль которого расположены камеры. Питер — галера, Москва — продол.

5. Помещение, куда помещают людей перед вывозом на суд, на этап и т.д. Питер — собачник, Москва — сборка.

Такие разные мелочи. :)

*#Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Оттуда, Питер-Арсеналка, Тюремные хроники*

## Эпидемия. 04.05.2018

Эпидемия. Половина камер на карантине, появляются и новые заболевшие. Из окна камеры нам виден двор, куда приезжают скорые. Запертые люди практически беззащитны перед такой судьбой. На мой непрофессиональный взгляд есть много нелогичного в режиме карантина, но решение принимает тот, кто несёт за это ответственность. Мы категорически заперты в камере. Нет свиданий, встреч с адвокатами, выездов на суды, следственных мероприятий. Нет даже обязательных по закону прогулок. Безусловно, это осложняет психологическую обстановку в камере. Что ж, выдержим и это.

Берегите себя.

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Расписание. 05.05.2018

В тюрьме жизнь подчинена внутреннему распорядку. После выхода многие не могут адаптироваться к отсутствию расписания, к тому, что никто не говорит — что и когда надо делать. Рецепт один: уже в тюрьме практиковать составление графиков занятий.

Расписание даёт контроль над своей жизнью в месте, где от тебя мало что зависит. Возможно, необходимо всего лишь несколько советов на начальном этапе, чтобы жизнь зека пошла другим путём.

Впрочем, многие и без тюрьмы не могут организовать себя. :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## «Нападение» . 06.05.2018

Тут тоже тюремные истории ещё те. Пьяный мент избил девочку. Побои были зафиксированы. Чтобы избежать ответственности, мент привлёк девочку по статье 317 УК РФ «Нападение на сотрудника полиции». И получила девочка полтора года реального срока.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Развилка. 07.05.2018

Не стыдно в глаза смотреть — это очень важный показатель для меня. Мне не стыдно ни перед людьми, с которыми я пересекалась в тюрьме, ни перед теми, кто меня поддерживал на свободе. Но мне ужасно стыдно будет смотреть в глаза тем, кто испугался и прекратил все контакты при появлении сложностей. Не знаю почему. И не знаю пока — что с этим делать. Ни обид, ни претензий нет и в помине. Но… как смотреть им в глаза, если что?

*#Оттуда, Семейный капитал, Тюремные хроники*

## Крепкий сон. 08.05.2018

Всю жизнь спала чутко, всё слышала и чувствовала. А в тюрьме вдруг охранные системы отключились напрочь.: ) Ничего не слышу от отбоя до подъема.

Смешно. Потому что так хорошо охраняют, наверное.

Расслабилась.: )

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## День Свободы. 09.05.2018

Победитель всегда свободен. Это бонус к победе. Очень ценю этот праздник. У людей даже другие лица в этот день, как будто каждый получает… чуточку всемогущества. Победитель — это не звание, это состояние. С Днём Победы!

*#Оттуда*

## Точка Выбора. 10.05.2018

«Критическая точка — точка выбора. Выбирая, дух взрослеет».

Роберт Хайнлайн, «Чужак в стране чужой».

Прочитала хайнлайна. Идеология братьев по воде очень близка. Примерно так и живу.

И ещё: как жить — каждый решает сам. И никакие внешние условия тут ни при чём.

*#Оттуда, Тюремные хроники, Чужие мысли*

## Не ходите, дети, в камеры гулять. 11.05.2018

В тюрьме разрешены шашки, шахматы, домино, нарды. Всё. Прописано в законе. Подозреваю, что в этом месте закон перегнул палку. Я понимаю, что карты логично запретить, но остальные настольные игры почему нельзя? Чем провинились лото, например, или какие-нибудь ходилки, наконец? Может, составители закона не знают других игр? :)

А в итоге — в шахматы никто не умеет, в шашки никто не играет, нардов нет ни у кого. Только и остаётся — козла забивать. :)

Не ходите, дети, в камеры гулять — игрушек тут нет.

Берегите себя :)

*#Москва-Шестёрка, Питер-Арсеналка, Тюремные хроники*

## Чётки. 12.05.2018

«Женщины не так агрессивны, более спокойны и сообразительны. А способность к деторождению позволяет им нести энергию жизни и добра».

Б. Вербер.

Экспериментировали с созданием чёток. Пришлось признать, что цивилизация зеков-мужчин ушла вперёд. Хорошо, что они немного рассказывали о технологии процесса. Быстро движемся к мастерству. И исключительно в рамках правил. :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Бешеные нарды. 13.05.2018

Игра в нарды имеет кучу разновидности. Одна из любимых — «бешеные нарды». Суть в том, что когда выпадают дубли (куши), то ходятся последовательно по четыре хода на каждую цифру цифру куша до шестёрки. Если ходить некуда, то неиспользованные ходы играет соперник. Это суть. Игра становится захватывающий и непредсказуемый. Выпавшие |:| могут кардинально поменять ситуация в игре.

Выпадение двойных цифр очень напомнила проблемы в обычной жизни, когда события сулят и трудности, и возможность развития. А кроме интереса и азарта жизненные неожиданности и не должны выдавать ничего. :))

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## СМИ писали… 14.05.2018

Прочитала тут в газетке про блокировку тех сайтов, что в установленный законом срок не удаляют порочащую информацию.

Ощущение двойственное. С одной стороны, страшновато — возможность блокировки может вызвать злоупотребления, но надеюсь, что порядок действий прописан четко.

А с другой стороны — это очень хорошо. Потому что порочащая инфа, а она часто придумана, может разрушать судьбы людей и организаций. Кооператив «Семейный капитал» столкнулся с этим не один раз, когда журналисты в погоне за сенсацией писали всякую чушь. Но эта чушь действовала на сотрудников, пайщиков, контрагентов. Да и правоохранительные органы не оставались в стороне.

Помню вопрос на допросе при аресте: «СМИ написали, что Вы сбежали за границу. Как Вы это прокомментируете?»

Ох…

Мы не смогли тогда переломить ситуацию, наши письма на сайты со лживой порочащей информацией оставались без ответа. Сейчас закон выбрал путь блокировки. Практика покажет, насколько это срабатывает.

Берегите себя.

*#Оттуда, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Двенадцатая заповедь. 15.05.2018

Всегда подозревала, что заповедей больше десяти, и пыталась сформулировать заповеди развивающегося человека, ответственного за будущее. А тут вдруг нашла подтверждение своим мыслям у Владимира Серкина в «Свободе Шамана».

Итак, заповедь: «Не бойся». Это не в смысле безрассудной храбрости или шапкозакидательства. Заповедь о том, что не надо бояться предпринимать, действовать, придумывать, пробовать. Понимаете?

Пассивное поведение ведет к деградации. Не в этом поколении, так в следующем.

Только не надо путать активность с агрессией. Активность может быть позитивной, доброй и созидающей.

Не бойся! :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Несвобода. 16.05.2018

Очередные «гайки». Существенно сократили список продуктов, разрешенных в посылках и передачах. Говорят, что Роспотребнадзор выразился по всем СИЗО. Никакой мясомолочной продукции. Даже длительного хранения. Даже сырокопченую колбасу. Теперь надежда только на магазин, в котором близкие могут заказывать продукты.

Но это ещё не главная печаль. Окончательно запретили книги. Даже из «Озона». Беда.

Ладно. Конституционный суд нам помощь. Жаль только, что процесс долгий.

А пока… Чукча не читатель, чукча писатель : ) книги опасны

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Око близорукое. 17.05.2018

Пришёл ответ на мою жалобу по медицинскому обслуживанию в СИЗО-5 Санкт-Петербурга. Напомню, что в течение месяца жила с дикой болью. И не только врач не смотрел — да просто не было никакого врача, но и лекарство от родственников не принимали.

Ответ надзорного органа был настолько предсказуем, что у меня уже был подготовлен ответ на ответ. :)) Формулировок не хватало. :) А вот и ответ:

«Вы неоднократно осматриваясь медицинскими работниками МЧ-12, прошли лабораторное и инструментальное обследование. По имеющимся заболеваниям получили лечение.» :))

Супер! Бумага — это хорошо. А то вдруг я не заметила или забыла. Ха! Отправим ответ пожёстче. Время есть. Вот в СИЗО-6 Москвы медицинское обслуживание есть, а в СИЗО-5 Питера — нет. Факт. И либо они доберутся до виновных, либо в СИЗО-5 СПб придётся наладить медицинскую помощь. Меня устраивают оба варианта. А отписки… Я помню золотое правило: «Переговоры начинаются, когда другая сторона сказала нет». :)

*#Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Тюремные истории. Показатели. 18.05.2018

К сожалению, многие истории типичны. Случайности, подставы, борьба за показатели. И бороться за каждый случай — сизифов труд. Необходимо менять подход к показателям работы правоохранительной системы.

На днях сокамерница получила приговор. Бабулей просто воспользовались. Подставили. И ведь ни один участник этого ужастика не смог удержаться — не трогать 65-летнего человека. По статье, что ей досталась — от 10 до 15 лет. Судья дал меньше меньшего — 8 лет. Спасибо ему, конечно. Возможно, это максимум проявления человечности в этой ситуации. Только… основания были и вообще освободить от уголовной ответственности. Но — не принято это пока. И собирается бабуля на зону да мечтает об амнистии.

Решение есть. Надо делать. И понимать, что в любой момент это может коснуться каждого. И даже распространение информации — это действие. А по нынешним временам — достаточно смелое и сильное. Действуйте. И… берегите себя и близких.

Ссылки по теме:

Петиция о запрете заключения в СИЗО людей, не судимых ранее и физически не опасных обществу

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные истории*

## Новая метла. 19.05.2018

В СИЗО — новый начальник. Шубин Андрей Юрьевич. Старый тоже никуда не делся — остался замом. Потрясения неизбежны, к сожалению.

Сложность не только в специфике учреждения и обслуживающем контингенте. Набор законов, регламентирующих жизнь здесь, противоречит Конституции не только в целом, но и в мелких деталях. Поэтому очень многое зависит от порядочности и здравого смысла руководства. Почему-то верится в лучшее.

А на прогулку нашу камеру не водят с 24 апреля 2018. Всё, что не убивает, делает нас сильнее.

Берегите себя.

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Библиотекарь. 20.05.2018

Как-то подумала о спокойной жизни :) Пойду работать… библиотекарем. :) Буду ухаживать за книжками, сидеть за стойкой, отвечать на вопросы…

Но мечты не удержишь. И понеслась :) Буду пиарить хорошие книги, устраивать встречи читателей, дискуссии, сделаю кружок библиотекаря, где можно будет научиться составлять библиотеку, ремонтировать книги, анализировать новинки, составлять список чтения для детей для развития определенных качеств. Дальше. Мнемоника и скорочтение, ораторское мастерство, риторика. Ещё — межбиблиотечные связи и обмен личными книгами, народная библиотека и супер-сайт на эту тему и… многое другое.

Короче, поняла, что моя жизнь библиотекаря совсем не обещает быть тихой. :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Ивашка. 21.05.2018

Иногда ощущаю себя в сказке. И как в сказке, позитивна и последовательна. :)) И чем сказка закончится — точно знаю :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Загадка. 22.05.2018

Представьте себе следственный изолятор. Обычному человеку это сложно, поэтому упростим задачу. Организация, обслуживающая пару тысяч человек.

Речь о магазине, обслуживающем арестантов. Еще сравнительно недавно были электронные терминалы, в которых заказы делались легко и быстро. Вспомните автоматики в Макдаке. :) В какой-то момент их демонтировали. И унесли.

Теперь работа магазина — непрекращающийся геморрой всех участвующих сторон: зеков, бухгалтерии, магазина, доставки. Бумажки, заполненные корявыми почерками, часто с ошибочными цифрами — собирают не каждую неделю. Приход заказов непредсказуем это может быть и через 2-3 недели, а может и через месяц-полтора.

Зачем убрали терминалы? Загадка. :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Московское долголетие. 23.05.2018

Читаю в газете про новую программу в Москве для людей старшего возраста. Всё очень круто: занятия творчеством, образование, скандинавская ходьба и прочие направления. И знаете что? Горжусь кооперативом «Семейный капитал».

Подобная программа была реализована на протяжении 5 лет в Питере и многих филиалах по стране. Кооператив по-настоящему заботился о людях старшего поколения. Кроме разнообразных занятий по интересам (бесплатных для пайщиков) в офисах кооператива проводились и обычные посиделки с чаем и плюшками. А ещё ведь участие в программах кооператива давало надежную прибавку к пенсии. Неудивительно, что многие пайщики в Кооперативе с первых лет работы и не бросили свое детище даже в трудные времена. Недаром говорят, что трудно начинать, трудно впервые что-то сделать. Дальше — проще. Последователей всегда больше, чем первопроходцев. Всё было не зря. Кооператив «Семейный капитал», нам есть чем гордиться.

*#Оттуда, Семейный капитал, Тюремные хроники*

## Истинный полдень. 24.05.2018

«В старину, задолго до большой войны, было пять сторон света. Север, Запад, Восток, Юг и Истинный полдень. Сейчас уже никто не знает точно что это такое. Где-то на юго-востоке. Та сторона, где солнце подбирается к самой высокой точке, но ещё не дошло до неё. Считалось тогда, что это — счастливая сторона. Как бы символ молодости.

Владислав Крапивин, «Голубятня на желтой поляне».

Вот мне интересно. Прошли выборы. Почему кандидаты не предложили себя избранному президенту? Ведь типа все заявили, что готовы трудиться на благо России. Или готовы только командовать? :) А взять, например, какую-то зону ответственности в государстве и сказать: «Я тут всё сделаю, я знаю как. Вот мой план и вот прогнозируемые результаты со сроками». Ведь президент — серьезная должность, много требующая от человека. Какие конкретные результаты деятельности могут предъявить кандидаты? Что они умеют? Чего достигли? Где безупречно выстроенный хоть кусочек страны?

И тут вариантов может быть около два: либо они врали о своих желаниях, либо о своих возможностях, либо… :) Я, хоть и не играю в политические игры, сказала бы примерно следующее: Президент, победитель — один, но мой опыт, знания и возможности готова поставить на службу России. Готова взять на себя развитие территории. Это и возрождение деревень, и продовольственная безопасность, и развитие экономики на местах. Дайте мне любой район не рядом с Москвой и Питером. Какой-нибудь очень типичный район в средней полосе. И через два года это будет не только сытый, успешный и крепкий район, но и комплект документов с инструкцией, позволяющей тиражировать данный опыт.

Денег от государства не надо. Условие только одно: мораторий на беспредел чиновников и «правоохранителей» на территории. Как реализовать этот мораторий — конкретика есть. Всё строго по закону. Такое вот смешное условие. Обозначьте район, через три месяца будет пошаговый план с обозначенными результатами. А заодно инструкция по контролю коррупции, отработанная на месте. Самонадеянно? Вовсе нет. Район — это очень скромно. Если не ошибаюсь, у нас в России их 2048. Что там есть обычно?

Райцентр, поля, заброшенные или полузаброшенные деревни, с закрытыми школами и автолавками. Какие-то производства, какие-то достопримечательности.

Здание бывшего магазина в посёлке Лесозавода (Шатурский район)

Район — это тот масштаб, в котором можно навести порядок вручную. А потом настроить систему управления на адекватное развитие. Отработав технологию развития территории на районе, можно заняться областью. Да, мгновенно результатов не будет. Но будет план, который будет последовательно выполняться. И в каждый момент можно будет сверять текущие показатели с тем, что прописано в плане.

Забавно, что всё можно реализовать, не нарушая ничьих интересов.

Нищета и запустение никому не выгодны.

И я не о плановом хозяйстве, хотя его элементы очень полезны. Дело в предсказуемости. Если люди будут точно знать, когда и что появится в их жизни, и что им нужно для этого сделать, жизнь будет веселее.

Возможно, мы мало говорили о своих планах и наработках, но их с избытком хватит на решение хозяйственно-экономических проблем любого района. И не надо никаких тепличных условий. Всё в рамках действующего законодательства.

Рано или поздно стране понадобится люди для реальной работы. Те, кто умеют и хотят сделать страну процветающей. Уже скоро.

А пока — реакция на попытки сделать что-то на благо страны однозначна. Сломать и посадить.

«Чтобы выпутаться из положения, неизбежно ведущего в катастрофе, надо изменить направление движения».

Бернар Вербер «Отец наших отцов».

Золотой век начнётся с Россией. Это уже общеизвестно. И уже рассветает. Потому так и колбасит многих. Держитесь! А остальное приложится. :)

*#Оттуда, Семейный капитал, Тюремные хроники, Чужие мысли*

## Адвокаты. 25.05.2018

«Китайцы считают, что легионы демонов у чертей состоят из грешников, уже отбывших срок своего наказания. На собственной шкуре испытав, что такое зло, они стремятся перенести его на других, создавая вечный цикл возмездия».

П. Коэльо, «Дьявол и сеньорита»

Тема адвокатов волнует многих. Собрала по тюрьмам крупицы опыта. Сейчас расскажу, кто такие адвокаты, что им надо, какие у них возможности и как не потерять деньги с недобросовестным адвокатом.

Самое главное: ни один адвокат вам не поможет, если вас решили посадить. Ни один. О категориях адвокатов чуть позже, а пока о системе.

Институт адвокатуры умер. Не имеет значение ни знание законов, ни умение видеть процессуальные нарушения, ни ораторское мастерство. Триединая дружба следствия, судов и прокуратуры решают судьбы людей, не допуская вмешательства.

Посмотрите на процессы последнего времени: адвокаты по своему профессиональному применению бесполезны. Следствие плотно взаимодействует с судами. И прокуратура может оказываться всего лишь в доле. Случаев, когда следствие, суд и прокуратура не единогласны на суде — единицы.

Планируемая судебная реформа может разорвать этот круг. Назначение судей не председателем суда, а автоматом — уже колоссальное достижение. Беда прокуратуры — в кадрах. Прокуроры, встречающиеся мне на пути, в подавляющем большинстве случаев не знают законов. Они в принципе не способны исполнять надзорные функции ввиду правовой неграмотности. Решение по прокуратуре напишу позже и отдельно. Набираю пока аргументы и факты в захватывающей переписке с различными прокуратурами. :)

Адвокаты при существующей системе бессильны. Рассмотрим подробнее эту братию.

Есть три основных типа адвокатов: решалы, законники и аферисты :)

Теперь по порядку.

**«Решалы»** тесно связаны с органами. Контакты этих адвокатов людей порой и получают от сотрудников органов. В этом случае всё решается за деньги. Часто это просто способ отъема денег от клиентов. В большинстве случаев деньги платят, но результатов нет. Особенно опасен этот путь для тех, кого просто «засадили». Вступив в контакт с «решалой», клиент повязывает себя полностью.

**«Законники».** Законников очень немного. А законников по профилю того преступления, в котором обвиняют — ещё меньше. Законники умеют задавать правильные вопросы, умеет защищать клиента от уловок следствия, противодействуют навешиванию статей и эпизодов. Законники видят и умеют фиксировать процессуальные нарушения. Это обычно не помогает при вынесении приговора, но в последствии на разного уровня судах может пригодиться. Законники берутся не за всё, уважает себя, но нередко не принимают во внимание потребности клиента.

**«Аферисты»** — самый распространённый тип адвокатов. :) Абсолютное большинство. К сожалению. Беспомощность адвокатуры против круговой поруки судов, прокуратуры и следствия только умножает число таких адвокатов.

Аферисты бравируют опытом и знаниями. На поверку и то, и другое может оказаться фикцией. Аферисты не стесняются в запрашиваемых суммах, часто пропадают со связи, всегда очень «заняты» и редко приносят пользу клиенту.

Особо опасны аферисты, которые плотность контактируют со следствием. Они часто убеждают клиента признаться даже в не совершенных преступлениях, запугивают бесполезностью сопротивления. Особо цинично ведут себя с теми, кто плохо говорит по-русски, могут откровенно подставить.

Про адвокатов, которых предоставляет государство, в следующий раз — тема очень непростая и интересная, решение тоже есть.

Теперь, как же защитить себя от обмана и недобросовестных адвокатов? Решение простое: в договоре с адвокатом прописывайте всё: участие в судах, составление жалоб, визиты в органы, посещение СИЗО, подготовку выдержек из законов. Чем больше своих потребностей вы пропишите, тем больше шанс получить эти услуги. Ничего не бывает по умолчанию. Да, принято, что адвокаты дважды в месяц посещают подзащитных в СИЗО, но если это не прописано в договоре, вы услышите кучу отговорок, почему это не делается.

Если в договоре с адвокатом не прописаны составления и подача жалоб, включая апелляционные, вы можете услышать требования отдельных денег за любые действия. Все адвокаты состоят в соответствующих коллегиях, и жалоба в коллегию действует на 99%, если предмет жалобы зафиксирован договором. Зачем же нужны адвокаты, если в нынешней ситуации соблюдение законов так зыбко?

Только два аспекта: безопасность и связь. В присутствии адвоката меньше возможен беспредел. Наличие и визиты адвоката заставляют внимательнее относиться сотрудников СИЗО — ведь адвокат может направить жалобу, а это уже не арестантские жалобы, которые редко покидают стены СИЗО. Свидание с родственниками могут и не дать, и визит адвоката часто становится единственной ниточкой безцензурной связи.

Обязательно прописывайте в договоре с адвокатом защиту интересов клиента в СИЗО. В СИЗО жизнь не простая, и правильная жалобы в нужные органы здорово усиливает безопасность содержания. В СИЗО недоступны также тексты законов, здесь тоже адвокат незаменим. Не бойтесь перегрузить адвоката. Составление жалоб, даже при минимальном опыте, занимает не так много времени.

Большинство адвокатов требуют деньги вперед. И как только они эти деньги получают — ваша защита — только слова в договоре. Перефразируя закон Мёрфи, можно сказать: «Всё, что можно и нельзя не сделать, будет не сделано».

Надеюсь, что есть сайт, а если нет, его следует создать — сайт данных об адвокатах с чёрным и белым списком. :) Сайт должен плотно сотрудничать с коллегией адвокатов, отображать претензии к адвокатам и результаты разборок.

Немного про иллюзии. Практически ни один адвокат не работает в интересах клиента. Звучит дико, но это правда. В редких случаях интересы клиента и адвоката совпадают, но это действительно очень редко. Интересы адвоката для адвоката всегда на первом месте. Поэтому до начала работу проговаривайте цели и задачи адвоката. И не стесняйтесь фиксировать это в договоре.

Выводы

- Надейтесь только на себя.
- Адвокат не сильнее системы.
- Безопасность и связь — только это сейчас могут обеспечить адвокаты.
- Пишите договор с адвокатом очень подробно. Вы получите только то, что конкретно прописано в договоре. Обязательно пропишите цену за услуги и обозначьте, что это сумма только за полное исполнение договора.
  И не пугайтесь, что большинство адвокатов откажется прописывать всё в договоре — вы просто сэкономите деньги. ВАШ адвокат сделает то, что нужно ВАМ.

И в заключение

- Процесс подбора адвоката лучше осуществлять неспеша. Начинать в фоновом режиме знакомиться с адвокатами, собирать отзывы знакомых.
- Если беда постучится в ваш дом — вы будете защищены.
- Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Мать Тереза. 26.05.2018

Долго думала, писать ли об этой тюремной истории. Потому что цинизм органов тут беспредельный. Ради лишней галочки не гнушаются ничем.

Подробностей писать не буду — они слишком чудовищны. Кратенько, суть.

Жила-была девушка. Из серьезных высших кругов. Девушка правильная, добрая и достойная. Не отмахивалась от просьб о помощи. И была у девушки знакомая, не сказать, чтобы близкая, почти не встречались. Знакомая иногда звонила.

И попала эта знакомая в СИЗО. Попросила девушку о помощи — найти адвокатов, встретиться, переговорить. Что, в общем, девушка и сделала. А дальше начинается ужас.

Органы, что вели дело знакомой, решили «разработать» девушку. Состряпали материал, предъявили обвинение в «корыстных замыслах по завладению имуществом» знакомой. Да-да, опять ст. 159 УК РФ. Арестовали. Год до суда в СИЗО. И суд дал три года (!!!) Ни пострадавших, ни ущерба, ни малейших доказательств… В деле только «разработки».

Всё. Берегите себя. Пожалуйста. Будьте осторожны и внимательны. К сожалению, любая помощь тем, кто попал под машину органов, может быть небезопасной. Да, из нас сейчас пытаются вышибить всё человеческое. Не поддавайтесь. Добро и свет есть. Будущее за теми, что останется Человеком. Только… Берегите себя. Пожалуйста.

*#159 статья, Оттуда, Тюремные истории*

## Сговор. 27.05.2018

Любая семья, любые коллеги, любые друзья — это группа лиц по предварительному сговору. Такой вот у следствия обычно взгляд на отношения.

Периодически думаю — каково это — 30 лет почти не расставаться и… быть насильно разлученными. Просто потому что кто-то захотел поживиться за счёт Кооператива.

Чтобы сломать Игоря Белоусова — арестовали жену и сына. У них был шанс увидеться, но… в Москву мужчин отправили другим этапом. Специально, чтобы не могли увидеться с женой и матерью. Что это? Изощренное издевательство? Пусть «подельники». Но при полном отсутствии следственных действий за 8 месяцев ареста этим «подельникам» просто нечего сказать друг другу, кроме слов любви и поддержки. Такой вот сговор.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Семейный капитал, Тюремные хроники*

# Жалоба в Конституционный суд 22.04.2018

28.05.2018

В Конституционной суд РФ
от обвиняемой Верховой Наталии Дмитриевны
06.12.1969, содержащиейся в ФКУ СИЗО-6 Москвы

Прошу проверить конституционность статьи 108 УПК РФ. Согласно существующей практике, подозреваемые и обвиняемые могут быть подвергнуты мере пресечения в виде заключения под стражу. Это мера пресечения подразумевает содержание в СИЗО. Между тем, содержание в СИЗО, по сути и по форме, является содержанием строгого режима, а значит не может избираться для лиц, подозреваемых и обвиняемых в преступлениях, максимальное наказание за которые предусматривает общий режим содержания.

Строгий режим содержания в СИЗО при зачете наказания учитываются один к одному, даже при назначении наказания общего режима.

На сегодняшний день подозреваемые и обвиняемые в преступлениях содержатся в условиях более строгого режима, чем осужденные за аналогичные преступления.

Я являюсь обвиняемой по статье 159 ч.4 УК РФ. Не касаюсь обоснованности обвинения в мой адрес и работы следствия, судов и прокуратуры в данном случае. Все подробности на сайте: www.freeverhova.ru.

Пять месяцев я содержалась под стражей в СИЗО-5 Санкт-Петербурга, сейчас переведена в ФКУ СИЗО-6 Москвы. С момента ареста 04.11.2017 мне не разрешаются даже звонки престарелому отцу и дочери.

Судом последовательно приняты решения об избрании и продлении данной меры пресечения, заключения под стражу, в отношении меня, что непосредственным образом затрагивает мои права и свободы.

Согласно статье 55 п.3 Конституции РФ права и свободы человека и гражданина могут быть ограничены Федеральным Законом только в той мере, в какой это необходимо в целях защиты основ конституционного строя, нравственности, здоровья, прав и законных интересов других лиц, обеспечения обороны страны и безопасности государства.

Содержание в СИЗО при обвинении по статье 159 является излишне строгим, а статья 108 УПК РФ не ограничивает возможности судов при выборе меры пресечения видом и категорией преступлений, учетом режима возможного наказания.

На суд возлагает обязанность оценить достаточность имеющихся в деле материалов, подтверждающих законность и обоснованность меры пресечения, наличие оснований и условий для избрания, а также соразмерность налагаемых ограничений тому наказанию, которое может быть назначено по приговору.

Мера процессуального обеспечения не может быть строже, чем грозящие наказание.

Суд не может игнорировать дела и обстоятельства, которые повлияют на окончательное наказание.

Заключение под стражу при отсутствии доказательств физической опасности для общества и доказанных возможностей помешать следствию нарушает целый ряд положений Конституции РФ. В частности, ст.21 п.2, ст.38 п.3, ст.49 п.2, п.3.

Решением о применении конкретной меры пресечения не предопределяется вывод по основному вопросу уголовного дела — о виновности подсудимого и о его наказании.

Тем не менее, практика показывает, что при избрании меры пресечения в виде заключения под стражу вероятность оправдательного приговора практически исключается.

На основании вышеизложенного прошу:

Признать ст. 108 УК РФ не соответствующей Конституции РФ в случае применения меры пресечения в виде заключения под стражу подозреваемых и обвиняемых, чья статья обвинения не предусматривает наказания в виде лишения свободы с отбыванием наказания в условиях строгого режима.

22.04.2018. Верхова Н.Д.

*#159 статья, Медицина в СИЗО, Отец, Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Весенние мелодии. 29.05.2018

Пребывание в СИЗО — серьезная нагрузка для психики. Выдерживают не все. И в камерах появляются… странные личности. Зависание, неадекватные реакции, вспышки агрессии, истерики — к сожалению, это не редкость.

А тут вечером к нам привели в сумасшедшую в активной фазе. :) Ночь прошла без сна. Она мыла ложки в унитазе, поджигала мусор, шарилась по тумбочкам, непрерывно вещала про то, как она украла малазийский боинг, как что-то копала в Беслане, цитируя суры из Корана, рассказывала значения мусульманских имен, о своих делах в Турции и многое многое другое. В общем, было весело. Все очень устали.

Когда на утренней проверке мы пытались вызвать бога справедливости и упоминать всуе про Фемиду, нам четко обозначили — где наше место и с кем. Где — мы, в общем-то, смирились, а вот по поводу с кем — инстинкт самосохранения никак не поддавался отключению.

Помогла нам сумасшедшая: кинулась на стену, сорвала плакаты рядом с пожарными кранами и спряталась в строй. :) Детонатор сработал. :) Ее забрали.

Интересно, что ее появление не прошло даром и для наших тихих психов. У одной случился срыв, ее забрали в Бутырку — там тюремная психушка. А вторая немного протрезвела.:)

Жизнь продолжается. Берегите себя.

*#Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Корысть. 30.05.2018

Мои волосы плохо умеют шевелиться по команде. Но если это вопрос тренировки, то я в правильном месте. :) Маленький кусочек чужой тюремной истории.

Директор, бизнес, статья 159 часть 4 УК РФ. Но чтобы дело в суд передать, надо обозначить личную корысть. Следите за руками. :)

«Как директор, Вы подписывали документы, что обеспечивало деятельность предприятия и сохраняло Вам рабочее место. Значит, Вы действовали из личной корысти».

Вуаля!Берегите себя.

*#159 статья, Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные истории*

## Государство. 31.05.2018

Утихла шумиха вокруг инаугурации. Есть время перечитать указ президента о национальных целях и стратегических задачах до 2024 года. Документ, безусловно, нужный и очень содержательный. Конечно, основная информация будет к 01.10.2018 в тех пошаговых планах по направлениям, что разработают в правительстве. А теперь можно и поворчать. :)

Стратегии для огромной страны на 6 лет — это не стратегия. Это тактика. Планировать необходимо хотя бы лет на 20-30. Дальше. В России уже второе столетие существует мощная экономическая школа. Не все об этом знают, периодически пытаются уничтожить, стремятся насадить западное воззрение на экономику, мы все рассветы и подъемы России базируются на разработках русских экономистов. Межотраслевые балансы — оттуда же.

Так вот, документ о целях и задачах не сбалансирован. Понимаю, что он во многом для пиара, но тем не менее. Есть базовые отрасли, которые при должном внимании вытаскивают экономику. И направляя деньги именно на базу, мы экономим. Но — начнём с целей.

Цели должны быть конкретны и измеряемы. Это азбука. Однако, цифры есть далеко не везде. То есть, при всех усилиях, достигнуты ли цели, мы не узнаем.

По порядку. Поставлено 9 целей. Отлично. 9 — очень хорошая цифра. :)

1. Устойчивый естественный рост численности населения. Отличная цель. Очень важно. В России мало народу. Надо хотя бы 300 млн. И не приезжих.

При разработке планов развития территорий мы проводили исследования — а что же надо для повышения рождаемости. Да, кооператив «Семейный капитал» думал и об этом.

Оказалось — ничего отдельного. При хорошей жизни люди с удовольствием рожают и растят детей и внуков.

Необходимо — достаток, доступность медицины, образования, уверенность (или хотя бы надежду) в будущем. Всё остальное — мелочи. И, конечно, необходим государственный пиар. В России должно считаться нормальным иметь два-три ребенка в семье. А в этой цели, если обозначить, обязательно должны быть цифры. Они легко считаются. И исходя из этих цифр легко считаются необходимые действия. Внутри документа есть цифра по суммарному коэффициенту

рождаемости — 1.7. Но этой цифры недостаточно для устойчивого естественного роста численности населения.

2. Про продолжительность жизни — всё понятно. Тут даже цифры есть. Нюансы могут быть в акцентах. Что важно в этом аспекте? Опять же государственный пиар. Пенсионеры — это колоссальная армия активных людей, и пенсионный возраст должен восприниматься не «возрастом дожития», а возрастом счастья.

Программа «Московское долголетие» идёт в нужном направлении. Необходимо дать возможность пожилым людям приносить пользу.

3. Рост доходов. Тут всё ясно и привязано к инфляции.

4. Снижение уровня бедности в два раза. Очень подозрительная цель. Бедных отстреливать что ли будут? Тут было бы логичным упомянуть децильный коэффициент (соотношение 10% самых богатых к 10% самых бедных). Цифры есть. Обозначить сегодняшнюю и желаемую. тут же можно обозначить минимальный дохд, который допустим в нашей стране. И эту цифру начать растить год за годом. И это не МРОТ, если кто не понял. :)

5. Улучшение жилищных условий для 5 млн. семей ежегодно. Формулировка загадочная. Подозреваю, что примерно столько семей и улучшают свои жилищные условия и без гос. цели. В документе в разделе подробностей цифр чуть больше, но всё равно не понятно — какую цель хочется достичь.

Ну и заодно выскажусь, что любая цель имеет смысл тогда, когда обозначено существующее положение. Благо статистика готова предоставить любые данные. :)

6. Про технологическое развитие понравилось. Не очень, правда, понятно, что будет считаться инновацией, а потому цель про организации, применяющие инновации, опять выглядит немного неконкретной. Ждём октября.

7 и 8. Пока без вопросов, ждём подробностей.

9. Немного цинично сформулировано, но всё понятно.

В целом документ замечательный. Немного удивило в документе несоответствие национальных целей и поручений правительству. Но это мелочь. Давно заметила, что документы нынешнего времени часто плохо структурированы. Возможно, специально. :)

Очень приятно, что указ о целях появился сразу после инаугурации. Это очень правильно. Живём интересно.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Судейский интеллект. 01.06.2018

Читаю в газете:

«В порядке эксперимента в столичных судах планируется подключить искусственный интеллект к подготовке судебных решений».

Но это не то, что вы подумали, это всего лишь пока автоматизация ряда процессов, которые осуществляются судом и секретарем судебного заседания.

Возможно, это исключит ошибки и канцелярские нарушения. Порой это может сохранить чьи-то судьбы. Очень неплохая задумка. Посмотрим, как будет реализована.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Девочки и пальчики. 02.06.2018

Высший пилотаж нецензурщины, когда слова теряют свое значение и выглядят аккуратным кирпичиком могучей постройки.

Лев Гурский, «Перемена мест».

Есть такая замечательная процедура — «катать пальчики». Как любая суперважная процедура — эта обросла абсурдом. Как могильный камень мхом.

Первый раз мне сняли «пальчики» после задержания. Очень цивильно. В каком-то отделении полиции на световом экране. Сканер. Никакой краски. Второй раз эта процедура была проделана в СИЗО-5 СПб. Не так цивильно. Краску пришлось отдирать губкой и хозяйственным мылом. На вопрос, чем плохи первые данные, ответ был замечательный: «У нас должны быть свои». Хотя печатки вовсе мои. :)

Ну да ладно. По прибытии в СИЗО-6 Москвы всё повторилось. Поступил — сделай пальчики. Цивильно, сканером. Ладно. Не подходит им экземпляры из моего личного дела. Не доверяют друг другу. Что еще может быть? Многоступенчатый заслон от подделок? :) Но на этом дело не закончилось. Через пару недель после прибытия меня-таки повели опять на пальчики. Теперь краска. Опять мочалка и мыло. :) То есть доверия нет даже внутри одного СИЗО. Ну ладно, хоть не отрубают эти пальцы. Для верности. А может, кто-то великий диссертацию пишет? «Влияние СИЗО на рисунок отпечатков пальцев».

И меня удивляет — как же в нашей стране вообще решились использовать отпечатки пальцев, например, в загранпаспортах, если эта процедура столь недостоверная и непредсказуемая? :)

Берегите себя :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Питер-Арсеналка, Тюремные хроники*

## Иллюзорный мир. 03.06.2018

Причин для безудержного веселья в камере может быть много, несмотря на тюрьмовую тюрьму. :) Рассказываю.

Приходил как-то уполномоченный по правам человека. Слово за слово — и тут он выдает:

«Что вы всё время жалуетесь? У вас уже даже автозаки с биотуалетом!»

Занавес.

Ох, как смешно. Наверное, где то есть экземпляр автозака, который предъявляют правозащитникам. Ха-ха. С биотуалетом.

А если серьезно, то… всё, что приходится здесь испытывать, имеет высший смысл. Ни один правозащитник, депутат, адвокат, сотрудник органов — не отправляются сюда по доброй воле, чтобы увидеть изнутри и попытаться изменить к лучшему. Визиты прокуратуры носят такой же формальный характер, как и их отписки на письменные жалобы.

Поэтому одной из моих задач является информирование о реальном положении вещей. Потому что даже нужные изменения не могут быть предложены теми, кто не знает — как всё на самом деле устроено. Страшно далеки они от народа. За стенами дворцов. Будды малолетние. :)

Здесь — уникальная информация. Её надо всего-лишь распространить. Это может каждый. Это легко.

Иногда дело не в том, чего мы ждем от жизни, а в том, чего она ждёт от нас.

Действуйте. И… берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Жизнь после. 04.06.2018

«Не будет у тебя жизни после тюрьмы! Никакой не будет, ни плохой, ни хорошей! Мыканье да горе останутся, а больше ничего!»

Татьяна Устинова «Один день, одна ночь».

Тюрьма — ладно. Тут всё просто. Гораздо сложнее выйти и не сломаться. Человеку, долгое время испытывавшему чудовищное психологическое давление, после освобождения требуется психологическая помощь. Душевные расстройства после выхода на свободу лолкают к простейшему варианту: оказаться опять за решеткой. И далеко не всегда это происходит осознано.

Разочарование и горечь по возвращении домой, неспособность принять все изменения, что произошли за время отсутствие, делают бессмысленным кусок жизни за решёткой. Ради чего было стремление домой? Ради чего было всё это терпеть и выносить?

Есть и чисто бытовые проблемы: нет работы, часто — ни дома, ни семьи. Ничего. А если еще и добавить длительную «отключку» от нормальной жизни, то… понятно, почему рецидив для тех, кого не ждут на свободе с помощью и поддержкой, практически неизбежен.

Особенно обречёнными являются попавшие под наркотическим статьям. Выйти, помыкаться без денег и работы и… легко вернуться к прежним занятиям. Просто от безысходности.

Есть ли решение? Да, безусловно! У меня тут вообще решений больше, чем проблем. :)

Решение: нельзя выпускать на свободу из колонии. Это не то что вы подумали. :) Объясняю. Должен быть переходный период в виде исправительных работ, например.

То есть, за полгода до окончания срока — наказание меняется: остаток срока отбывается на исправительных работах. Это дает возможность социализироваться, осмотреться, даёт гарантированную работу, возможно, и какую-нибудь общагу на этот период.

В этом случае, конечно, потребуется решать множество мелких бытовых и прочих вопросов, но оно того стоит. Помимо людей, у которых появляется шанс вернуться к нормальной жизни, это просто экономия.

Не верите? посчитайте. :) Нормальные граждане содержат преступников. Уменьшение числа преступников снижает эту нагрузку.

Тюрьма — ладно. Тут всё просто.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Самоцветы по-русски. 05.06.2018

Жила-была женщина. Работала геммологом. Серьезным международным специалистом. Драгоценные камни — большие деньги, а значит и большое внимание. По закону у нас драгоценные камни продавать нельзя, только изделия с ними. Но в разговорах, конечно, обсуждают «камни» — при достаточной величине именно их характеристики приоритетны в изделиях. Это и сыграло свою роковую роль.

Разговоры прослушивались, на их основании был сделан вывод о незаконном обороте драгоценных камней. Но нужно было взять с поличным. Караулили несколько месяцев. При покупке кольца с большим камнем — камень вынимают, внимательно исследуют на дефекты, смотрят на индификатор камня. Это обычно сопровождается видеофиксацией.

И вот… сделка, выемка камня, осмотр и… маски-шоу. Улики налицо: камень отдельно, преступники вместе. А видео… видеозапись изымается и исчезает в неизвестном направлении. Про камень стоимостью несколько миллионов долларов говорить смысла нет. Вот вам и палка, вот вам и арестантка. Очередное дело, которое будет долго-долго расследоваться.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Музыка понятий. 06.06.2018

«На синих воротничках матросов Российского флота издавна три белые полоски — знак побед при Гангуте, Чесме и Синопе».

В.Пикуль «Через тернии к звездам»

Для выражения музыки есть ноты. Это классное изобретение, позволяющие делиться прекрасным. Но сейчас про русский язык. Великий и могучий. Огромное количество подтекстов, намёков, скрытых смыслов, ассоциаций доступны образованному человеку. Образованный в данном случае — владеющий навыками анализа и абстрактного мышления, способный заполнять сканворды без интернета. :)

А вот если язык ограничен бытовыми понятиями и словарным запасом сериалов и развлекательных программ, то он становится утилитарным и… неинтересным. Это как картины, нарисованные строго цветами радуги. Без акцентов и перемешивания.

Дальше — страшнее. Ну не может человек понять то, для чего в его языке нет понятий. Например, вы можете представить в развлекательной программе слово «порядочность»? :)) Только в варианте «порядочная скотина!» :))

Подозреваю, что чтение толкового словаря дало бы немало открытий молодым сокамерницам. :) Жаль, что не бывает таких книг в библиотеках в СИЗО.

Слушать классическую музыку тоже может быть непостижимым уже для многих.

Не поддавайтесь! :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Моральная сила. 08.06.2018

На всякую силу найдется другая сила. А вот сила со временем превращается в мораль.

«Самый благотворный закон не может людей сделать благополучными, если они не потрудятся сами устроить своё благополучие под покровительством закона.»

Из Манифеста 19.02.1861 «О всемилостивейшем даровании крепостным людям прав состояния свободных сельских обывателей.»

Александр II не успел. Чтобы изменить жизнь будущих поколений, надо выдержать устремление хотя бы лет 20-30. Клиповое мышление — это ведь тоже противоядие к изменениям. Неспособность удержать мысль, идею, желание — защищает тех, кто управляет. И то, к чему с трудом привыкает взрослый, для детей уже естественно.

Сможем ли мы удержать стремление к хорошему и доброму? Если да — значит, хорошее и доброе достанется нашим детям и внукам. Еще один аргумент в пользу нынешних изменений к лучшему в стране. Сейчас бабушками становятся дети шестидесятников, внуки Победителей. Да, это время моего поколения.

Каких внуков мы воспитаем? Наши бабушки рассказывали нам о Победе, а наши родители — о стремлении к свободе. О чём мы рассказываем своим детям и внукам?

*#Оттуда, Тюремные хроники, Чужие мысли*

## Тюрьма. Краткое содержание. 09.06.2018

Люди немного разные, поэтому информация слегка усреднённая.

Первое состояние, которое испытывает человек после ареста — шок. Потому что всё дико и не так. Он вдруг перестаёт быть человеком в глазах окружающих. А окружают его отныне люди в погонах. Следующая сильная эмоция — удивление перед унижениями. Обыски, досмотры, приседания в голом виде, руки за спину, носом к стенке и многие другие мелочи, которые становятся повседневным бытом. Очень частая реакция на это — неспособность есть. Просто физически. Невозможно даже заставить что-то съесть. Почти всех накрывает обида на несправедливость происходящего. Обида сопровождается и подпитывается постоянными потерями. Человек, попавший в тюрьму, как правило, теряет всё: работу, детей, вещи, жильё, машину, друзей… Затем приходит голод. И он редко совпадает с наличием еды. Люди начинают не просто есть — жрать. Выпрашивают лишние порции, с тоской смотрят на чужие передачки, дочиста подбирают хлеб…

Потом приходит апатия. Есть, лежать — всё. Если в камере запрещено лежать, то — сидеть на табуретке, тупо смотря в стол, стену и прочие чудесные элементы декора камеры. На этой стадии начинает быстро набираться вес. Люди теряют форму. Начинают выползать все болячки и слабые места. Смена еды, воды, режима, привычного образа жизни заставляют бунтовать организм. При отсутствии мед. помощи ситуация быстро ухудшается.

Добивает тему удивления изумление перед судами и следствием. Кажется, что такого просто не может быть, но онон не только есть, но и держит в тюрьме. Приходит осознание беспомощности перед этой «машиной правосудия», действия которой кажутся бесполезными и люди впадают в ступор от происходящего.

Приходит эмоциональное отупение. Даже сильные раздражители не нарушают его. Это защитная реакция организма, который пресытился ударами.

Разочарование в законе накрывает всех. Кто держится дольше — добивается сотрудниками СИЗО, которые порой толкуют закон однозначно: Ваши права за забором.

Идёт постепенное привыкание к примитивному быту. Отсутствие цивилизации уже не удивляет. Через какое-то время уже цепляешься и за привинченную мебель.

Очень устаёт рука с непривычки — наверное, со школы никто не писал столько ручкой.

Постепенно отмирают духовные запросы и высокие интересы. В полный рост идёт потеря взаимопонимания с внешним миром. Письма только усиливают этот процесс. Идёт привыкание к вечногорящему круглосуточно свету, вечнозакрытым дверям, радио, орущему с 6 до 22.

Поездки на суды начинают приносить радостью Ведь это практически единственная возможность выбраться из камерной безнадёги, что-то увидеть, с кем-то поговорить.

Приходит тоска по цветам и ярким краскам. Радуют цукаты и леденцы. В некоторых камерах их ставят в прозрачных емкостях — как украшение интерьера. Любые нетюремные вещи начинают вызывать умиление: травинки, жучки, листики и т.п.

Через определённое время приходит понимание необходимости одиночества. Круглосуточное многомесячное пребывание с заключенными начинает давить на психику. Конфликт может вспыхнуть на людей бытовой мелочи. Эмоции, загоняемые внутрь, вылезают болезнями.

Раздражает отсутствие даров цивилизации. Возникает чувство неполноценности — все на воле были кем-то, а стали никем.

Такие вот стандартные стадии пребывания в тюрьме. Каждый проходит эти испытания по-своему. Все люди разные. Попав в жёсткие условия, люди раньше узнают о себе и окружающих, получают шанс кардинально изменить свою жизнь. И очень важно держать этот процесс под контролем. Но пока… тюрьма плодит криминалитет… Так проще.

Решение есть. Приходит время менять ситуацию.

Петиция о запретите заключения в СИЗО людей, не судимых ранее и физически не опасных обществу.

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Энцефалит против наркотиков. 10.06.2018

В этой тюремной истории абсурда хватит на несколько. А досталось всё одной женщины.

Итак, жила-была семья. Муж работал на стройке водителями, жена — на предприятии, ребёнок пошёл в детский сад.

Случилось несчастье. Муж заболел энцефалитом, болезнь быстро прогрессировала. Появилась агрессия, психозы. Жизнь медленно превращался в аду. Лечиться муж отказывался и все дальше уходил в другую реальность. В этой другой реальности у него жена изменяла ему с любовником и торговала наркотиками. Муж активно рассказывал друзьям и знакомым о жене-«наркоманке». Он перестал выходить на работу, даже не вышел, когда пришли за служебной машиной. Муж переломал и просверлил полы в квартире — искал, где жена «прячет наркотики».

Закончилось всё плохо. Добыв у кого-то наркотики, муж избил жену, ввёл ей дозу и написал заявление в полицию о жене, которая дома хранит наркотики. Полиция радостно отреагировала, возбудила уголовное дело, сняла с мужа показания. Побои тоже были зафиксированы, как и содержание наркотиков в крови у жены. Но муж утверждал, что побил жену за употребление наркотиков. Ему верили.

И вот на показаниях больного человека с измененной реальностью женщине предъявляется обвинение по статье 228 ч.2 — хранение наркотиков. Тем временем состояние мужа ухудшилось до паралича и потери речи. Госпитализировали. Жена под подпиской о невыезде, выхаживает мужа в больнице. Лечение действие, у больного наступает просветление. Жена просит следователя прийти в больницу и опросить мужа — тот понимает, что оговорил невиновного человека под действием болезни. Но следствию это не надо.

А тут новая напасть: следователь недавно вернулась из декрета и отчаянно нуждается в деньгах и успехах. А тем «тяжелее» раскрытые преступления, тем больше премия. И следователь переквалифицирует дело на ст.228 ч.4 — сбыт наркотиков. И есть «свидетели» — те знакомые мужа, которым он рассказал о жене-«наркоманке».

Дело передается в суд. Судью ничего не смущает странности дела. Свидетели, которые рассказывают, что им рассказывали, суд тоже устроили. Видеозапись с телефона, где жена сняла мужа в момент «затмения», которое явно зафиксировало сумасшествие — признана несущественной. Показания жены названы измышлениями.

На просьбу вызвать мужа в суд судья раскричалась: «Не вздумайте приводить себя этого ненормального, у меня и без него хватает показаний вас посадить». Ну да — свидетели рассказов. На 55 день в больнице муж умирает. Горе, похороны, хлопоты. А суд идёт. Судья приняла ходатайство о запросе в больнице справки о психическом состоянии мужа. Но ждать ответа не стала — вынесла приговор жене. 10 лет лишения свободы.

Четвёртый месяц жена в СИЗО — ждёт назначения апелляции. Ребенок остался без родителей.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Связи. 11.06.2018

У нас очень правильно в законах прописаны структура, связи, взаимодействие тех органов, что имею дело с преступлениями. Следствие, прокуратура, суд — это тройная защита закона.

Что думаю. Если бы хоть одно звено сейчас работало нормально (по закону), ситуация была бы в корне другой. Злоупотребление следствия пресекалась бы прокуратурой. А произвол на местах не пропускали бы суды в приговорах. А прокуратура бы использовала свои потрясающие возможности по надзору за законностью.

Но… пока всё не очень весело. Суды штампуют приговоры по обвинительным заключением, а прокуратура занимается… сами знаете — чем они нынче занимаются. :)

Ситуация меняется. И это радует. Это очень радует меня не только потому, что появляется шанс выйти из тюрьмы и защитить честное имя и дело. Это радует, потому что… человек создан для радости и счастья. А не может быть человек счастлив, когда мало в жизни правды, красоты и гармонии.

Но всё больше людей генерируют хорошее. Ура, товарищи!

Всё будет замечательно.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Концерт. 12.06.2018

Вконец закипев в четырёх стенах, решили устроить концерт. Всё было по-взрослому: конферансье, три отделения, стихи, песни, юмор, грим, костюмы, благодарные зрители. Гвоздём программы была девчонка-наркоманка с напрочь сожженными мозгами. После каждого номера она выходила и по бумажке читала анекдот: «Научился ёжик ж*** дышать, сел на пенёк и задохнулся». Каждый раз было безумно смешно.

В разгар концерта случилась проверка. Сотрудники несколько офигели от напряжённых и загримированных артистов, но всё обошлось.

Закончился концерт общим исполнением «Катюши». Очередной аргумент к тому, что только человек сам определяет — насколько он свободен.

Май 2018. *#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Одиночка. 13.06.2018

Сначала моё любимое: «И один человек — слишком много, чтобы изменить мир».

Перечитываю Пикуля «Битва железных канцлеров». Великая книга. Бисмарк. Он был один. Вообще один. В силу характера у него не было друзей. А в силу взглядов — единомышленников. И он один сделал много, казавшийся не то что невозможным, а вообще делом далекого и маловероятного будущего. Он просто был уверен в том, что так надо. Объединить немцев в Германию, да еще за такой короткий срок, да при очень и очень непростых обстоятельствах внутренних и внешних… — это было невозможно. Я сейчас не от тех войнах, что он развязал, и не о том, что именно им заложена основы фашизма. Я о другом.

Один человек — это слишком много, чтобы изменить мир.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Мышцы и органы. 14.06.2018

Человек — потрясающе замечательный организм. Взаимосвязи и возможности практически безграничны. Тем веселее смотреть, как кто-то накачивает мышцы. :)

Что такое мышцы? Отдельно от остального они мало значат. Движения влияют на органы системы, возможности, реальные и нереальные. И тупо качать мышцы, не зная и не понимая, что происходит с системой… странная бессмыслица.

Арестовывать людей — это как качать мышцы — может и эффектно выглядит, но разрушает органы системы.

«Последний император династии Мин с горя удавился на яблоне, которую потом казнили, заковав её в цепи, отчего дерево и засохло».

В. Пикуль «Через тернии к звёздам».

Неспособность к комплексному подходу губительна для будущего. Чего бы это ни касалось: здоровья, жизни, порядка, красоты и гармонии.

Шире взгляд! :)

Ссылки по теме: Петиция о запрете заключения в СИЗО людей, не судимых ранее и физически не опасных обществу

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Тюремное питание. 15.06.2018

С этой темой связано много тайн, вопросов и секретных схем. Рассказываю. Нормы питания зэков регламентируются Постановлением правительства №205 от 11.04.05 (с редакциями от апреля 2018 и пр.).

Смотрим. Ну, сразу замечаем несправедливость: осужденным полагается два яйца в неделю, а обвиняемым и подозреваемым — ни одного. При том, что по закону у нас подозреваемые и обвиняемые — невиновные люди.

Смотрим дальше. Меню в тюрьме стандартное: завтрак — каша, чай; обед — суп, мясо с кашей или макаронами, кисель или компот; ужин — картошка и рыба, чай. Вроде, всё логично: масло в кашу, половину молока — туда же.

Засада есть. Она в овощах. Поскольку не написано, каких овощей и в каком виде, то овощной гарнир обычно — кислая капуста. Никаких сырых овощей никогда. Один грамм чая на два стакана (завтрак, ужин) — забавно, но не страшно.

Страшно другое. Люди (невиновные) в среднем проводят в СИЗО один год. Хотя бывает и по 5-6 лет. Это внутренняя статистика. За год такого питания можно угробить здоровье вплоть до цинги.

Выпадают волосы, теряются зубы, обостряются заболевания, нападают дерматиты и прочие проблемы. Не у всех есть поддержка с воли, не во всех камерах делятся чесноком и лимонами.

Напишу запрос в Институт питания о влиянии на здоровье такого рациона. А вдруг рискнут ответить. :) Да и в Правительство напишу: возможно, в новом составе они способны увидеть абсурд пыток невиновных людей. И дело не в бюджете. Просто нужно ответственно подходить к таким постановлениям: запрашивать заключение медиков, профильных организаций по питанию, учитывать специфику учреждений при описании норм. Не пропишут сырые овощи — будет вечная кислая капуста, не прописано молоко на руки — будет мифическое молоко в каше.

И безусловно, вишенкой существующего Постановления являются слова о Минюсте, который, по мнению Правительства, может установить нормы замены одних продуктов другими.

Минюст, безусловно, авторитет в организации питания. :) Помню, в Питере нам вместо молока предложили рыбу. Фраза про Минюст убила смысл Постановления. Зачем что-то устанавливать, если Минюст может всё заменить :)

Цените свои возможности и берегите себя. :)

*#Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Две столицы. 16.06.2018

Вот и прошло достаточно времени, чтобы сравнить СИЗО двух столиц. Ощущения двойственные. Есть плюсы и там, и там. Как и серьезное минусы. Но обо всём по порядку.

Первое и самое главное различие — это отношение сотрудников. В Питере те, кто попал в СИЗО, людьми не считаются. Крики, грубость — в порядке вещей. В Москве этого не видела ни разу. Всё вежливо и корректно.

При поступлении в СИЗО-6 Москвы, помимо отношения, приятно удивили несколько аспектов: вещи не перетряхивали, а прогнали через машину (как в аэропортах), про пальчики уже писала. И главное удивление: в накопителе меня покормили. И даже дважды — завтраком и обедом. В собачнике Питера можно сидеть целый день — никому дела нет до твоего голода. А в Москве в этом отношении очень заботливо.

**Камеры**

Камеры СИЗО Москвы намного больше. И по размеру, и по населению. В Питере — максимум на 20 человек, в Москве стандартная камера на 46 мест, «маленькие» — по 18. В больших камерах есть душ, и он правда душ, а не труба, как в Питере.

Кровати похожие — железо-железом. :) А вот матрасы в принципе другие — как маты из чего-то синтетического прессованного. :) Они тоже есть изношенные, но с изношенными ватными не сравнить, они хоть в комки не сбиваются. :)

В Питере тумбочки деревянные, редко сохранившие геометрию. Зато тут тумбочки из металла, и не тонкого. Чисто сейфы.

**Еда**

Еда в обоих СИЗО отличается мало. Фирменная кухня ФСИН. :) Главное блюдо — кислая капуста. Каждый день почти. Зато в Москве впервые в тюрьме встретила макароны. :) Нормы питания утверждаются правительством РФ. Интересно, неужели цинга плановая? Никаких свежих овощей.

В Питере было примерное расписание питания по дням недели. А здесь неделю борщ на первое — запросто. Без передач и посылок с воли сохранить здоровье — достаточно сложная задача. И даже проращивание лука и чеснока в обоих в СИЗО запрещено. Еда — печальная тема. Надо пытаться изменить ситуацию с тюремным питанием.

В Питере недавно делали ремонт и установили пластиковые окна. Здесь — деревянные, но крепкие. И нет этих дебильных решеток со стороны камеры. Мелочь, а приятно. :)

**Люди**

Люди другие. Напомню, основное окружение — это люди, впервые оказавшиеся за решеткой. В Питере абсолютное большинство хотели бы, чтобы всё это прошло — и начать жить нормальной жизнью, не повторять ошибок, то есть шок ареста и месяцев пребывания в СИЗО вызвали желание изменить свою жизнь, чтобы больше не повторилось. В Москве всё иначе. Большинство знали, что они нарушали закон, и делали это неслучайно. И строгость ситуации и обращения вызывают покорность и ожесточение.

Невиновных, случайно попавших — везде хватает. Способность к борьбе за себя — разная. В Питере — стоять до конца, защищая себя, а здесь — неверие, безнадёга и обреченность. Не все, но большинство.

В Питере в камерах обсуждают уголовные дела, обмениваются информацией из практики и законов. Здесь, если не спросишь — не узнаешь, кто и почему. Правда, негатива вопросы не вызывают — можно спрашивать. Ещё деталька. В Москве очень у многих сидели родственники и знакомые. В Питере таких меньше.

Помыть кости персоналу сезон нельзя без упоминания об отношения к приёму пищи и прогулкам. В Питере эти мероприятия — священное право. А в Москве, такое ощущение, что плевать. Могут во время обеда вызвать куда-нибудь. А на прогулку просто не вызвать. И плевать на закон.

Аналогичное отношение к соответствию сидячих мест спальным, и к восьмичасовому «непрерывному сну». Тут Москве ещё надо работать в сторону соблюдения законов.

Есть аспект, благодаря которому пребывание в Москве намного комфортнее. Спортзал. Спортзал — платный 350 руб. за два часа. Он оснащен тренажерами, матами. Мячики и скакалка тоже есть. А ещё там целых три зеркала — можно хорошенько себя рассмотреть :) Даже посещение спортзала раз в неделю даёт колоссальный заряд силы и бодрости.

Прогулки

Дворики в Москве ГОРАЗДО больше. Питерские 3х5м сейчас кажутся полным издевательством. Здесь дворики в 8-10 раз больше, можно и побегать, и в мячик поиграть, да и вообще — побыть в пространстве. В защиту Питера скажу, что в Москве дворики под крышей, причём непрозрачной. Потому побыть под солнцем — роскошь. В Питере дворик открытый сверху и небольшая часть с навесом — укрыться от дождя. Ну и — любая прогулка имеет смысл, если она есть. :) Москва

катастрофические безалаберно относится к нашей потребности гулять. Некогда и всё тут. В Питере, как бы ни было неудобно сотрудникам, прогулка — это святое. Спасибо им.

**Библиотека**

Здесь даже не знаю — где лучше. Склоняюсь к Москве. У всех свои тараканы. :)

В Питере это куча неучтенного чтива с редкими жемчужинами, и состояние книг достаточно ужасное — никто не ремонтирует, книги постепенно разваливаются и теряют страницы. А у сидельцев особых возможности починки книг нет. Я реставрировал книги, используя овсянку вместо клея. :) Но это не о чём. Надо шило, нитку и марлю. :)

В Москве библиотека неизмеримо богаче, но… она менее доступна. Есть тематические каталоги. Их около 25. Каждый каталог для камеры доступен раз в месяц. Сколько надо просидеть, чтобы всё увидеть и прочитать — сосчитайте сами. :)

В Москве есть библиотекарь — чудесная женщина, любящие свое дело. Книги все в безупречном состоянии. Учет и контроль на высоте.

**Режим и дисциплина**

Тут всё во многом зависит от камеры, но в целом в Москве вздохнула посвободнее — больше адекватности, вежливое отношение, меньше маразма. Дисциплина есть, но она более… человеческая. Может, кстати, поэтому достаточно наплевательское отношение к нашим прогулкам.

Зато спецчасть (это служба, контролирующая переписку с органами) работает в Москве намного лучше. А это — самое главное. Поэтому остальное можно пока и потерпеть. В Питере так и не добилась ответа на многие вопросы от спецчасти. Местный документооборот тоже в Москве радует больше.

Отдельная тема — тюремная постель. В Питере шикарные шерстяные одеяла и возможность обосновать необходимость двух. :) Постель, соответственно, застилается одеялом и отлично выглядит. В Москве одеяло синтепоновое, стеганое — при заправке складывается сложенным под подушку. Одна простыня складывается и украшает постель треугольником :), а вторая остается расстеленной. Чушь, на мой взгляд.

В Москве, вопреки закону, число сидячих мест в камере в три раза меньше спальных мест, поэтому приходится сидеть на кровати. И это как-то… негигиенично. Написала начальнику предложение — пересмотреть метод заправки постели. Посмотрим. :)

Бельё и там, и там меняют раз в неделю. Но в Москве праздники — не помеха этому мероприятию, а в Питере мы в новогодние каникулы остались без смены. И в Москве бельё именно меняют. Сразу. А в Питере собирают утром, стирают, раздают вечером. А так-то и там, и там бельё чудесного… бежевого цвета, простыни узкие. В Москве разве что они покрепче. :)

Полотенца в замене белья не участвует. Долго раздумывала над этим всем, решила, что это и правильно. Чай, не культурная столица.

**Медицина**

В Питере ее нет. По крайней мере, не было те пять месяцев, что я там была. Трудно забыть месячную пытку болью и отказ даже принять лекарство от родственников — «нет назначения врача». При отсутствии врачей выглядело весьма циничным. Писала об этом в Прокуратуру. Переписка будет долгой :)

В Москве врачи есть. Не любые — но для жизнеобеспечения достаточно. Даже стоматолог. И попасть к врачам очень даже реально — всё достаточно внимательно. Я не идеализирую Москву — косяков везде хватает. Здесь тоже люди умирали. Но в Москве спокойнее и защищенные. А в Питере даже уполномоченный по правам человека не помог получить медицинскую помощь.

Про различия понятий («Бордюр и поребрик«) уже писала, есть и мелкие забавные различия.

В Москве двери в камеры с цепочкой. Ну, прямо скажем, с цепью. Но прикольно. Глазков целых семь, в том числе и в душ. :)))

**Экстренные случаи**

Если в Питере что-то случается, обычно это критично, срочно нужен врач, то включаем свет в камере и начинаем стучать в двери. Если очень критично, а сотрудников всё нет, подключаются другие камеры — грохот стоит будь здоров. За стуки конечно, ругаются, но жизнь дороже.

В Москве технология другая. Во-первых, на включенный свет достаточно быстро реагируют — камеры наблюдения под присмотром :). А во-вторых, окна всех камер выходят во двор. И по этому двору сотрудники перемещаются. Поэтому очень надежный способ: крикнуть в окно номер камеры и слова — «врача». В нашем случае как звучит так: «два ноль один врача». Сотрудники реагируют быстро. Врач приходит. И это очко не в пользу Питера.

Ну и напоследок. В Москве при поступлении выдают халат, тапочки, носки, тетрадку 48 листов, ручку. Это настолько потрясающе, что слов нет. Это очень и очень надо тем, кто сюда попадает, и попадает обычно достаточно неожиданно. За такую заботу — респект.

Можно долго сравнить разные СИЗО, плюсы и минусы. Но вывод всё же такой: в Москве сидеть лучше. Несмотря на все неудобства, связанные с отдаленностью от дома и родных.

Берегите себя.

*#Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Наблюдение. 17.06.2018

Любая методика наиболее эффективна, когда никто не знает, что это методика. :))

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, Тюремные хроники*

## Невозможные тюремные мечты. 18.06.2018

Действия, которые в тюрьме недоступны:

Прийти домой — выйти отсюда непросто.

Открыть дверь — это функция в тюрьме заблокирована.

Зажечь свет — свет горит всегда. Ночной на дневной и обратно меняет сотрудник СИЗО.

Позвонить друзьям — без комментариев.

Подвинуть кресло к окну — в тюрьме вся мебель привинчена к полу намертво.

Послушать любимую музыку — радио, работающее с 6 до 22, обычно Маяк или Дорожное. Фанатов этих радиостанций среди сидевших в тюрьме вы не найдете.

Много-много естественных действий и потребностей теряют те, кто попадает в СИЗО. А ведь тут лишь подозреваемые и обвиняемые. Не потому ли оправдательных приговоров нет? Ведь иначе пришлось бы оправдываться за весь этот маразм и беспредел.

Ничего. Даже один человек — слишком много, чтобы изменить мир.

Придите домой.
Откройте дверь.
Зажгите свет.
Позвоните друзьям.
Пододвиньте кресло к окну и послушайте любимую музыку.

Берегите себя.

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, Тюремные хроники*

## Этика и психология тюремной жизни. 19.06.2018

После поступления в СИЗО все заполняют психологические тесты. Тесты неплохие. Даже очень. Но в питерском женском СИЗО психолога было всего 2 на 800 человек. Поэтому, конечно, полноценной психологической поддержки тут быть не может. А ведь нужна именно она. Человек, впервые попавший в тюрьму, находится в шоке. И шок многократно усиливается от недостатка информации. А по сути — от того, как человек живет в тюрьме первые пару месяцев, зависят его дальнейшие отношения с людьми и законом.

Начала писать брошюру «Инструкция по употреблению СИЗО». Надеюсь, она поможет многим достойно пройти выпавшие испытания.

Скоро! Во всех камерах! :)

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, СИЗО, Тюремные хроники*

## Вешать или вязать. 20.06.2018

Нет в тюрьме ни шнурков, ни ремней. Подозреваю, что это просто одна из форм порабощения и унижения. В отношении непреступников (в следственном изоляторе) — весьма показательно.

Сделать верёвку — вообще не проблема. :) Ради чего заставляют ходить в падающих штанах месяцами и годами? Чтобы не повесились? Я вас умоляю! :) А вот, например, на офицерском ремне особо не повесишься. Да и связывать им неудобно. Вполне можно разрешить! Прикиньте, девчонки в офицерских ремнях! :)

Но логики, креатива и здравого смысла в этой системе нет. Проще через Конституционный суд вообще список разрешенных вещей отменить. Как не соответствующий Конституции и федеральным законам. Займусь. Следите за новостями.

И не волнуйтесь. :))

*#Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники*

## Волки в законе. 21.06.2018

Пожаловалась на запрет звонков в МВД. Они спустили в ГСУ. Ответ ГСУ замечателен (грамотность от ГСУ):

«Факты общения в сети Интернет даёт основания полагать о наличии у обвиняемой Верховой Н.Д. технической возможности бесконтрольно общаться» со своими родственниками, в связи с чем отказ следователя Карчава Д.Д. в предоставлении разрешения обвиняемой Верховой Н.Д. совершать звонки, является обоснованным».

Подпись — зам. нач. 4 отдела СЧ по РОПД — М.М. Казаченко.

И эти люди занимаются расследованием преступлений??? Что ж, время есть — идём дальше. :)

*#Карчава, Отец, Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники*

## Криминальное чтиво. 22.06.2018

Почему некоторых служителей закона не устраивает информация, публикуемая тут? Да всё просто! Те, кто не умеют работать по закону, прячут свою деятельность.

Нарушение и преступление любят тишину и темноту. Гораздо удобнее чувствовать себя правым, скрывая информацию от публики. А тем, кто работает по закону, гласность не страшна.

Забавный тест получается. Угу. Посмотри на отношение к публикациям и поймешь — что за человек в погонах перед тобой. :)

Всякая нечисть очень боится света. Да будет свет!

«Ибо всякий, делающий злое, ненавидит свет и не идет к свету, чтобы не обличились дела его, потому что они злы.»

Евангелие от Иоанна 3: 20.

*#Карчава, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники*

## Легально и нелегально. 23.06.2018

В тюрьме никак: подстричься, сделать ксерокс, купить УК. Но зато спектр нелегальных возможностей практически неограничен. Мне тут рассказали, как заказать убийство. И недорого. Скидки на опт. Ха! А я тут о цветных карандашах мечтаю. Детский сад!

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Их разыскала милиция. 24.06.2018

Тюрьма — режимное учреждение. Очень режимное. Фотографий отсюда нет. Но, думаю, что они были бы шоком.

Матрасы толщиной пару сантиметров, тюремные буханки хлеба, часто подгорелые, сломанная сантехника, бетонные полы в подвалах, где многие часы девчонки ждут выезда, очереди в бюро передач и на свидание, баулы с дамским романами в коридорах — пришла библиотека, кусочек неба из окна за решеткой, бетонные мешки в прогулочных двориках…

Но это не самое страшное.

Люди. Очень разные люди. Женщины, девушки, бабушки. Нестриженные, неухоженные, часто в одежде не по сезону, бодрые и с потухшими глазами, задорно смеющиеся и безнадежно заплаканные, крепкие и с трудом держащиеся на ногах.

Можно добавить портреты арестанток тут и на воле. И спросить у следаков — вы этого хотели?

*#женщины в сизо, Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники*

## Собачник.fm. 26.06.2018

В тюрьме есть много каналов связи. Сегодня об одном из них. Поездка в суд или на ИВС для проведения следственных мероприятий всегда идет через собачник. :)

Рано утром, еще до завтрака, людей забирают из камер и помещают в одну большую камеру в подвале — собачник. Бетонный пол, очко в углу, маленькое окошко под потолком. Народу может быть по-разному. Когда-то и пять человек, а бывает и около тридцати. Кипит беседа. Новости, сплетни, приветы, обмен горячей информацией, полезные знакомства. Подельников, конечно, сажают раздельно, это и не важно.

Человека, который возвращается в камеру с суда, с нетерпением ждут. А поскольку поездки происходят каждый день — вести по тюрьме расходятся быстро. :)

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, СИЗО, Тюремные хроники*

## Свободная пресса. 27.06.2018

Маленькая история про прессу и следаков. Если так спокойнее жить — можете считать её вымыслом.

Пищекомбинат, запланированный кооперативом «Семейный капитал», понемногу становился реальностью. Был выбран участок, шли переговоры об аренде и выкупе, была достигнута договоренность о страховом кредите. Всё складывалось, восстановление кооператива заняло бы чуть больше двух лет. Пайщики поддерживали.

И вдруг появляется публикация в одном популярном интернет-издании. Грязная скандальная публикация, где правда перемежается с ложью. И… снова вспышка нездорового интереса к кооперативу. Прокуратура, приставы, ОБЭП и прочие срочно заинтересовались деятельностью «Семейного капитала», проявляя «бдительность».

В кредите отказали, инвесторов мы потеряли, договора о сотрудничестве остались только в намерениях.

А публикация… покопались мы в этих… грязных умах. Написал её совсем не тот, чьим именем она была подписана. А когда добрались до автора, всё оказалось банально и просто: публикацию оплатил следак с Лиговки. Зачем? Ответ: догадайтесь сами.

Такая вот «свободная пресса».

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система, Семейный капитал, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Кирпичный снег или Ода Кирпичу. 28.06.2018

Во двориках питерского женского СИЗО крыша из арматурной решетки покрыта мелкой сеткой, а поверх еще и «егоза» (это такая проволока колючая, если кто не знал). Ну да — вдруг Карлсона доведется посадить. :)

Сильные снегопады засыпали эту чудо-крышу, во дворике стало темно и уныло. Такого уюта нам хватает и в камерах, а потому мы гуляли молча, поглядывая наверх в мечтах о небе. И вдруг… из стены падает кирпич. Ага, женские мысли имеют страшную силу.

Что делают женщины, увидев упавший кирпич? Правильно, кидаются к нему, ласково и бережно передают друг другу этот драгоценный камень для любования. Налюбовавшись, вспомнили одну из тюремных аксиом: всё, что не привинчено, является инструментом для достижения цели. Цель была высокая и светлая. А потому мы стали кидать кирпич вверх. Он весело стукался о сетку, падал обратно и покрывался волшебным пушистым снегом, осыпавшимся с крыши. А в клеточках сетки появлялось ярко-голубое небо.

Это было настолько красиво, что отношение к кирпичам изменилось навсегда.

Никто из поэтесс с нами не сидит, поэтому великая русская литература останется без Оды Кирпичу, но его полёты, дарящие свет, навсегда останутся в наших сердцах. :)

*#женщины в сизо, Оттуда, Питер-Арсеналка, СИЗО, Тюремные хроники*

## Тюремный быт. 29.06.2018

Представьте, что Вы всё, необходимое Вам, сложили в два баула. Ну, не поместилось — значит, не нужно. И начинаете жить с этими баулами. Месяц за месяцем. Кроме этих баулов у вас немного места в холодильнике, примерно четвертинка полки, и одна полочка в тумбочке. Ещё крючок на общей вешалке на стене — повесить куртку. Всё. На постель ничего ни вешать, ни класть нельзя. Утюга у Вас тоже нет. Под матрас тоже ничего прятать нельзя. Режим сушки постиранного — практически тайком. Зимой это жесть — почти не сохнет.

В баулах у Вас всё: одежда, обувь, мыльные принадлежности, книги, тетради, еда, вода, тарелки, ложки, чайник и всё-всё-всё. Если что-то надо — аккуратно достаёте, пользуетесь и прячете обратно.

Периодически Ваши баулы перетряхивают люди в погонах, выкидывают, если что-то не понравилось.

Да, а ещё Вы невиновны. :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники*

## Мексиканочки. 30.06.2018

Большой футбол заглянул в нашу скучную тюремную жизнь. Уже после отбоя привели к нам в камеру двух теток. Одна из Мексики, другая — из Перу. Английский и французский не пошёл, у испанского оказалось чуть больше шансов, но ненамного. Знатоков мексиканскогo в нашей скромной камере не оказалось. На каком языке говорят в Перу — мы так и не сообразили. :) А я-то ещё удивлялась своему неожиданному усердию в чтении французской грамматики накануне. А это был знак! :)

Тетки банально воровки. И не в мелких масштабах. Да, чемпионат мира имеет и такую сторону. Ночью приснилась Лима. Прекрасная и пыльная. Толпы смуглых людей радостно передвигались по улицам и разговаривали на неизвестном языке. :)

Берегите себя. :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Цепочка. 02.07.2018

А сейчас чемпион тюремных историй по абсурдности.

Итак, корпоративная вечеринка. Все бухают, танцуют. У одной тётки с шеи соскальзывает цепочка. Золотая, вестимо. Серьёзная такая цепочка, грамм на 50. Валялась на полу, пока один из компании не поднял. Помахал, покричал — никто не откликнулся, пьяные танцы же вовсю. Да и сунул в карман. А дальше — прекрасное.

Тётка, обнаружив отсутствие золотого ярма, написала заяву в полицию и сгрузила список участников корпоратива. Что делает питерская полиция? Правильно, просто арестовывает всех. :)) А что — кража группой лиц. Вот. Корпоративы становятся опасными.

Ещё одна иллюстрация к необходимости запрета арестов по большинству статей УК.

История реальная. Будьте осторожны.

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные истории, Уголовное дело*

## Братский шмон. 03.07.2018

КрысаВ «хате» завелась «крыса». Наглая и голодная. Масло, молоко, мед, сахар — это не полный список про пропадающих продуктов.

Вообще, в тюрьме не принято красть. Поэтому «крысы» — редкость.

В нашей камере, по свидетельству старожилов, за последние два года ничего подобного не было. Но — что случилось, то случилось. Лекарство одно: братский шмон. Это когда все сумки выворачиваются и тупо ищется пропажа.

Замкнутое пространство имеет свои плюсы :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Я не унываю. 04.07.2018

Мой фронт сейчас здесь. Мне есть, за что воевать.

За всё хорошее против всего плохого. За здоровье против болезни. За здравый смысл против абсурда. За законы против беспредела.

У меня почти нет врагов, зато много соратников. А враги… они лишь пыль на струнах, искажающие правильную музыку. Сдуть, смыть, почистить.

Мне есть, чем заниматься. Я не унываю.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Сотрудники СИЗО или Вечные узники. 05.07.2018

Сотрудники СИЗО иногда напоминают мне детей. Наверное, старею. Их жизнь гораздо сложнее нашей. Полная несвобода в рабочее время, рабочего времени гораздо больше, чем положено.

Мы можем постоять, посмотреть на небо, они — вряд ли. Некогда. Наша тюрьма закончится точно быстрее, чем у них. И трудно им пенять, что выбрали эту работу. Не от хорошей жизни это. Москвичей почти нет.

СИЗО должно быть в разы меньше. В разы меньше арестов — не только возможно, но и правильно.

Петиция о запрете заключения в СИЗО людей, не судимых ранее и физически не опасных обществу.

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники*

## Драгоценности. 06.07.2018

В детстве у всех были любимые игрушки, с которыми не расставались.

В тюрьме у девчонок тоже есть дорогие вещи: зеркальце, вязаная косметичка от подруги, ушедшей на этап, блокнотик, фотки детей, кусочек мыла пахучего.

И берегут девчонки драгоценные штуки. От утраты и шмонов. Побиты девчонки потерями, цепляются за частицы дорогого, начиная жить заново.

*#женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Дневничок — начало. 11.07.2018

После записок Славы Сэ и Дневника домового (ЧеширКо) поняла, что мир современной литературы не полон без дневничка доброй зэчки. Придется создать. :)

* * *

Утро началось с мата. Дверь в камеру с лязгом открылась, мужик в форме был конкретен. Шахматы робко затаились под кроватью. Мы сделали вид, что встали давно, а положении лёжа

приняли, чтобы тщательнее застелить постель. Мат закончился быстрее, чем гимнастика ушей пришла к финалу. Подумала с гордостью, что нужных слов знаю больше.

*#дневничок, Оттуда, Тюремные хроники*

## Дневничок. Непрогулка. 12.07.2018

Сказали одеться на прогулку и быть готовыми. Мы продолжали быть таковыми часа три, а потом разделись.

На вечерней проверке получили ценный совет: надо было напомнить о себе.

Засыпая, веселилась, представляя многочисленные способы напоминания о себе.

*#дневничок, женщины в сизо, Оттуда, Тюремные хроники*

## Что делать. 13.07.2018

Что делать. Мне порой пайщики задают этот вопрос. Мой ответ особо не меняется. Гордиться. Гордиться тем, что мы сделали все вместе.

Соединили город и деревню. Показали быстрый и успешный путь развития сельского хозяйства. Доказали, что натуральные продукты могут быть доступными. Разработали путь развития территорий, при котором бедность и безработица не могут быть в принципе. И многое многое другое.

Что дальше? Жить и действовать.

*#Оттуда, Семейный капитал, Тюремные хроники*

## Дневничок. Повязка. 16.07.2018

Участвовала в диспуте с опером, является ли повязка на лоб головным убором. Бихевиоризм победил минюст и федеральный закон. Подумываю о памятной табличке. Или лучше медаль?

*#дневничок, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Дневничок. Сантехник. 17.07.2018

Сантехник в костюме обеспокоеного зэка пытался починить раковину. Раковина ломалась недолго. Нахлынули удивительные ощущения холодного и горячего.

*#дневничок, Оттуда, Тюремные хроники*

## Амнистия или… 18.07.2018

Все заключенные мечтают об амнистии. Об амнистии говорят в самых широких кругах, тюрьмы и зоны переполнены, существующие механизмы смены режима наказания и УДО работают со скрипом. Уполномоченные заваленны работой, надзор прокуратуры формален. Амнистия решает очень многие проблемы. Только…

Амнистия — это для всех. Не хочу амнистию, хочу честного расследования дел и освобождения невиновных.

Количество сляпанных уголовных дел просто зашкаливает, но пока все мечтают только об амнистии. О торжестве закона никто даже мечтать не решается. Но у меня есть план. :) И время для его исполнения. Буду менять ситуацию, раз в оказалась внутри неё.

Чувствую себя… антибиотиком в организме с вирусами. :)

Следите за новостями.

*#Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Дневничок. Практика — критерий истины. 19.07.2018

Сегодня дворик для прогулок достался треугольный. Зависла над задачей вписывания в треугольник прямоугольника для занятий.

Теоретически задача не решалась. Но практика — критерий истины. Вписалась груша.

*#дневничок, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Обвинение как форма отрицания Конституции. 20.07.2018

Возьмите историю любого бизнеса. Запишите. А потом добавьте повсюду слова преступный и корыстный. Получите готовое обвинение любому участнику бизнеса. :)

А теперь вспомните статью 49 Конституции РФ: каждый обвиняемый считается невиновным, пока виновность не будет доказана и установлена вступившим в законную силу приговором суда. Обвинение не должно содержать ярлыков, это противоречит УК, УПК и Конституции. Виновность устанавливает суд. В соответствии со статьей 220 УПК РФ обвинение должно содержать факты: кто, что, где и когда. А оценку этим фактам будет давать суд. В нашем обвинении фактов меньше, чем положено по закону. Предъявление обвинения в таком тоне недопустимо. Подозреваю, что помимо оскорблений, тут есть признаки преступлений со стороны следователя, предусмотренные статьями УК РФ: 285, 286, 294, 299, 303, 307, 316.

Буду думать. Уголовное дело должно расследоваться, а не ставить ярлыки преступности на всё подряд.

Возьмём обвинение. Уберём все оскорбительные незаконные прилагательные, и сразу обнажится абсурд происходящего. Ведь следователю легальная деятельность организаций, зарегистрированных и действующих в соответствии с Федеральными законами, кажется преступной. А является ли умыслел развития бездотационного сельского хозяйства преступным — должен решать суд. Но в обвинении в описании действий обвиняемых нет ничего преступного, и следователю приходится давить на эмоции и нарушать закон, употребляя нужные эпитеты.

Собираюсь изменить эту ситуацию. Капля камень точит. Кто, если не я.

Для начала напишу в суд и прокуратуру, потом посмотрим. Время есть :)

*#159 статья, Оттуда, Правоохранительная система, Репост, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Дневничок. Пятница. 21.07.2018

Пятница закончилась неожиданно, как туалетная бумага.

*#дневничок, Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Пересчет. Пытки антиздравым смыслом. 23.07.2018

Принят закон о пересчете сроков нахождения в СИЗО. Все рады. Здравый смысл восторжествовал. Только не до конца. :)

В той части, что касается статей, к которым этот пересчёт не применяется — косяк. Получаются две некрасивые штуки.

На примере: вот сидел человек год в СИЗО и получил по статье, не подлежащий пересчету, 6 лет общего режима. Получается, что по факту он получил год строгого режима (содержание в СИЗО) и 5 лет общего. Что, безусловно, противоречит приговору. Это первая штука. Вторая: при одинаковых приговорах получается, что более строгое наказание получает тот, кто дольше просидел в СИЗО. Что тоже плохо коррелирует с законами.

И ещё. Коэффициент для домашнего ареста великоват (2 дня домашнего ареста за день общего режима). Домашний арест по сложившейся практике — это пребывание в замкнутом, пусть даже более комфортном, пространстве без возможности: работы (а значит возможности содержать себя нет), контактов, компьютера, телефонных звонков, А часто и без прогулок. Домашний арест — это арест и изоляция. Комфорт не стоит двойки в коэффициенте, жизнь всё равно рушится: теряется работа, социальные связи, квалификация и многое другое.

Очередной раз только могу повторить: «Страшно далеки они от народа».

Забавная штука получается: как на самом деле должен быть устроен порядок в правоохранительной системе политики узнают слишком поздно, когда уже не могут влиять на ситуацию. :)

Что ж. Ещё и потому пишу всё это. А то слишком недостоверная инфа у законодателей.

*#женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, Правоохранительная система, Репост, СИЗО, Тюремные хроники*

## Дневничок. Торжество юридической практики. 24.07.2018

Обсуждали торжество юридической практики. Человека без паспорта (цыганка) посадить можно, а выпустить нельзя. Звёзды сложились в рисунок на погонах и нагло врали про будущее.

*#Правоохранительная система, Оттуда, Тюремные хроники*

## Сказка про улыбку. 25.07.2018

Есть такая французская поговорка: «Важно, чтобы смеющиеся были на твоей стороне».

Жила-была девушка. Читала книги, ходила на концерты. Мечтала, надеялась, верила. Но налетел суровый ветер судьбы, и попала она в тюрьму. Неожиданно и безнадежно.

Всё кругом казалось нереальным. Знакомые раззнакомились, друзья раздружились. Девушка жила по инерции — слушалась охранником, соблюдала новые для себя правила и только ночами тихонько плакала в подушку. Осунулась, похудела, тёмные тени легли под глазами. Днём она тихонько сидела на скамейке, не понимая — как жить дальше.

Пожалела её старая седая женщина, попавшая в тюрьму за воровство. Подсела к девушке, да тихонько выспросила у неё всё отчаяние да безнадежность. Уходя на этап, дала девушке совет: «Научись быть такой, чтобы люди улыбались тебе, а когда получится — выйдешь отсюда».

Поверила ей девушка, да только как сделать это?

Пыталась смешить сокамерниц, делать им приятное, развлекать… Ничего не получалось. Люди не улыбались. Загнанные в жёсткие условия, они не ждали ничего хорошего от малознакомых людей. Недели шли за неделями, решение не находилось. Думая про других, она уже не плакала по ночам.

И однажды на прогулке, когда лучик солнца проник в тюремный дворик сквозь решетки, девушка увидела, как сокамерницы улыбаются, подставляю лицо Солнцу. Девушка и сама подошла к солнечному пятнышку во дворике, зажмурилась от яркого света и… заулыбалась.

С этого дня всё изменилось. Девушка училась у солнца. Солнце не выбирает — кому светить, оно не смотрит, как реагируют на него. Солнце просто светит и греет. Всем и всегда!

Девушка поняла, что поток безусловной доброты согревает человека, он вылезает из своего защитного панциря и… улыбается

Улыбка оказалась гораздо мощнее любой силы. Улыбка оберегает, очищает, поднимает с колен и устремляет в радость.

У девушки всё получилось. Её выпустили. И была у неё интересная работа и счастливая жизнь. Но это уже совсем другая история. :)

*#женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Дневничок. Тлен и барахло. 26.07.2018

По возвращении из медчасти долго рассматривала корзину с материалами и инструментами в коридоре. В камере сантехник укреплял отношения с унитазом. Долго — это полторы секунды. Решила, что всё тлен и барахло.

*#дневничок, Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Оптина пустынь. 27.07.2018

В один из голодных годов в Оптиной пустыни затеяли возведение огромной ограды вокруг монастыря. Зачем? Чтобы дать возможность людям заработать и купить себе еды. Монастырь не был богат, особо запасов было. Но было осознание ответственности большой структуры перед окружающей территорией.

Что тут важно: монахи не раздавали хлеб. Они давали возможность зарабатывать.

Вот чего, на мой взгляд, не хватает нынешней социальной политике. Слишком много благ просто раздаётся. К чему это приводит, мы видим некоторых странах Европы: молодежь не хочет работать — социальных выплат вполне хватает на жизнь.

Поощрение иждивенчества не может вести к развитию.

И абсолютно параллельная ситуация с уголовным наказанием. Существующая система наказаний плодит людей, не способных жить самостоятельно, содержать себя, заботиться о других. По сути, колония низводит людей до уровня животных, которым путь в нормальное общество практически закрыт.

Человек, совершающий преступление, и так не в полной социализирован. Существующее наказание лишь усугубляет ситуацию.

А начинать надо, как всегда, с постановки целей.

Какова цель наказания и насколько она достигается существующими методами?

*#Оттуда, Правоохранительная система, Репост, СИЗО, Тюремные хроники*

## Дневничок. Суббота. 30.07.2018

Неожиданно обнаружилось, что тюрьма — лучшее место для еврейской субботы. Правоверные или… ортодоксальные или… ну в общем правильные евреи вообще по субботам ничего не делают, даже двери себе не открывают.

Тут есть, кому открыть дверь, посуду моет дежурный, унитаз всё равно сломался, а больше дел и не было на субботу.

Вечером удовлетворённо отметила выключение дневного света специально обученными людьми и заснула.

*#дневничок, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Сожаление. 31.07.2018

Иногда в ежедневные эмоции пробивается просто сожаление. Фрагменты статей из газет складываются в единый вывод: нет комплексного подхода. И дело не в генплане. Вот только небольшой пример из трёх разных статей разных газет:

В одной статье пишут: «Надо подправить законодательства, чтобы возродить заготконторы».

В другой статье: «Надо чем-то занять сельских жителей».

И в третьей: «Надо развивать производство фруктовых наполнителей для кондитерской промышленности».

Видите решение? :) А у «Семейного капитала» оно было, просчитанное и проработанное. По плану СК сельские пайщики СК могли сдавать ягоды кооперативным заготпунктам на небольших заводиках в деревнях, перерабатывать в джемы и прочее и отправлять на молочное и кондитерское производство кооператива. Это была одна одна из маленьких веточек того дерева, что давало бы работу, качественные продукты и доходы.

А теперь… Просто сожаление.

*#Оттуда, Семейный капитал, Тюремные хроники*

## Дневничок. ОБЖД. 01.08.2018

Проводила личные внутренние противопожарные учения. Двери в тюрьме даже при пожаре могут не открыться.

Щели в коридор заткнуть, барахло сложить, разместиться под вторым ярусом, сигнализировать в окна.

Осталась довольна. Однако любой хороший план зудит о реализации.

*#дневничок, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Революция. 02.08.2018

Всё чаще в прессе используются слова «октябрьский переворот» вместо «Октябрьская революция». Причин этому две:

Первая. Просто безграмотность. :) Смотрим в словарь Ожегова:

Переворот — резкий поворот, перелом в развитии истории.

Революция — коренной и резкий переворот в общественно-политических отношениях насильственным путем, приводящий к смене общественного строя.

То есть революция — это переворот с насилием. Насилия в октябре никто не отрицает.

Так что же это было? :)

И тут мы переходим ко второй причине: люди, употребляющие слово «переворот», хотят принизить происшедшие, придать ему оскорбительный оттенок, представить мелкими интригами и подлыми дворцовыми игрищами. А революция в их понятии — это светлое и чистое, чего в Октябре не было. Но если понимать значение слов, то подобные усилия и подколы в сторону Октябрьской революции просто смешны.

Я против революций. Мне больше по душе эвалюция. Но в 1917 году всё же произошла революция.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Фольклор. 03.08.2018

В Москве стихи по камерам ходят более жалостные. :)
Стихи про тюрьму
Добро пожаловать — сказала мне тюрьма,
И двери камеры захлопнулись за мной.
Меж мной и жизнью пролегла стена,
А за стеной — недремлющий конвой.
«Моя, — ручонки потирал следак,
Услужливо подвинув пачку сигарет, —

Не плачь, назад тебе дороги нет,
Теперь копейку стоит жизнь твоя,
Хоть бейся в стенку головой.
Теперь мы пёрышки почистим,
Рассказывай нам про все свои дела,
Теперь узнаешь — что такое шконка,
Этап, СИЗО, кормушка, опера».
Берегите себя.
*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Дневничок. Полиморфность бытия. 04.08.2018

Занималась в спортзале. Заглянул сотрудник — искал парикмахерскую.

На миг улетела в астрал — уточнить свою нынешнюю роль в обществе. Могла бы нарисовать подробный план этажа с назначением помещений и количеством промежуточных дверей, но ограничилась инструкциями типа «два поворота направо».

Думаю о полиморфности бытия.

*#дневничок, Оттуда, Тюремные хроники*

## Дневничок. Сказ про белого бычка. 06.08.2018

Предложили сделать прививку от кори.

Отказалась.

Настаивали на прививки от кори.

Отказалась.

Угрожали, чтобы сделала прививку.

Отказалась.

Белый бычок устал и пошёл спать.

## Дневничок. День в рисунках. 07.08.2018

Дневничок доброй зэчки - день в картинках

*#дневничок, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Рывок. 09.08.2018

Она была тяжёлая. Очень тяжёлая. На одеяле. И мы неслись вчетвером по тюремным коридорам с этим одеялом, и сотрудники распахивали перед нами решётки. После очередного поворота сил уже не осталось, темп упал до быстрого шага.

Но мы донесли её живой. Умерла она через несколько минут в окружении врачей, которые были бессильны.

Винить некого. Врач появился через пару минут после происшествия. Скорая была вызвана сразу. И очень быстро приехала.

Выводов два.

Люди, даже молодые, умирают внезапно.

И нужно всегда быть готовым выложиться в рывке. Потому что для кого-то он может означать жизнь.

Берегите себя.

*#женщины в сизо, Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Тюремный фольклор. Стихи о прокуратуре. 11.08.2018

Мы заперты в клетке сегодня. Наощупь
Мы ищем отзывчивость, сканируя прочих
Баланда, посылки, проверка, спецчасть
Никто нас не слышит — такая напасть.

Решётки и небо, решётки и солнце,
Тюрьма безнадежно прессуют питомцев
Железные шконки, пустые матрасы,
Права человека — опять мимо кассы
Мы видим сочувствие девушек в форме,
Но служат они лишь тому, кто их кормит.
Любая фальшивка ползет до суда,
Законов не видно нигде никогда.
И путают люди виновных и нет
Рядами на зоны — судебные ответ.
Формальность, коррупция, звёзды, карьера,
И глушат сотрудники водку с мадерой.
Но нет безнадежности, глянем задором,
Пускай прокуроры займутся надзором,
Надзором за следствием, за операми,
Пусть лишняя нечисть уходит с дворами.
И пусть торжествует закон, пусть не сразу,
И тюрьмы пустеют, изгнавши заразу.
Ни сказка, ни ложь, да и нету намека.
Давай, прокуроры, не будьте жестоки!
Возьмите Закон и его примените,
Увидите — скольких освободите.
Смелее, не бойтесь, стране это надо!
А счастье страны — нашим внукам награда.
#женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники, тюремный фольклор

## Судный день. Везучие будни обвиняемой девушки. 14.08.2018

День состоял из везений. В 5:00 утра тихоньку стуканулась дежурная по этажу — разбудила. В холодильнике был заныкан борщ. :) День предстоял трудный, завтрак получился отменный.

Сумка собрана с вечера — просто повезло, что накануне адвокат предупредил о том, что будет суд, обычно никто не предупреждает — утром, по факту: на выезд.

Сборка, автозак (легализованые пытки). Народу было немного — очередное везение. Всего часок, и мы в Мосгорсуде, где идёт перетасовка по машинам. Ещё полчаса — и Тверской суд. Вторая машина мне досталась настолько новая, что внутри стоял крепкий запах краски. Надышались, укачались, но доехали — повезло, что недалеко.

В Тверском суде опять повезло — была совершенно одна. Камера, где ждут заседание, бывает и переполнена. Опишу это чудное помещение. Размер примерно 2х5м, лавка вдоль длинной стены. Знаете, есть такие аттракционы — пещеры, где рельеф стен разнообразно вылеплен из бетона. Там ещё подсветка соответствующая и ужастики всякие. Тут примерно так же. Стена с выпуклостями, подтеками, отпечатками, кавернами. Ну и шаровая краска дополнила антураж. Потолок, однако, гладкий — видимо, чтобы было, за что зацепиться в этой реальности.

Обслуживание безупречное — сразу предложили туалет, налили в чашку кипяток. Передышка в одиночестве, и вперёд — в зал заседаний. Наручники на руки, вторые наручники — пристегнуться к конвоиру — р…романтика. :)

Пробираясь между посетителями суда, доходим до зала. И опять улыбка судьбы — судья Криворучко, о котором слышала много добрых слов. В моём случае хороший / плохой судья отличается не результатом, а… послевкусием. После стандартного безразличия и наплевательства — адекват и внимание — как лучик солнца.

Заседание прошло практически стандартно: следствие хочет оставить меня в СИЗО, прокурор пассивно соглашается. Судья пытается выяснить — каковы же основания для дальнейшего ареста. Выяснил.

Оказывается, основания два:

Надо ознакомиться с делом. Смешно, потому без комментариев.

Не признала вину, а потому может помешать расследованию. Вообще трэш. Расследование, по версии следствия, закончено — у меня об этом есть официальное уведомление. А насчёт непризнания вины — пока меня упрекают в том, что я руководила юрлицами, что я, естественно, признаю в каждых показаниях. А что ещё признать — я даже не знаю. Что для видимости деятельности работали заводы, фирмы и магазины? Не думаю, что окончательное обвинение будет сильно отличаться от предварительного. Слишком сложно что-то придумать при полном отсутствии фактов и доказательств. Проще по средневековым традициям: «не утонешь, значит, ведьма» :)

Всё заканчивается, закончилась и заседание. Арест продлен до 01.11.18. Продлили бы и дальше, да больше года нельзя в досудебной стадии содержать в СИЗО.

Дальше — полномочия по толкованию законов переходит в Мосгорсуд. Путь до камеры ещё надо было пережить. С 15 до 20:00 — покатушки в автозаке. Тут повезло еще немного: зашла первой и заняла место у решётки — мне был виден кусочек окошка на двери. Жарко, душно, сигаретный дым, тряска фургона, резкие торможения, пятничные пробки — в общем, все доступные удовольствия испытали.

Родное СИЗО встретило привычным запахом помойки. Ещё пару часов на досмотры — и в камеру. Чудесный день! Живём дальше. :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Правоохранительная система, Репост, Семейный капитал, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Футбол. 18.08.2018

Утречком увидели в окно, что во дворе размечается футбольное поле. Появились и ворота. Даже с сеткой. Не иначе, веяния чемпионата. :)

А после обеда состоялась игра. Команда ФСИН против команды хоз. отряда. Хоз. отряд — это те, кто остался отбывать наказание в СИЗО, на хоз. работах.

Вначале ситуация была слишком неравная. Зэки, давно разучившиеся бегать, в неподходящей обуви, и фсиновцы — здоровые крепкие парни в ярких кроссовках. Но после четырёх безответных

голов «наши» разбегались, показали свою крепкость и упертость. Конечный счёт был совсем не разгромным. :) И зрители, девчонки, прилипли к окнам, подбадривая хозовских мальчишек. Так что… был и на нашей улице футбольный праздник. :)

Берите мячик и пинайте его. Это счастье. Мы сейчас это понимаем.

Берегите себя.

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Холостые обороты. 22.08.2018

Почему у пенсионного фонда так много сотрудников, и он так много тратит на свое содержание — понятно. Слишком запутанный документооборот и слишком много справок о наличии справок. :)

Это касается не только пенсионного фонда. Читаю про компенсацию взносов на капитальный ремонт для одиноких престарелых пенсионеров.

По закону компенсация полагается одиноким пенсионерам старше 70 лет. И сразу засада: порядок предоставления компенсации — заявительный. И при заявлении надо предоставить документы по списку из 7(!) пунктов. Смотрим:

1. Паспорт. Про наш паспорт органы знают всё. И возраст определить тоже способны. И почему обратить внимание на потребность одинокого пенсионера в компенсации не может кто-нибудь другой?

2. СНИЛС.

Получить данные СНИЛС, имея данные паспорта — вообще не задача.

3. Документы о собственности на жилье.

Если мы говорим об органах соц. защиты, куда это всё надо тащить, то это и так всё у них есть, да и мечту о «едином окне» забыть не получается.

4. Выписка с лицевого счёта о всех зарегистрированных.

См. пункт 3 :)

5. Документы об отсутствии трудовой деятельности.

Пенсионный фонд всё об этом знает. Есть взносы — есть деятельность. Нет взносов — всё равно деятельность не доказать. Зачем плодить усилия по сбору документов, к форме которых ещё и придраться легко.

А представьте одинокого старого человека, который обычно уже плохо видит, плохо слышит, но вынужден этим заниматься. Перечитываем п. 3.

6. Выписка о банковских реквизитах — куда компенсацию начислять.

Это вообще смешно. Куда пенсию начисляют — знают, а вот ради компенсации выгнать старых одиноких людей в банк — считают нормальным. В банке и молодым со здоровыми эту выписку не так просто получить.

7. Счет за коммунальные услуги и квитанции об оплате.

Без комментариев. Единое окно-о-о… Где же оно-о-о…

Вот и получается, что благая забота об одиноких пенсионерах оборачивается очередным испытанием для них. А всего лишь… заявительный порядок. И… бюрократическая машина срочно составляет «список необходимых документов». А ведь пенсионерам ещё надо где-то узнать, что им полагается и как это получить. Не на это ли рассчитан заявительный порядок? Большинство об этом не знает и не просят?

И главное. Подразумевается огромное количество людей и ресурсов, которые будут обслуживать, объяснять и помогать одиноким пенсионерам справиться с этой задачей.

А ведь куда логичнее автоматизировать этот процесс. Исполнилось человеку 70 лет — автоматически проверили данные — начислили компенсацию. Для этого уже все технические и формальные возможности есть.

Будет ли этим заниматься Министерство цифрового развития — вот в чём вопрос. А пока… берегите стариков. Забота о прошлом — залог будущего.

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Сколько меня будут держать в СИЗО — зависит от желания Генеральной прокуратуры и уровня беспредела. 23.08.2018

Меня часто спрашивают — сколько же меня будут держать в СИЗО? Давайте посчитаем: следствие сделало вид (удивительное рядом), что расследование закончено, теперь идет ознакомление с делом. Дело пока отсутствует. :)) Потому что следствие не может не то что предъявить прошитые и пронумерованные тома, следствие даже не может сообщить — сколько этих томов.

Спешка с окончанием расследования было связана лишь с желанием не выпускать фигурантов из СИЗО. Однако, всё не так безнадежно. Вспоминаем мультик про Ивашку и… растопыриваемся :)

Существующие законы в нынешнем положении позволяет меня держать в СИЗО практически бесконечно. Срок содержания теперь зависит только от желания Генеральной прокуратуры и уровня беспредела.

Пока так. Берегите себя.

*#женщины в сизо, Оттуда, Правоохранительная система, Семейный капитал, СИЗО, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Фотомодель. 27.08.2018

Это был очень весёлый день в камере. На пороге возникла она. Маленькая девушка с огромным матрасом. Над её рассказом мы смеялись — не могли удержаться. Настолько это всё было дико и нереально.

Итак, едет девушка на своем мерседесе на маникюр, никого не трогает. Останавливает её гаишник. Похоже на начало анекдота, но тут жизнь. Девушка не блондинка, но повела себя как…

Проверка документов. Выясняется, что у девушки давнее лишение прав: было дело с автоподставой, права она не сдала, так и ездила. Косяк, но не уголовный.

Гаишник отобрал документы, распорядился машину эвакуировать на штрафстоянку, хотя можно было позвонить и вызвать водителя. И вот девушка, видя, что остаётся без документов и машины, впадает в истерику, бьет своей ладошкой (к слову, рост девушки 158 см) по руке гаишника, плачет и т.д. А вот дальше анекдоты заканчиваются.

Гаишник оформляет задержание девушки за нападение на сотрудника полиции. Кутузка, суд СИЗО. В постановлении суда описаны результаты нападения: припухлость тыльной стороны ладони представителя власти. Девушка второй месяц в СИЗО. Берегите себя. И… не трогайте руками сотрудников органов.

*#женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные истории*

## Хищения, мошенничество и Пенсионный фонд. 29.08.2018

Всё-таки проедусь по Пенсионному фонду со своей уголовной колокольни. Чем больше обсуждается пенсионная система, тем больше мы узнаём интересных цифр.

В Комсомолке читаю: бюджет ПФ — 8,3 трлн. руб., взносы от работающих — 4,8 трлн. руб., 3,3 трлн. руб. — субсидии федерального бюджета.

Понимаете? Тут не просто пирамида (ст. 172.2 УК РФ), тут растрата всего, что было раньше (ст. 160 УК РФ) и злоупотребление доверием тех, кто платил туда всю жизнь под обещание достойной пенсии (ст. 159 УК РФ).

И неизбежно вспоминается кооперативная пенсионная система. Она очень проста и эффективна. В паевом фонде лежат деньги — они наследуемые. Из паевого фонда деньги можно направлять в различные программы — воля пайщика. На доход от программ можно жить, возраст тут ни при чём. Можно пополнять паевой фонд, можно менять программы участия в хозяйственной деятельности.

А ещё уровень «побочных» благ для пайщиков растёт с ростом и процветанием кооператива. По каждому направлению деятельности Семейного капитала пайщики имели свои преференции. Как минимум — скидки. Многие привыкли этим пользоваться — и в магазинах, и при отдыхе по путёвкам кооперативной тур. компании, и в кафе, и в различных интересных мероприятиях. Такие были наработки, работающие на практике.

Вместо того, чтобы применить во благо пенсионеров такую систему, ПФ отчитался (сидя во дворцах, кстати), что денег нет и не будет, если не поднять пенсионный возраст.

А сидим почему-то мы. :)

Следите за новостями.

*#159 статья, Оттуда, Семейный капитал, Тюремные хроники*

## Состязательность процесса. 31.08.2018

В некоторых томах уголовного дела очень много цифр. Иногда лукавых цифр. Косяки надо не только замечать и выписывать. Ещё нужно много считать, чтобы понять — кто, где и зачем лукавит. А калькулятора нет. Запрещённый это предмет в СИЗО.

Вот и занимаюсь… бумажной арифметикой. Нудно и долго.

И я понимаю желание следствия, чтобы ознакомление с делом было именно в СИЗО. Без доступа к законам, к информации, да и даже к банальному калькулятору.

Ладно, про п.3 ст.55 Конституции РФ* часто забывают, но в УПК есть целая ст.15** про состязательность сторон.

И почему-то вспоминаются добрые сказки, где героям связывали руки и подсыпали всякое в еду, чтобы они не могли победить. И только немного обидно за суд, который принял от следствия аргумент о необходимости знакомиться с делом именно в СИЗО.

Ладно. «Мы рождены чтоб сказку сделать былью». :)

—-

*) Ст. 55 Конституции РФ, п.3. Права и свободы человека и гражданина могут быть ограничены федеральным законом только в той мере, в какой это необходимо в целях защиты основ конституционного строя, нравственности, здоровья, прав и законных интересов других лиц, обеспечения обороны страны и безопасности государства.

**) С. 15 УПК РФ

1. Уголовное судопроизводство осуществляется на основе состязательности сторон.

2. Функции обвинения, защиты и разрешения уголовного дела отделены друг от друга и не могут быть возложены на один и тот же орган или одно и то же должностное лицо.

3. Суд не является органом уголовного преследования, не выступает на стороне обвинения или стороне защиты. Суд создает необходимые условия для исполнения сторонами их процессуальных обязанностей и осуществления предоставленных им прав.

4. Стороны обвинения и защиты равноправны перед судом.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Семейный капитал, СИЗО, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Бревно. 02.09.2018

Да, хочется поговорить именно об этом предмете. :) В новостях часто пишут про Марию Бутину, арестованную в США. И что интересно. Вот выдержки из высказываний Москальковой Т.Н., уполномоченной по правам человека РФ.

«Бутину неоднократно унижающие досматривали с полным обнажением тела», «Это делается, чтобы склонить Марию дать какие угодно показания, в том числе и оговорить себя».

После ареста я 10 дней провела в ИВС. И там досмотр был ежедневной утренней процедурой. С полным обнажением и сопутствующими действиями. И что-то я не слышала ни разу возмущения правозащитников на эту тему. Думаю, что и сейчас эта процедура никуда не делась — можно легко в этом убедиться.

Почему кроме «Новой газеты» практически никто не пишет о положении в СИЗО и вообще арестами? Почему Матвиенко В.И. хватает здравого смысла возмутиться клетками в судах, а уполномоченные по правам человека молчат? Почему ни один уполномоченный не подал заявление в Конституционный суд о серьезной корректировке Приказа Минюста как нормы, серьезно нарушающей права невиновных граждан. Про автозаки (легализованные пытки) писала уже.

Уверена, стоит собрать разок в автозак всех уполномоченных и покатать часов 5-6 по Москве, параллельно зачитывая им ПВР (Правила внутреннего распорядка), и ситуация с ПВР и автозаками быстро будет меняться в человеческую сторону.

А пока… «Страшно далеки они от народа». И напомню: нынешняя ситуация с арестами может привести в СИЗО практически любого. Защищая других, защищаем себя.

Следите за новостями.

*#женщины в сизо, ИВС, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники*

## Квартирники. 04.09.2018

Жила-была женщина. Решила она продать свою квартиру. Квартира была куплена по договору займа, ежемесячно гасился долг. Тяжеловато это было женщине, вот и решила продать, погасить остатки долга и жить дальше.

Нашла покупателя, не скрывала от него, что перед переоформлением квартиры ей надо долг погасить. Составили необходимое соглашение, где всё прописались с цифрами и сроками.

Отдал покупатель аванс в размере остатка долга за квартиру. Женщина пошла в фирму, где был оформлен займ под квартиру, внесла деньги. Там ей пообещали быстро оформить документы, оформить погашение долга, выдать свидетельство о собственности.

Да только не случилось этого. Поступило от этой фирмы заявление в полицию, что женщина собралась залоговую квартиру продавать. Мошенническим, само собой, путём. А деньги? — спросите вы. И будете правы. Но фирма не первый раз такое проворачивает. Не удалось женщине доказать, что внесены деньги, и начала она уже покупатель выплачивать долг от аванса отдавать. А квартиру фирма изъяла.

Ни денег, ни квартиры. Но это оказалось не самое страшное. По заявлению фирмы завели уголовное дело и очень быстро «расследовали». Состоялся суд.

Женщину осудили за то, что «мошенническим путем выманила у покупателя деньги, не собираясь продавать ему квартиру». А заключение соглашения с покупателем — лишь часть мошеннической схемы. Как вы догадываетесь, фирма в уголовном деле вообще не фигурирует.

Покупатель выступал на суде, защищал женщину, ведь деньги она ему возвращала частями. Не помогло.

Дали 4 года колонии. И покупатель тоже остался без денег. Такие дела: ни денег, ни квартиры — тюрьма за долги.

Берегите себя.

*#159 статья, женщины в сизо, Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные истории*

## Следственное наплевательство и судебный пофигизм. 06.09.2018

Мосгорсуд рассмотрел мою апелляционную жалобу на продление срока содержания под стражей. Это было в режиме видеоконференции. Апелляции на меру пресечения все проходят стандартно: суд молча всех выслушивает, удаляется на несколько секунд и возвращается с решением. Поэтому многие просто ничего и не ждут. Однако любой суд — это возможность высказаться. А внимательные секретари всё это занесут в протокол. Протоколы я все собираю — потом пригодится. :) Моя речь:

«Уважаемый суд, в дополнение к своей апелляционной жалобы по существу вопроса хочу сообщить следующее. Суд первой инстанции пошёл на поводу у следствия, не заметив явное нарушение закона в представленном следствием ходатайстве и добавив к этому уже свои процессуальные нарушения.

Ссылки на нарушения норм УПК я привела в апелляционной жалобе, повторяться не буду. Я буду оперировать исключительно фактами. Теми фактами, которая фигурирует в материалах настоящего дела.

Если кратко охарактеризовать позицию следствия, то ее можно выразить одним словом: «наплевать». А если кратко охарактеризовать действия суда первой инстанции, то он «не заметил это». Итак.

Следствию наплевать, что нет ни одного показания свидетелей с моей фамилией, нет ни одного документа, свидетельствующего о нарушении закона с моей стороны.

На всё это следствию наплевать, а суд первой инстанции не заметил это.

Следствию наплевать, сколько я буду находиться в СИЗО. График ознакомления с делом свидетельствует о том, что ознакомление может значительно затянуться.

Следствию наплевать, что необходимость ознакомления с делом не может быть основанием к лишению свободы, а суд первой инстанции не заметил это.

Следствию наплевать, в каком состоянии находится уголовное дело и сколько раз его будут возвращать на доследование.

Следствию наплевать, что закрытие предварительного расследование было фиктивным. И даже на суде следователь не смог ответить на вопрос судьи о количестве томов в закрытом уголовном деле.

Следствию наплевать, что дело ещё не сформировано, а суд первой инстанции не заметил это.

Следствию наплевать, что суд — не место для предположений, поэтому оно спокойно оперирует понятиями: «Может скрыться, давайте держать в СИЗО!» Но это всего лишь предположение без

доказательств. Чтобы показать абсурд этого предположения, приведу аналогии: «может напасть на сокамерниц — давайте свяжем ей руки», «может сойти с — ума давайте упрячем её в психушку», «может подавиться — давайте кормить не будем» и пр. На абсурдность предположений следствию наплевать, а суд не заметил это.

В кодексе судейской этики говорится, что судья должен следовать высоким стандартам морали и нравственности и избегать всего, что могло бы умалить авторитет судебной власти. Поэтому прошу уважаемый суд не присоединяться наплевательской позиции следствия, внимательно рассмотреть факты и восстановить авторитет независимой судебной власти, отменив решение суда первой инстанции».

Высказались лаконично следователь и прокурор. В заключительном слове я уже, к сожалению, привычно обратила внимание на неисполнение надзорной функции прокурором вспомнила о презумпции невиновности, право на защиту, на состязательность сторон — всего того, чего лишается человек, помещённый в СИЗО.

После совещания суд вынес решение: в апелляционной жалобе отказать, в СИЗО оставить. Всё, как обычно. И как обычно — живём дальше и улыбаемся.

Берегите себя.

*#женщины в сизо, Оттуда, Правоохранительная система, Семейный капитал, СИЗО, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Судебная небайка. 08.09.2018

Рассказываю не байку.

Идёт судебный процесс. Против директора предприятия.

Судья в кулуарах совершенно цинично делится с адвокатом:

«Докажешь, что невиновен — дам три года, не сумеешь — четыре».

Таковы нынче язвы и нарывы судебной системы. Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные истории*

## Здравый смысл и свежий взгляд. 12.09.2018

Мечтаю о здравом смысле и свежем взгляде. Во всех областях. Периодически размышляю, как сохранить и развить эти функции у детей. В газете читаю про электронный больничный — продвинутая тема. И журналист радостно пишет: «Какая умная программа, если СНИЛС не ввести — больничный не создашь». Но ведь логично, чтобы СНИЛС брался из базы, заодно проверялось бы и его наличие.

Так и живём — шаг вперёд и… потоптались. :)

Думаю, что крепкая адекватная обратная связь с населением с учётом рацпредложений обеспечила бы такой рывок, что Китай нервно обкурился бы в сторонке. Только система должна быть единая для учета всех жалоб и предложений.

Берегите в себе здравый смысл и свежий взгляд :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## 1 сентября. 13.09.2018

Встретили 1 сентября.

Почти у всех дети. Смотрели телевизор, где все эти… цветы-бантики. Плакали. Что поделаешь — женское СИЗО это всегда тревога за детей. Нельзя арестовывать женщин, кроме случаев крайней опасности для окружающих. Потому что детям нужна мама. И нельзя на детей перекладывать проблемы правоохранительной системы.

*#женщины в сизо, Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Форсайт. 16.09.2018

Год назад я была на Байкале. Помимо работы на «Форсайте» у меня было три дня на диком берегу Байкала. В абсолютном одиночестве среди природы. Без телефона и интернета. Море, солнце, волны, горы, потрясающие запахи трав, корабли на горизонте, прибрежный песок, обжигающе-холодные купания, ветер…

Друзья уже были арестованы, меня уже обвинили в том, что сбежала за границу. Был вариант, что по возвращении меня арестуют прямо в аэропорту.

Можно было остаться. На Байкале достаточно укромных мест для спокойной жизни.

И друзья на Форсайте пытали вопросом: «Зачем ты возвращаешься, зачем? Это ничего не докажет, но может плохо закончиться для тебя».

И песня, которую я слушала много-много раз там:

…Я не поеду обратно,
я стану частью этих сладких напевов.
Я стану птицей в ветвях этих сосен.
Я стану влагой рек хрусталеподобных.
Ведь вам известно — я на это способна!
Так возвращайтесь же домой без меня.

Байкал — это огромная сила. И просто лежать на берегу без цивилизации, слушать шум волн и смотреть в небо было огромным подарком судьбы.

Я знаю ответ на вопрос «зачем». Просто потому иначе никак. Потому что есть долг, есть миссия, есть ответственность. Потому что я могу изменить ситуацию в стране. Потому что я могу защищать людей. Потому что я много умею и знаю. И… непорядочно отсиживаться в кустах. Ну а тюрьма, пытки и прочие неудобства — всё это временно. :)

Ну и анекдот напоследок: Психиатр спрашивает нового пациента:

— Кто вы?
— Я Пётр Великий.

— Ну, царей у нас много
— Я не царь, я атомный ракетный крейсер. :)

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Непечатный орган. 17.09.2018

Выпускать еженедельный журнал в большой камере — очень просто. Каждый делает один лист на бумаге А4. Раз в неделю всё собирается и начинает ходить по рукам.

Рубрики самые разные: стихи, рисунки, обзор законов, проза, анекдоты и даже доска объявлений.

Оч-чень забавная штука получается. :))

*#женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Ещё одна небайка. 19.09.2018

Девушка отчаянно доказывала свою невиновность. Долго и упорно. Но её всё равно осудили. Но время прошло много, и её освободили прямо из СИЗО. А на выходе — арестовали. За то, что «скрывалась от следствия». По тому же делу. «Всё страньше и страньше».

*#женщины в сизо, Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные истории*

## Дневничок. Клеточки и полосочки. 20.09.2018

Кровати в СИЗО есть в клеточку и в полосочку. На первый взгляд кажется, что в клеточку лучше, но суровая математика разбивает эти иллюзии.

У клеточек площадь контакта с матрасом меньше, что даёт очередное основание к выводу, что не только небо в клеточку калечит людей.

Продуманность символизма воздействия на человека в тюрьме опять восхитила.

## Манифест. 21.09.2018

Собрала часть своих действий по направлению «правозащита» в один документ.

Этап первый: сделать это доля ранее несудимых женщин, потом уже двигаться по расширению круга людей, которых это должно касаться.

Каждый пункт Манифеста — отдельная большая работа. Кроме моих одиночных усилий важно подключать к этой работе всех причастных. Отношение к женщинам — это отношение к своему будущему. В СИЗО РФ находятся не менее 9,5 тысяч женщин. «Дорога в тысячу миль начинается с первого шага».

**Манифест**

В целях гуманизации законодательства, декриминализации общества, заботы о будущем страны, защиты будущих поколений — для ранее несудимых женщин, подозреваемых и обвиняемых по статьям, не связанным с безопасностью государства и насилием необходимо:

1. Исключить досудебные аресты, кроме арестов лиц, скрывающихся от правосудия.

2. Отменить аресты после оглашения приговора. Приговор вступает в силу только после решения апелляционной инстанции. Соответственно, арест должен производиться не ранее.

3. Запретить перевозку подозреваемых и обвиняемых в автозаках, не применять наручники.

4. При первой судимости не назначать наказание с отбыванием в колонии.

5. Изменить нормы питания в СИЗО до физиологически обоснованных для сохранения здоровья.

6. Изменить Правила внутреннего распорядка (ПВР) для СИЗО — привести в соответствие с Конституцией и Федеральным законом.

7. Отклонять от рассмотрения постановления о привлечении в качестве обвиняемого, содержащие утвердительные выражения с прилагательным «преступные» (замыслы, действия и прочее). Признать преступным может только суд.

8. Приостанавливать действия кредитных договоров, гражданских и арбитражных дел на период нахождения фигуранта в СИЗО.

9. Сделать доступным для каждого обвиняемого и подозреваемого программы по профориентации и антинаркотическому просвещению.

10. Обеспечить доступ содержащимся в СИЗО к системам «Консультант», «Гарант» с возможностью распечатки.

*#женщины в сизо, манифест, Медицина в СИЗО, Оттуда, Правоохранительная система*

## Хуруджи респект! 25.09.2018

Почитала об аресте одного из рейдеров — обидчиков Хуруджи.

Полтора года переписки с прокуратурой дали результат. И пример для других. Справедливость возможна. Нужны устремлённость и терпение.

Хуруджи респект!

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники*

## Дневничок. Серенький не тот. 27.09.2018

Серо и дождик. Но серенький — не тот, а дождик какой-то легкомысленный.

Скучаю по Питеру.

*#дневничок, Оттуда, Семейный капитал, СИЗО*

## Шпаги и пистолеты. 30.09.2018

Почему следствие на судах оказывается правым.

Читаю большое количество чужих судебных материалов. И знаете что? В большинстве случаев суды не разбираются в деле, не рассматривают по существу, не оценивают факты. Часто суды

действуют по принципу: «верю — не верю». А следователь всегда бывает более убедителен, чем обвиняемый, ведь он даже не скован рамками закона. И если следователь говорит «замысел — преступный», то такой же силы эмоцию предоставить судье обвиняемый не может. Даже самые абсурдные ярлыки плохо отклеиваются.

Вариантов тут несколько:

1. Самый простой — играть по правилам следствия, не обращать внимание на законы, апеллировать к несуществующим законам, практикам и прецедентам. Некоторые адвокаты идут этим путем, и вполне успешно.

2. Самый правильный — дотошно и вдумчиво опираться на закон, доказывая, что следствие допустило огромное количество нарушений, и это необходимо принять во внимание. Путь приводит к успеху крайне редко в силу повязаного триединства «следствие — прокуратура — суд». После прохождения по этому пути люди теряют веру в закон и справедливость, порой опускают руки.

3. Самый сумасшедший. Требует безусловной веры в свою правоту и победу. Не спускать ничего. Поднимать шум по любой мелочи. Писать во все инстанции и не стесняться в формулировках и действиях. Путь достаточно опасен, но в нынешних условиях других результативных путей может не быть. Тьма отступает перед светом. И если против благородной шпаги враг подло пользуются пистолетами, то надо использовать всё: пушки, сюрикены, огонь, меч и всё, до чего можно дотянуться.

«Послушными овечки бывают, а за правду надо воевать».

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Законы Мёрфи. 04.10.2018

По набору тюремных историей можно составить список законов правоохранительной системы, наподобие законов Мёрфи. Из этой тюремной истории следует два закона:

1. Если свидетеля преступления не было рядом, это не значит, что он не свидетель

2. Если свидетель подписалсяся об ответственности за дачу ложных показаний, значит, его показания истинны.

Итак, история.

Жил-был мужик. И обвинили его в преступлении. Никаких оснований к этому не было, кроме показаний свидетеля, который собственно и рассказал об этом преступлении. Мужик пытался защищаться. Поскольку свидетель работал проводником в РЖД, возникла надежда, что так удастся доказать, что никакой он не свидетель. И правда, — в РЖД выдали справку, что свидетель в указанное время был на работе, то есть в поезде, а поезд находился весьма далеко от места преступления.

Однако на суд это впечатление не произвело: «То, что гражданин находился далеко от места, не означает, что он не может быть свидетелем».

Мужик обратился с апелляцией в Мосгорсуд: свидетель врёт, показания ложные, справка вот же. Мосгорсуд припечатал: свидетель подписал расписку об ответственности за дачу ложных показаний, а значит врать не может.

И поехал мужик на зону.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Крайние меры — голодовка. Письмо Игоря Белоусова. 03.10.2018

12.09.18, среда
СИЗО-5, Москва

Вера Дмитриевна, здравствуйте!

Хамский, пренебрежительный ответ из Генеральной Прокуратуры РФ на мою жалобу на действия следствия вынуждают меня пойти на крайние меры.

С сегодняшнего дня я объявил голодовку. Она будет продолжаться, пока не отменят ВСЕ сфабрикованные уголовные дела в отношении меня, моей жены, моего сына, а также Верховой Н.Д.

Прощайте.
Обратной дороги у меня нет.
Спасибо вам за моральную и не только поддержку.

Спасибо ВСЕМ пайщикам, кто Не поверил и НЕ верит в чудовищное обвинение против нас. К сожалению, чтобы добиться справедливости у нас в стране, сейчас надо пожертвовать своей жизнью.

Я принял такое решение.

Искренне ваш, не поминайте лихом.
Белоусов И.Н. СИЗО-5.
*#Репост, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Жалоба в Конституционный суд от 11.09.2018

В Конституционный суд РФ
от обвиняемой Верховой Н.Д., 06.12.1969,
содержащейся в ФКУ СИЗО-6 г. Москвы

**Жалоба**
**о неконституционности ст.108 УПК РФ**

Суд Невского района Санкт-Петербурга своим постановлением от 03.11.17 избрал для меня меру пресечения в виде заключения под стражу, руководствуясь статьями 97, 99, 100, 108 УПК РФ.

Мера пресечения, избранная для меня судом, осуществляется содержанием меня в СИЗО. Между тем, содержание в СИЗО по сути и по форме является содержанием строгого режима, а значит, не может избираться для лиц, подозреваемых и обвиняемых в преступлениях, максимальное

наказание за которые предусматривает общий режим содержания. Для женщин, согласно ст. 58 УК РФ, исключен строгий режим содержания.

На сегодняшний день подозреваемые и обвиняемые в преступлениях содержаться в условиях более строгого режима, чем осуждённые за аналогичные преступления. Я являюсь обвиняемой по ст. 159 4.4 УК РФ. Не касаюсь обоснованности обвинения в мой адрес и работы следствия, судов и прокуратуры в данном случае. Все подробности на сайте freeverhova.ru

Согласно ст.55 п.3 Конституции РФ права и свободы человека и гражданина могут быть ограничены Федеральным законом только в той мере, в какой это необходимо в целях защиты основ конституционного строя, нравственности, здоровья, прав и законных интересов других лиц, обеспечения обороны страны и безопасности государства.

Ст. 108 УПК РФ — содержание женщин в СИЗО в условиях строгого режима — конфликтует с нормами ст.58 УК РФ. Несмотря на то, что срок содержания в СИЗО учитывается при назначении наказания с соответствующими коэффициентами, мера процессуального обеспечения не может быть строже, чем грозящее наказание, об этом говорит конституционны принцип презумпции невиновности (ст.49 п.3.п.3 Конституции РФ), а также ст.2 Конституции РФ, провозглашающая права и свободы человека высшей ценностью. Ст. 108 УПК РФ в существующей редакции противоречит ст. 18 Конституции РФ, поскольку не защищает права и свободы человека и гражданина. Также, находясь в СИЗО, я не имею возможности заботиться о своем нетрудоспособном отце. (п.3. ст.38 Конституции РФ).

На суд возлагается обязанность оценить достаточность имеющихся в деле материалов, подтверждающих законность и обоснованность меры пресечения, наличие основания и условий для избрания, а также соразмерность налагаемых ограничений тому наказанию, которое может быть назначено по приговору. Суд не может игнорировать дела и обстоятельства, которые повлияют на окончательное наказание. Заключение под стражу женщин, а также иных лиц при отсутствии доказательств физической опасности для общества и доказанных возможностей помешать следствию нарушает целый ряд положений Конституции РФ. В частности, ст. 21 п.2, ст.38 п.3, ст.49 п.2 п.3. Решением о применении конкретной меры пресечения не предопределяется вывод по основному вопросу уголовного дела — о виновности подсудимого и о его наказании. Тем не менее практика показывает, что при избрании меры пресечения в виде заключения под стражу, вероятность оправдательного приговора практически исключается.

На основании вышеизложенного ПРОШУ:

Признать ст.108 УПК РФ не соответствующей Конституции РФ в случае применения меры пресечения в виде заключения под стражу для женщин, а также тех подозреваемы и обвиняемых, чья статья обвинения не предусматривает наказания в виде лишения свободы с отбыванием наказания в условиях строгого режима.

Я понимаю, какие серьезные последствия может вызвать Ваше решение, понимаю и весь груз ответственности за это. Но решение по этому вопросу — это одна из тех развилок, что определят дальнейшее развитие страны. Будем ли мы дальше идти путём понятий, беспредела и коррупции или сможем сделать пусть небольшой, но важный шаг к гуманизации правосудия и защите своих граждан.

Бесконечные и необоснованные аресты можно исключить простым соблюдением Конституции РФ.

Приложения:
1. Постановление суда
2. Ст. 108 УПК РФ
3. Заявление о пошлине.
11.09.19
Верхова Н.Д.

## Тюремные истории. Защита клиента или статья для юристов. 07.10.2018

Плакать через семь месяцев нахождения в СИЗО может только человек, бесконечно верящий в добро и справедливость. И постоянно обманываемый в своих надеждах.

Женщина работала юристом, воспитывала троих малолетних детей, помогала маме - инвалиду-колясочнику.

Как-то раз представляла интересы клиентки в суде. История банальная, из тех вопросов, что необратимо портят москвичей. Муж с женой развелись, поделили квартиру пополам. Каждому по две комнаты. Жена продала свою половину женщине с пятью детьми. И пошли коммунальные войны. Соседи мужику были абсолютно не нужны. Свою половину он продавать не хотел, как и покупать чужую. Пытался через суд оспорить сделку по покупке многодетной матерью жилья. Вот тут-то и появился в деле юрист. Суд юрист выиграла для многодетной матери. Но на этом история только началась.

Однажды утром рано на квартиру к клиентке и к юристу пришли парни в погонах: обыск, арест, пятеро детей клиентки и трое юриста - в детдома. Обвинение от мужика поступила по статье: принуждение к сделке статья 179 часть 2 (так как "группа") - до десяти лет. Полный абсурд, но... женщина сидит восьмой месяц. Дети без матерей. Мужик живет один в квартире, как и хотел. Юрист пишет целыми днями письма, обращения, жалобы, заявления в разные инстанции. Получает отписки. И плачет.

*#женщины в сизо, Оттуда, Тюремные истории*

## Планы по направлениям. 08.10.2018

1. Правозащита.

Это основное направление. Взгляд на систему изнутри даёт огромное количество информации для действий. И тут важно не привести людей к ответу, а вернуть к вопросу. Интересная коллизия — вопрос тюрем, например, касается хоть и значительного количества людей, но всё же меньшинства населения, но состояние правоохранительной системы сейчас таково, что за решеткой может оказаться любой. И вообще каждый. Поэтому и девиз такой: защищая других, защищаем себя.

2. Развитие государства.

Государство — огромная махина, идущая своим путем. Каждый может влиять на этот путь. Правда, недостаток настойчивости всегда есть соблазн заменить силой, но это — тупиковый путь. Правильный путь, на мой взгляд, это открытость, объединение позитивных усилий, стремление к развитию, здравый смысл. Да, ещё правда и логика. Мало кто смотрит на ситуацию в стране, мире и космосе целиком, но это необходимо для понимания деталей. Я не за то, чтобы кухарки управляла государством, я за то, чтобы каждый думал об интересах государства.

По развитию государства у меня много предложений и решений — буду публиковать. Обычно то, что я пишу — разбивается. :) Счастье, что я придерживаюсь идеологии оптимизма. :)

3. Кооперативы

Если сформулировать кратко — кооперативы — двигатель прогресса. Но не все умеют этим пользоваться. А тёмные люди так вообще стремятся уничтожить кооперативы. Это не повод поддаваться. Как машину из ямы выталкивают — видели? Это типичные кооперативные принципы. По этому направлению работаю над конкретикой: практическое применение, решения, перспективы.

4. Образование.

Важность этого направление даже объяснять не надо. И вижу позитивные сдвиги: и Сириус, и центр одаренных, и московская цифровая школа, и многие мелочи. Но у нас почти вымерло целеполагание и структурное планирование. Есть над чем поработать. Зачем учиться? Какой человек должен выходить из школы? В чём смысл образования? Чему надо учить?

При правильных ответах развитие государства резко ускоряется. Решений у меня много.

5. Изобретения.

Здесь пока только тезисы:

«Всё давно придумано». Думать легко, а вот внедрить. Смекалки нам не занимать. Только это броуновское движение надо сориентировать. Шаг за шагом. По стране и для каждого в частности. Решений больше, чем вопросов.

6. Физкультура.

Это чудесное слово. Физическая культура — это не только здоровье, это образ жизни, это метод преодоления трудностей, это стремление к развитию, это защита практически от всего, это независимость от внешних условий. Мне есть — о чём рассказать. :) И физкультура очень тесно связана с мировоззрением.

7. Мировоззрение.

Сложная тема, однако у меня есть цельная картина мироустройства, и я собираюсь ею поделиться. Тут гармоничное сосуществование всех религий, ответы на все вопросы по истории, грани между мыслью и поступками, информацией и действием, управление временем, язык облаков, функции коллайдера, смысл человечества, функция других форм жизни, питание, воспитание и всё-всё-всё.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Решения, Тюремные хроники*

## Дневничок. Зелень. 09.10.2018

Обсуждали экспорт зелени из бывших республик. Себестоимость фуры зелени - около 500 тыс. руб. А продать зелень можно за 8-10 млн. Трусы занимаются наркотиками, а смелые идут в зелень. Но выжить там трудно.

Захотелось спокойствия и крепкого плеча. Осень.

#дневничок, Оттуда

## Честь и достоинство. 10.10.2018

Честь и достоинство. Нужны ли они тюрьме?

Любой человек с момента ареста подвергается непрерывным унижениям. Можно к этому относиться по-разному. Помню один из своих первых отчаянных протестов: не буду держать руки за спиной на проверке – в ПВР сказано – только при движении. И помню, что смотрели на меня, как на … психа :)

Однако, все заморочки СИЗО всё-таки вторичны по сравнению с обычными действия следователя. Я перечитала массу постановлений о привлечении в качестве обвиняемого. Практически все они содержат системные оскорбления. Напоминаю, что винновым человека может назвать только суд. Однако, сплошь и рядом клеймят следователи тех, кому суд ещё только предстоит. Стандартная формулировка: следователь установил – человек совершил преступные действия.

Очень редко, как золотинки в песке, встречается законное: следствие собрало доказательства, позволяющие обвинить человека в преступлении. Видите разницу? А ведь большинство следователей и адвокатов настолько привыкли к следственным оскорблениям, что уже не обращают внимания. Им уже всё равно. А мне – нет. Написала в суд заявление о защите чести и достоинства. Как на меня тут при этом посмотрели – сами догадайтесь :)

Следите за новостями и… не привыкайте к плохому :)

*#женщины в сизо, Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Тюремные истории. Работяга. 14.10.2018

Жил-был мужик. Приехал как-то в Москву на несколько дней погулять, отдохнуть ну и выпить. Выпил крепко, но не хватило. Вечер. Пришлось идти в магазин за водкой. Пока банально. А магазин уже закрывался, охранник никого уже не пускал. Но разве может охранник служить препятствием к водке?

Мужик избил охранника, вошёл в магазин и… вырубился. Очнулся — в кармане бутылка водки, а в рукаве три банки икры. Тоже банально. Заехал в СИЗО по статье 158 ч.2 (кража). Наказание по статье — до пяти лет, но обычно не больше двух.

Навестил его следователь. Приходит мужик, радостный, в камеру, делится впечатлениями: «Какой замечательный следователь, такой понимающий, я уже всё подписал, скоро суд». Сокамерники удивились, пробовали уточнить, что ж он такое подписал у «доброго» следователя, да почему не прочитал. Мужик честно признался, что читал последний раз в девятом классе, и изрядно подзабыл, как это делается.

Состоялся суд. Получил мужик по статье 162 (разбой) 7,5 лет колонии. Грамотности да недоверчивости ему не хватило.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Люблинский суд ответил на моё заявление. 14.10.2018

Люблинский суд ответил на моё заявление. А ведь отвыкли суды от понятий чести и достоинства. :) Даже не буду делать выводы — почему.

Идём дальше. Написала апелляцию в Мосгорсуд — может, там поймут, о чём я. :)

Наблюдаем за развитием событий.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Решения, Уголовное дело, ФСИН*

## Регламент оформления и содержания томов уголовного дела. 20.10.2018

Хотите знать вопрос, которым можно «засыпать» любого следователя или адвоката? :) Вот: «Какой документ регламентирует содержание и оформление томов уголовного дела?» Наслаждайтесь. :)

Мало кто знает, что такой документ существует, хоть и достать его сложно. Это инструкция по документообороту МВД. Там есть всё: содержание титульного листа, требования к описи, нумерации листов, вплоть до ширины полей.

Буду очень благодарна, если кто-нибудь сможет достать эту брошюру. Очень надо.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Репост, Уголовное дело*

## Перегрызть пуповину или роды по-ФСИНовски. 23.10.2018

Сейчас уже такое невозможно — беременных размещают отдельно. Надеюсь, недалеко то время, когда беременных вообще в СИЗО не будет.

Было у нас в камере четыре беременных. На последних сроках. Это забавно только на первый взгляд. Одной пришло время рожать. Гинеколог с утра осмотрела, подтвердила, что срок — сегодня-завтра и… ушла домой. А мы остались. С девушкой, которой предстояло рожать.

Стали думать. Простыни есть, кипяток — тоже. А вот легальных инструментов для перерезания пуповины правилами в нашем пользовнии не предусмотрено.

Схватки начались, как часто это бывает, в 2 часа ночи. Дежурных сотрудников мы предупредили, что у нас возможно увеличение численности заключенных, так что помощь пришла быстро. Скорая тоже приехала. И уже были не так важны следующие часы ожидания конвоя — врачи были рядом. Скорая не могла уехать без четырёх конвойных. Именно столько полагается на рожающую женщину. Чтобы не сбежала, а вы как думали? :)

Всё хорошо. Она родила и уже к вечеру вернулась в камеру. Ребёнка она не видела. Обычно его привозят в тюрьму к матери только на пятый день. Это что — еще недавно рожать можно было только в наручниках. Тут вам ФСИН.

Чем больше людей будут знать об этом, тем быстрее ситуация будет меняться к лучшему. О решениях пишу постоянно. Защищая других, защищаем себя.

*#женщины в сизо, Медицина в СИЗО, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники, ФСИН*

## Апелляция на решение Люблинского суда. 23.10.2018

Суд перенесён на 25 октября 2018 в 10.00.

Друзья! Неравнодушные! СМИ! Провозащитники!

Прошу Вашего внимания! 25 октября 2018 г. в 10.00 в Мосгорсуде состоится суд.

Буду обжаловать решение Люблинского суда. Продолжу защищать свою честь и достоинство, отстаивать свои конституционные права, а также ВАШИ! Ведь никому не известно, когда каждому придётся столкнуться с нарушением своих гражданских прав и свобод.

Если вас заботит ваша судьба, судьба ваших близких, общая справедливость, приходите на суд! Предайте событие общественной огласке! Ведь на подобных заседаниях решается судьба не только конкретного человека, а общества в целом, создаются прецеденты, которые могут повлиять на дело кого-то ещё.

Обновление:

Суд по апелляции состоялся 25 октября 2018 г. в 10.00. в Мосгорсуде.

В жалобе отказали, что даже не требовалось доказать… Наталья держится молодцом!

Количество нарушений по делу зашкаливает. Формально уголовное дело отсутствует, ознакомление не началось. Создаются искусственные препятствия. Состав следственной группы был полностью изменён, извещения об изменении состава не было. Прошло три месяца, до сих пор не предъявлено уголовное дело, как этого требует ст. 215, 217 УПК. Следователь должен был предъявить Наталии все тома, этого не произошло.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Репост, Уголовное дело*

## Пресса за правду. 24.10.2018

Дело по обвинению оказалось гораздо значимее, чем казалось изначально.

Мосгорсуд назначил рассмотрение апелляционной жалобы. Событие важное, а потому поставлены в известность пресса и общественность.

Письмо было отправлено: Российская газета, Новая газета, Комсомольская правда, Независимая газета, Коммерсант, РБК, Ведомости, Огонёк, ОНК Москвы, уполномоченному по правам предпринимателей в Москве, председателю совета при президенте, уполномоченному по правам человека в Москве, Фонд борьбы с коррупцией, Вердикт, партия «Гражданская инициатива», Комитет за гражданские права.

Прошу перепостить и разослать по мере возможности. Шаг за шагом. :)

*#Оттуда, Репост, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Вши и тараканы в уголовно-процессуальном производстве. 25.10.2018

Искала тут истоки выражения «вшивая интеллигенция», заодно формулировала объяснение — почему интеллигентные люди априори проигрывают людям в погонах.

Всё дело в понятии «неудобно».

Следствие сплошь и рядом нарушает УПК, но интеллигентному обвиняемому «неудобно» указывать на ошибки, неудобно писать, что следователь — преступник, неудобно говорить на суде, что уголовное дело — вымысел и абсурд, неудобно говорить о себе хорошие слова и говорить о своей невиновности.

У следствия таких проблем нет. А что делать судье? С одной стороны, следователь, уверенно утверждающий, что обвиняемый — опасный преступник, а с другой — обвиняемый, осторожно подбирающий слова, чтобы никого не обидеть.

Или возьмём процесс ознакомления я делом. Подавляющее большинство ознакомлений происходит с неоформленными томами — без титульных листов, должным образом не прошитых. Это надо писать в протоколе ознакомления, но… неудобно. Ведь следователю это не понравится.

Завязала с этим неравноправием. И так на судах не молчала, но требовалось усилие, чтобы писать жалобы на действия по уголовному делу. На войне, как на войне. И в протокол ознакомления с материалами уголовного дела теперь пишу каждый раз много интересного.

А про «вшивую» интеллигенцию — видимо, это оттого, что интеллигенция не всегда приспособлена ни к жесткой реальности, ни к борьбе, ни вшей с тараканами извести — только ум и порядочность.

Я справлюсь. И семь поколений моих предков-интеллигентов поддержат меня.

«Тебе навязали войну, ты должен забыть о милосердии. Тебе милосердия не окажет никто, и проявляя его, ты погубишь своих людей так же верно, как если бы бросил их безоружными навстречу врагу. Это будет ошибка, за которую те, кто идёт за тобой, поплатятся жизнью». — Терри Гудкайнд.

*#женщины в сизо, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Уголовное дело*

## Четвёртая власть. 26.10.2018

Сейчас расскажу о социальном открытии, которое позволит серьезно изменить действия власти любого уровня и людей, проживающих на территории, за которую эта власть отвечает. Власть в данном случае — это и администрация, и депутаты, и правоохранительные органы, и гос. организации и ведомства.

Палочная система показателей правоохранительной системы, хоть формально и отменена, но продолжает действовать. Тюремные истории, опубликованные на freeverhova.ru, подтверждают это снова и снова.

Уже сейчас всё готово к переходу на объективную и независимую систему показателей:

Индекс незащищённости = число жалоб / количество населения

Для внедрения этой системы, дающей чёткую картину состояния, не требуется затрат: только организационные мероприятия и небольшая корректировка существующих систем. Первый — главный и решающий этап — только формирование статистики. Всё и везде может работать по-прежнему, но информация о каждой жалобе поступает в единую систему. Только формирование статистики по всем видам жалоб населения уже даёт объективную картину слабых и проблемных мест.

1. Приём жалоб. Каналы связи: почта, обычная и электронная, сайты с формами жалоб, МФЦ. Не исключая адресных жалоб, необходимо организовать единую базу поступающих заявлений — принцип «одного окна». Каждый гос. орган, служба должны обладать доступом к своему разделу.

2. Анализ. Общий массив данных легко анализируется — в каких аспектах люди не защищены. На разных территориях — разные болевые точки. И чиновники будут знать неискажённую инфу из первых рук — где, как и над чем необходимо работать.

3. Смысл. Открытая система показателей позволяет в реальном времени получать обратную связь от населения.

4. Открытость.

В идеале статистика (индекс защищённости по различным аспектам и общий для территории) должна быть видна всем.

Система стимулирует гражданскую активность. Многие элементы системы уже внедрены в Москве и других городах. Необходимо просто сделать следующий шаг.

5. Защищённость системы. Система защиты стандартна для подобных сайтов и мало чем отличается от системы приёма жалоб прокуратуры, например, или обращений в администрацию президента. Да и блокчейн не зря придуман. Для исключения любых фальсификации здесь ему самое место.

**Как это работает**

Жалобы и заявления от населения поступают в систему «Защита» через каналы связи:

1. профильные сайты ведомств

2. единый сайт системы

3. МФЦ

4. приёмные ведомств

5. Почта.

Итак, например, сломалась сантехника — можно позвонить в ЖЭК, оператор занесет заявку в систему, можно зайти в МВД, можно оставить заявку на сайте системы. Всё. Заявка в системе, с ней работают, как работали раньше. Но если не работают — появляются новые жалобы: на сантехника — начальнику ЖЭКа, на ЖЭК — в прокуратуру, на прокуратуру и так далее. Новые

жалобы фиксируется в системе, показывая, что эта область неблагополучна — число жалоб растёт, показатели ухудшаются.

Абсолютно такая же логика по любому аспекту. Наркоманы в парадной — жалоба участковому. Не отработал — поток жалоб будет увеличиваться. Отписался — будут ещё жалобы. Навёл порядок — жалоб нет.

Поскольку жизнь идёт, люди живут и действуют, всегда будет какой-то фоновый показатель, который отражает нормальное положение вещей, туда же будет входить и творчество графоманов, и сезонное обострение психов.

Но главное — работу на благо населения нельзя будет фальсифицировать.

При такой системе показателей:

— Есть смысл заниматься профилактикой преступление — жалобы не будут появляться, показатели улучшатся.

— Есть смысл честно отрабатывают жалобы, исключая появление похожих — показатели улучшатся

— Нет смысла в дутых резонансных делах — людей это не волнует, никто не будет жаловаться на эту тему. Но уже сейчас общественный резонанс часто способен решить застарелые проблемы. Система показателей учитывает и это — органы по-настоящему будут заинтересованы решать истинные резонансные дела — те, которые волнуют многих — показатели будут улучшаться.

— Есть смысл анализировать жалобы по разным аспектам и органам для принятия взвешенных управленческих решений — показатели улучшатся.

— Нет смысла писать отписки — отписка рождает новые жалобы в несколько инстанций — показатели ухудшаются.

— Нет смысла покрывать преступников — поток жалоб будет нарастать — ухудшаются показатели.

— Нет смысла арестовывать невиновных — это рождает только поток жалоб — ухудшает показатели.

— Нет смысла фальсифицировать статистику по выполненным действиям, имеет смысл только улучшать ситуацию в целом.

Да, это и будет та самая четвертая ветвь власти, которая не получилась ни при царском режиме, ни при коммунистах, ни в демократических странах. Раньше это было технически трудно — не было систем интернет-взаимодействия, даже МФЦ появились сравнительно недавно.

Мы получим независимую, доступную и безопасную систему, защищенную от фальсификации самой сутью своей организации. Пусть это на первом этапе всего лишь статистика, но именно она лежит в основе целеполагания.

Если награждают за раскрытие преступления — то сотрудники органов становятся заинтересованы в преступлениях. Понимаете?

Это система показателей через индекс незащищенности даст ответы на слишком многие вопросы — честные ответы, и понадобится изрядная смелость, чтобы решиться получить эти ответы.

Для карьеристов, бюрократов, коррупционеров такая система показателей неприемлема, поскольку влиять на показатель можно только честно работая на благо граждан своей страны. Это сложно. Но надо.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Репост, Решения*

## Дело о нормативах. 27.10.2018

Расскажу немного подробнее суть проблемы с нарушением нормативов у КПК.

Финансовые нормативы считаются по формулам, определённые Минфином — тут расхождении с мнением ЦБ нет. Расхождения в другом: данные какой отчётности подставлять в эти формулы. У КПК отчетность ежегодная, это прописано в законе о бухгалтерском учете. Но ЦБ, не имея опыта работы с КПК на то время, решил считать по аналогии с банками, взяв ежеквартальную отчетность.

Но квартальная бух. отчетность КПК — промежуточная, формируется для управленческих целей, может корректироваться, никуда не сдаётся — этовам любой бухгалтер подтвердит.

И вот эту отчётность, которой формально нет, и требовал использовать ЦБ. Там есть ещё много нюансов в формировании фондов, решениях ежегодного общего собрания — чисто КПК-шная специфика бухгалтерии. В которой никто из ЦБ разбираться не стал — статус не позволил. И, видимо, корона :). Так и загубили хороший кооператив.

*#Оттуда, Решения, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Решение по незаконным арестам. 27.10.2018

Расскажу одно из решений по незаконным арестам.

Поводы для ареста описаны в УПК РФ.

1. Может скрыться
2. Может воздействовать на свидетелей.
3. Может уничтожить доказательства.
4. Может продолжить преступление.

И многочисленные пленумы, разъяснения и комментарии говорят о том, что по этим пунктам должны быть доказательства, зафиксированные документами. По пункту 1 — акт о неявке на допрос или постановление об объявлении в розыск. По пункту 2, например, жалоба свидетеля. И так далее.

Предложение:

Делаем в ходатайстве следователя обязательную табличку:

Основания для заключения стражу в соответствии с УПК РФ Название и реквизиты документов с указанием номеров листов в деле на суд по продлению

| Основания для заключения стражу в соответствии с УПК РФ | Название и реквизиты документов с указанием номеров листов в деле на суд по продлению |
|---|---|
| 1.<br>2.<br>3.<br>4. | 1. Акт о неявке. Лист 26. От _____ /дата/ |

И первый взгляд судьи должен быть формальным: заполнена ли табличка, присутствуют ли документы. У абсолютного большинства тех, кого я встречала с обвинением по статье 159 УК РФ табличка была бы не заполнено — нечем. Обычно присутствуют только голосовные (вопреки закону) заявления следователя: может скрыться, давить на свидетелей и т.д.. Забавно, но порой следствие пытается представить в качестве доказательства к побегу наличие загранпаспорта, но изъять паспорт или наложить в соответствующих структурах запрет на выезд из страны категорически не желает, чтобы не разрушить иллюзию основания к аресту.

Дальше — больше. :) Когда расследование завершается, все пункты, кроме первого, отпадают. А для первого пункта обычно доказательств нет.

Что делает следствие в моём случае? «Продлении ареста необходимо для ознакомления с делом». И ведь прокатывает! Хотя такого повода для содержания под стражей нет и быть не может.

Еще важный момент. Нигде не прописано, что продление меры пресечения без обоснования — это нарушение закона. Значит, и наказание за это нет. С удовольствием представляю следователя, который боится дать в суд ходатайство о продлении, поскольку ему нечем документально это обосновать. И судью, который рассматривает ходатайства и первым делом привлекает к ответственности следователя за безосновательный арест.

Мечты, мечты…

Впереди большая работа.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Решения, СИЗО, Тюремные хроники*

## Дневничок. Видит око, да мозг неймёт. 27.10.2018

Ходила на приём к тюремному окулисту: он у нас уникальный: окулист-психиатр. Символична даже очередь к нему: люди, плохо видящие реальность, и люди, плохо воспринимающие её :)

Всё прошло хорошо, да и с глазами всё будет замечательно. Но самые обычные вопросы окулиста, если помнить, что их задаёт психиатр, очень настораживают :) Отвечать надо, тщательно подбирая слова. Попробуйте прикинуть. :)

*#дневничок, Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Умирать бесполезно. 31.10.2018

Ещё небайка. Читала чужие доки. :) В уголовном деле есть документ о прекращении уголовного преследования в связи со смертью. А в приговоре умерший признан виновным.

Угу. От нынешнего правосудия даже умирать бесполезно.

*#Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные истории, ФСИН*

## Пять томов. 01.11.2018

Закон дает право обвиняемому требовать для ознакомления любые тома дела. И следствие обязано это исполнять. Но с нашим делом всё не так просто. Оно не сформировано, ещё даже неизвестно, сколько в нём томов, а потому моё заявление следователю с просьбой предоставить последние пять томов дела высветило проблему отсутствие таковых. :)

Однако, ответ следствие предоставило. Отказать нельзя, выполнить никак. :) Восхитительны документ придуман: тома предоставим, когда дочитайте до них. :) И доказать, что с этими томами знакомится кто-то другой — тоже не получится: протокол ознакомления после каждого визита заверяется подписью обвиняемого. Вот и тянут время, лихорадочно клепая тома дела. Так что пришлось написать в суд. Есть надежда, что суд объяснит необходимость исполнения требований УПК. Ну, может, не сразу, и не районный. :)

И я знаю — как эти заявление / ответы использовать чуть позже.
Заходите за новостями :)

*#Оттуда, Правоохранительная система, Семейный капитал, СИЗО, Уголовное дело, ФСИН*

## Мелочи. 02.11.2018

Кровати в СИЗО — отдельная тема. Они короткие. :) Вряд ли детские, скорее всего, кто-то так думал о женщинах. Длина кровати, видимо, рассчитывалась исходя из роста, но лежа мы длиннее :) за счёт не перпендикулярности стопы остальной ноге. :)

Много мелочей, которые просто походя осложняют жизнь. Железо у кровати очень холодное, даже во сне нельзя терять бдительность, чтобы не касаться спинки кровати.

Новые кровати уже завезли, но звёзды к их замене ещё не сложились. Всё меняется к лучшему. Но медленно. О решениях пишу постоянно.

Защищая других, защищаем себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники*

## Дико. 03.11.2018

Некоторые тюремные истории даже не знаю — как написать, настолько это невероятно дико. На этой неделе дважды удивила прокуратура.

Удивление первое. В деле о поножовщине был вещдок — нож. Потом пропал. А когда появился — это был уже другой нож. На возмущение обвиняемой прокуратура ответила: «Нож есть? Есть. А остальное неважно.»

Удивление второе. Дело о мошенничестве, статья 159 ч. 4 УК РФ, как водится. Следствие через прокурора передает дело в суд. Судья читает, не находит состава преступления и возвращает дело в прокуратуру. Показательна реакция прокурора, выразившаяся, кстати, в официальном документе прокуратуры. Краткое содержание: «Ну и что, что не нашли состава преступления, надо было, значит, переквалифицировать и осудить по другой статье».

Без комментариев.

В такие моменты жалею, что нет под рукой сканера и интернета. Такие вещи надо публиковать в обязательном порядке. Ну так СИЗО для того и придуманы, чтобы не давать защищаться. Ничего. Всё идёт по плану.

*#159 статья, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные истории, ФСИН*

## Боулинг. 04.11.2018

Боулинг — исключительно доступная игра для заключённых. Бутылки из-под йогурта регулируются под вес мячика количеством налитой в них воды… И — игра готова. Боулинг с элементами лапты и городков. Вечная история. Развлечения в СИЗО.

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Дневничок. Сотрудники СИЗО. 05.11.2018

Захотелось написать про сотрудников СИЗО. Они бывают похожие на славян и непохожие на славян. Непохожие, в основном, добрые и улыбчивые, они нас не обижают. Есть, правда, один непохожий злобный мужик, это, наверное, потому что он совсем невысокий. Раньше он ещё громко ругался матом, но это ему запретили. Поэтому он молча злобно смотрит. Сказать ему нечего. :) Но в его смену заявление лучше не отдавать — он с ними обращается, как с бумажками на неизвестном языке.

С похожими на славян всё не так просто. Они делятся на два типа: одни думают, что работают с преступниками, а другие — что в СИЗО. Ещё есть подтип: они думаю, что это не работа, а каторга. Но этот подтип близок к исчезновению.

Ещё у сотрудников есть рации. Одни ими гордятся, потому что всё знают, не сходя с места, а другим рация мешает, потому что приходится отвечать.

Самый главный сотрудник — это начальник. Когда он идет по коридору, все стараются выглядеть получше. В женском СИЗО это признак уважения.

Сотрудники работают с утра до вечера. А некоторые и ночью. Поэтому, бывает неудобно, когда невыспавшийся сотрудник утром включает свет, открывает дверь для выноса мусора, а ты лежишь в постели и понимаешь, что никуда бежать не надо, можно не спеша встать и отправиться на кухню за чашкой утреннего кофе. Днём уже замотанные сотрудники забирают кого-то к адвокату, а ты принял душ и наслаждаешься книжкой. Но они нам почему-то не завидуют. :) А ещё иногда им пекут булочки, и волнующий аромат наполняет двор. Тогда мы им завидуем.

В общем, хорошие сотрудники, а по сравнению с Питером и СИЗО здесь — прямо санаторий :) Берегите себя.

*#дневничок, женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО*

## Квартирный вопрос не только портит, но и сажает. 06.11.2018

Квартирный вопрос не только портит, но и сажает. Итак, очередная тюремная история.

Жила-была девушка. Накопила на квартиру, оплатила ее на стадии строительства. Застройщиком быть сложно, опасно, много рисков. Застройщик квартиру построил, хоть и обанкротился при этом. Право собственности на квартиру пришлось доказывать через суд. Пару лет это заняло. Как выяснилось, часть квартир в процессе банкротства застройщик передал другой фирме, которая квартиры реализовывала.

Квартира девушки оказалась проданной и там. Что уж тут, дело банальное в последние годы. Но тут история перешла в уголовную плоскость. Покупатель квартиры не смог зарегистрировать право собственности, поскольку девушка уже оформила всё. Так появилось заявление о мошенничестве. Причём повлекшее утрату права на жилое помещение ч. 4 ст. 159 УК РФ. Девушку арестовали, все документы обозвали подложными, а действия по оформлению квартиры — мошенническими. Понятно, что обвинение фабриковалось сложно — слишком много неувязок. Так в деле появились «неустановленные лица». Обвинение приобрело абсолютно сюрреалистический оттенок, что не мешает держать девушку уже больше года под арестом.

Зацените начало обвинения: «В неустановленное следствием время в период 14.10.14 по 07.12.15 в неустановленном следствии месте при неустановленных следствием обстоятельствах, вступила в преступный сговор с неустановленными следствием лицами, в количестве не менее 3 человек, с целью совершения мошенничества».

Всё обвинение представляет собой бессмысленный набор слов, следствие тщательно оберегает с трудом созданное дело. Девушка борется, но тут, как обычно, круговая порука. Следствие просто отметает любые ходатайствв, ведь доказательство невиновности есть. И рождаются такие ответы: «Рассмотрев данное ходатайство обвиняемого, следствие приходит к выводу, что оно не подлежит удовлетворению, поскольку вина обвиняемый в совершении инкриминируемого ей преступления полностью доказана собранными по уголовному делу доказательствами, ей предъявлено обвинение в окончательной редакции и она уведомлена об окончании следственных действий, с ней проводится ознакомление с материалами уголовного дела в порядке ст.217 УПК РФ, в связи с чем следствие не усматривает оснований для производства дополнительных следственных действий, в том числе и допросов в качестве свидетелей лиц, указанных в ходатайстве обвиняемой.

Перевожу: «Мы считаем вину доказанной и не дадим вам доказать свою невиновность». Попытки через суд признать действия следствия незаконными тоже пока буксуют. Суд просто «теряет» их. Ссылается на недобросовестных сотрудников. «В настоящее время установить местонахождение поданного вами ходатайства не представляется возможным, в виду его утраты вышеуказанным сотрудником, с которого по данному факту были взяты объяснения. Вы вправе обратиться повторно». Изящный посыл? :)

Год под арестом. Признание права собственности на квартиру аннулировано. Квитанции об оплате денег за квартиру обозначены «подложными». Фирма-застройщик давно обанкрочена, и подтверждать документы никто не берется, ведь придётся кому-то сесть за содеянное.

Есть ли противоядие от такого? Есть. Главное: разорвать связку: следствие — прокуратура — суд. А в. источнике всех бед — «палочная» система. Отмененная, но продолжающая ломать судьбы. Решение есть. Берегите себя. Я работаю над этим. У нас всё получится.

*#159 статья, женщины в сизо, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные истории, ФСИН*

## Полной жизнью. 07.11.2018

Задумчиво вспоминаю умные советы из прошлой жизни:

— ограничьте использование мобильной связи и интернета;

— выбросьте все вещи, кроме действительно необходимых;

— установите себе режим сна и не позволяйте себе сокращать время сна;

— тренируйте мелкую моторику — пишите от руки ежедневно;

— не употребляйте фаст-фуд;

— для перезагрузки уединитесь от привычного окружения;

— для освежения чувств с любимыми — представьте, что не можете встретиться.

Угу. Советчики. Насоветовали. :)

Живите полной жизнью и берегите себя.

*#дневничок, Оттуда, Тюремные хроники*

## Дневничок. «Теннисный» мячик. 08.11.2018

У меня есть теннисный мячик. Давно ещё. С Питера. И разрешение от врача, что он мне жизненно необходим. Правда, по вредной ФСИНовской привычке при передаче в СИЗО его проткнули ножом, но он молодец, хоть и тыкнутый, а прыгает. Мы играем им в волейбол, футбол, теннис, вышибало, боулинг, салочки и немножко баскетбол. Моё восприятие этих игр серьезно изменилось. :) Большой мяч кажется удивительным продуктом из страны Гулливера.

*#дневничок, женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники, ФСИН*

## Директор. 09.11.2018

Любая школа — достаточно сложный финансовый механизм. Закупка оборудования, продуктов, начисление зарплаты сотрудникам, субсидии и прочее — без бухгалтера не обойтись.

Бухгалтер, в числе прочего, ещё и совершает операции по счёту. Банк-клиент, цифровой ключ, оформленный на руководителя (директора), всё как водится. Это было вступление. И вот представьте: пришли деньги на премии. Директор пишет приказ с фамилиями и суммами, отдаёт бухгалтеру. А тот перечисляет деньги своим знакомым.

Вопрос: кто сядет за это? Ответ: оба — директор и бухгалтер. При том, что никто из получателей денег с директором не знаком, зато подтверждают знакомство с бухгалтером. У следователя есть ответ и на вопрос — в чём неправ директор. Директор должен был (внимание!) сам проводить

операции со счётом, как руководитель. Всё. Рассказ окончен. Документы заботливо уничтожены бухгалтером. Директор сидит в СИЗО. Давно. Ученики и коллеги ходят поддерживать её в суды по продлению ареста.

Да хранит вас судьба от плохих бухгалтеров.

*#женщины в сизо, Оттуда, Тюремные истории*

## Рутина. 10.11.2018

Сейчас такой период — рутина. Просто рутина. Тренировки, рисование, размышление, планирование и… работа с текстами. А ещё я, наконец, поняла, как должна быть устроена пасека на поле. Потому что при стандартных подходах пчелы не выживали. Читаю газеты и понимаю, что жизнь надо будет догонять — всё меняется даже в газетах. А в реальности, наверное, ещё заметнее будет. Прикиньте, я буду человеком из прошлого :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Пайщики Семейного капитала требуют спасти жизнь Игоря Белоусова и справедливого расследования. 12.11.2018

12 сентября Игорь Николаевич Белоусов, находясь в СИЗО Москвы, объявил голодовку. Это крайний шаг, чтобы добиться справедливого расследования дела кооператива «Семейный капитал», а также освобождения под подписку своей семьи и Наталии Верховой, арестованных более года назад.

На настоящий момент голодовка продолжается уже два месяца. Пайщики кооператива «Семейный капитал», также заинтересованные в справедливом расследовании дела, ведут кампанию в поддержку руководителей кооператива.

По словам пайщиков, при обращении в следственные органы, им приходится иметь дело с давлением и хамством следователей, которые настаивают, чтобы все обвинения в заявлениях были написаны в адрес руководителей кооператива, а не в адрес временной администрации, после назначения которой Центробанком и началось разорение кооператива. Угрозы следователей просты: «Пишите, иначе вы своих денег не вернёте». Помимо следователей на пайщиков идёт охота и среди целого ряда мошенников-«юристов», обещающих за «умеренную» плату вернуть деньги через суд.

Пайщики записали и распространили по сети интернет ролик с призывом спасти жизнь Игоря Белоусова и удовлетворить его требования справедливого расследования дела кооператива «Семейный капитал» и освобождения из СИЗО своей семьи и Наталии Верховой на время расследования.

*#Оттуда, Репост, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Путь к счастью. 12.11.2018

В каждой шутке лишь доля шутки. Иногда женщины в камере представляют жизнь на воле. «Установлю дома проверки», «выкину диван, куплю шконку», «в двери кухни сделаю кормушку», «привинчу мебель к полу»…

Смешно, но… каждый, вышедший из тюрьмы и зоны, несёт эту жизнь наружу. Это как раз то, что называется криминализацией общества. Ведь выносится не не только быт, выносятся понятия, образ общения, методы решения проблем и многое другое.

В газетах пишут о подростковых движениях АУЕ. Но ведь в каждой такой группе ауешников стоит взрослый человек, побывавший за решёткой.

Как избежать уголовного общества? Да просто. Решений много и они, кстати, сокращают расходы государства. Хватит сажать по любому поводу. Но главное — изменить статистику работы правоохранительной системы. Чтобы целью их работы были не посаженные преступники, а безопасная жизнь. Помню, в Иннополисе постоянно меряют индекс счастья. И безопасность жизни сильно влияет на состояние людей. Пора дополнить систему правильными инструментами. И будет нам счастье :)

*#женщины в сизо, манифест, Оттуда, Правоохранительная система, Решения, ФСИН*

## Банковская риторика. Печать разума ЦБ. 12.11.2018

Читаю материалы уголовного дела. Дошла до переписки ЦБ и КПК. Краткое содержание:

ЦБ: У вас нарушены фин. нормативы.

КПК: Вот законы, вот мы по этим законам вот так считаем. Нормативы в норме.

ЦБ: Ответы КПК подтверждают умышленные нарушения фин. нормативов.

Слепой с глухим лучше понимают друг друга. :) И вот, глядя на эти исходники, задумалась — а возможен ли был другой путь? Я сейчас не про взятки и подобную ерунду. Мысли другие: органам типа ЦБ невозможно доказать свою правоту. Потому что даже самый распоследний чиновник с принадлежностью к этой касте знает — что такое вседозволенность и безнаказанность.

Решений, как всегда, много. Открытость — универсальное противоядие. Поэтому четвёртая власть решит и эти сложности — давая неискажённую информацию тем, кто может и должен.

*#Оттуда, Решения, Семейный капитал, Тюремные хроники, Уголовное дело, ФСИН*

## Тюремные истории. Куда пристроить наркотики. 14.11.2018

Жила-была девушка. Работала курьером. И в какой-то момент поняла, что часть конвертов, которые она доставляет, подозрительны. Подозрения подтвердились — она работала на доставке наркотиков Что делать? Страшно. Исчезнуть — не вариант — найдут. Доставить конверт с уже известным содержимым — недопустимо, девушка законопослушная. Ну и пошла в полицию.

В полиции её радостно арестовали за распрострпнение наркотиков. Четвёртый месяц в СИЗО. А «фирмой!, где она работала, так и не поинтересовались. Да и зачем? Наркокурьер арестован, наркотики изъяты, очередная палка в статистике. Тупиковая модель работы. Нужно иначе. Простое изменение статистических показателей может сберечь множество судеб.

Берегите себя.

*#женщины в сизо, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные истории, ФСИН*

## Дневничок. Котогенератор. 15.11.2018

Во дворе СИЗО бродят иногда коты. Кормить их нельзя. Ну, по крайней мере, традиционным способом выбрасывания из окон всякой съедобной ерунды. Зеркала запрещены — тоже не поиграть.

А теперь, внимание! Как очистить радость общения с животным миром отвсего наносного? Складываете пальчики сердечком и смотрите в этот экран на кота. Проверено на многих — люди начинают смеяться! Вот! Мы только что создали генератор энергии из четырёх пальцев и кота. :)

*#дневничок, женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Отсутствие в доступе законов. 15.11.2018

Отсутствие в доступе законов даёт бескрайнюю свободу людям в погонах. О московском конвое наслушалась столько абсурдных историй, что решила поискать закон. Подозреваю, что это какой-нибудь страшно-служебный документ. Ладно, почистим и этот кусочек тёмной жизни. :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, ФСИН*

## Выделение дела. 15.11.2018

О чудесном маневре следствия уже писала. И правда, искусственных способов держать обвиняемых в СИЗО достаточно много. Но это не повод опускать руки и поддаваться этому беспределу. Проблема настолько старая и наезженная, что сходу в любом случае не решается. Но цели и планы — моё любимое. Также как действия и результат.

Выделение дела — настолько явное нарушение закона, что можно выявить некоторые связи (похожие на преступные) и в своё время использовать это.

Итак, жалоба в Тверской суд (бедный Тверской суд) и Генпрокуратуру. Конечно, в ответ — тишина. :) Всё по плану. Нарушение сроков ответов — это тоже нарушения. Далее: жалоба Чайке и в Мосгорсуд. Дадим чутка времени и продолжим. Диагностика — первый шаг к лечению. И этих вылечим. :)

Следите за новостями. :)

*#нарушения, обращения, Оттуда, Правоохранительная система*

## Навыки общения с Конституционным судом. 19.11.2018

Приобретаю навыки общения с Конституционным судом. Когда-то я им написала, получила ответ. Подумала, провела работу над ошибками и отправила новое обращение.

И что интересно: позиция стала жёстче, определённее, крепче опирается на закон. Да и вывод более радикален: женские СИЗО не должны существовать. Так говорит закон. Ждём реакцию Конституционного суда. Тема непростая. Даже если сейчас не получится, считаю, что важно двигаться в этом направлении. Ещё пара обращений в Конституцинный суд ждут у меня своего часа. Учусь взаимодействовать с Констиуционным судом.

Дорогу осилит идущий.

*#женщины в сизо, нарушения, обращения, Оттуда, Правоохранительная система, Решения, СИЗО, ФСИН*

## Уголовный кодекс РФ разрешает пытки тех, кто не признал вину. 20.11.2018

Уголовный кодекс РФ разрешает пытки тех, кто не признал вину. Не верите? Прочитайте ст.7 п.2:

«Наказание и иные меры уголовно-правового характера, применяемые к лицу, совершившему преступление, не могут иметь своей целью причинение физических страданий или унижение человеческого достоинства.»

А теперь разберёмся. Уже признано в УПК, что содержание под стражей в СИЗО в 1,5 раза жёстче, чем пребывание в колонии общего режима (ст.72 УК РФ).

Мы находимся в СИЗО по решению суда, по сути — авансом немём наказание. И посмотрите ещё раз на формулировки п.2 ст.7 УК РФ:

«Лицо, что признало свою вину«.

А того, кто свою вину не признал, УК РФ не защищает от физических страданий и унижения человеческого достоинства. Что и требовалось доказать.

Возможо, юристы это смогут изложить более чётко. А возможно, юристы это и понять не смогут. :) Закон познаётся в СИЗО. :)

Берегите близких.

*#159 статья, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники, ФСИН*

## Ходатайство о проверке профессиональной пригодности. 20.11.2018

Руководителю СД МВД
Москва, Газетный пер., 6
От Верховой Н.Д.

Ходатайство

Прошу провести проверку профессиональных знаний и знания нормативной документации Ваших сотрудников, в частности, работающих с уголовным делом №41801007754000162.

С 16.07.2018 у меня идёт процесс «ознакомления» с делом. Между тем, дело не сформировано, не оформлено и не прошито должным образом, нет описи, титульный лист не содержит необходимой информации (до недавнего времени вообще отсутствовал), количество и оформление листов в томах не соответствует нормативной документации и прочее.

В нарушение ст. 217 УПК РФ мне не были представлены все тома дела в связи с их отсутствием. Закрытие расследования носит фиктивный характер.

На мои ходатайства по поводу оформления томов уголовного дела получила ответ следователя, что в УПК РФ не прописаны нюансы оформления уголовного дела. Но УПК РФ регламентирует порядок уголовного судопроизводства и не должен содержать информацию по делопроизводству. Требования к оформлению томов уголовного дела утверждены Приказом МВД и обязательны к исполнению. Но, видимо, Ваши сотрудники тщательно скрывают своё знание инструкции по делопроизводству, а это приводит к срыву процесса ознакомления с делом.

Поскольку отсутствие должным образом оформленных томов блокирует саму возможность ознакомления, но сегодняшний день (уже более 3 месяцев с момента закрытия расследования) вынуждена признать процесс ознакомления с материалами уголовного дела ещё не начатым.

Прошу принять меры к обучению сотрудников, исправлению сложившейся ситуации и защите моих прав на ознакомление с материалами уголовного дела, исключить злоупотребления правом со стороны следствия.

18.10.2018

Верхова Н.Д.

*#обращения, Оттуда, Правоохранительная система, Уголовное дело, ФСИН*

## Розенбаум. 22.11.2018

Розенбаум — это для меня очень важный человек. Очень много лет. Поэтому, когда тема концерта перешла к личностям, то, в общем, выбора-то особо и не было. :) Надо только помочь с получением письма адресату. Если у кого-то есть связи и идеи — буду очень благодарна.

*#женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО, Тюремные хроники*

## Розенбауму Александру Яковлевичу. 13.09.2018

Розенбауму Александру Яковлевичу

123001 Москва, Большая Садовая 5/1
Гостинично-офисный центр «Пекин» Офис 1101
От Верховой Наталии Дмитриевны, freeverhova.ru
содержащейся в ФКУ СИЗО-6 г. Москвы

Уважаемый Александр Яковлевич!

В СИЗО-6 г. Москвы собраны женщины. Подозреваемые и обвиняемые, т.е. по закону пока — невиновные. Очень разные женщины, разные судьбы, разные обстоятельства. Не у всех хватает сил бороться за себя, не все верят в лучшее будущее. Есть беременные, есть женщины с детьми — до трёх лет закон допускает совместное пребывание ребёнка с матерью.

Я нахожусь в этом СИЗО и буду тут ещё долго. Я всегда отвечаю за то, что делаю. Моя совесть чиста — я работала на благо страны. И рано или поздно справедливость будет восстановлена.

Одна из моих задач сегодня — прекратить существование женских СИЗО. Виновата? Ответит после суда. Неправильно это — лишать детей матерей, держать женщин в клетках. Неправильно. Не было на Руси такого и не должно такого быть. В России сейчас 9,5 тыс. женщин содержатся в СИЗО. 90% могли бы остаться дома, особенно если учесть, что в СИЗО сидят годами(!).

Скоро год содержания и у меня. От отчаяния и безысходности спасает работа. Много пишу. Статьи и заметки о жизни СИЗО, правоохранительной системе, путях решения для России друзья публикуют на моем сайте freeverhova.ru.

Я знаю — в какой день пишу. И очень благодарна мирозданию, что Вы — есть.

Обращаюсь с просьбой: пожалуйста, дайте концерт в СИЗО. Здесь большой двор, в который выходят окна всех камер. Понимаю, что эта затея потребует огромного количества согласований. Понимаю, что Ваш график всегда очень плотный и будет трудно выкроить время. Но… это будет такая вспышка счастья в этом СИЗО, что многим может изменить жизнь.

Ваш голос, слова поддержки крепкого мужчины, надёжность, Ваши песни — это та сила и добро, которых так не хватает женщинам, очутившимся в беде.

Они ещё не преступницы, у многих есть шанс вернуться домой к детям. И очень хочется поддержать и укрепить эту искру надежды и веры в жизнь.

Пожалуйста, давайте попробуем. Понимаю Вашу занятость, но всё равно надеюсь на ответ.

Формат письма не позволяет многого уместить: и 26 лет посещения Ваших концертов, и значение Ваших песен, и благодарность за «Кресты!.

Спасибо Вам, что Вы есть.

С уважением,
Верхова Н.Д.
13.09.2018

## Главная сила Искателя Истины. 24.11.2018

Главная сила Искателя Истины — в умении задавать правильные вопросы. Есть и противоядие от возможных изменения вследствие правильно заданных вопросов. Большинство сотрудников СИЗО снабжены им в избытке. «Этот вопрос не ко мне» — и можно спокойно жить дальше. :) Но есть и противоядия. Расскажу. Клинические испытания пройдены. Осталось составить инструкцию.

*#Оттуда, Решения, СИЗО, ФСИН*

## Письмо в институт питания. 25.11.2018

В Федеральное гос. учреждение науки
«ФИЦ питания и биотехнологии»
от Верховой Наталии Дмитриевны,
содержащейся в ФКУ СИЗО-6 Москвы

Товарищи учёные!

Обращаюсь к вам за помощью. В СИЗО нашей страны приняты определенные нормы питания. Они установленны правительством РФ и прописаны в постановлении правительства №205 от 11.04.05. К сожалению, не могу его приложить к письму в связи со своей местоположением, но его без проблем можно посмотреть в интернете.

Обращаюсь к вам за профессиональным мнением: в первую очередь интересует норма питания для подозреваемых и обвиняемых (таблица 2 в Постановлении).

Обвиняемые и подозреваемые — это люди, чья вина ещё не определена, но свобода их ограничена. В среднем подозреваемые и обвиняемые содержатся в СИЗО примерно год.

Вопросы по рациону для этой категории людей:

1. Какое влияние на здоровье может оказать питание по этим нормам, с учетом того, что овощи — только прошедшие термическую обработку?

2. Каких продуктов недостаточно для сохрания здоровья, зубов, волос?

3. Как влияет на здоровье отсутствие свежих овощей, зелени, молочных продуктов, фруктов?

4. Как с минимальными затратами можно изменить рацион, чтобы сохранить здоровье?

5. Какие требования к приготовлению блюд из утвержденных продуктов необходимо прописать, чтобы получить максимальную пользу от продуктов?

Прошу помочь с ответами на вопросы, поскольку Федеральная служба исполнения наказаний, да и в целом правоохранительная система не заинтересована в сохранении здоровья даже невиновных людей, а отсутствие медицинской помощи в СИЗО делают вопросы о рационе питания жизненно важными.

Большинство содержащихся в СИЗО, к сожалению, не получают дополнительное питание с воли и могут рассчитывать только на тюремное питание.

Посмотрите дополнительную информацию на моём сайте www.freeverhova.ru, пост «Тюремное питание» и.. помогите, пожалуйста, с ответами на вопросы.

02.09.2018
Верхова Н.Д.

*#Медицина в СИЗО, обращения, Оттуда, СИЗО, ФСИН*

## Главному редактору «Российской газеты» о статье «Тюрьма просит добавки» - 1.09.2018

25.11.2018

Главному редактору «Российской газеты»
от Верховой Наталии Дмитриевны,
содержащейся в ФКУ СИЗО-6 Москвы

Уважаемый главный редактор!

В номере «Российской газеты» за 29.08.18 была опубликована статья «Тюрьма просит добавки». Я нахожусь в СИЗО уже 10 месяцев и обладаю актуальной и достоверной информацией по поводу тюремного питания. Хочу развеять некоторые иллюзии, которые описаны в газете. Речь идет об абзаце:

«Для обычных заключённых нормы останутся прежними. Как рассказывают эксперты, в тюремном ведомстве с помощью учёных был составлен четкий рацион питания с учетом, сколько кому положено калорий: мужчине, женщине, несовершеннолетнему, больному человеку и т.д. Поэтому кормят заключенных по научно-обоснованным и вполне достойным нормам».

Прошу прощения за прямоту, но либо эксперты вас обманули, либо это были «британские ученые», либо «хотели как лучше…»

Тюремное питание регламентируются постановлением правительства РФ №251 от 11.04.05. Посмотрите его. Рацион и впрямь достаточен по количеству, но длительное питание в соответствии с ним однозначно приводит к тяжелым заболеваниям, вплоть до цинги.

В СИЗО люди проводят в среднем около года, и очень рискуют те, кто не имеет поддержки с воли. В рационе нет ни свежих овощей, ни фруктов. И дело не в конкретном СИЗО и не в мастерстве поваров. Закон не прописывает свежие овощи, значит будет, как проще: каша да кислая капуста. И всё строго по закону.

В СИЗО содержатся невиновные по закону люди: подозреваемые и обвиняемые. И их обрекают на потерю здоровья. А вы создаёте иллюзию нормальности такого положения.

Что касается покупки обедов, то об этом писать также некорректно, как об отдельных камерах для криминальных авторитетов. За решёткой, как правило, оказываются основные кормильцы семьи. Иждивенцы мало чем могут помочь, даже урезая свои потребности, поэтому очень немногие пользуются возможностью покупки обедов. Очень немногие. Поэтому про обеды и прозвучало как: «Нет денег на хлеб, пусть едят пирожные».

С момента ареста я веду блог, в котором освещаю различные аспекты правоохранительной системы. Актуальная уникальная информация изнутри на www.freeverhova.ru. Посмотрите пост «Тюремное питание» там есть подробности по теме.

Проверить мои слова легко: взять постановление правительства и обратиться в Институт Питания, например, к настоящим экспертам. Спросить, к чему и через какое время приведет такое питание.

Уважаю Вашу газету, поэтому очень хочется, чтобы высочайший уровень доверия к информации, публикуемой Вами, сохранялся и далее.

Заходите ко мне на сайт, он дублируется и в социальных сетях. Это достоверная информация из первых рук. Это взгляд изнутри, который позволяет полнее понять и освещать проблемы правоохранительной системы. Решения, которые рано или поздно будут приняты, если мы хотим оставить достойную страну своим детям и внукам.

Буду рада, если моя информация вам пригодится. И буду благодарна, если Вы подтвердите получение этого письма.

С уважением,

Верхова Н.Д.

*#Медицина в СИЗО, обращения, Оттуда, Правоохранительная система*

# Правительство РФ, прошу рассмотреть Постановление правительства №205 — 02.09.2018.

26.11.2018

В Правительство РФ
от Верховой Н.Д.,
содержащейся в ФКУ СИЗО-6 Москвы

Прошу рассмотреть Постановление правительства №205 от 11.04.05 и доработать его с учётом физиологических потребностей человка, права гражданина на здоровье и соблюдения конституционных прав людей, находящихся в СИЗО.

Необходимо прописать обязательную составляющую рациона — свежие овощи, поскольку в нынешней формулировке Постановления не содержится этих требований, соответственно, в СИЗО не обязаны включать в меню свежие овощи, что ведёт к катастрофическим последствиям для здоровья обвиняемых и подозреваемых. Право на здоровье должно быть у всех, а не только у того, кто располагает поддержкой с воли.

Рацион, выстроенный только на количество калорий, через определённый промежуток времени может привести к самым печальным последствиям. Люди в среднем проводят в СИЗО около года, и выпадение зубов, волос, обострение хронических заболеваний — во многом влияние такого рациона.

Не прописана также отдельная выдача молока и масла, что даёт широкие варианты сокрытия этих продуктов в готовых блюдах. Дополнительная информация есть на сайте freeverhova.ru.

В СИЗО содержатся не преступники, но почему-то рацион для преступников богаче по продуктам (в этом же Постановлении). Прошу устранить эту несправедливость.

Прошу привлечь к составлению рациона экспертов из Института Питания, например, чтобы длительное (порой это несколько лет) нахождение в СИЗО не делало невиновного человека инвалидом.

Прошу пересмотреть для подозреваемых и обвиняемых сроки эксплуатации матрацов. При использовании матраца 24 часа в сутки (а в камере СИЗО негде находиться, кроме как на матраце), срок эксплуатации 2 года — абсолютно избыточен. Уже через 3-4 месяца эксплуатации через матрас прощупывается железная клетка кровати, и сон на такой кровати начинает травмировать невиновных людей. Каждую ночь.

Прошу также обратить внимание на то, что туалетной бумаги женщинам требуется в среднем в три раза больше, чем мужчинам. Необходимо это учесть в Постановлении.

Учитывая всё изложенное, прошу принять меры к прекращению пыток невиновных людей непродуманным Постановлением правительства №205 от 11.04.2005.

Верхова Н.Д.
02.09.2018

*#женщины в сизо, Медицина в СИЗО, обращения, Оттуда, СИЗО, ФСИН*

## Какими нормативными документами регламентируется работа конвоя? 27.11.2018

В МВД г. Москвы
От Верховой Н.Д.
содержащейся в ФКУ СИЗО-6 Москвы

Прошу разъяснить — какими нормативными документами регламентируется работа конвоя в районных и городских судах г.Москвы?

- Что имеет право иметь при себе подозреваемый и обвиняемый?
- С какой переодичностью конвой должен обеспечивать кипяток и визиты в туалет?
- При каких условиях осуществляется конвоирование в наручниках? В каких случаях с собакой?
- Разрешено ли курение в автозаках и конвойных помещениях?
- Какие различия предусмотрены в конвоировании мужчин и женщин?
- Как ограничено время нахождения в конвойных помещениях?
- Какая площадь должна приходиться на одного человека в конвойном помещении?
- Кому подчинён конвой?

13.09.2018
Верхова Н.Д.

*#Медицина в СИЗО, обращения, Оттуда, Правоохранительная система, ФСИН*

## Людоеды и каннибалы. 27.11.2018

В каждом СИЗО встречаются каннибалы. И обычно экспертиза признаёт их вменяемыми. Даже матерей, что своих детей едят. Откуда люди этому учатся? Ведь специально мы же не воспитываем детей, что людей есть не надо, да? Просто общая культура поведения к этому подводит.

Аналогичная ситуация и с патриотизмом. Есть, конечно, варианты, когда детей учат ненавидеть свою страну, но всё-таки нормальное положение — это когда любишь свою Родину и передаёшь это чувство детям. Поездить по миру? Да. Поучиться где-то? Да. Но жить и приносить пользу надо дома.

«Честь отчизны блюдет не тот, кто покрывает её преступления, а тот, кто не боится её от них очистить».

Акунин, «Алмазная колесница».

*#Оттуда, развитие государства*

## В газету «Ведомости» для Ирины Четвериковой о статье «Кого не надо сажать в СИЗО». 29.11.2018

В газету «Ведомости» для
Ирины Четвериковой от

Верховой Наталии Дмитриевны,
содержащийся в СИЗО-6 Москвы

Добрый день!

30.08.18 в газете «Ведомости» была статья Ирины Четвериковой «Кого не надо сажать в СИЗО». Прошу передать ей моё письмо.

В статье затронута очень важная тема, поскольку именно уголовное преследование бизнеса стало основным инструментом «конкурентной» борьбы. Совершенно правильно расставлены акценты: излишние аресты и отсутствие возможности защищаться — требует немедленного решения, ибо разрушают общество. Нахожусь в СИЗО с ноября 2017 года. Пишу статьи для своего блога, в которых освещаю ситуацию изнутри. Ведь не секрет, что законодатели порой не обладают информацией для принятия необходимых законов. В прошлом году мы запустили петицию, практически совпадающую с вашей статьей. Посмотрите на www.freeverhova.ru.

Очень правильно — писать и привлекать внимание общественности к этой теме. Спасибо вам за это. Ведь нынешнее состояние правоохранительной системы таково, что в СИЗО может оказаться любой, и выбраться будет очень сложно, несмотря на любую степень невиновности.

У меня на сайте опубликован и ряд решений, позволяющих изменить существующее положение с развалом правосудия. В этом направлении — реализации решений — помогают друзья и соратники.

Мне нужна помощь во взаимодействии с Конституционным судом. Поскольку я не юрист, то не всегда могу сразу правильно составить документы, что существенно удлиняет процесс.

Сейчас работаю над признанием того, что статья 108 УПК РФ не полностью защищает конституционные права людей.

Заключение под стражу в СИЗО — это содержание в условиях строгого режима, что создает конфликты со статьей 58 УК РФ, так как в отношении женщин недопустимо применение строгого режима.

Содержание женщин по экономическими и прочим преступлениями ненасильственного характера в условиях строгого режима противоречит конституционным принципам справедливости, соразмерности и презумпции невиновности.

До вступления в законную силу обвинительного приговора подозреваемые и обвиняемые женщины считается невиновными в совершении преступления, и они не должны подвергаться ограничениям, которые в своей совокупности превышают режим грозящего уголовного наказания.

Мера процессуального обеспечения не может быть строже грозящего наказания. Понимаете? Нельзя помещать в СИЗО лиц, которым не грозит строгий режим. Посмотрите Манифест у меня на сайте. Это ближайшие планы.

Буду благодарна за помощь, да и просто за отклик.

С уважением,
Верхова Н.Д.
06.09.2018

*#женщины в сизо, обращения, Оттуда, Правоохранительная система, СИЗО, ФСИН*

## Заявление о нарушении допуска адвокатов в СИЗО Москвы. 01.12.2018

УФСИН России по г.Москва
от Верховой Н.Д.

Заявление

Прошу сообщить — на каком основании при посещении СИЗО г.Москва у адвокатов требуют разрешение следователя на посещение.

Это прямо противоречит нормам Федерального закона. В ФЗ-103 ст.18 сказано: «Свидания предоставляются защитнику по предъявлении удостоверения адвоката и ордера. Истребование у адвоката иных документов запрещается.»

Прошу подтвердить действия по восстановлению законности и меры по исправлению ситуации с посещением адвокатами СИЗО г. Москва.

В других городах таких «изобретений» нет.

Верхова Н.Д.
04.09.2018

*#нарушения, обращения, Правоохранительная система, СИЗО, ФСИН*

## Жалоба в Генпрокуратуру на неоказание медицинской помощи в СИЗО-5 СПб. 02.12.2018

В Генеральную прокуратуру
от Верховой Н.Д.,
Содержащейся в ФКУ СИЗО-6
УФСИН России по Москве

Заявление

Находясь в ФКУ СИЗО-5 УФСИН России по СПб и ЛО, я столкнулась с фактами ненадлежащего оказания медицинской помощи. Я обратилась в Прокуратуру Калининского района СПб, получила ответ ФКУЗ МСЧ-78 ФСИН России, что медицинская помощь мне оказывалась в полном объёме, что не соответствовало действительности.

Я обратилась в Прокуратуру СПб по тому же вопросу. Указала, что 15.01.18 я обратилась с острой болью в плече в медсанчасть ФКУ СИЗО-5 СПб. Более месяца мне не оказывалась медпомощь, не было ни единого осмотра врачом, не принимали лекарства от родственников. Только 19.02.18 лекарства от родственников приняли и мне начали делать уколы.

В ответе МСЧ-78 на запрос Прокуратуры СПб (исх.№05-65/ТО/75/6287 от 27.03.18 содержалась информация о всех приёмах врачей в период нахождения в СИЗО-5 СПб, что подтвердило мои слова об отсутствии в указанный период врачебного приёма, диагностики и лечения. Но несмотря на это проверка Прокуратурой причин неоказания мед. помощи проведена не была, виновные не привлечены к ответственности.

14.05.18 я направила из СИЗО-6 Москвы заявление в Прокуратуру СПб (исх. №В-115 от 15.05.18) с указанием о ненадлежащих мерах прокурорского реагирования. Ответа я не получила.

Между тем неоказание вовремя медицинской помощи послужило ухудшению физического состояния, ограничению владения левой рукой, хроническим боляю в плече.

Прошу провести проверку и призвать виновных к ответу. О принятых мерах прошу известить меня в СИЗО-6 и моего адвоката Белкина А.В. по адресу СПб, ул. Гагаринская, 6А,Адвокатская палата СПб.

05.08.2018
Верхова Н.Д.

*#женщины в сизо, нарушения, обращения, Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система, СИЗО, Тюремные хроники, ФСИН*

## Дневничок. Про дочку. 04.12.2018

Думаю про дочку. Интересно, каково это — мама в тюрьме? Наверное, удобно плохих парней пугать: «Вот мать с кичи откинется — покажет вам.» :) Хотя дочка учится в приличном учебном заведении — там плохих парней нет.

Ну тогда можно на экзаменах отмазываться: «Передачку в тюрягу собирала — не успела выучить». Препод падает в аут, забывает — о чём спрашивал. И тогда бодро, чтобы показать жизненную стойкость перед штормящей генеалогией.

Ладно, шучу. Она у меня и так молодец — отличница без всяких посторонних блатных бонусов.

*#дневничок, Оттуда*

## Письмо В.И.Матвиенко. 05.12.2018

Председателю Совета Федерации
Федерального Собрания РФ
Матвиенко В.И. от Верховой Наталии Дмитриевны,
содержащейся в ФКУ СИЗО-6 Москвы

Добрый день, Валентина Ивановна!

Краткое содержание письма:

1. Уважение к позиции.
2. Беззащитность невиновного человека в СИЗО.
   а) Последствия ареста
   б) Несовершенство законов, регулирующих содержание в СИЗО.
3. Системные дефекты и решения

а) криминализация общества
б) система показателей
в) система наказаний.
4. Шаги по изменению ситуации
а) информационный ресурс
б) работа с органами
в) объединение усилий.
5. Выводы.

_____

1. Восхищает Ваше стремление к справедливости и чуткость к людям. Ваша инициатива по уничтожению клеток в судах замечательна. Но на сегодлняшний день это не самое страшное. Нахожусь в СИЗО десятый месяц (стандартная для бизнеса статья 159 УК РФ). В силу своего положения имею возможность анализировать систему изнутри. А в силу образования и опыта способна предлагать решения.

2а. Главная беда человека, попавшего в поле зрения правоохранительной системы — это беззащитнсть. Право на защиту существует пока, к сожалению, только на словах. Попав в СИЗО, человек теряет всё: работу, доходы, семью, дети остаются без родителей, домашние животные погибают. Все гражданские иски априори проиграны (да и Арбитражный кодекс не считает нахождение в СИЗО уважительной причиной неявки в суд). По кредитам банки начинают опись имущества. Из учебных заведений отчисляют. Более того, на арестованных директоров заводят уголовные дела по невыплате зарплаты уже за период нахождения в СИЗО, несмотря на невозможность что-либо делать из СИЗО. И это речь не о преступниках — речь о людях, которые по закону ещё невиновны. Но уже теряют практически всё.

2б. Люди, попавшие в СИЗО, выпадют из под защиты Конституции. Они теряют главное: право на защиту и право на невиновность. Жизнь обвиняемых за решёткой регламентируется приказом Минюста №189 от 14.10.05. С точки зрения нормального человека — он абсурден. Цели содержания под стражей прописаны в УПК РФ. И они никак не зависят от количества носков, трусов, возможности рисовать, читать, поддерживать своё физическое и умственное здоровье. Нельзя ничего, что даёт возможность человеку защищать себя и сохранять человеческий облик. Запрещено получать законы, запрещены книги в посылках и передачах, запрещено даже получать на руки ответы органов — их только показывают. О какой состязательности процесса можно говорить, если на стороне обвинения все технические возможности для работы, вся информация, все документы и законодательная база, а у заключенного в СИЗО — лишь ручка, да бумага.

Нормы питания определяются Постановление правительства. Основа питания — каши. Никаких свежих овощей, тем более фруктов. Любой институт питания даст заключение о губительности такого рациона для здоровья. А ведь люди редко проводят в СИЗО меньше года. Невиновные люди. До вступления приговора в силу — человек невиновен. А после вступления приговора в силу он уже едет из СИЗО по месту отбывания наказания.

И главный абсурд: прав, свобод и материального обеспечения у преступников гораздо больше, чем у обвиняемых. Обо всём этом я пишу в блоге freeverhova.ru под тэгами ФСИН, правоохранительная система.

Ещё в 2015 г. Президент в своём Послании привёл цифру: 83% предпринимателей, ставших фигурантами уголовного дела, потеряли свой бизнес. Ситуация не изменилась к лучшему. Люди, попавшие в СИЗО, теряют всё. Пока таковы законы, которые делают вмешательство недобросовестных правоохранителей фатальным для жизни любого человека.

3а. Правоохранительная система на сегодняшний день, как ни абсурдно это звучит, занимается криминализацией общества. Лёгкость арестов, отсутствие «заднего хода» системы, практическое отсутствие оправдательных приговоров обрекает арестованного человека на неизбежность признания его преступником. Посмотрите количество досудебных соглашений и процент признательных показаний. Практически всё это — следствие арестов и содержания в СИЗО. Непризнание вины рассматривается не как вероятность невиновности, а как упорство во грехе. Через полгода-год содержания в СИЗО люди теряют социализацию, становятся весьма нелояльными к законам и к правоохранительной системе в целом. Статистика по рецидивам преступлений подтвердит мои слова. Не хотелось бы, чтобы этот процесс зашёл слишком далеко.

3б. Одним из основных источников болезни системы является система показателей, по которым работает правоохранительная система. За раскрытие преступления платятся премии, даются звания и прочее. Но число преступлений никогда не было достоверным показателем. Что поощряем, то и получаем. Не секрет, что существуют, например, разнарядки на задержания с наркотиками. Вот и получаем абсолютно посторонних людей по наркотическим статьям в СИЗО.

Решение есть. Оно очень простое и технически доступное. Все исходники уже сложились. Практически в каждой гос. службе есть система приёма заявлений с занесением в базу. Конечно, каждой службе оставляем доступ к своему разделу. Получаем очень объективный показатель благополучия территории: число заявлений на одного жителя. Люди, у которых всё хорошо, не жалуются. И отписки органов будут только ухудшать показатели, поскольку рождать новые заявления. А ещё мы получим конкретный массив данных, с которым можно работать и анализировать — где, что и как надо делать.

Только правильная диагностика может дать возможность принятия решения. Нынешняя система показателей ничего не показывает, но переодически взрывается скандалами, когда беспредел вырывается наружу.

Изменив систему показателей практически при отсутствии затрат на это, мы очень быстро получим результаты. Очень быстро. И результаты, которые увидит каждый.

3в. Существующая система наказаний выстроена на основе мщения. И при этом сильно зависит от факторов, к закону отношения не имеющих: отношений со следствием, с судьями, квалификации адвоката, общественного резонанса, политической ситуации и т.д. В результате мы получаем, по сути, лотерею приговоров, когда порой за убийство дают меньше, чем за кражи. Про ст.159 УК РФ, позволяющую с легкостью разрушить любой бизнес, разговор отдельный. Лучшее, что можно сделать — отменить её вообще. Но это — отдельная тема.

Система наказаний исполняет поставленную цель: наказать. И выходят из мест лишения свободы озлобленные, ни во что не верящие люди с оборванными социальными связями и не способные жить в обществе.

Но государство должно быть не озлобленным мстителем, а разумной структурой, формирующей своё будущее. А значит, цель «наказания» должна быть другой: выпустить в общество

полноценного его члена. А при такой цели очевидно, что и система наказаний должна быть другой: обучающей и социализирующей.

Абсолютное большинство осуждённых по «наркотическим» статьям и понятия не имеют о профориентации, не знают — кем им хочется быть и чем заниматься. Понимаете?

И так же, как нельзя впервые судимого отправлять в колонию, так и нельзя людей прямо из колонии выпускать на волю. Необходимо создавать буферные зоны в обязательном порядке: исправительные работы, исправительные центры, поселения. Человек должен социализироваться до выхода на свободу.

У нас умер институт взятия на поруки коллективом, но он вполне может быть возрождён, как один из самых эффективных инструментов перевоспитания. Нельзя каждый синяк лечить ампутацией. И нужна политическая воля, чтобы изменить ситуацию.

4а. С момента ареста я пишу ежедневно. Информация, анализ и решения публикуются у меня на сайте freeverhova.ru.

Информация дублируется в социальных сетях, и можно заметить закономерность: кто не сталкивался в жизни с подобным — просто не могут поверить, что такое может быть. Кто сталкивался — подтверждает и поддерживает. И огромное количество людей видят, что всё правда, что уровень беспредела зашкаливает, что законодатели, похоже, просто не в курсе истинного положения дел.

Мой сайт даёт актуальную информацию из первых рук. Да, я понимаю — чем рискую, предлагая Вам воспользоваться этой информацией. Но для мения очень важно — что и как будет дальше в нашей стране. И я готова действовать, несмотря на текущее положение. Заходите на сайт — более достоверной информации из СИЗО пока нет.

4б. Находясь в СИЗО, я, конечно, пишу разные жалобы в разные органы, обращая их внимание на различные нарушения закона. И, соответственно, имею большую коллекцию отписок. Это богатая иллюстрация системы показателей и круговой поруки. Изменение системы показателей решает и эту проблему. Институт уполномоченных сейчас работает с перегрузом, поскольку уполномоченные по правам вынуждены точечно помогать людям, что не оцень эффективно.

4в. Предлагаю объединиить усилия гос. органов, уполномоченных по правам, прессы, различных фондов и правозащитных организаций в системном изменении ситуации. Не обязательно попадать за решётку, чтобы понять — что делать. Можно воспользоваться нефильтрованной информацией оттуда. Мой сайт — один из достоверных источников, есть и другие источники. На прокуратуру пока надежды нет. Вот и пишут люди из-за решётки, куда только могут. Стоит только сказать: «О нарушении закона за решёткой пишите сюда», — и Вы будете завалены почтой из СИЗО и зон. А с этой информацией можно работать предметно. Для начала — информации в моем блоге более, чем достаточно.

5. Выводы

5.1. Правоохранительная система нуждается в доработке. Система показателей должна реально отражать благополучие населения. Необходимо разорвать связку: следствие-прокуратура-суд,

которые не противоречат друг другу даже в случаях явного нарушения законов. Судебная реформа не решит этой проблемы, хотя, безусловно, усложнит коррупционные схемы.

5.2. Без изменения системы показателей, без обладания объективной информацией, все действия не достигают цели, не сфокусированы. Решение проблем системы лежит вне её. Число жалоб, отнесённое к количеству населения на территории — объективный показатель, который нельзя сфальсифицировать и замолчать. Онлайн-технологии работы с жалобами гарантируют это. Нельзя лечить без диагноза. Но правильно поставленный диагноз — уже половина успеха.

5.3. Необходимо изменить гулаговский принцип отношения к людям за решёткой. Необходимо привести правила для обвиняемых в соответствие с Конституцией, изменить концлагерные нормы питания, запретить аресты по статьям, не связанным с насилием и гос. изменой.

5.4. Дорогу осилит идущий. Мой Манифест опубликован у меня на сайте. Впереди большая работа. Надеюсь на Ваше неравнодушие и желание изменить жизнь в стране к лучшему. Готова участвовать в любой форме. Буду благодарна за ответ.

Да, и заходите в гости — СИЗО-6 в Москве.

P.S.
Это письмо пойдёт к Вам многими путями. Рано или поздно попадёт к Вам в руки. Надеюсь, что быстрее всего сработает официальный канал Вашего ведомства.

С уважением,
Верхова Н.Д.
14.08.2018

Письмо Валентине Матвиенко из СИЗО-6 (.PDF)

*#159 статья, женщины в сизо, обращения, Оттуда, Правоохранительная система, развитие государства, Решения, СИЗО, ФСИН*

## Помощь зала. 05.12.2018

Друзьям и родным со мной хлопот хватает, поэтому попрошу здесь добрых людей — вдруг кто сможет помочь с нужной литературой. Самый оптимальный способ посылки — через Озон, прямо на СИЗО. По-другому тоже можно, но получать здесь будет сложнее. Распечатки в письмах доходят.

**Книги**

1. (Две последних книги Лукьяненко) послано

2. (Две последних книги Марининой) послано

3. (Домбровский «Хранитель древностей», «Факультет ненужных вещей») послано

4. Нарутто «Обращения граждан в Конституционный суд»

5. Толстых «Оболганный герой»

6. Ушинский «Воспитать ребёнка как»

7. («Тренировочная зона») послано

8. Кухлинг «Справочник по физике»

9. Петерсон «Математика 7-8 класс»

10. Этимологический словарь

11. (Анатомия с картинками.) послано

**Законы**

1. (Правовая позиция ФПА РФ «О внесении изменений в ст. 217 УПК РФ» (отсюда: fparf.ru/documents/legal_positions/14705/)) послано

2. УПК с комментариями Лебедева с июльскими изменениями 2018г.

3. Инструкция по делопроизводству МВД. Это документ для служебного пользования — его достать сложнее, но очень нужен. Именно в нём описано, как должно быть оформлено уголовное дело.

4. Судебная практика УПК. 7 изд.

5. 209-ФЗ от 24.07.07 «О развитии малого и среднего предпринимательства» с последними изменениями.

6. (Трудовой кодекс) послано

7. Закон в внесении изменений в федеральные законы в связи с созданием кассационных и аппеляционных судов общей юрисдикции

8. (ФЗ-76 «Об общественном контроле») послано

9. Закон о банкротстве физических лиц

10. «О службе в уголовно-исполнительной системе»

11. (ФЗ-402 О бух. учёте. Если большой, то ст.13.) послано

12. Приказ Минфина №51Н от 07.05.13 в редакции до 29.12.15.

13. 59-ФЗ от 02.05.06 «О порядке рассмотрения обращений граждан»

14. Свежие пленумы Верховного суда по уголовным делам

15. (Налоговый кодекс- ст. 855.) послано

16. Решения Верховного суда, которыми подтверждались положения Приказа Минюста №189 от 14.10.05.

Всё-таки не зря людей сажают в СИЗО — выстраивать защиту практически невозможно. А для следователя — арест обвиняемого — гарантия обвинительного приговора. Какая тут состязательность процесса и равноправие сторон? Ни законов, ни компьютера. Бесконечная писанина от руки.

Ничего. Ясный ум, твёрдая рука и уверенность в правде.

«Если тебе навязали войну, пусть она станет такой, которую твой противник не в состоянии представить себе даже в ночных кошмарах. Чуточнку меньше — и враг победит».

Терри Гудкайнд.

Берегите себя.

*#женщины в сизо, книги, Москва-Шестёрка, Оттуда, Репост, СИЗО, Тюремные хроники, Уголовное дело*

## Дневничок. Метод употребления резинок для волос в СИЗО. 07.12.2018

Мне прислали замечательно восхитительные резинки для волос. С цветочками, сердечками и стекляшками. А я как раз подстриглась очень коротко. Надела резинки на уши. Видок — телепузики отдыхают. :) Вышла на проверку так. И не придраться ведь: резинки для волос разрешены, а метод употребления не прописан :)

*#дневничок, женщины в сизо, Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Весёлая продлёнка или околосудебная жизнь. 08.12.2018

30.11.18 было очередное продление срока содержания под стражей. Судья оказался тот же, что и прошлый раз. Это насторожило в плане соответствия закону, но порадовало по-человечески — всегда приятно иметь дело с тем, кто тебе симпатичен. В этот раз у меня было два ходатайства:

1. Заявила суду, что не надо держать меня в клетке — я не кусаюсь, а с адвокатом надо работать вместе. На это ходатайство судья ответил, что это не входит в компетенцию суда — распоряжаться клеткой. Ладно.

2. Заявила отвод прокурору Хлопушину. Тут небольшое отступление. Прокурор Хлопушин приставлен Ген. прокуратурой, дабы смотреть, чтобы всё шло «правильно». И мои обращения в Ген. прокуратуру на многочисленные нарушения закона тоже попадают к нему. Последнее письмо, ответ прокурора Хлопушина, было уникально: на полстраничке ответа на две моих жалобы в порядке ст.124 УПК РФ он умудрился трижды нарушить УПК. Понятно, что в ответ я направила жалобы уже на компетентность прокурора.

Вот суду так и заявила, приложив прокурорский чудо-ответ, что данный прокурор не способен исполнять надзорную функцию на суде, поскольку либо не знаком с законами, либо не считает нужным их соблюдать. Ну и ввиду моих жалоб на него, может испытывать личную неприязнь. :)

Судья ушёл в совещательную комнату и вынес постановление, что прокурор останется. Ладно. Попытаться всё равно стоило.

Само заседание мало чем отличалась от предыдущих, разве что с делом ознакомиться не дали. То же ходатайство следствия, те же безосновательные ссылки. Всё сводилось к необходимости знакомиться с делом. Ну и делать это, конечно, можно только из СИЗО.

Я, как всегда, напомнила, что бремя доказывания лежит на на стороне обвинения, а сомнения трактуются в сторону обвиняемого. Соответственно, после применения п.2,3,4 ст.14 УПК РФ мы получаем следующий исходник для суда: нет основания для содержания под стражей.

Уже привычно обратила внимание суда, что следствие затягивает процедуру ознакомления. Если на прошлом заседании суда мы зафиксировали 9 ч/мес, то за ноябрь стало хуже — 8,5 часов.

В среднем, на ознакомление с томом мне нужно от 1 до 4 часов. Нетрудно подсчитать, что если бы следствие не занималось волокитой, то я бы давно уже со всем ознакомилась.

Опять рассказала, что то, что мне приносят, не является материалами уголовного дела, поскольку оформлено ненадлежащим образом. Обратила внимание судьи, что поскольку в суд следствие предоставляет всё же правильно оформленные тома, значит, мифы об этой процедуре следствию всё же доступны, а значит, речь идёт о злостном и умышленном нарушении закона.

Судья вынес стандартное постановление о продлении до 22.02.19, однако, прежде чем закрыть заседание, обратился к следователю: «Своей организацией процедуры ознакомления вы подошли к красной черте, и если ничего не измените, то в следующий раз исход заседания может быть иной.»

На этой позитивной ноте и закончили. Меня ждали автозак, наручники и прочие радости.

Апелляцию написала.

Материалы по теме: Речь на суде.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Легализованные пытки или как выжить по дороге в суд. 08.12.2018

Вряд ли для кого-нибудь секрет, что заключённых возят автозаки. Но мало кто задумывается — зачем и почему. Отставим пока в сторону размышления об убийцах и насильниках — это отдельная тема. Поговорим об обычных людях в СИЗО.

Как устроен выезд в суд? Примерно в 6 утра забирают из камеры. Посиделки на сборке и вперёд — в автозак. Автозак — железная коробка без окон, разделённая на отсеки. Ужасное отличие Москвы и Питера: в московских автозаках можно курить. Это даже не ужас-ужас, а намного хуже. Автозак долго кружит по Москве, собирая и развозя народ по СИЗО и судам. Из женского СИЗО до Тверского, например, суда дорога может занимать до семи (!!!) часов.

А теперь вспомним об отсутствии кондиционера, практически отсутствующую вентиляцию в автозаке, кучу народа и температуру за бортом в зависимости от сезона. Особенно страшно летом при +30. Это даже не пытки, это покушение на убийство. И, опять напомню, из СИЗО едут в суд невиновные люди. Преступниками их может назвать только суд.

Автозаки делают в колониях, если кто не знал. Так может пора научиться делать автобусы с кондиционерами, пусть даже с решётками на окнах? Пытки невиновных людей происходят ежедневно. У всех на глазах. И тот, кто столкнулся с этим, уже не может без боли смотреть на

железную коробку на колёсах с синей или зелёной полосой на борту. Там люди. И их убивают. Просто потому что так проще правоохранительной системе. Да, и женщин тоже.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Сто четвёртая тогда и сейчас. 10.12.2018

Почитала Солженицына «Один день Ивана Денисовича». Про сто четвёртую бригаду. Задумала написать «Один день сто четвёртой камеры». Поняла, что не потяну. И дело тут вовсе не в нежелании сравнивать писательские способности. Другое. Легко и забавно писать мемуары, когда всё закончилось. А поробуйте публиковать материалы про жизнь в СИЗО, находясь в нём и зная, что читают и сотрудники СИЗО тоже. К словам приходится относиться более, чем внимательно. :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Милицейская волна. 11.12.2018

Во время занятий в спортзале в последнее время слушаем «милицейскую волну». Неиссякаемый источник позитива. Для тех, кто понимает. :)

И новостей оттуда: женщина заказала в фирме изготовление ювелирных изделий на сумму около 2 млн. рублей. Заведено уголовное дело по статье «мошенничество», поскольку она «намеревалась обманом получить украшения, не заплатив».

Тут всё прекрасно. Даже комментировать не буду.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Бить или не бить. 12.12.2018

Сначала цитата.

«Был такой очень неудобный гражданин. Нарушал, нарушал, нарушал. Дошло до того, что его избили. После того, как избили, он не допустил за полтора года ни одного нарушения. Вот тут и верь, пошло ему это на пользу или нет.»

Валерий Максименко — зам. нач. ФСИН.

С подачи «Новой газеты» в прессе много внимания избиениям в Ярославской колонии. А хотите инсайдерскую информацию? Дело не в Ярославской колонии. Избиения существуют, к сожалению, пока много где. Дело в системе ФСИН и Прокуратуре, которой проще тихо прикрывать преступления сотрудников ФСИН, нежели вляпываться в эту кашу. В озвученной истории есть три ключевых момента.

Первое: всё закрутилось только после опубликования видео.

Второе: регулярно проходят проверки жалоб и признаётся правомерным применение силы.

Третье: на сотрудниках всегда есть видеорегистраторы.

Теперь начинаем складывать полученную информацию. Выводы проверок, не подтверждённые видео — почти наверняка недостоверны. Но видео смотрится только внутри ФСИН, и свои тайны наружу никто разглашать не собирается. А ведь было бы логично — нет записи инцидента — признавать виновными сотрудников ФСИН. Других шансов остановить этот беспредел может не быть.

А теперь главное. Все подобные вещи, да и вообще ситуация внутри ФСИН целиком и полностью зависит только от начальника учреждения. Всегда и абсолютно. Позицию начальства ФСИН — смотри выше. Очень хорошо, что разрабатывается закон, предусматривающий ротацию начальников учреждений ФСИН.

А сколько избиений в системе МВД…

Да, и женщин тоже бьют.

Шаг за шагом изменим и это.

Берегите себя.

*#Оттуда, ФСИН*

## Переписка с Конституционным судом. 14.12.2018

Получила ответ на своё обращение в Конституционный суд. Ответ вежливый, но немного удивил. То есть, я должна показать, что в суде обсуждалось нарушение закона по этому аспекту. Ладно. Я не юрист, но упорная. Запросила в суде необходимые документы с нужными отметками. Получу и буду опять направлять жалобу в Конституционный суд.

А теперь немного хороших новостей. Всё больше людей присоединяется к решению этой проблемы.

И вот уже появился документ (http://freeverhova.ru/docs/no-women-sizo), который заполняют арестованные женщины и отправляют куда следует.

Всё получится.

Берегите себя.

*#женщины в сизо, конституционный суд, нарушения, обращения, Репост*

## Добро пожаловать или посторонним вход запрещён. 16.12.2018

Те, кто подходит к СИЗО с улицы, могут прочитать удивительное объявление о том, что новые сидельцы не принимаются. Представляю эти разочарованные толпы. :)

*#дневничок, Оттуда*

## Чернильница. 17.12.2018

Очень неудобно работать, когда элементарные вещи приходится всё время прятать. Текстовыделители, скрепки, копирка, всякие канцелярские мелочи — всё это условно разрешено, но всегда находится «неравнодушный сотрудник», который считает, что запрещено всё, и изымает

всё подряд. А поскольку обыск может нагрянуть в любой момент, то приходится проявлять постоянную бдительность. Помните? «и Ленин съел чернильницу». :)

Так что живём весело и не скучно. Совсем. Улыбнитесь, солнышки! :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Экспертизы по уголовному делу. 18.12.2018

Читаю материалы экспертиз. Регионы, где мы работали, косячные местами. И документы оформлены не идеально, и в кассовых книгах есть ошибки, и работа с пайщиками не всегда была совершенной, конечно. Но назначать виновными подчинённых я не собираюсь. К тем преступлениям, которые нам хотят привязать, никто из сотрудников отношения не имеет.

Экспертизы временами откровенно смешили. Пример: поступило в кассу 5 плн., они были инкассированы на счёт и направлены на займы, в соответствии с уставной деятельностью. Эксперт пишет: «На кассу и счёт поступили 10 млн и только 5 млн направлено на займы». «Остальные похищены», — вторит следствие. Красиво? :) А как вам вывод одного из экспертов, что КПК был создан, чтобы ввести в заблуждение Центробанк? :) Это при том, что КПК создан в 2011 г., а под надзор Центробанка КПК попали только в 2014-м.

Есть ещё замечательная экспертиза. Перед экспертом был поставлен вопрос: «Может ли схема КПК работать неограниченно долгий период?» Эксперт дотошно проанализировал Федеральный закон 190, который регламентирует деятельность КПК, и пришёл к выводу, что деятельность КПК в принципе содержит признаки финансовой пирамиды. Понимаете?

Тут варианта два:

1) либо государство своими законами позволяет существовать финансовым пирамидам, а смелый эксперт ненароко открыл эту тайну,

2) либо все экспертизы весьма предвзятые и служат лишь интересам следствия.

Ох, непросто будет судье копаться во всей этой… трухе.

*#Оттуда, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Дневничок 4 кв.м. 19.12.2018

Норма при содержании свиней — 4 кв.м. на голову. Норма площади в СИЗО на одного заключённого — 4 кв.м. Почему-то вспомнился анекдот: Психиатр утешает пациента: «Ну не скорбите вы так… Депрессивная фаза обязательно сменится маниакальной». :)

*#дневничок, Оттуда*

## Защита от дурака. Как писать законы. 20.12.2018

«Строгость законов компенсируется необязательностью их исполнения», — старая фраза. Иногда ещё на поступки накладывается менталитет. Мало кто читает инструкции по эксплуатации до самой эксплуатации. А запреты часто побуждают к попыткам расширить границы дозволенного. Чтобы законы исполнялись, надо работать над их однозначным толкованием. Создавать условия невозможности нарушения законов. Как, например, при работе на металлорежущем станке: нож

включается одновременным нажатием двух кнопок — расставленными двумя руками. И сразу случайные отрезания рук сходят на ноль.

Потрясающее количество полузаконных арестов наблюдается вокруг и в прессе. Можно ли изменить ситуацию? «Нет ничего невозможного для человека с интеллектом». Например, если будет однозначно прописано, что арест недопустим при обвинениях по определённым статьям. И тогда уже не будет ситуации: «У вас не предпринимательство, а коммерция».

Следует запретить аресты до вступления приговора в законную силу ранее несудимых при обвинениях по статьям, не связанным с насилием и безопасностью государства. Запретить однозначно и бесповоротно.

Действовать однозначно необходимо, чтобы никакие толкования и личные волеизъявления не могли нарушить закон. Именно тогда закон будет защищать.

*#манифест, Правоохранительная система, развитие государства, Решения*

## Дневничок. Споры. 21.12.2018

Прошли жаркие споры на кухне. В полный голос и с матами-перематами. И только высокий интеллектуальный уровень участников, да остатки вольного этикета не позволили перерасти дискуссии в драку.

Тема разногласий: сравнительные характеристики воздействия алкоголя и наркотиков в разрезе соразмерности уголовного наказания за распространение упомянутых зелий.

Поспорили. Не подрались.

*#дневничок, Оттуда*

## Дневничок. Воробей. 22.12.2018

Сегодня в коридоре летал воробей. Жизнь в коридоре СИЗО значительно хуже жизни в камере. Ни еды, ни питья. Да и пусто обычно. В общем, встрече были рады и люди, и птицы. Такая вот гармония за решёткой.

*#дневничок, Оттуда*

## Прокурорщина. 23.12.2018

Не складываются у меня отношения с прокурорами. Услышала потрясающий слух в СИЗО: в одной из камер пришедшего с проверкой прокурора обозвали самозванцем, а тот не смог подтвердить свою личность.

Ну, во-первых, самозванцем его не обзывали. Просто он был не в форме, вопреки закону о прокуратуре. Вот и было сказано, что без формы обычно самозванцы промышляют. А удостоверения у него и правда не было.

Всё-таки не могу я понять прокуроров нынешних, особенно тех, кто в судах. Даже гаишники, даже в самые продажные времена наказывали всё-таки нарушителей правил. А тут… Стоять на страже нарушений закона и…

Не складываются у меня отношения с прокурорами.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Равноправие сторон. 23.12.2018

Против тех, кто сидит, достаточно беспредела не только со стороны органов. Есть и прямые нарушения закона со стороны граждан. Только защищать себя, находясь в СИЗО, ой как непросто.

Читаю постановление об отказе в возбуждении уголовного дела:

«Гражданка Е. просит возбудить уголовное дело в отношении К.

В ходе проведения проверки неоднократно осуществлялись выходы по адресу, но дверь в квартиру никто не открывал. Таким образом, получить письменное объяснение от К. в установленные законом сроки не представилось возможным.

Учитывая вышеизложенное, прихожу к выводу, что в данном случае отсутствует состав какого-либо преступления, предусмотренного действующим законадательством».

И это не какая-то записулька или частная беседа. Это официальная бумага от ОМВД с синей печатью и утверждённая начальником полиции.

Таков, к сожалению, общий принцип к заявлениям и жалобам из СИЗО — какой тут может быть закон?

Берегите себя.

*#нарушения, Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные истории*

## Дневничок. Розетка. 25.12.2018

В соседней камере перестала работать розетка. Электрика вызывать не стали, поскольку: «Это же провод, наверное, сгорел — стену надо долбить — нет уж».

Вот такая связь между образованием и комфортом. :)

*#дневничок, Москва-Шестёрка, Оттуда*

## Анонс. 26.12.2018

После нескольких месяцев в СИЗО человек перестаёт бояться правоохранительных органов. Эмоции самые разные: презрение, ненависть, неприятие, удивление, безразличие. Да, безразличие — это тоже эмоция и в данном случае очень сильная.

Кроме тюремных историй у меня накопились заметки о бывших руководителях в разных областях: недвижимость, банковская деятельность, образование, муниципальное управление и т.д. Про скрытые процессы, таяные связи и истинные структуры — информация в виде интервью.

Таких интервью на свободе вам не даст никто и никогда: как можно отобрать любую квартиру, как вывести имущество из-под ареста, как получить любое жильё без затрат, как легализовать миллиард, сколько надо топ-менеджеров в банке и зачем, кто и как договаривается с Центробанком, как устроена благополучная московская школа изнутри, работает ли МЭШ

(московская электронная школа) — степень иллюзий, почему школы, занимающиеся реальным развитием и воспитанием детей, не могут обеспечить им поступления в вузы и многое другое. И, безусловно, вместе с обозначением проблем будут и решения.

А дальше… каждый решает сам — ругает ли он свою страну или делает жизнь в ней лучше.

Защищая других, защищаем себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Где в квартире спрятать ценности. 27.12.2018

Внимательно читали статью в Комсомольской Правде «Где в квартире спрятать ценности».

Очень ценная информация для людей, у которых обыски проходят регулярно. :)

Из статьи: «Главное, чтобы ваша фантазия была богаче, чем у потенциальных домушников». :)

*#дневничок, Оттуда*

## Кооператив «Семейный капитал» — бывшее вероятное будущее России. Или кто кому на что наступил и где перешёл. 28.12.2018

Один из самых частых вопросов: кому «Семейный капитал» перешёл дорогу, что кооператив так безжалостно уничтожили? Ответов на этот вопрос слишком много. Слишком быстро рос кооператив, слишком разнообразны были направления развития, слишком успешными были действия.

Вот ещё небольшой штришок неосуществившихся планов. Накормить Россию «Семейный капитал» планировал достаточно быстро, а что дальше? Огромное количество потребителей продуктов — это Китай. Кто работал с Китаем, знает, переговоры там — очень неспешный процесс, порой занимающий годы. Вот и двигался кооператив по этому направлению не спеша, понимая — когда и что мы сможем туда поставлять. А ещё поставки в Китай отлично увязывались в общий план с программой «Дальневосточный гектар». Многие пайщики хотели бы участвовать, но одному в незнакомое место, да ещё в чисто поле — страшно. Совсем другое — кооператив, который берёт на себя и инфраструктуру, и быстрый запуск небольших производств, и обработку земли. Понимаете? И проблема сбыта произведённой продукции перестаёт быть проблемой и становится рядовой задачей. Потому «китайское» направление развития кооператива было ничуть не менее важным, чем остальные.

Через пару лет «китайских» переговоров уже пошли и результаты. Появились предварительные договорённости о поставках продуктов в 30 тысяч китайских магазинов, предварительные договорённости о логистических базах, юридическом и прочем сопровождении этого процесса в Китае. Развитие и процветание кооператива — это благосостояние пайщиков. Такова логика кооперативов в принципе.

Не случилось. Кооператив уничтожен. А недавно читаю в газете: «Наладить продажу в Китай российских продуктов пытается младший сын генерального прокурора России Игорь Чайка. В 2016-м он с партнёрами зарегистрировал сообветствующие компании для этого. К весне 2018-го у них было около 30 контрактов с сетями и 50 — с дистрибьютерами, контролирующими 16 тыс.

китайских магазинов раличного формата. Сейчас товар присутствует более чем в 1000 магазинах в двух десятках провинций.

Так что… бесполезно спрашивать — кому перешли дорогу. Слишком много мы успели сделать. Семейный капитал — бывшее вероятное будущее России.

#Оттуда, развитие государства, Семейный капитал, Тюремные хроники

## Дневничок. Хлеб. 29.12.2018

Каждый день у нас забирают ведро с хлебными отходами. Девушка из другого региона рассказала, как это перерабатывалось у них. Отходы измельчались, туда добавлялась мука и выпекался новый хлеб.

Утром мы задумчиво посмотрели на свежие буханки и решили ограничить потребление хлеба.

*#дневничок, Оттуда*

## Рука власти. Как быстро раскрыть преступление. 30.12.2018

Главных героев в этой истории двое: Мужик и Мужчина.

Жил-был Мужик. Работал, подрабатывал, содержал семью, крутился, как мог. И как-то попал в поле зрения служителей закона. Дело было ерундовое, быстрое. Получил полтора года колонии и уехал по этапу.

Жил-был Мужчина. Простой парень. А вот дядя его был совсем не прост — работал на должности замминистра в Москве. И как-то понадобилось Мужчине совершить сделку. А во время сделки его грубо кинули. Обратился Мужчина в полицию, с дядей поделился. Дядя волновался за племянника, позвонил Кому следует, чтобы не тянули с раскрытием.

Преступление «раскрыли» быстро. Посмотрели подходящих кандидатов, да выдернули Мужика из колонии — судить по новому делу. И совсм никому не нужна была доказательная база. И совсем неважно, что Мужчина на суде говорил, что никогда Мужика не видел. Да всё было неважно, кроме «раскрытого» преступления. И получил Мужик 10 лет строгого режима.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные истории*

## Дневничок. Песни. 31.12.2018

Проснулись от песен. Заунывных восточных песен. На грани сна и реальности. Было потрясающе красиво. И только когда кто-то засмеялся, стало понятно, что это пели коты.

*#дневничок, Оттуда*

# 2019

## Дневничок. Генерал. 01.01.2019

Ждали генерала ФСИН в гости. Порядок навели, оделись поприличнее. Но генерал не приехал. Зато обед и ужин были превосходны! Подумываем о рассылке приглашений генералам.

*#дневничок, Оттуда*

## Живой труп. 02.01.2019

Жил-был мужик. Любил выпить в компании. Своя квартира. Свои гости. И как-то он после одной попойки просыпается на балконе. Запертый. Смотрит через стекло в комнату, а там, странно — полиция ходит. Он им постучал: я тут, зайти не могу. Открыли ему. Проводили на кухню, а там всё в крови, и тело изрезанное лежит.

Понятно, что балкон — алиби слабоватое, прямо скажем, никакое. Арестовали мужика. Предъявили обвинение по ст. 105 УК РФ — убийство. К удивлению всех на суде появился… труп. Живой и относительно здоровый. Объясняет, что долго в больнице лежал, полиция его ни разу не навестила. И вообще, ножом его тыкал не обвиняемый мужик, а другой — и показывает на свидетеля в зале.

Судья справился с шоком и завернул дело на доследование. Мужик рад-радёшенек. Жене говорит: «Иди, дорогая, стол накрывай, а я с ребятами проеду — подписку о невыезде оформлю». Ага. Подписку ему. Арестовали его уже по ст. 30 ст. 105 (неоконченное убийство), да ещё обвинили в сговоре с пострадавшим с целью клеветы на свидетеля. Получил он на суде 7 лет. Аппеляция снизила срок на полгода. Жена не дождалась.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Дневничок. Проститутка. 04.01.2019

Тренированная проститутка способна при полной внешней неподвижности довести мужчину до финиша только усилиями внутренних мышц.

Размышлялось на тему скрытых механизмов правоохранительной системы, способной, принимая вид законности, довести человека до точки.

Берегите себя.

*#дневничок, Оттуда, Правоохранительная система*

## Взятка. 05.01.2019

Очень маленькая тюремная история. Про поводы для ареста. Жила-была женщина. Непростая, но ошибок не делала. Арестовали её на основании показаний мужика, который подписался под тем, что год назад ужинал с ней, и она ему призналась, что дала взятку. Ни кому взятку, ни зачем взятку — в деле нет. Зато есть стандартные формулировки: может скрыться, уничтожить улики, помешать расследованию. И женщина в СИЗО.

Берегите себя!

*#Оттуда, Правоохранительная система, Тюремные истории*

## Книги-2. 06.01.2019

Письма, газеты и книги — вот мощная поддержка в тюремных стенах. Веду виш-лист по книгам с двойной целью:

1. Вдруг кто из читателей захочет и сможет что-то из списка прислать. Родных и близких не прошу — на них и так много всего свалилось.

2. Вдруг кому-то пригодится знание о существовании таких книг.

Собираюсь писать обзоры прочитанных книг. Попробую себя в этом жанре.

И хоть СИЗО лучше всего воспринимает книги из Озона, подозреваю, что часть упомянутой литературы отсутствует в широком доступе.

В любом случае, надеюсь на лучшее. А вот и рекомендуемый список литературы :)

1. Лучшие рассказы о живой природе с вопросами и ответами для почемучек
2. Убить дракона
3. Страсти по праву. Павел Крашенинников
4. Поединок с самим собой. Ю. Томин
5. Виталий Сундаков
6. Неоэкономика. С. Бодрунов
7. Журнал «Вольная Экономика»
8. Свобода строгого режима. Записки адвоката. Иван Миронов
9. Искусство речи на суде, Уголовная защита. П.Сергеич
10. Чёрная мантия. Анатомия российского суда. Л.В.Краснокутская
11. Избранное. А.Ф.Кони
12. Судебное красноречие русских юристов прошлого.
13. Доктрина шока. Наоми Кляйн
14. Георгий Сидоров
15. Ненастье. Алексей Иванов
16. Английский. Александр Драгункин
17. Поведенческий калькулятор
18. История русской революции. Лев Троцкий
19. Герои, почитание героев и героическое в истории. Томас Карлейл
20. Школа адвокатуры. Рихард Гаррис
21. Погоня за украденным триллионом Александр Лебедев.

*#книги, Оттуда, Тюремные хроники*

## Расщепление пространственно-временного континуума. 07.01.2019

Сегодня видели расщепление пространственно-временного континуума. Утром на проверке мы доложились, что гулять идём.

В обед сотрудник говорит: «Вы сказали — не идём». Властелину прошлого победить не удалось. Гулять мы всё-таки пошли.

*#дневничок, Москва-Шестёрка, Оттуда, СИЗО*

## Иностранные слова. 08.01.2019

Иностранные слова мешают порой понять истинное значение понятий. Возьмём, например, прокуратуру. :) Слово от латинского «prokuro» — «забочусь, обеспечиваю, предотвращаю». Прокуратура — орган заботы о человеке. А что из неё сделали?

Или юстиция — от латинского «справедливость». И сразу минюст открывается с новой стороны — министерство справедливости. А ведь… как корабль назовёшь…

Я не призываю переименовывать всё подряд, но необходимо помнить о значении и силе слов.

Будьте бдительны. :)

*#Оттуда*

## Дневничок. Тайм-менеджмент. 09.01.2019

Тайм-менеджмент в тюрьме требуется высшего уровня. Иначе ничего не успеть. Спортзал, медчасть, прогулка, спецчасть, встречи с адвокатом, со следователем, тел. звонки, посылки — всё это непредсказуемо может случиться в любой момент. Нужно постоянно быть готовыми ко всему. Иногда окно возможностей открывается на секунды — надо успеть среагировать и использовать. Похоже на переход речки по торчащим сваям, только они непредсказуемо исчезают и появляются.

#дневничок, Оттуда

## Модель поведения. 10.01.2019

Идеология общества даёт определённую модель поведения. В случае отсутствия ярко выраженной идеологии, модель поведения формируется из окружения, из прочитанных книг, просмотренных фильмов, сыгранных компьютерных игр. Отсутствие модели поведения в сложной ситуации порой ломает человека вплоть до суицида. Упал — поднялся, попал в беду — действуй в беде, никогда не сдавайся — так учили нас в школе, так вели себя те, с кого мы брали пример.

Сейчас модели поведения молодежь берёт из социальных сетей, из компьютерных игра да рекламы. И знаете что объединяет эти источники? Герои там абсолютно нежизнеспособны в реальной жизни.

Теперь про решения. Чтобы человек к чему-то стремился, ему надо чего-то захотеть. На первый взгляд банальность, но социологические опросы молодёжи последнего времени показывают именно отсутствие желаний и стремлений у абсолютного большинство молодых людей до 30 лет.

Движение АУЕ тоже получает своё распространение у молодёжи оттого, что предлагают чёткую модель желаний, а соответственно и модели поведения.

Почему у оппозиции не получается привлечь много сторонников? — нет набора предлагаемых желаний — понятных и достижимых. Нужны герои, нужны те, с кого брать пример. И они должны

быть не из прошлого, поскольку их модель поведения не пройдёт в настоящем. Герои, кстати, не обязательно настоящие. Но они должны жить в реальной жизни, их модель поведения должна быть применима.

При всех недостатках американского общества, у них есть модель поведения — да, та самая американская мечта — учись, работай и будь готов к удаче.

Что может быть в России? Не спешите улыбаться и иронизировать. То, чего не нашли, когда искали национальную идею, всё же существует. :) Так что оставляю вас на подумать, а чуть позже ждите публикацию про национальную идею.

Берегите себя. Вы нужны миру.

*#Оттуда, развитие государства*

## Дневничок. Лампочки. 11.01.2019

Депрессивные лампочки в камере В камере двадцать лампочек. Одиннадцать — не горят.

Полумрак абсолютно не романтичен.

Как в анекдоте: депрессивный клуб интеллектуальных игр «Ничто. Нигде. Никогда».

*#Москва-Шестёрка, Оттуда*

## Некорректный характер. 12.01.2019

Девушка обвиняется в том, что, зная о решении суда в пользу потерпевшей, подала документы о регистрации недвижимости на своё имя. Всё бы ничего, только документы на регистрацию были поданы почти за месяц до решения суда.

Девушка написала ходатайство на проведение экспертизы, которая дала бы ответ — является ли девушка экстрасенсом, способным предвидеть будущее. Следователь отказал: «Ходатайство не подлежит удовлетворению, поскольку его содержание носит некорректный характер».

Вот если бы суды так отказывали в принятии уголовного дела к рассмотрению, «поскольку его содержание носит некорректный характер». :)

#женщины в сизо, Оттуда, Тюремные истории

## Дневничок. Ритуалы. 14.01.2019

Понедельник — очень позитивный день. Еженедельный ритуал взболомучивания омута, чтобы черти не заводились.

*#дневничок, Оттуда*

## Правила для обвиняемых изменили. Минюст «жжот». 15.01.2019

Когда-то писала письмо Минюсту про дефектность Правил внутреннего распорядка для подозреваемых и обвиняемых (ПВР). А теперь, посмотрите, — изменения в ПВР! :) Просто кррасавцы! Отработали задачу. Особенно насмешили шнурки. Не зря я писала жалобы в прокуратуру, доказывая, что шнурки НЕ запрещены. Что ж, теперь запрещены. И прокуратура

радостно мне написала об этом. А многие годы до этого шнурки просто отбирали. :) С 6.07.2018 это стало законным.

И я всё-таки никак не могу понять — почему осуждённым разрешается больше, чем подозреваемым и обвиняемым. Из ближайших задач — признать ПВР противоречащим Конституции.

*#нарушения, Оттуда, Правоохранительная система, ФСИН*

## Аналитика слухов. 15.01.2019

Слухи — неотъемлемая часть жизни в СИЗО. Только закончили обсуждать личную жизнь и карьерный рост начальника, как жизнь подкинула новые поводы.

Летом в СИЗО была проведена перетасовка народа по камерам — отделили неэкономические статьи (это, как правило, статьи, связанные с наркотиками) от экономических. Логика понятная, да и правильная. Но сейчас, по слухам, прилетело новое указание ФСИНа — отделить предпринимателей. И тут уже пошли сложности. Потому что вообще-то предпринимателей в СИЗО быть не должно. :) Во-вторых, на каком основании отделять — никто, конечно, не объяснял. Понятно, что документальных оснований быть не может. А в-третьих, экономические статьи — это, в основном, ст. 159 (мошенничество), ст. 290 (взятка) и ст. 160 (растрата). При нынешнем уровне следственных действий — разницы между деяниями, которые потом подгоняются под эти статьи — практически нет. И разделять сидельцев по этим статьям — создавать пробблемы на пустом месте. Поэтому, очередной слух породил кучу нервных предположений не только среди арестанток. Надежда только на ростки здравого смысла во ФСИН-системе.

Второй слух ещё «веселее»: в целях разрушения устойчивых связей каждые три месяца состав камер будет тасоваться.

В Питере была такая практика, поэтому я знаю, к чему это приводит: к колосальному усилению межкамерных связей. :) Ведь люди достаточно быстро знакомятся и начинают дружить. После нескольких перетасовок уже практически все знакомы со всеми, поэтому логика такой методики не очень понятна. Ну если только дополнить разнообразие негативных переживаний сидельцам и лишний раз обозначить бесправие и униженность. Но и ещё всякую не очень законную деятельность проще осуществлять, если народ постоянно тасуется. Да и оперативная обстановка в камерах при постоянном обновлении состава становится… разнообразнее. :)

Хорошо, что пока это только слухи.

Берегите себя.

*#Оттуда, СИЗО, ФСИН*

## Капуста в СИЗО. Тюремные хроники. 17.01.2019

Капуста в СИЗО — тема тянется с Питера. В Москве долго выясняли причины запрета в посылках и передачах — перевели стрелки на главного санитарного врача ФСИН — типа, он запретил. Ха! Что мне должность? — Всего лишь строка в адресе! :) И знаете что? ФСИН мне ответил. Разрешена капуста-то! Любая. Гордо похвасталась сотрудникам СИЗО письмом ФСИНа, но меня пристыдили в незнании азов субординации — исполдняются только приказы непосредственного начальства. :)

Анекдот вспомнился:

Утро понедельника. Начальник спрашивает:

— У тебя глаза красные, пил, что ли?

— Нет. По работе скучал, плакал.

*#Оттуда, Тюремные хроники, ФСИН*

## Дневничок. Речёвки. 18.01.2019

Народ в камере подобрался неплохой, поэтому некоторые даже поют в дУше. Сегодня было чудесное тра-ля-ля на мотив гимна РФ. Олимпиады не прошли даром. :) А вообще, политпропаганда недооценивает значение лозунгов и речёвок. В результате — ни пошагать толком, ни помедитировать с пользой для страны. :)

Кто шагает дружно в ногу? Уступайте нам дорогу!

*#дневничок, Оттуда*

## Дневничок. Темно. 18.01.2019

Темно. Смотрю в окно сковзь решётку. Светится окно у начальника. Вдруг догадалась, что ему тоже видны наши окна. А поскольку он этажем выше, то видно ему больше.

Задумалась над тем, что многие наши действия, если наблюдать за нами из окна — выглядят странно. :) Весело бездельничала остаток вечера, чтобы никто не догадался — что я делаю. :)

*#дневничок, Оттуда*

## Состав преступления. 19.01.2019

Читаю толковый словарь Ожегова. Мошенничество — противоправные действия из корыстных побуждений. Корысть — материальная выгода. Это было лингвистическое доказательство моей невиновности. Противоправных действий не было — всё исключительно в рамках закона. Корысть исключается анализом результатов деятельности лично для меня — только долги и кредиты. Такой вот состав преступления.

Анекодот:

— Иди ешь кашу.

— Ты же суп варила.

— Мало ли, что я варила.

Хорошего дня! :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Дневничок. Азу. 20.01.2019

На обед дали азу. Не какое=то там, а самое что ни на есть. С солёными огурцами. Крупные куски огурцов в мясном наваре были похожи на джунгли из вечерних сцен фильма про Тарзана.

Теперь у нас тихий час. Потому что азу было много и оно нас победило.

Джунгли в тарелке

*#дневничок, Оттуда*

## Судебная защита. 21.01.2019

Сейчас я вам на средних пальцах и конкретном примере покажу — как обычно реализуется право на судебную защиту, прописанное в Конституции РФ (ст. 46).

Итак, ситуация. Следственные действия закончились, наступает необходимость ознакомления с материалами уголовного дела. Обвиняемый сидит в СИЗО, влиять на этот процесс никак не может — меру пресечения, понятно, никто менять не собирается.

А следователи не спешат знакомить с делом. Во-первых, дело не готово — спешка с закрытием следственных действий была связана всего лишь с желанием задержать обвиняемых в СИЗО.

Во-вторых, кто-то должен ходить, носить тома, сидеть-ждать, пока обвиняемый читает. А ведь ещё надо и просто попасть в СИЗО — записаться, отстоять очередь, что бывает совсем непросто.

Вот и получается, что время идёт, а ознакомление с делом стоит. Что делать? Закон позволяет жаловаться. :) Руководителю следственного органа, в прокуратуру, в суд. Про органы и прокуратуру — разговор отдельный — в войне с отписками бывает нелегко. А вот суд, на первый взгляд — замечательный инструмент, ведь в законе всё так чётко прописаною. Но на практике механизм судебной защиты действует так:

— Пишется заявление в суд в порядке ст.125 УПК РФ о нарушениях следствием прав на ознакомление с делом, прав на защиту. В заявлении указывается на волокиту и неправомерное лишение свободы под предлогом ознакомления.

— Ни ответа, ни привета. :)

— Пишется жалоба в Мосгорсуд на бездействие суда, нарушение сроков рассмотрения и т.д.

— Приходит ответ из суда, что месяц назад, оказывается, вынесено судебное постановление об отказе в принятии жалобы на действия (бездействие) следователя, поскольку это не является «предметом рассмотрения».

— Пишется апелляция на неправомерное решение суда об отказе в принятии жалобы к рассмотрению.

— Апелляционная инстанция оставляет решение районного суда в силе.

Собственно, всё. Попытка использовать конституционное право на судебную защиту терпит неудачу.

далее, конечно, пишется кассационная жалоба, но это дело ещё более долгое. А время идёт. Обвиняемые сидят в СИЗО. С делом не знакомятся. Мера пресечения продлевается на основании необходимости знакомиться с делом. :) Я уже полгода «знакомлюсь».

И моя ситуация не уникальна совсем. Люди месяцами (!) сидят в ожидании, когда им принесут тома для ознакомления. А суд «не усматривает волокиты».

И если это не заставляет вас задуматься о своей безопасности, то вот информация попроще: «Сумма последовательности нечётных чисел даёт последовательность квадратов простого числа».

Думаем.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Квази и Кайнозой. 23.01.2019

Книги Лукьяненко у меня не получается читать быстро. Периодически приходится откладывать, чтобы восстановить замершее от восхищения дыхание. Можно, конечно, хвалить штампами: «Динамичный сюжет, лихо закрученная интрига, неожиданная развязка», — но уникальность книг Лукьяненко для меня не в этом.

Каждая книга этого автора имеет свою мелодию и свой ритм. Это потрясающе красиво, порой просто завораживает. Ритм определяет скорость событий, ритм отщёлкивается точками в коце предложений. Порой ритм ускоряется до отрывистых слов и выдыхаешь только, когда предложение становится длиннее. Как золотинки в песке — неожиданные обороты, парадоксальные выводы и пакеты спрессованных смыслов. С каждой новой книгой золотинок у Лукьяненко становится больше. И с каждой книгой учишься их видеть и ценить.

«Квази» и «Кайнозой» — книги на эту тему не могли не появиться у писателя-фантаста. Вариант будущего, при котором настоящее приобретает абсолютно другие акценты — вполне в духе Лукьяненко. Когда выбрать жизнь можно через смерть. А выбрать смерть — через жизнь. Изменение связи жизнь-смерть меняет абсолютно все базовые ценности, и с удивлением видишь, что ответственность за отношения не зависит от связей со смертью.

Эти книги стоит почитать хотя бы затем, чтобы увидеть смысл своей жизни с фантастического угла и… удивиться. Потому что стандартность и предсказуемость — это точно не про Лукьяненко. Но читать стоит лишь в том случае, если готов не только задавать себе вопросы, но и не бояться отвечать на них.

Хорошего чтения.

Берегите себя.

*#книги, Тюремные хроники*

## Крокодил или путь в один конец. 24.01.2019

Крокодил смыкает челюсти с огромной силой, легко дробит кости. А вот мышцы на размыкание достаточно слабы. Небольшая верёвка может удержать пасть закрытой.

Попасть в СИЗО в нынешнее время — совсем не сложно. А вот выйти — проблема. Даже если кто-то ошибся, даже если всё незаконно — выход маловероятен. Система оправдания и выпуска не то что совсем не развита, она практически отсутствует. И на всех уровнях правоохранительной системы наказывает за оправдания и туманность.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Сбалансированное питание на 72 руб. в день. Кисель жизни. 24.01.2019

Много внимания уделяет пресса прожиточному миниму и тратам населения на продукты. За озвученную сумму 3500 руб. в месяц, как достаточную, одного министра уволили, а попробовавший уложиться в эту сумму депутат Николай Бондаренко зафиксировал ухудшение работоспособности и самочувствия.

На питание заключённых выделяется 72 руб. в день (цифра из газет). Это 2160 руб. в месяц. В августе «Российская газета» высказалась, что питание в СИЗО очень даже неплохое. Мне тут из СИЗО это показалось более чем подозрительным. Написала три письма: в Российскую газету, в правительство — именно постановлением правительства регламентируется питание в СИЗО — и в Институт питания.

Не прошло и трёх месяцев, как мне ответили все, кроме Российской газеты. Письмо в Правительство было адресовано в минюст, оттуда пришёл очень даже содержательный ответ. Смысл — питание согласовано со специалистами.

А вот ответ из «ФИЦ питания и биотехнологии» гораздо более интересен. Оказывается, каши да картошка вполне удовлетворяют все потребности человеческие. А нехватка витаминов и минералов компенсируется наличием в меню киселя витаминизированного. Вуаля! И чего политики копья ломают в раздумьях — как народ прокормить? Киселя всем! И не надо ни свежих овощей, ни фруктов.

Анекдот вспомнился:

— Специалисты утверждают, что зарплата населения растёт.

— А население говорит, что нет.

— Но ведь они же не специалисты.

Можно возразить, что заключённые в СИЗО ничего не делают, энергию не расходуют и особо в питании не нуждаются, но это было бы неправильно: у оказавшихся в СИЗО — огромный расход нервной энергии при попадании под беспредел правоохранителей и огромная потребность держать себя в хорошей физической форме, чтобы иметь возможность защищаться.

Самым правильным было бы исключить досудебные аресты и в разы сократить население в СИЗО. Писала об этом в Манифесте.

А пока… Продолжаем работу с тем, что есть. Институт питания не ответил на вопросы в моём письме и прикрылся киселём. Всё равно спасибо, а то я бы никогда не догадалась про критическую важность киселя в нашей жизни.

Буду разбираться дальше.

Берегите себя. Кушайте хорошо.

*#Медицина в СИЗО, нарушения, обращения, Оттуда, Правоохранительная система, ФСИН*

## Питание-2. 25.01.2019

Уже рассказывала, как правильно питаться на 72 руб. в день. Как выяснилось, кисель компенсирует все недостатки питания.

Но это ещё не всё. Тут вам ФСИН. А как уже было обозначено, Минюст имеет право на замену одних продуктов — другими. И…. внимание! Следите за руками! :) Кисель заменяется на… чай с сахаром.

Вуаля!

Тему питания не брошу, следите за новостями! :)

Берегите кисель в своей жизни! :)

Берегите себя.

*#Оттуда, Репост, ФСИН*

## Дневничок. В жизни всегда есть место тюрьме :) 26.01.2019

В жизни всегда есть место тюрьме. :) Ха-ха.

В правилах, которые описывают порядок движения заключённых, всё не очень детально. Только про то, что руки назад. Но нетрадиционные способы перестановки ног — сотрудников настораживают. Например, коньковый ход. Или подпрыгивание дважды на левой ноге. :)

Надо бы ещё лунную походку освоить. :)

#дневничок, Оттуда

## Павел Крашенинников. 27.01.2019

Павел Владимирович Крашенинников уникален по многим аспектам. Умные люди — всегда золотинки в массе юристов. А депутаты со здравым смыслом всегда радуют. А ещё он работал министром юстиции и ректором Российской школы частного права. Впечатляет. Поэтому моё желание написать ему письмо вполне логично. Теперь дело, как всегда, за доставкой адресату. Все публикуемые письма, конечно, я официалльно отправляла из СИЗО, но буду признательна за альтернативные способы донесения информации да адресата.

Письмо Крашенинникову — 27.11.2018

Государственная Дума
103265, Москва, Охотный ряд,1

Председателю комитета ГД по
гос. строительству и законодательству
Крашенинникову П.В.

от Верховой Наталии Дмитриевны,
06.12.1969, содержащейся в СИЗО-6 Москвы

Уважаемый Павел Владимирович!

Часто встречаю в газетах описание действий, связанных с Вашим именем. Нахождение моё в СИЗО позволяет оценить работу правоохранительной системы с другого ракурса. С первых дней ареста веду блог с помощью друзей freeverhova.ru. Заметки о тюремной жизни, детали работы ФСИН, следствия, прокуратуры судов и др., примеры судеб, поломанных правосудием — это всё ведёт к предложениям и решениям по изменению правоохранительной системы. Сейчас правоохранительная система порой похожа на хищника, выстраивающего криминальное общество и обречённого пожирать и себя. Хорошие кадры уходят, плохие разрушают систему изнутри.

Законотворческая деятельность с этой стороны решётки выглядит совершенно иначе. Сразу видно — что не будет работать и почему. Базовое целеполагание незаметно. Какой должна быть безопасность граждан? По каким принципам должен работать бизнес? Какая правоохранительная система служит развитию страны? Цель уголовных преследований? Цели наказаний? Смысл работы ФСИН должен быть не в наказании, а в возвращении в общество оступившегося человека. Какие люди нужны обществу? Пока даже провозглашённые цели выполняются с точностью до наоборот.

Положение обвиняемых в СИЗО — отдельная тема, оно имеет малое отношение к закону. Начиная собственно с изоляции в СИЗО, жизни по Правилам внутреннего распорядка, противоречащим закону, и заканчивая невозможностью условно-досрочного освобождения и смены режима в СИЗО.

Раздел сайта «тюремные истории» просто обязателен к прочтению для законодателей. Ведь законы, не улучшающие ситуацию в конкретных случаях — бесполезны.

Пишу много обращений и варианты решений в различные органы власти. Обращения тоже публикуются у меня на сайте. Ответы — безынформативные отписки. Пока это тоже — система.

Понимаю Вашу занятость и отсутствие возможности лично отвечать на письма, но достоверная обратная связь делает более эффективной законотворческую деятельность. Задача информации на моём сайте — именно в выстраивании такой обратной связи.

Предлагаемые мной решения достаточно просты и не требуют особых затрат. А главное, на первом этапе, не нарушают ничьих интересов, что позволяет постепенно и без избыточных усилий запустить процесс декриминализации общества.

В условиях СИЗО не просто писать, удобнее Вам будет почитать материалы на сайте, но прикладываю две статьи в качестве примера и подтверждения написанного.

С уважением,

Верхова Н.Д.
27.11.18
freeverhova.ru
Приложение на 5 стр.
1. Четвёртая власть
2. Манифест.

## Цыганская группа или методы заполнения СИЗО. 29.01.2019

Жила-была цыганская семья. Муж, жена — Ляля и трое детей. Муж работал, жена занималась домом, да гадала людям понемногу. Жили у Лялиной тёти, которая предоставила им кров, а сама вела жизнь тихую и уединённую.

Обратилась раз к Лёле женщина с просьбой погадать, да порчу отвести. Разве ж цыганка может отказать? :) Запросила денег, клиентка перечислила. 34 тыс. руб. Перечислила, да, видать, пожелела. Написала заяву в полицию.

Полиция не дремала — приехала, арестовала всех. Почему всех — понятно — за раскрытие преступной группы бонусов больше. Вот и пошёл муж организатором, жена — исполнителем. И даже тётя, что жильё им дала — тоже в исполнители попала. Группа же.

Трое детей остались без родителей. Трое взрослых сидят в СИЗО третий месяц. Деньги клиентке вернули, а вот порча, видимо, уже насовсем.

#Оттуда, Тюремные истории

## Старые песни. 30.01.2019

Мы под Колпино скопом стоим,

Артиллерия бьёт по своим.

Ах, это наша разведка, наверное,

Ориентиры дала неверные.

На втором году сидения в СИЗО приходит много картинок из прошлой жизни, песни молодости. Страна сильно изменилась за это время. Национальные проекты не дают уверенности в будущем. «Сильная рука и твёрдая власть»- социологи утверждают, что 26% россиян ратуют за это.

Но волюнтаризм всегда ведёт к произволу. Какой уровень произвола готово выдержать общество? Правил больше нет. Любой, вне зависимости от положения, связей и материальных ресурсов, может оказаться за решёткой. А дальше — путь накатанный — признание ли вины или упорство в отстаивании своей невиновности — срок наказания обеспечен.

Перелёт, недолёт, перелёт,

По своим артиллерия бьёт.

И снаряды ложатся подряд,

Лес не рубят, а щепки летят.

Система наказаний безнадёжно устарела, уголовное наказание «виноватых» не приносит пользы никому:

— ни потерпевшему (нахождение в колонии осуждённого не возмещает потерпевшему ущерб);

— ни государству (нагрузка по содержанию и охране осуждённых, неэффективный низкоквалифицированный труд тех, кто мог бы приносить пользу. Квалифицированные кадры занимаются тупой работой, вершина карьеры — библиотекарь, например),

постоянное пополнение криминальных кадров вышедшими из колонии людьми;

— ни человеку (разуршенные семьи, брошенные дети, разорённые бизнесы).

Колония — это ампутация человека из общества. Лечить всё, от синяков до переломов, ампутацией — глупо.

Решится ли кто-нибудь пересмотреть в целом систему наказаний? Для начала — не сажать за преступления, совершённые впервые. Это не так дико, как звучит для людей, привыкших к простому мщению.

«Люди — главная ценность» — банальность, но понятная всем. Колонии необратимо меняют людей. И мы этих людей теряем.

Нас комбаты утешить хотят,

Говорят,что нас Родина любит.

А ребята не встанут опять

По своим артиллерия лупит.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Электрик. 31.01.2019

Как-то раз брали группу преступников. Окружили дом, ждали сигнала. А в соседний дом вызвали электрика — кабель поменять. Электрик был из пригорода, выехал заранее, не попал ни в одну пробку и оказался на месте аж за два часа до назначенного. Сидит в машине, ждёт. С кабелем. Не могли его не заметить. Уж очень подозрительно. Да и в нужном месте. Группу взяли, электрика тоже арестовали.

И закрутилась машина правосудия. Напрасно преступники говорили, что никогда не видели его раньше. Напрасно пришёл на суд заказчик работ — рассказывал историю заказа. Напрасно пропал кабель в машине. Уехал электрик в колонию на четыре года.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

# Национальная идея России. 01.02.2019, Главное, Статьи и аналитика

Над просторами нашей страны никакие призраки давно не ходят. Зато национальная идея практически не сформирована. Просто кусочки света ещё никто не сложил в путеводную звезду.

Национальная идея — это не программа экономического развития, это смысл, который несут все действия в политике, экономике и всех абсолютно остальных областях.

Начиональная идея — это то, что объединяет, устремляет вперёд и наполняет гордостью за свой путь. Она не должна быть сиюминутной и рутинной. Она должна давать смысл не только ныне живущим, но и следующим поколениям. И она должна быть именно для нашей страны, поскольку никакая другая страна не обладает достаточными данными для её достижения.

Итак. Национальная идея для России:

**ХРАНИТЕЛИ ПЛАНЕТЫ**

Что входит в задачи и функции Хранителей планеты?

**1. Сохранение и развитие человеческого интелекта и возможностей.**

**2. Сохранение природы.**

Тут и сохранение озонового слоя и пресной воды, и сохранение лесов, и восстановление разрушенного и утраченного. Про российские супер-разработки восстановления плодородия не забудем. Кстати, решение мусорной проблемы и захоронения отходов тут же. А также звери, рыбы, птицы и прочая живность. Помним про недра. Всё, связанное с добычей полезных ископаемых, порой необратимо калечит планету. Тут ещё много всего предстоит сделать.

**3. Недопущение войн.**

Войны очень травмируют планету. Взрывы, заражения воды, земли и воздуха, пожары, уничтожение воды и растительности, изменение рельефа, усиление сейсмической активности, ураганов и т.д. Выяснять отношения без вреда планете ещё предстоит научиться. И дипломатия сильного тут очень важна.

**4. Космические программы.**

Для защиты планеты необходимы соответствующие технологии и оборудование. А также методика анализа и моделирования космических событий.

**5. Сохранение генофонда.**

Здесь и понимание правил генетических экспериментов, и безусловные семейные ценности, вопросы воспитания как человека, так и общества тоже тут.

**6. Производство безопасной еды.**

Вынесено в отдельный пункт ввиду глобальности и важности. Еда должна не только насыщать, но и соответствовать приоритетам развития человечества.

7**. Сохранение культурно-исторических ценностей.**

Понятно, что историю пишут победители, но любая история — это ещё знания и опыт, которые часто теряются во имя сиюминутных потребностей властных структур. Человек без прошлого проще подчиняется, но и быстрее деградирует, что несовместимо с развитием и созиданием.

Это очень краткое изложение национальной идеи России. Каждуый пункт может быть развёрнут не только в национальный проект, а в полноценное направление развития страны. Но главное не это. Главное — что действия внутри и вне страны должны соответствовать национальной идее хранителей планеты.

Буду благодарна за отклики, комментарии, поправки, дополнения. ФСИН-письмо нам в помощь. :)

*#Оттуда, развитие государства*

## Ремарка. 03.02.2019

О чём я тут не пишу. В СИЗО секретов нет, все женщины-фигуранты громких дел — тут. Я почти никогда не пишу про личные данные, я не пишу «жёлтых» сенсаций типа: что обещали бухгалтеру «Седьмой студии», о чём говорили сёстры Хачатурян сокамерницам и т.д. Я не пишу чернухи.

И главное: я не пишу о проблемах без решений. Всё решаемо. И я пишу — возможные варианты.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории, Тюремные хроники*

## Чему не учат в школе, но учат в тюрьме. 04.02.2019

— не дружить, не привязываться, не дорожить отношениями;

— не следить за собой, ходить в чём попало, в неглаженной одежде;

— не следить за происходящим в обществе и в стране;

— не читать, не учиться;

— жить в спартанских условиях;

— не дорожить вещами;

— не обращать внимания на честь и достоинство.

Да, всему этому учат в тюрьме и порой достаточно жёстко. Но… выбор есть всегда, как и возможность выбрать несколько вариантов. :)

Поэтому и дружат, несмотря ни на что, и следят за собой, и учатся, и читают, и дорожат своим достоинством, хоть и обходится это достаточно дорого порой.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Небайка. Не тот приговор. 07.02.2019

Одна девчонка рассказывала. Суд у неё заканчивается, зачитывается приговор. И она вдруг понимает, что это совсем не про неё. Нет, фамилия её, а всё остальное — совсем нет, включая статью обвинения. Защитник государственный, по назначению — молчит.

Теперь девчонка ждёт получения приговора на руки и волнуется.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Личные данные. 09.02.2019

Читаю уголовное дело и искренне не понимаю — почему данные всех потерпевших и всех свидетелей, включая копии паспорта и номера телефонов, доступны в деле? Для чего? Для подкупа потерпевших и давления на свидетелей? Я уж не говорю о том — что можно сделать с копией паспорта и номером мобильного. По УПК много кто имеет право делать копии с материалов уголовного дела. А там — такой клондайк личных данных.

Или суд. Вот зачем меня каждый раз заставляют вслух называть адрес прописки и проживания? Заседания открытые, присутствовать может кто угодно с улицы. И с любыми целями. А дома остались близкие.

Что-то неправильно с охраной личных данных. Поразбираюсь в этой истории. :)

Берегите себя.

*#нарушения, Оттуда, Правоохранительная система, ФСИН*

## Нетюремная история. Магазин-ловушка. 11.02.2019

История выглядит полным бредом, но тем не менее основана на реальных событиях. Пошла как-то женщина в супермаркет. Тележка, проход по рядам. Понравился нож, положила в корзину, да пошла дальше. Пока выбирала продукты — передумала про нож. Вернулась — положила на полку.

Касса, расчёт, дом. Спустя какое-то время — вызов в полицию. И, ангел-хранитель постарался, пошла туда с адвокатом. В полиции предъявили обвинение в краже — видео зафиксировало: нож взят, а возвращена пустая коробка на полку. Значит, нож украден. Дорогой нож. Поди докажи, что не так. Спас адвокат. Схема всё-таки рассчитана на другой уровень. Выяснилось, что дел таких — десятки. И люди от безвыходности соглашаются — платят деньги, лишь бы избежать худшей участи. А в полиции — галочки за раскрытые «преступления».

Перефразируя выражение про больных: «Нет не преступников, есть непойманные».

Берегите себя. И не бойтесь себя защищать. Грязные дела боятся шума. При всей абсурдности — история реальна. Аккуратнее.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Подвалы Мосгора. 13.02.2019

Перед апелляцией по продлению меры пресечения меня вывезли в суд — ознакомиться с материалами следствия к продлению. Слышала разные страшилки об этом процессе, теперь знаю — каково оно.

Итак, представьте: комната в подвале Мосгосуда, стол, скамейка и скоба в стенке. Сажают за стол, пристёгивают руку к скобе, напротив сидят два мужика: помощник судьи и конвоир. Всё. Одной рукой можно знакомиться с делом. :) Театр абсурда.

В чём меня таким образом пытаются обвинить? В нападении на судью, конвоиров? В попытке к побегу? Почему им так страшно, если я не буду прикована к стене? Или это какое-то неисправленное наследие прошлого?

Одной рукой листать том и выписывать из него нужное — жутко неудобно. Том постоянно закрывается (для сшивки в 250 листов — это естественно). И эти мужики ещё сидят и смотрят. У меня в материалах к суду было три тома. Справилась, конечно. Но за синяки от наручников стыдно за систему.

Попробую написать очередную жалобу на недостойное обращение с невиновным человеком. Опять придётся долго и нудно объяснять — какие же мои права нарушены. :)

Ничего, капля камень точит.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Комитет против пыток. 14.02.2019

«Пытка без воплей — неудавшаяся пытка».

В. Суворов «Контроль».

В естественном стремлении защитить себя, своё здоровье и жизнь, заключённые из СИЗО пишут в разные инстанции — жалуются, пытаются добиться справедливости, просят помощи.

Пожилым людям бывает очень трудно в СИЗО — проблемы со здоровьем, аскетичный быт, ограничения по лекарствам и врачам, недостатки необходимого по состоянию здоровья питания и т.д.

Ответы из разных инстанций, в большинстве своём, достаточно циничны и редко бывают по существу. А вот пример — выдержка из ответа «Комитета против пыток» (да, есть такая организация) на просьбу о защите от пожилой женщины, давно сидящей в СИЗО. Женщина жаловалась, что с её набором заболеваний — содержание в СИЗО — пытка.

А вот выдержка из ответа: не сообщает о неоказании медицинской помощи. Ввиду ограниченности ресурсов «Комитет против пыток» проводит общественное расследование и оказывает юридическую помощь только в случаях применения незаконного физического насилия. Условия содержания в СИЗО по квалификации ЕСПЧ [Европейского суда по правам человека] могут подпадать лишь под бесчеловечное и унижающее человеческое достоинство обращение. Проверку прекратить. Общественное расследование не начинать.

Такие дела. Не бьют и ладно. Лишь бесчеловечное и унижающее обращение. :)

Так и живём.

Берегите себя.

*#обращения, Оттуда*

## Книги-3. 17.02.2019

Путь книг в СИЗО долог и труден. Поэтому рецензии имеют срок запаздывания. Но обязательно будут, а пока — следующий топ потребностей.

1. Бусидо. Военный канон самурая.
2. Гайдар Аркадий
3. Б. Ю. Александров. Сырок
4. Горький, Дело Артамоновых
5. Суворов, Наука побеждать
6. Учебник русского языка. Или справочник со всеми правилами.
7. Шарль де Голль, Профессиональная армия
8. Скорочтение с таблицами Шульте
9. Кокин С.М., Селезнев В.А., Физика в истории железных дорог.
10. Тамара Эйдельман, Как работает пропаганда
11. Хомченко, Общая химия
12. Кейт Ферацци — обе книги
13. М. Веллер, Приключения доктора Звягина

14. Карел Чапек, Война с саламандрами.

Такие вот интересы сейчас. Скоро весна. Солнце. Читать будет попроще.

Берегите себя.

Список и инструкции по посылке книг: https://goo.gl/uDYa2j

*#книги, Тюремные хроники*

## СИЗО и зона — два фокуса нелогичности. 17.02.2019, Главное

У СИЗО и зоны есть принципиальные различия по своей сути. В СИЗО — невиновные люди. Как только судом они признаются виновными — они этапируются на зону. Итак, мы имеем две группы людей: виновные и невиновные. А теперь сравним условия жизни.

1. Питание. Уже писала, что виновным полагается еды больше, чем невиновным.

2. Быт. У виновных больше прав, свобод и разрешенных вещей. УИК (Уголовно-исполнительный кодекс) гораздо шире ПВР (Правил внутреннего распорядка). Шнурки, часы и многое другое невиновным недоступны. У виновных больше прав на звонки и свидания, больше прав на работу, образование, медицину и так далее.

3. Возможности защиты. На зоне есть возможность доступа к правовым системам типа «Консультант». В СИЗО такой возможности даже не планируется. То есть невиновным, которым необходимо себя защищать, недоступна правовая информация.

Различий много, но смысл понятен: невиновных ограничивают во всём с максимальным. Зачем — понятно. Ведь даже женские СИЗО, чьё существование противоречит закону, всё же существуют. Система должна генерить виновных — именно они потом будут работать на зоне и кормить ФСИН. Кому всё это выгодно — догадайтесь сами. А вот что можно сделать — пишу тут постоянно.

Защищая других, защищаем себя.

*#Оттуда, ФСИН*

## Надежда. 22.02.2019

После каждой сломанной надежды приходится выдерживать удар уныния. Это расплата за надежду. Так что к тюремным «не верь, не бойся, не проси» я бы добавила «не надейся». Вернее, «надейся только на себя». Продлили стражу на три месяца. Переживём и это. Свобода — она внутри.

Мне нельзя на волю, не имею права,

Можно лишь от двери до стены.

Мне нельзя налево, мне нельзя направо,

Можно только неба кусок,

Можно только сны…..

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Волокита от СД под прокурорским соусом. 26.02.2019

У нас состоялось потрясающее судебное заседание. Следствие набралось цинизма иобвинило нас в волоките при ознакомлении с материалами уголовного дела. Это был настоящий театр абсурда!

Я уже писала, что знакомлюсь с делом уже более полугода, и уже пройдены варианты судебной защиты от произвола следствия при организации процесса ознакомления.

И вот заявление следствия: “Обвиняемые затягивают процесс, поэтому необходимо ограничить время ознакомления с материалами уголовного дела до 10 марта 2019 года.»

В материалах, которые следствие предоставило суду, было очень много забавного. Ну, во-первых, следователь так и не научился правильно заверять документы в соответствии с нормативными требованиями, а потому все представленные материалы, кроме собственно ходатайства следователя, были юридически ничтожны. А ходатайство следствия без обоснования подлежало отклонению. Но судья думала недолго — отклонила моё заявление по этому поводу.

Я привычно заявила ходатайство о соблюдении принципов равноправия и состязательности процесса — предоставлении мне возможности сидеть рядом с адвокатом, а не пребывать в клетке. Судья опросила всех присутствующих их мнение, все поддержали меня, после чего отклонила моё ходатайство :), сославшись при этом почему-то на УПК. Хотя в УПК не написано, что нас надо держать в клетке.

А вот дальше уже пошла совершенно иррациональная реальность.

Следователь, ловко подтасовывая факты, доказывал свое мнение о волоките обвиняемых. Покажу на примере: в феврале следователь пришел меня ознакомить с делом 1.02 на 45 минут. Следующий визит был только 7.02. А теперь, внимание, трактовка следователя: “За шесть дней февраля Верхова ознакомилась лишь с 146 листами дела”. Посмотрите график (!) и оцените масштабы ”волокиты”. :)

Мои слова о том, что чтение уголовного дела — это не комиксы разглядывать, а анализировать, конспектировать, сопоставлять и выстраивать линию защиты, впечатление на судью не произвели. Информация, что при всём при этом моя скорость ознакомления составляет более 100 листов в час, тоже осталась без внимания.

В графике практически при каждой встрече со следователем я фиксировала, что приносимые материалы не является уголовным делом, поскольку не оформлены должным образом, что требуемые мною тома мне не предоставляются, а это препятствует процессу ознакомления, что существуют многочисленные жалобы на следователя по поводу волокиты в предоставлении мне томов уголовного дела — всё бесполезно.

А на график ознакомления судья просто избегала смотреть. Как на чёрную метку всему этому действу.

Отдельным юмористическим номером представления явились рапорты следователя, что приходил ко мне в СИЗО — знакомить с материалами дела. Некоторые выдержки: “Я вызвал

Верхову в 10:00 а она явилась только в 11:30", "Верхова ушла на обед и не вернулась, хотя я её ждал."

Представляете? :) Честно попыталась объяснить в суде, что вообще-то СИЗО — режимное учреждение, скажем так, даже строго режимное. И поэтому Верхова на свои передвижения в принципе влиять не может никак. Как отконвоировали, так и пришла. Но версия следователя о волоките, которую допускает Верхова, слоняясь по СИЗО, нашла поддержку у судьи.

Итог: "Обвиняемые используют предоставленное для ознакомления время нерационально, то есть умышленно злоупотребляет своим правом на ознакомление и явно затягивают время ознакомления с материалами уголовного дела".

Финита!

Смотрите Постановление, если не верите.

Вот и получилась отличная иллюстрация к материалу Судебная защита.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Убийца поневоле. 06.03.2019

Пьяный муж гонялся за женой по квартире с ножом. Бедная женщина спряталась в ванной. Мужик стал выламывать дверь, не выпуская ножа из руки. Пьяный же. Порезался, да так, что чуть не убил себя. Скорая, полиция. Мужик рассказывал, как было, жена тоже. Но… в квартире больше никого не было. А значит, правильная версия — только у следствия: «незавершённое убийство». Посадили женщину на три года. Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Любимый город. 06.03.2019

В Питере скоро весна. Она уже рядом. Мелькает солнечными золотинками на граните набережных. Отмытый Невский будет улыбаться под весенним дождём. Холодные сфинксы будут невозмутимо смотреть на движение льда из Ладоги в Балтийское море. Стылый ветер будет насквозь прохватывать гуляющих по набережным.

Тоска по городу — новое для меня чувство, я никогда не расставалась с ним так надолго.

Переулочки Васильевского, проходные дворы центра, изгибы и великолепные здания Петроградки, мосты, мостики, мостищи… :)

Вернусь — буду долго бродить по улицам, впитывая ощущения любимого города.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Дисциплинарка. 10.03.2019

В СИЗО есть правила, и за их нарушения грозят разные кары. Во время движения к прогулочному дворику, камера где-то срисовала нас с руками не за спиной. Нарушение, рапорт, объяснительная. Затем нарушителей вызывают на дисциплинарную комиссию. Несмотря на абсолютную

ерундовость повода (для нарушения достаточно, например, поправить воротник или… нос почесать), всё серьёзно — на комиссии присутствуют и зам. начальника, и опер, и режимник, и воспитатель, и даже психолог. И приходится (под видеозапись к тому же) объяснять причины нарушения.

Было сложно. :) Особенно потому, что на втором году содержания в СИЗО руки за спиной держатся уже автоматически — надо и не надо, поэтому внятных объяснений про нарушение дать не могла. В лучших советских традициях высказались все присутствующие, вердикт: провести профилактическую беседу.

Несмотря на неизбежный налёт иррациональности происходящего, не всегда и не всё заканчивается так доброжелательно. Можно и выговор получить, а потом и карцер. В принципе — понятно, режимное учреждение просто обязано регулировать порядок, но навыки говорить «я больше не буду» основательно позабылись с детства. :)

Ну и анекдот туда же:

«Имеет ли право нотариус тыкать меня в бумаги головой, если я пятый раз расписываюсь не в том месте?»

Берегите себя :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Небайка про медиков. 12.03.2019

В нашей камере несколько человек периодически падают без сознания: букет болезней, стресс, перепады давления. У нас для таких случаев — нашатырь и валидол.

И вот валидол закончился. Обратились к медработнику. Ответ замечателен: «Вы на нас жалуетесь, поэтому валидола я вам не дам.»

Медицина в СИЗО. Выживает сильнейший.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Словарные неожиданности. 14.03.2019

Что знает словарь о мужчине и женщине? Толерантность межполовых отношений, подгнивающая в Европе, уже имеет свои корни в словаре Ожегова. Читаем: женщина — лицо, противоположное мужчине по полу. Мужчина — взрослый человек, лицо, противоположное женщине по полу.

Каково, а?

И мужчина хотя бы взрослый. :)

А потом удивляемся деформации семьи. Даже словарь толком ничего не знает о мужчинах и женщинах. :)

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Тюрьма и воля. Обмен опытом. 17.03.2019

Девушка рассказывала: ходит знакомиться с делом, следователь приносит тома и сидит, пока она читает. Слово за слово…

Следователь из другого города, живёт в ведомственной гостинице, условия более чем спартанские. А тут уже бывалая «сиделица», вооружённая опытом поколений зэчек.

Просветила следователя — как суп кипятильником сварить, как еду в чайнике разогреть, как картошку без плиты пожарить и т.д.

Такой вот мастер-класс получился. :)

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Страшный сон. 19.03.2019

В тюрьме многие пишут стихи. И многие знают про мой блог. Вот передали стихи для публикации.

Когда закрываются двери
С диким лязгом, что скрежет металла,
Ударяясь о стены, режет
Слух и душу большого централа,

Сквозняком здесь продолы дышат,
Мерзнет даже стальная решётка.
На дверях здесь всё время пишут:
«Ключ повернуть на два оборота».

Здесь глаза у дверей и окон,
И у стен есть уши свои.
Здесь особый живёт закон
Службу здесь несёт конвоир.

Отбывает здесь срок свобода,
Залетающий снег в январе,
Отбывает здесь даже погода
В прогулочном страшном дворе.

И свободе заткнули рот
За спиной держит руки она.
Гнилой вечностью кажется год,
Даже месяц без края и дна.

Здесь отчаянье тихо томится
За большими дверями надежд.
И свобода всё время снится.
Счастья большего, кажется, нет.

Это место забыл даже Бог,
Чудо тоже идёт стороной.
Это место — распятье дорог,
И распятье висит в изголовье.

Бесконечно длинные ночи,
Почерневшие тянутся дни,
Даже солнечный свет не хочет
Посетить той несчастной страны.

Поутру прилетают птицы,
Птицы — черные вороны.
Прилетают, чтоб вдоволь напиться
Слёз проклятой всеми страны.

Верю, что этот страшный сон
В дымке утра растает где-то,
За спиной нервно лязгнет засов,
А навстречу мне — тёплое лето!

*Васильева Н.В.*
*02.01.2018*

*#Тюремные хроники, тюремный фольклор*

## Адвокатский барьер. 20.03.2019

В московских СИЗО у адвокатов при посещении подзащитных требуют разрешение следователя. С точки зрения здравого смысла — дикость. Но про здравый смысл не буду сегодня :). Написала запрос в УФСИН по Москве — почему это вдруг вы так отличаетесь от России всей?

Не прошло и пяти месяцев, как получила ответ. Перевожу: мы не против адвокатов, но должны знать о его отношениях со следствием.

Непременно продолжу эту содержательную переписку.

Берегите себя!

*#Оттуда, ФСИН*

## Необратимость. 22.03.2019

Очень короткая история. Беременная девушка оказалась в СИЗО. Резус-отрицательным и так непросто, а при тюремной медицине просто опасно быть беременной. Шансы, что суд примет это во внимание и позволит хотя бы домашний арест — минимальны. Её отвезли на аборт, затем — в суд, продлить арест. Ребёнок убит. Одиннадцать недель ему было. Девушка сидит дальше. Куда там Достоевскому с его слезой ребёнка. В нынешних условиях даже жизнь ребёнка — недостаточное основание для гуманизма.

Нельзя наказывать детей за преступления матери. Даже за преступления. Что уж говорить просто об обвинении в преступлении. Это сродни каннибализму. Знает ли следователь, что он — убийца? Вряд ли. Знает ли законодатель о таких следствиях закона? Вряд ли. Помнит ли кто-то об «Эре милосердия»? Вряд ли. Есть ли шанс изменить ситуацию? Да.

1. Женские СИЗО не должны существовать в нынешнем виде. Они противоречат не только ст. 58 УК РФ. Они противоречат не только национальным приоритетам. Они противоречат смыслу жизни

любого нормального человека. Альтернатив содержанию в СИЗО — более, чем достаточно. В том числе и обеспечивающих защиту общества от опасных элементов.

2. Необходимо в обязательном порядке для беременных женщин и женщин с детьми применять при назначении наказания ст. 82 УК РФ (отсрочка исполнения наказания до совершеннолетия детей). Как показывает статистика, женщины, получив отсрочку приговора, крайне редко идут на нарушения.

3. Надо исключать репрессивный подход к любому, попавшему под обвинение в преступлении. Нельзя ломать жизни до вступления приговора в силу. (После вступления — тоже не надо ломать, но об этом — в другой раз). Необходимо запретить аресты из зала суда после оглашения приговора. Приговор вступает в законную силу только после рассмотрения апелляции.

4. Не мщение, а помощь. Во имя счастливой жизни потомков. Как? Об этом постоянно пишу здесь: freeverhova.ru. Простые и эффективные решения есть. Дело за реализацией.

Берегите себя.

P.S. Вопрос к тем, кто может, но не действует: каково это — жить, зная, что дети погибают? Коснуться может каждого. Только действовать будет поздно.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Скорая не поможет. 24.03.2019

Скорая, приезжающая в СИЗО, к сожалению, факт нередкий. При том, что вызывается она только действительно в крайних случаях, для тех, что уже на грани жизни и смерти — эта медицинская рулетка всем сидельцам известна.

Давно не пытаюсь искать здравый смысл в системе ФСИН, которую снабжают «клиентами» правоохранители, но ведь очевидно, что любой приезд скорой — это не только ЧП. Это иллюстрация неправильности содержания в СИЗО в принципе. Не место больным невиновным людям в СИЗО. В чём бы их ни обвиняли. И беременным не место.

У нас как-то подзабылось, что содержание под стражей — самая строгая мера пресечения, и лепят её всем подряд. Нужно постепенно менять ситуацию. Шаги прописаны.

«Мир — на самом деле всего лишь описание мира, программа восприятия, которую закладывали в сознание с самого рождения.»

К. Кастанеда, «Путешествие в Икстлан».

Мы можем изменить всё к лучшему.

Защищая других, защищаем себя.

*#Оттуда, ФСИН*

## Спасибо алкоголикам. 26.03.2019

Когда-то я работала геологом. И очень хорошо помню ощущение, когда руки-ноги неохотно слушаются, поскольку застыли от долгого пребывания на морозе. Там у нас был костерок, да закопчёный чайник с кипятком.

А тут… тут у нас есть душ! Очень повезло, что женскому СИЗО досталось здание бывшего ЛТП (лечебно-трудовой профилакторий).

Понятно, что без душа алкоголикам-то не жить, а вот невиновным людям такая роскошь обычно не положена. Даже в этом столичном СИЗО около трети камер — без душа. И без перспектив.

Отменно горячая вода, горячий чай и всякая одежда дают возможность согреться и терпеливо ждать весеннего тепла дальше.

Берегите себя.

Поделитесь!

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Наводчик. 28.03.201

Пошёл как-то мужик мусор выносить. С ведром. Когда заходил в подъезд, за ним зашли трое. Так бывает. Совпало. Вместе подошли к двери и зашли. Многие бывают в такой ситуации. А к вечеру мужика арестовали. Была квартирная кража, отследили записи видеокамер в подъезде, вычислили «наводчика» — мужика с ведром.

Арестовали, допросили, поместили в СИЗО. Четыре месяца просидел мужик, прежде чем выпустили его. И тому радуется — могли ведь и посадить. И не докажешь никому, что просто пошёл мусор выносить. С ведром.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Дневничок. Борщ. 31.03.2019

Ежедневный борщ что-то настораживает. Он, конечно, красный, но на этом плюсы заканчиваются.

Помню о том, что главное — не умение, а целеполагание. Оттуда и вопрос, что за цели преследует СИЗО борщом?

*#дневничок, Оттуда*

## Следствие и предметы. «Ейной мордой в харю тыкать». 01.04.2019

Оформление уголовных дел волнует не только меня. Тома не заверены, не оформлены должным образом. Про нумерацию карандашом я теперь всё знаю из инструкции МВД по документообороту (расскажу отдельно), а вот следователь — не знает. Поэтому и рождаются такие перлы:

«Изучение материалов уголовного дела показало, что все тома сшиты и пронумерованы, уголовно-процессуальное законодательство не определяет порядок проставления нумерации листов дела, в связи с чем следователь свободен в выборе используемых предметов для нумерации уголовного дела.»

И автор этого — руководитель следственной группы! :)

Берегите себя.

*#небайка, Уголовное дело*

## Цифровые технологии в МВД. Мартышка и очки. 03.04.2019

Ответы на наши ходатайства следователю порой бывают весьма занимательны. В нашем деле много нарушений, связанных с самим возбуждением уголовного дела, равно как и с его выделением. Вполне естественное желание — пролить свет на тёмные места, запросив выписку из журнала регистраций преступлений.

А вот и ответ!

«Данное ходатайство рассмотрено и удовлетворению не подлежит, поскольку в настоящее время в МВД России ведётся электронный журнал регистраций, выписку из которого изготовить не представляется возможным.»

:))

Берегите себя.

*#небайка, Уголовное дело*

## Прикосновение к чуду. 05.04.2019

Мы тут редко надеемся на чудо, судебную справедливость и торжество закона. Но мы отчаянно надеемся, что наши подруги не вернутся с очередного выезда в суд, уйдут домой. И когда это происходит — это праздник у всех, кто об этом узнаёт.

А ещё иногда на свободу уходят из СИЗО. Такие девчонки уходят через двор, с сумками, к выходу, в сопровождении сотрудника. И все камеры прилипают к окнам, пытаясь хоть так коснуться той свободы, до которой необходимо дожить. Чистая бескорыстная радость накрывает всех.

Мы редко надеемся на чудо, но в такие моменты мы его видим.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Незнание и наказание. 07.04.201

Жила-была девушка. Взяла как-то деньги в долг, а вернуть вовремя не смогла. Время суровое — статья «Мошенничество»: пять лет условно. Повезло. Жила, работала, выплачивала долг. Прошло четыре с половиной года, от долга — менее десяти процентов осталось, и тут её арестовывают. Скорый суд — и в СИЗО. Нарушила условия условного срока — получи пять лет реального заключения.

Не знала девушка, что на условном сроке надо ходить отмечаться. Судья не сказала, да и не должна. В приговоре не написано. А адвокат был по назначению — ему вообще всё равно. Такая вот слепая фемида получилась.

Права у нас на суде зачитывают, а обязанности — нет. Хотя по умолчанию-то в законе и так прописано. Исправить — настолько просто, что даже писать не буду. А девушка ближайшие пять лет проведёт в колонии.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## СИЗО как мера пресечения. 08.04.2019

Как известно, беспомощность следствия обычно прикрывается заключением в СИЗО. Напомню, что в СИЗО — люди невиновные, они сидят там до суда, где их могут признать виновными. Подробности тут (http://freeverhova.ru/sizo-i-zona-dva-fokusa-nelogichnosti/). Содержание в СИЗО — самая строгая мера пресечения. СИЗО — уже наказание невиновных. Непонятно? Попробую объяснить по-другому: а давайте людей до суда отдавать на органы, а давайте посылать их родственников на исправительные работы, пока «преступники» ждут суда, а давайте с предъявлением обвинения лишать людей гражданских прав (а суд потом разберётся — зря или нет). Это не нравится? Кажется диким? Неправильным? Всплывают слова о правах человека? Вот!

А давайте… просто представим, что это уже есть. Уже в СИЗО люди теряют органы, здоровье, а иногда и жизнь из-за доступа к медицине и «специфических» условий содержания. Уже сейчас заключение человека в СИЗО обрекает его родственников на смену режима жизни и всё возрастающие нагрузки. Уже сейчас люди, поавшие в СИЗО, лишаются всего: работы, бизнеса, домашних животных, детей, возможности защищать себя как в уголовном, так и в гражданских процессах. А у следствия это называется раскрывать преступления «через камеру».

Невозможно решать проблемы, о которых не знаешь. Бесполезно принимать законы, если не знаешь — как они работают. Все знают, что фашизм — это плохо. И то он периодически вылезает в слабых умах. Что уж говорить о правоохранительной системе, которая для большинства — чёрный ящик?

Решения есть. Есть решения. Простые. И рабочие. Не требующие затрат. Главное — знать. Прочитайте сами и поделитесь информацией: http://freeverhova.ru/obzor/. Подключайте журналистов. Не только избранным дано говорить: «Это наша страна». Изменить ситуацию можно. И достаточно быстро. И если не ради себя, то ради детей и внуков. В нашей стране.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Посылки счастья. 08.04.2019

Посылки в СИЗО — это не просто материальные ценности и кусочек тёплого внимания. Посылки — это возможность выйти из камеры, пройтись по двору под открытым небом, подставить лицо солнцу, вдохнуть ветер, поймать капли дождя или снежинки, испытать предвкушение сюрприза при вскрытии коробки. А потом… возвращаться в камеру под тем же небом и перебирать милые приветы от родных и близких.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Отзывы и дополнения. 09.04.2019

Полтора года скоро моему репортажу из СИЗО. Знаю, что читают не только близкие и друзья, но и многие другие. Очень интересны взгляды со стороны на описываемые моменты: мнения сотрудников ФСИН, правоохранителей, бывших заключённых :)), родственников тех, кто столкнулся с этой машиной и… всех-всех-всех. Присылайте сюда, дополним реальность подсветкой многих взглядов.

*#обращения, Оттуда, Репост*

## Форма поддержки. 11.04.2019

Ломаются не только заключённые. Ломается и психика сотрудников СИЗО. За год, проведённый в московском СИЗО, довелось видеть и это. Как они теряют желание вообще что-либо делать, просто ждут, когда закончится очередная смена. Мы становимся для них просто помехой, которая ослажняет ожидание.

Отсюда и срывы по пустякам, и дурацкие придирки, и бесконечная усталость в глазах.

Сломавшийся сотрудник слабо реагирует на раздражители, не отзывается на просьбы, не регистрирует заявления, «забывает» про прогулку и выдачу ножа.

Обычно это бывает после отпуска (возвращение в тюрьму- тяжело) или перед скорым увольнением. Таких сломанных жаль, но мы им помочь не можем, остаётся только быть внимательными в их смены, беречь себя от их истерик. И… продолжаем традицию дарить добро всем, кто не успеет отбиться. :)

Берегите себя.
*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Флэшка. 13.04.2019

По Хокингу, с обратимостью можно встретиться вблизи чёрных дыр, но возврата оттуда нет. А как на самом деле?

По регламенту, после окончания следственных действий, обвиняемому вручается обвинение в окончательной редакции и начинается процесс ознакомления с материалами уголовного дела. Некоторые московские следователи умудряются и из этого устроить фарс.

Приходит следователь, девушку приводят к нему из камеры. В присутствии адвоката следователь вручает девушке, содержащейся в СИЗО, флэшку (!!) с обвинением. А когда она возмущается таким… издевательством в связи с невозможностью доступа к компьютеру в условиях СИЗО, следователь вызывает заготовленных понятых, которые фиксируют вручение «обвинения».

Обвиняемая с адвокатом пишет жалобу. Ответ на жалобу замечателен:

«Согласно ч.8 ст.172 УПК РФ, следователь вручает обвиняемому и его защитнику копию постановления о привлечении данного лица в качестве обвиняемого. Учитывая, что объем постановления о привлечении в качестве обвиняемой составляет 53 тома, у следователя в настоящее время отсутствует техническая возможность изготовить и вручить обвиняемой его копию на бумажном носителе.

Вместе с тем, ч.8 ст. 172 УПК РФ не указывает на вручение копии постановления в качестве обвиняемого незамедлительно после его предъявления.

В связи с изложенным, обвиняемой и её защитнику вручена копия вышеуказанного процессуального документа в электронном виде, содержащаяся на переносном электронном носителе информации.

После получения технической возможности обвиняемой незамедлительно будет вручена копия постановления и привлечении в качестве обвиняемой на бумажном носителе.»

Вдруг подмала, что в УПК вооще такие очевидные вещи не пишутся — в течение какого времени должен быть вручен документ. :)

Вообще, вольное понимание (непонимание) УПК со стороны следствия в последнее время настолько часто встречается, что иногда начинаю думать о необратимости разложения правоохранительной системы.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Нищета и воровство. 14.04.201

Люди порой лишаются банковских карт. Оставляют в банкоматах, роняют у кассы, теряют на улице. Другие люди порой находят эти карты, и… кто-то отдаёт в банк, кто-то опускает в банкоматы, а кто-то идёт в магазин и покупает себе еду. Самую необходимую. Воспринимая найденную карту как подарок судьбы. Например, хлеб, мясо, майонез — шестьсот рублей. Только повсюду видеокамеры, вычислить покупателя с чужой картой можно быстро и несложно. А это — преступление по статье 158 ч.2 «Г» УК РФ — наказание до пяти лет лишения свободы. За те самые шестьсот рублей человек получил четыре года за покупку по чужой карте. И следователи, с одной стороны, понимают, что не от хорошей жизни страдает социальная ответственность нашедшего карту, а с другой… палки, раскрытие, возмездие. И дел таких совсем не единицы. Карты теряются достаточно часто.

Могу только снова и снова повторять: нельзя сажать людей за преступления, совершённые впервые. Надо сохранять людей для общества. Есть масса вариантов — не плодить безнаказанность и не ломать жизни людям и их близким. Перечитайте:

Старые песни (http://freeverhova.ru/staryie-pesni/)

Манифест (http://freeverhova.ru/manifest/)

Тюрьма. Краткое содержание. (http://freeverhova.ru/prison-outline/)

Ситуация не безнадёжна и решаема. Надо просто знать и хотеть. А пока даже судьи не знают (http://freeverhova.ru/volokita-ot-sd-pod-prokurorskim-sousom), что в СИЗО ходят под конвоем.

Нельзя решить проблемы, не владея информацией по ней. Но нормальному человеку неинтересно про тюрьму. Но попробуйте. Читайте информацию тут — аналогов нет, информация изнутри по другую сторону решётки тщательно скрывается от общества. Да и что говорить — стандартная мысль: «Преступники должны быть наказаны». Верно, только… почитайте тюремные

истории (http://freeverhova.ru/tag/prison-stories/) — сколько судеб сломано просто за лишнюю галочку в расследовании. просто потому, что кажется, что это нас не касается. Когда коснётся — будет поздно.

Когда нацисты хватали коммунистов, я молчал: я не был коммунистом.

Когда они сажали социал-демократов, я молчал: я не был социал-демократом.

Когда они хватали профсоюзных активистов, я молчал: я не был членом профсоюза.

Когда они пришли за мной — уже некому было заступиться за меня.

— Мартин Нимёллер.

Берегите себя.

*#Оттуда, Репост, Тюремные истории*

## Ответственность Центробанка. 17.04.2019

В деле есть замечательные документы про деятельность КПК «Семейный капитал» — ответы на запросы надзорных органов: цифры, факты, ссылки на законы.

Но поскольку это было уже при временной администрации, назначенной Центробанком, то к каждому документу снизу от руки — приписка от имени руководителя временной администрации Романчук О.В.:

«Настоящая справка подготовлена сотрудником Кооператива, в связи с чем временная администрация не располагает информацией, ответственности за предоставленные сведения не несёт.»

Представляете? :) Вот она — позиция руководителя: «Это подготовили мои сотрудники, поэтому я тут ни при чём.»

Это всё, что вам надо знать про временную администрацию, назначеннную Центробанком в КПК «Семейный капитал».

*#Оттуда, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Правоохранительная система и ФСИН. Парадоксы и решения. 18.04.2019

За год с лишним публикаций накопилось много. Не всегда удобно в них ориентироваться.

Составила небольшой обзор наиболее важных, на мой взгляд, материалов по поводу происходящего в правоохранительной системе и ФСИН.

Тюрьма. Краткое содержание: http://freeverhova.ru/prison-outline/

Несколько слов о тюрьме — что она делает с людьми, как действует на новичков, как можно выжить, к чему надо быть готовым.

Обращение в минюст: http://freeverhova.ru/pvr/

Правила содержания обвиняемых и подозреваемых (ПВР) пришли ещё с 30-х годов прошлого века, незначительно изменившись в конце 50ч. У нормального человека этот абсурд вызывает только удивление. А поскольку ПВР находится в ведении Минюста, то вполне логичным было обращение в Минюст (безответное) с простыми вопросами на базе здравого смысла.

Тюремное питание: http://freeverhova.ru/sizo-food/

Бытовые условия — не единственная угроза жизни и здоровью человека в тюрьме. Огромная роль в разрушении здоровья играет тюремное питание. Несмотря на периодические бодрые статьи в газетах на эту тему, положение достаточно печальное.

Кисель жизни: http://freeverhova.ru/sbalansirovannoe-pitanie-na-72-rub-v-den-kisel-zhizni/

Разбираюсь в этой теме с привлечением Минюста и иИнститута питания. Обнаружились удивительные факты.

Большая разница: http://freeverhova.ru/big-fifference/

Проведя в СИЗО достаточно много времени, изучив опыт сокамерниц, понимаешь, что между тем, что написано в законе и тем, что на самом деле — большая разница.

Состязательность процесса: http://freeverhova.ru/process-competition/

Никакого равноправия сторон, никакой состязательности процесса. В каждой мелочи содержание в СИЗО делает вашу защиту практически невозможной.

Зачем закон человеку, которого посадили: http://freeverhova.ru/prison-rules/

И вам сложно даже сказать — в чём нарушение ваших прав, поскольку законы вам недоступны.

УК разрешает пытки: http://freeverhova.ru/pytat-nelzya-pomilovat/

Содержащиеся в СИЗО невиновные люди уже за людей не считаются. А непризнание вины является отягчающим обстоятельством. Да, это правильно, если речь идёт о виновных преступниках, но у нас количество невиновных преступников постоянно растёт: http://freeverhova.ru/tag/prison-stories/. Но даже для закона — сидельцы СИЗО — уже не люди.

Личные данные: http://freeverhova.ru/lichnye-dannye/

В уголовном судопроизводстве сохранилось много «традиций» диких и опасных для нормальных людей.

Легализованные пытки: http://freeverhova.ru/legalized-torture/

Как известно, арестованных перевозят автозаки. Но мало кто знает — что там происходит внутри. Автозаки убивают людей. У всех на глазах.

Глухонемая переписка (публикация следует)

Жалобы в надзорные органы в настоящее время практически бесполезны. Пока не попытаешься — даже представить себе не можешь — насколько может быть абсурдным этот процесс.

Честь и достоинство: http://freeverhova.ru/chest-i-dostoinstvo/

Работа следствия зачастую сводится к голословным учтверждениям о преступной сущности обвиняемого человека. И ни суды, ни прокуратура уже не замечают этой дикости.

Обвинение как форма отрицания Конституции: http://freeverhova.ru/obvinenie-kak-otricanie/

И даже адвокаты не замечают — что же на самом деле пишется в обвинении.

Судебная защита: http://freeverhova.ru/sudebnaya-zashhita/

В Конституции прописан механизм судебной защиты, но во что он превратился на деле — мало кто знает.

Бить или не бить: http://freeverhova.ru/bit-ili-nebit/

Человек в СИЗО и прочих подобных учреждениях — полностью во власти ФСИН. А мировоззрение внутри ФСИН мало изменилось с 30-х годов. И даже удивительно, когда информация выходит наружу.

Оптина пустынь: http://freeverhova.ru/optina-pustyn/

Что формирует у людей тюрьма, как это устроено и чем грозит обществу. И главное — что делать.

Жизнь после: http://freeverhova.ru/after-life/

Не зная, что происходит с человеком в тюрьме, сложно и предположить, насколько непростой будет для него жизнь на воле. Но решение есть.

Путь к счастью: http://freeverhova.ru/way-to-happinness/

Каждый несёт свою тюрьму в себе и абсолютно, безусловно меняет жизнь вокруг себя. Причины движения АУЕ — лишь следствие системы.

Старые песни: http://freeverhova.ru/staryie-pesni/

Что сейчас важнее для государства? Мстить или крепнуть и развиваться? Не слишком ли велики потери?

Манифест: http://freeverhova.ru/manifest/

Чтобы действовать, надо знать — к чему мы хотим прийти. Пусть шаги поначалу будут маленькими, но они будут в правильном направлении.

Петиция: http://freeverhova.ru/petition-sizo/

Любой путь начинается не только с первого шага, но и с определения цели этого пути.

Жалоба в Конституционный суд: http://freeverhova.ru/docs/zhaloba-11-sent-2018/

Отдельная тема — женщины за решёткой. Ведь по закону женские СИЗО в принципе не могут существовать. И пусть Конституционный суд труднодоступен, но всё равно следует добиться правильного решения.

Решение по незаконным арестам: http://freeverhova.ru/unfair-imprisonment-solution/

Есть и решение, исключающее незаконные аресты.

Защита от дурака: http://freeverhova.ru/zashhita-ot-duraka-kak-pisat-zakonyi/

Любой принимаемый закон не должен допускать двоякого толкования, или ничего не изменится.

Флэшка: http://freeverhova.ru/fleshka/

Конечно, всегда будет место маразму, но мало-помалу справимся и с этим.

*#Оттуда, Репост*

## Дневничок. Логика ФСИН.

19.04.2019

Логику и здравый смысл внутри ФСИН обнаружить трудно. Тут как в операции «Ы»: «Почему Ы?» — чтобы никто не догадался.» :)

*#дневничок, Оттуда*

## Дневничок. Тайный пароль. 20.04.2019

Есть фраза, по которой мы всегда узнаём своих. :) Это как пароль и отзыв. Фраза из доклада на утренней проверке: «Всё хорошо, гулять идём.»

И если кто-то после слов «всё хорошо» добавляет «гулять идём», то это явно свой. :)

*#дневничок, Оттуда*

## Пиджак. 21.04.201

Эта тюремная история сравнима разве что с историей про золотую цепочку.

Две кубинки снимали вместе квартиру. Приехали в Россию по делам. Закупки. Порой развлекались на дискотеках. Итак, ночной клуб. Девушки. Танцы. Уже под утро. Все не совсем трезвые. Девушке зябко. Галантный южанин набрасывает ей пиджак на плечи. Танцы продолжаются. Предутренняя истома и усталость. Девушка уходит домой. С пиджаком. И только утром понимает, что украла его. Но… как и что теперь исправить — непонятно ей.

Проходит месяц. Девушка вместе с подругой приходит в тот же клуб. А там… легко догадаетесь — тот самый галантный южанин. Увидел девушку, позвонил в полицию. Полиция отреагировала — забрала девушку, ну и подругу заодно. Подруге сказали — дашь свидетельские показания и пойдёшь домой. Но домой подруга не вернулась — оказалась в СИЗО. Причём по-русски практически не говорила, тем сложнее ей было понять заморочки правоохранителей и методы следствия. Дело завели по статье «Кража». Но подруга пиджак не трогала совсем, да и даже не видела толком. Поэтому получила статью «Мошенничество». А что? Ясно же, что корыстная девушка, злоупотребляющая доверием. Да и показания южанина тоже менялись. Как в том фильме: «Куртки кожанные… три!» :) В пиджаке, оказывается, была куча денег: в одном кармане доллары, в другом — рубли. И много. Его спрашивали: «Чего ты пиджак-то с такими деньгами на незнакомую девушку надел?» На что он гордо отвечал: «Я — джентельмен.»

Суд четыре (!) раза возвращал дело на доследование, не понимая, что на чём повязано. Подруга больше года провела в СИЗО, подучила русский заодно. Что её и сгубило.

«Добрый» следователь посоветовал ей признать вину, взять особый порядок и выйти за отсиженное. В противном случае запугал бесконечностью судебных разбирательств. Доверчивая латинос подписала необходимые документы и получила два года восемь месяцев реального срока. Полтора года в СИЗО. Собирается в колонию. Такой вот пинджак с карманАми.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Следственная веранда. 24.04.2019

Во двор СИЗО привезли несколько поддонов пенобетона. Знаем, что следственных кабинетов не хватает, что адвокатам попасть к нам трудно. И сразу представились… летние кабинеты в виде веранды. Пусть за решёткой, но на свежем воздухе.

Надежды не оправдались. :)

А рисунок остался. :)

Живём дальше.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Недосмотр Патриарха. 25.04.2019

Ангел, графитиПатриарх Московский и всея Руси Кирилл призвал иключить аборты из системы обязательного медицинского страхования. А его юридический департамент предлагает зафиксировать законодательно права эмбрионов. По словам Патриарха, уничтожение эмбриона, а тем более плода — это уничтожение человеческой личности, и про фашистскую Германию Патриарх вспомнил.

Мне тоже есть, что вспомнить. И рассказать Патриарху. Для начала расскажу про это (http://freeverhova.ru/neobratimost/), а потом спрошу: знает ли Патриарх о разрушенных семьях и многочисленных “сиротах”, чьи матери находится в СИЗО (http://freeverhova.ru/tag/prison-stories/)?

Не преступницы, а просто арестованные. 9500 женщин в СИЗО — прикиньте — сколько детей потеряли мать! А ведь очень много многодетных, которым избрали эту, самую строгую, меру пресечения. Так ли важно наказать женщину, даже совершившую преступление, если в итоге наказаными остаются дети? Дети!! Права эмбрионов — это фантастически важно, а что делать с правами детей?!

В УК РФ есть статья, учитывающая эти права. Статья 82. Отсрочка наказания до совершеннолетия детей. Очень редко применяется. А должна — в обязательном порядке. Вот поле для патриаршей юрслужбы!

Видел ли Патриарх детей в СИЗО и на зонах? Безвинно наказанных. Детей за решеткой. С рождения! Это не сталинские репрессии, это происходит прямо сейчас. Когда увидела инициативу законодателей — разрешить детям быть в заключение вместе с матерью не три, а четыре года —

не могла поверить! Неужели обязательное применение статьи 82 УК РФ никому не приходит в голову? Неужели они не знают, что продолжительность жизни, иммунитет закладываются в первые годы жизни? Что видят дети в СИЗО? Решетки на окнах. Что слышат? Лязганье дверей. Еда из передачек. Прогулка два часа в день. Только подумайте: дети за решеткой лишены полностью и абсолютно контакта с природой. Птички, зверюшки, цветы — только на картинках, вода — только в виде луж, небо — только кусочек над прогулочным двориком. За что? За преступление матери?

Надо учиться прощать. Хотя бы ради детей. Надо давать шанс матерям. И дело даже не в национальных проектах и повышении рождаемости. Не будет женщина рожать, если не чувствует себя защищенной. Даже оступившуюся женщину необходимо защищать. И дети не должны лишаться матери, если есть хоть малейший шанс этого избежать.

А беременные в СИЗО? А роды в наручниках (http://freeverhova.ru/prison-birth/)? А маленькие узники колонии, никогда не видевшие ни леса, ни речки? Ради чего всё это? И ради чего разговоры о правах эмбрионов, если о существующих проблемах детства за решеткой мало кто знает? Кому не всё равно — помогите донести инфу до тех, кто может повлиять на это. Отправьте и Патриарху, и различным уполномоченным. Получится же!

И… берегите себя.

*#женщины в сизо, Оттуда, Правоохранительная система*

## Комиксы для органов. 27.04.2019

Вдруг подумалось, что мои ходатайства и заявления отметаются порой судами и прочими органами просто в силу неграмотности, необразованности, неспособности понять даже ссылки на законы. Другое поколение, другое образование, другая логика. Моё дело — доносить информацию любыми путями. Не понимают слов — буду дополнять тексты картинками. :) Глядишь, при рассматривании картинок и понимание появится. Следите за публикациями — покажу и расскажу.

Не скучайте.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Арбитраж для СИЗО. 29.04.2019

Получила копию заявления в арбитражный суд от конкурсного управляющего НПО. Что сделал этот чудесный человек? Взял данные из налоговой: учредители и органы управления, составил реестр кредиторов, список имущества НПО и… решил привлечь к субсидарной ответственности учредителей и руководство.

В заявлении есть много прекрасных мест. У НПО были открыты счета во многих кооперативных участках в разных городах в нескольких банках. «Данные факты свидетельствуют о подозрительных сделках должника.»

Управляющий перечисляет имущество НПО, а затем: «Конкурсному управляющему судьба этого имущества неизвестна.» Потрясающе! Как будто он и не подписывал протоколы у следователя, где это имущество признано вещественными докозательствами и передано ему на ответственное хранение.

Дальше больше. :):

«Должник по месту гос. регистрации не находится. Руководитель должника не обеспечил внесения соответствующих сведений в ЕГРЮЛ.» При том, что копии этого заявления направлены руководителям в СИЗО, значит, в курсе про аресты. Поэтому даже не знаю — как воспринимать это прекрасное утверждение: как сарказм, издевательство или пофигизм. Улыбнулась, представив реакцию начальника СИЗО на мою попытку внести в ЕГРЮЛ, зарегистрировав НПО по месту нахождения руководства. :))

Ещё из истинно прекрасного: «Установить фактическое нахождение имущества и документов должника не представляется возможным.» То есть многочисленные здания с адресами в Туксе, Чекмогуше, Астрахани, Питере и т.д., видимо, спрятались на время конкурсного производства. Про документы — вообще несерьёзно — уж документы-то в полном объёме находятся у следствия. И, например, конкурсный управляющий КПК без проблем получил необходимые копии.

А тут: «В результате непредоставления руководителям должника документов» «повлекло невозможность» удовлетворить требования кредиторов, составляющие 4,85 млрд руб. Откуда взялась эта сумму — непонятно), конкурсный управляющий Б.Н.Шаповаленко собирается взыскать солидарно с учредителекй и руководителей НПО, нимало не заботясь, что это противоречит федеральным законам и уставным документам кооператива.

Написала в суд возражение на заявление. Не надеясь на быстрое понимание (уже говорила о серьёзном намерении пользоваться поясняющими картинками) снабдила заявление схемой и отправила в арбитраж.

Очень жаль, что конкурсный управляющий не стал разбираться в ситуации, а ведь он мог бы стать мощной силой во взыскании денег с Временной администрации Центробанка в пользу пайщиков КПК и НПО.

Живём и работаем дальше.

Берегите себя.

*#Оттуда, Уголовное дело*

## Пасха. 30.04.2019

Рано поутру камеры обходил священник с помощником. Поздравил с праздником, освятил нашу еду, окропил щедро святой водой, оставил подарки. Каждому по куличику и яичку красивому. Если учесть, что такой продукт, как яйца, в СИЗО в принципе недоступен, то праздник, конечно. И кулич порадовал. «Яхрома хлеб». Очень достойный. А в остальном… обычное тюремное воскресенье. :)

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Клетка правосудия. 01.05.2019

*Баклажаны фиолетовые.*
*Огурцы зелёные.*

*Не стоит отчаиваться.*
Японское стихотворение.

Заседание суда с участием обвиняемого, находящегося в СИЗО, проходит так: обвиняемого приводят в зал суда в наручниках, помещают в железную клетку с узкими прорезями, чтобы звук проходил. Через эти прорези идёт и общение с адвокатом, и выступление обвиняемых в процессе. Во время заседания адвокаты располагаются за столом, отдельно от обвиняемых, и общение между ними невозможно.

Заседания могут идти часами и содержать очень много важных процессуальных событий. И мало кто рискует навлекать на себя неудовольствие судьи, постоянно прерывая заседание для возможности совещания с адвокатом по ходу процесса.

Клетки — достаточно новое изобретение издевательства над человеком. Ещё не так давно в судах не было никаких клеток. И конвойная служба справлялась со всеми обязанностями. А сейчас арестованный человек практически обречён на приговор в соответствии с позицией следователя. Клетка облегчает задачу обвинения. Становится проще всем, кроме обвиняемого. Ведь человека в клетке проще воспринимать как преступника. Свидетель обвинения уверенно дают свои показания, свидетели защиты начинают сомневаться. Даже судья — тоже человек — не может сопротивляться воздействию картинки «человека в клетке». Потому что нормальному человеку непереносимо видеть невиновного в клетке. И психика услужливо подсказывает: «Он преступник, не переживай.»

Тема обсуждения клеток в российских судах — не нова. Одно время даже В. Матвиенко вмешалась в эту проблему. Пока ничего не изменилось. Что ж, на политиков надейся, а сам не плошай. :) Возможно, на уровне здравого смысла все понимают абсурдность клеток в судах, но даже не подозревают, какое количество законов нарушается при этом.

Написала ходатайство, где указала почти всё. Теперь на каждом заседании суда буду добиваться соблюдения закона. Многие обвиняемые присоединяются к этому движению. Вместе получится быстрее. Скоро в каждой камере нашего, и не только нашего, СИЗО, будет образец этого ходатайства. Справимся и с клетками. Распространение информации — это тоже борьба за справедливость.

Присоединяйтесь! :)

***Ссылки по теме:***
Образец ходатайства против клетки на суде: http://freeverhova.ru/docs/hodataystvo-protiv-kletki-na-sude-ot-29-11-2018/

*#обращения, Оттуда, Правоохранительная система, Решения*

## Дневничок. Вселенная мячиков. 02.05.2019

Скромно отметила годовщину своей просьбы накачать мячики в спортзале. Решила сообщить руководству об этой дате. Заодно поделилась мыслями о функциональности спортивных предметов и представлениями о форме шара. Руководство удивилась. Мячики надулись. Будем играть. :)

*#дневничок, Москва-Шестёрка, Оттуда*

## Российская система наказаний в литературе. 03.05.2019

Чтобы понять всё про систему наказаний, необходимо прочитать следующее:

- А.Г.Каретникова «Маршрут»
- И.Миронов «Замурованные: хроники Кремлёвского централа»
- Е.С.Гинзбург «Крутой маршрут»
- П.Крашенинников «Страсти по праву»

Мой блог freeverhova.ru (файл со всеми постами есть на главной странице сайта)

И вопросов практически не остаётся. Зато ответов много. :)

Берегите себя.

*#книги, Оттуда, Правоохранительная система, ФСИН*

## Законный свет. 04.05.2019

Цивилизация так внезапно зашла в наше СИЗО, что мы даже несколько растерялись. В камеру выдали УК, УПК, УИК, ПВР и 103-ФЗ. Абсолютно всё свежее и новенькое. Это очень и очень хорошо.

Знание закона приводит к ответственности. :)

Берегите себя.

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Таблетки судьбы. 05.05.2019

На вечерней разноске лекарств мне неожиданно выдали две таблетки кеторола. Никому ни на что не жаловалась, ничего не просила. Однофамильцев у меня в СИЗО, вроде, нет. Внимательно подумала — что болит. Не нашла. Забота заинтриговала. Попытки расшифровать знаки судьбы привели к выводу: жизнь — боль, но есть таблетки!

Берегите себя.

*#дневничок, Медицина в СИЗО, Москва-Шестёрка, Тюремные хроники*

## Обзор 2. Тюремные истории. Избранное. 06.05.2019

Попасть в тюрьму можно разными способами. Можно и абсолютно случайно. Ну а попадание в СИЗО почти неотвратимо влечёт за собой обвинительный приговор суда и этап в колонию. Неприкасаемых нет. Но… предупреждён — значит, вооружён.

Вот очень типичные тюремные истории:

Турфирмы: http://freeverhova.ru/small-business/

Опасно быть не только директорами организации, но и просто менеджером по работе с клиентами.

Самоцветы: http://freeverhova.ru/russian-stones/

Ситуации, когда нарушается закон, могут быть созданы и искусственно «компетентными товарищами». У всех свои цели.

Детдомовка: http://freeverhova.ru/detdomovka/

Когда за человека некому заступиться, могут возникнуть самые дикие обвинения.

Подруга-наркоманка: http://freeverhova.ru/narkopera/

Вы можете делать самые банальные и безобидные вещи и… надолго угодить за решётку. Потому что органы охотятся за «палками».

Про любовь: http://freeverhova.ru/about-love/

Вам может никто не желать зла, но, случайно зацепив, эта машина уже не выпускает.

Цыганская группа: http://freeverhova.ru/tsyiganskaya-gruppa-ili-metodyi-zapolneniya-sizo/

Принадлежность к группам риска практически исключает рамки закона.

Живой труп: http://freeverhova.ru/zhivoy-trup/

Пить вредно. Последствия могут быть необратимыми, даже если Вы ни в чём не виноваты.

Врач: http://freeverhova.ru/doctor/.

Вами могут двигать доброта и сострадание, но не следует забывать про возможность людской неблагодарности в крайних формах.

Мать Тереза: http://freeverhova.ru/mother-teresa/

Даже простой контакт с человеком, находящимся в СИЗО, может привести Вас туда же.

Нападение: http://freeverhova.ru/assault/

Пока для людей в погонах порой существуют отдельные законы. Противостоять этому практически невозможно.

Законы Мёрфи: http://freeverhova.ru/murphy-laws/

Если следствию нужна жертва, то ни логика, ни здравый смысл, ни доказательства суду могут и не понадобиться, Ваша участь предрешена.

Квартирный вопрос: http://freeverhova.ru/kvartirny-vopros-sazhaet/.

Покупать квартиру на накопленные деньги может быть очень и очень опасно.

Электрик: http://freeverhova.ru/elektrik/.

Вас могут взять совершенно неожиданно, просто на улице. И Вы никогда не докажете, что просто проходили мимо.

Цепочка: http://freeverhova.ru/chain/.

Вас внесли в какой-то список? Всё. Это может потом оказаться «группой лиц» и сработать против Вас.

Наводчик: http://freeverhova.ru/navodchik/.

Просто визит на помойку с мусорным ведром может закончиться очень печально.

Магазин-ловушка: http://freeverhova.ru/netyuremnaya-istoriya-magazin-lovushka/.

Даже привычные действия при посещении супермаркета могут быть использованы против Вас, чтобы посадить или выманить денег.

Тюремные истории — это не страшилки, это иллюстрации нынешнего состояния правоохранительной системы и доказательства необходимости действовать, пока не стало слишком поздно.

Почему всё так, и как можно всё исправить, читайте в Обзоре 1: Правоохранительная система и ФСИН: http://freeverhova.ru/obzor/

И… берегите себя.

*#обзор, Оттуда, Репост, Тюремные истории*

## СИЗО и великая русская литература. 07.05.2019

Вот мне интересно, что бы ещё смогли написать наши классики, если бы под рукой у них был компьютер и принтер? Ведь производительность заметно бы увеличилась, про

возможность правок уже и не говорю. Ведь многие из них жаловались, что перо не поспевает за полётом мысли. С секретаршами и стенографистками — всё понятно, а вот значительную часть творчества остальных мы потеряли.

В СИЗО ситуация похожая, но более абсурдная, поскольку и компьютер, и принтеры существуют. Но при этом мы вынуждены бесконечно писать от руки. А ещё копирка запрещена. “Равноправие сторон и состязательность процесса”. Не случайно, конечно. Потому что, будь тут компьютер с принтером, количество исходящих документов от меня, например, увеличилось бы десятки раз. Защита перешла бы в нападение. Вот поэтому и сидим тут, строчим вручную. Ладно ещё, что ни при лампадках. :)

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Круизы по-фсиновски. 10.05.2019

“У Винни Пуха в голове перемолотый Буратино”.

Наблюдение за анекдота.

Сидела у нас девчонка. Прошла у неё апелляция. Ждала “законку” — уведомление о вступлении приговора в законную силу. Без законки зона осуждённых не принимает. Но тем не менее, увезли её по этапу. Через три месяца появляется опять у нас в камере. Рассказывает о маршруте: Москва

— Владимир — Кольчугино — Владимир — Москва. Повозили девушку по СИЗО и вернули. Сидит — ждёт законку.

И такие случаи не единичны. Были у нас две девчонки — уехали с разницей в два месяца. На зону прибыли одновременно, одну катали по централам.

Бывает и ситуации, когда из СИЗО Москвы в колонию Можайска Московской области везли через Нижний Новгород. Даже моё Путешествие из Петербурга в Москву (22.04.18) было совсем не по прямой.

Во время перемещения по этапу, нахождения в промежуточных СИЗО заключённому многое недоступно: ни помыться, ни звонки, ни еды купить… Да и родные часто даже не знают, где находится человек.

А ведь все эти игры с бесконечным этапированием не только часть пыточной системы, это ещё и банально государственные деньги. Написала запрос в счетную палату — пусть проверят: сколько государство платит за пытки своих граждан и кому это выгодно.

Надеюсь, что не получится как в анекдоте:

“Премьер-министр заявил, что люди не должны страдать от роста цен на бензин. Госдума уже приступила к разработке закона об ответственности за страдания от роста цен на бензин”.

Суровые цифры должны показать, что издеваться над заключёнными не только по-человечески недопустимо, но и экономически нецелесообразно.

Ждём. И действуем. Берегите себя.

*#Оттуда, ФСИН*

## Дневничок. Возврат. 11.05.2019

Периодически мы выезжаем на суды. Обычно возвращаемся в СИЗО. :) Когда конвой заходит с нашими документами в СИЗО, то говорит: «Возврат привезли.»

И не знаешь — признак ли это ценности или бесполезности. :)

*#дневничок, Оттуда*

## Пенсия. Если вам дороги рассудок и жизнь… 12.05.2019

Жила-была бабушка. В городе на Волге. Ездила в Москву подрабатывать вахтовым методом. И случилось же такое: Пенсионный фонд обнаружил переплату аж 17 тыс. руб. Какие-то надбавки не так посчитались. Бабушку известили, да она не получила информации — была в Москве. Возбудили уголовное дело по статье “мошенничество”. Та самая “резиновая” статья 159 УК РФ. Объявили фигурантку в розыск.

Арестовали бабушку в Москве на вокзале — собиралась ехать домой после очередной вахты. Привезли в СИЗО. Теперь этапом поедет в родной город по месту “преступления”. 17 тыс. рублей. Божий одуванчик. Шконка, баланда. Сколько может продлиться этап — неизвестно (см. “Круизы по-ФСИНовски” 10.05.19).

Сегодня выводов не будет. Берегите себя.

*#159 статья, Оттуда, Тюремные истории*

## Манёвр Бастрыкина ведёт в СИЗО? 13.05.2019

После Послания Президента Бастрыкин быстро среагировал: отчитался, что создана “горячая линия” для приёма сигналов о давлении на бизнес.

Чтобы сохранить цензурность повествования, сошлюсь на анекдот: “Носорог очень плохо видит. Но при его весе это уже не его проблемы”.

Возникают вопросы к главе Следственного комитета.

1. Почему Следственный комитет? На прокуратуре поставлен жирный крест как на органе, неспособном защищать закон?

2. Судя по отпискам, приходящим в ответ на жалобы, адресованные Следственному комитету, сроку и стилю ответов — образование и мировоззрение сотрудников Следственного комитета — соответствующее. Так откуда возьмутся добрые ангелы для защиты бизнеса на горячей линии? Кто там будет работать? Студенты-юристы? (по примеру Шарля де Голля, “перезагрузившего” судебную систему Франции). Откуда возьмётся смелость и знание законов?

3. Телефон — дело интимное. Позвонил — поговорил и что? Президент вообще-то дал другое поручение: создать открытую публичную платформу для защиты закона. В нынешней ситуации только публичность имеет шансы что-то решить. И именно об этом я пишу в конкретике (см. пост Четвёртая власть, 26.10.18). А Следственный комитет свёл опять к тихой ведомственной работе, больше похожей на сбор компромата на остальных.

4. У телефона есть и другие нюансы. Бизнес, на который надавили сегодня, уже в СИЗО, откуда не слишком-то позвонишь. Что делать? И почему о такой очевидной вещи Следственный комитет не подумал?

5. А почему, собственно, бизнес? Прочие давления правоохранительной и иных систем на законопослушных граждан не интересуют? (См. Обзор-1 от 18.04.19). Ведь такой подход неизбежно выродиться в откаыз работать по жалобам: “вы не бизнес”, как это произошло с предпринимателями в СИЗО: формально их арестовывать нельзя, но достаточно сказать: “Вы не предприниматель”, — и можно сажать.

Вопросов больше, но пока хватит и этих. Есть ещё замечательная фраза в газете: с авторами самых красноречивых звонков глава Следственного комитета Александр Бастрыкин пообещал встретиться лично.

Я готова. На моём сайте (freeverhova.ru) — бездна красноречивой информации про все ветви правоохранительной системы. Есть обзор материалов, позволяющий понять сразу многое (Обзор-1 от 18.04.19).

Прошу отправить этот пост Александру Бастрыкину всеми возможными путями. И во множестве экземпляров, чтобы вернее дошло. Пусть почитает. Жду его в СИЗО. Нам есть — о чём поговорить.

*#обращения, Оттуда, экономические преступления*

## Жёлтые ответы следователя. 14.05.2019

“Дезинформация — лучшая на свете информация для того, кто хочет услышать и обладает минимальным аналитическим инструментарием”.

А.Г.Каретникова, “Маршрут”.

В процессе ознакомления с материалами уголовного дела у обвиняемых и их защитников есть право подавать ходатайства, в которых просить провести недостающие следственные действия, экспертизы, допросить свидетелей, приобщить документы, устранить ошибки и так далее.

Поскольку дело призводит впечатление откровенно сляпанного, то поводов писать ходатайства было более чем достаточно.

Расскажу подробнее про несколько своих.

1. Процессуальные документы. При выделении уголовного дела, как это произошло у нас (см. пост “Попрать закон…” 14.05.2019) — “в уголовном деле, выделенном в отдельное производство, должны содержаться подлинники или заверенные следователем или следственным дознавателем копии процессуальных документов, имеющих значение для данного уголовного дела”. (п.4 ст.154 УПК РФ). С документами в выделенном деле было не очень хорошо, но менять их к лучшему никто и не собирался. В ходатайстве отказали. Причём с потрясающей формулировкой: “выделены материалы, касающиеся потерпевших в количестве 184 человек”. То есть никто и не скрывает, что дело выделено просто по небольшому количеству потерпевших, хотя такой причины для выделения в УПК РФ нет. Ну а то, что документы должны быть выделены по обвиняемым, следствие предпочитает не замечать. Видимо, это “не имеет значения”.

2. Замечательный момент в деле — размер ущерба. Пока он взят следователем почти с потолка. Но размер ущерба, как правило, подтверждается соответствующей экспертизой. Поскольку никакой экспертизы по ущербу не проводилось, было заявлено ходатайство о проведении такой экспертизы для получения обоснованной суммы ущерба.

Ответ следствия — настоящее ноу-хау, позволяющее отказать в удовлетворении любого ходатайства:

“Согласно ст. 215 УПК РФ, признав, что все следственные действия по уголовному делу произведены, а собранные доказательства достаточны для составления обвинительного заключения, следователь уведомляет об этом обвиняемого. Следствие не усматривает оснований для назначения дополнительных судебных экспертиз, а заявленное ходатайство расценивается как способ затягивания окончания уголовного дела”.

То есть, поскольку следователь уже провёл работу и закончил следственные действия, любое ходатайство можно расценивать как способ затягивания уголовного дела и на этом основании — отказать в его удовлетворении.

По такому шаблону и были получены ответы на абсолютное большинство ходатайств.

3. Период “преступления”. В материалах дела содержатся документы и показания свидетелей, которые утверждают, что доступ к управлению финансами у меня появился после марта 2015 года. Но период “преступления” у всех обвиняемых одинаковый — с 06.02.2011. И это

следователя совершенно не смущает, ведь “заявленное ходатайство расценивается как способ затягивания уголовного дела”.

4. В уголовном деле содержится страховой полис О.В.Романчук (а руководитель временной администрации обязан его иметь). Полис закончил действовать за неделю до назначения временной администрации в КПК “Семейный капитал”. Было заявлено ходатайство о приобщении действующего полиса, ведь все действия руководителя временной администрации с просроченным полисом просто незаконны. Но:

“Следствие считает, что страховой полис, заключённый и действующий в период работы Романчук О.В. в качестве руководителя временной администрации КПК “Семейный капитал” не имеет значения для данного уголовного дела, в связи с чем необходимость в его приобщении к материалам уголовного дела отсутствует, а заявленное ходатайство расценивается как способ затягивания окончания уголовного дела”.

5. Согласно предъявленному обвинению, следствие считает, что создавалась лишь видимость финансово-хозяйственной деятельности без возможности исполнить принятые на себя обязательства. Понятно, что именно эта формулировка лежит в основе обвинения, но ничем не подтверждена.

Было заявлено ходатайство о проведении финансово-хозяйственной экспертизы по бизнес-модели кооператива, основанной на построении вертикали производства. Та самая вертикаль, которую первым выстроил кооператив “Семейный капитал”, вертикаль, которая сейчас успешно используется большими корпорациями. В процессе обысков были изъяты и бизнес-планы, расчёты рентабельности производств. Но эти материалы в деле отсутствуют. Ну правда, зачем в деле доказательства невиновности обвиняемых?

И… стандартный ответ: “не усматривает оснований”, “ходатайство расценивает как способ затягивания окончания уголовного дела”.

В проведении очных ставок тоже было отказано. “Способ затягивания окончания уголовного дела”.

На часть ходатайств ответов вообще не поступило, что, конечно, является нарушением закона, но… одним больше, одним меньше — тут уже следствию бояться нечего. А Генпрокуратура вежливо прикрывает глаза, считая, что надзор за нарушением следователем закона “не входит в компетенцию Генеральной прокуратуры”.

Не было ответа и на моё ходатайство о предоставлении реквизитов потерпевших для возможности погашения ущерба. И хоть я не считаю себя виновной перед законом — но перед пайщиками вина есть — не сумела отстоять их интересы, пусть и в неравной борьбе.

Был ещё забавный момент с ходатайствами, похожий на тему “Цифровые технологии в МВД” от 01.04.2019. Заключения экспертов содержат приложения. Но они не были распечатаны и приложены к делу, соответственно, не было возможности и ознакомиться с ними. На ходатайства по этому поводу — ответ:

“Указанные приложения содержатся на CD-R диске с отсутствием возможности записывания, который приложен к заключению эксперта в единственном экземпляре, выделен в материалы

уголовного дела …0162 вместе с заключение эксперта и хранится в материалах уголовного дела …040. Учитывая изложенное, ходатайство удовлетворению не подлежит”.

Любой грамотный юрист просто не поверит в существование такого букета нарушений закона: тут и заведомая недоступность материалов, используемых для обвинения, для ознакомления, и хранение материалов в другом уголовном деле, и формулировка отказа, и т.д.

Но… жалобы на незаконные отказы в удовлетворении ходатайств остались без ответа и со стороны МВД, и со стороны Генеральной прокуратуры. Что ж… Это их принципиальная позиция.

Статья 159 УПК РФ ч.2: “Подозреваемому или обвиняемому, его защитнику, а также потерпевшему, гражданскому истцу, гражданскому ответчику или их представителям не может быть отказано в допросе свидетелей, производстве судебной экспертизы и других следственных действий, если обстоятельства, об установлении которых они ходатайствуют, имеют значение для уголовного дела”.

Подводя итоги работы следствия с ходатайствами, можно только сделать вывод об общей тенденции беспредела: надо посадить — посадят, и законы тут ни при чём. А любые попытки доказать свою невиновность “не имеют значения для данного уголовного дела”.

Впереди суд. Там тоже (по закону) есть возможность заявлять ходатайства. И по закону есть возможность защищать себя. На деле — многое зависит от судьи.

Будем действовать.

Берегите себя.

*#Оттуда, Уголовное дело*

## “Попрать закон с суровой рожей — маневр, на следствие похожий”. 14.05.2019

“Довольно занятно совершать невозможное”.

Уолт Дисней

Когда стало понятно, что следствие не укладывается с расследованием в отведённые 12 месяцев, нависла угроза необходимости выпустить обвиняемых из СИЗО. Выход был найден не совсем законный, но простой — из уголовного дела (…040) был выделен кусочек с частью потерпевших, и это маленькое уголовное дело (…0162) быстро “завершили” и перешли к ознакомлению (см. Судебная защита, 21.01.2019) обвиняемых с материалами уголовного дела.

Этот маневр следствия очень небезобиден:

1. Нарушение прав потерпевших. Потерпевшие выделялись следователем по произвольно выбранному признаку. Забавно, но потерпевшая, по заявлению которой возбуждено уголовное дело, вообще не вошла в список.

2. Нет такого повода в ст.154 УПК РФ для выделения дела, как количество потерпевших. Нельзя также выделять 9 регионов из 50 для осуждения обвиняемых без ущерба для “всесторонности и

объективности предварительного расследования и разрешения уголовного дела”. (УПК РФ ст. 154 ч.2). Руководство всеми регионами было единым. И тут мы переходим к п.3.

3. Такая методика обращения с уголовным делом позволяет бесконечно судить обвиняемых, добавляя им всё “новые” регионы и “новых” потерпевших. А передача дела в суд с кусочком деятельности всего лишь позволяет не заботиться об основаниях содержания обвиняемых под стражей.

4.

11.07.2018 мне было предъявлено обвинение по уголовному делу (040) со 184 потерпевшими. В деле было примерно 700 томов.

16.07.2018 мне было предъявлено обвинение по выделенному уголовному делу (0162) со 184 потерпевшими. Догадайтесь, сколько томов в деле с тем же количеством потерпевших? 108! (на тот момент).

Что скрыло следствие от суда в томах, что не вошли в выделенное дело? Видимо, деятельность по остальным регионам, деятельностью которых управляли арестованные руководители кооператива, но следствие “не установило” этот факт.

Конечно, мы пытались оспорить решение о выделении дела. Но суд даже не стал рассматривать жалобу: “Нет предмета”. Апелляционная инстанция тоже поступила стандартно (см. Судебная защита, 21.01.2019).

Генпрокуратура как обычно, сообщила, что “вопросов, относящихся к компетенции Генеральной прокуратуры, обращение не содержит”.

Суд и прокуратура стараются не замечать нарушений закона следственными органами. К сожалению, пока таково положение дел.

Таким образом, жёстко завершим ознакомление (см. Волокита от СД, 26.02.2019) обвиняемых с материалами уголовного дела, подмахнув обвинительное заключение в Генпрокуратуре, следствие направило дело в суд. Невский районный суд Санкт-Петербурга. Совсем не соответствующий территориальной подсудности. Но это уже совсем другая история.

Берегите себя.

*#Оттуда, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Дневничок. Подслушано: конвоиры. 16.05.2019

Послушала конвой на выезде. Пара новых моментов:

— «Обслуживание конвоем» — off inclusive

— «Справедливость» — экстремистское слово.

Для справки: конвой относится к МВД.

Берегите себя.

*#дневничок, Оттуда*

## Книги как звуки. 18.05.2019

Иногда я перечитываю книги. Иногда сразу несколько. Но это не похоже на… смешивание коктейля. :) Это похоже на поиск звуковой гармонии. Сейчас у меня в чтении замечательное по силе и красоте трезвучие: Стивен Кинг «Дьюма Ки», Р. Злотников «Пощады не будет» и В. Гинзбург «Крутой маршрут».

В связке книг усиливаются общие ноты, что есть в этих книжках. В данном случае это — дружба. Дружба, за которую настолько благодарен, что нечем за этот подарок расплатиться с судьбой. Тепло, доверие, поддержка — мы все порой в этом нуждаемся. И есть только один способ это получить — дать это другому.

Те же книжки в других сочетаниях могут дать и другие… звуки. Но это потом. А пока…

«Мы часто забываем, что за нами остаются отзвуки наших шагов. И нужно всегда правильно идти, чтобы не обмануть людей, которые доверились нам и идут вслед».

А.Приставкин.

Берегите себя.

*#книги, Оттуда, Тюремные хроники*

## Кого защищает прокуратура. 20.05.2019

“Нет большего слепца, чем тот, кто не хочет видеть”.

Б.Вербер

Когда следователи совершают преступления, закон рекомендует обращаться в суд, к руководителю следственного органа и в прокуратуру.

Про судебную возможность защиты я уже писала (см. “Судебная защита”, 21.01.19). Руководитель следственного органа спускает жалобу тому, на кого жалуются. Сегодня — про прокуратуру. Точнее, про Генеральную прокуратуру.

В Генеральную прокуратуру в порядке ст. 124 УПК РФ мною написано много жалоб. Ответы все одинаковые: “Обращение направлено следователю. Вопросов, относящихся к компетенции Генеральной прокуратуры, в обращении не содержится”.

Каждый такой ответ содержит целый букет нарушений закона:

1. Ответ на жалобу в порядке ст. 124 УПК РФ должен быть оформлен постановлением (п.2 ст.124 УПК РФ).

2. В соответствии с Федеральным законом “О прокуратуре” ст. 21, 22, прокурор в рамках надзора за исполнением законов требует от руководителей и других должностных лиц предоставления необходимых материалов для “проведения проверок по поступившим в органы прокуратуры материалам и обращениям”.

А тут прокурор требует не материалов, а отвечать за него на обращения. И это вместо обязательной прокурорской проверки.

3. В соответствии с п.2 ст.37 УПК РФ прокуратура уполномочена “требовать от органов дознания и следственных органов устранения нарушений федерального законодательства”. А также, в соответствии с п.1 ст.37 УПК РФ осуществлять “надзор за процессуальной деятельностью органов дознания и органов предварительного следствия”:

А прокурор не видит вопросов, “относящихся к компетенции Генеральной прокуратуры”.

4. На основании п.2.4. “Инструкции о порядке рассмотрения и обращений и приёма граждан в органах прокуратуры РФ” — “не допускается передача обращения на разрешение лицу, чьи действия и (или) решения обжалуются”.

А прокурор пересылает мои жалобы в следственный орган, на который я жалуюсь.

Написала несколько жалоб на этого прокурора, что генерирует отписки. Но жалобы на прокуроров вообще не удостаиваются ответов из Генпрокуратуры.

Обязательно продолжу, ведь вопрос “кто виноват” нужен только для правильного ответа на вопрос “что делать”. А отсутствие ответа — тоже информация.

Анекдот в тему:

“Если вам внезапно стало плохо на улице, то постарайтесь вспомнить, а было ли вам когда-нибудь хорошо?”

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Обвинительное заключение. Вот и сказочке конец. 21.05.2019

“Хорошими делами прославиться нельзя”.

Старуха Шапокляк.

Получили долгожданное обвинительное заключение. Все полтора года, проведённые в СИЗО, было интересно — как же можно обосновать обвинение. Интересно, что 29.04.2019 дело было ещё у следователя, о чём говорит официальный ответ на запрос пайщиков. И 29.04.2019 обвинительное заключение подписано прокурором. То есть 139 томов прокурора не особо интересовали — что принесли, то он и подписал. Это к вопросу о прокуратуре на страже закона. Писала уже о прокурорских секретах: “Кого защищает прокуратура” 20.05.2019. Такое обращение к уголовным делам позволяет предполагать беспомощность прокуратуры в нынешнем состоянии правоохранительной системы (см. Обзор-1, 18.04.2019).

Итак, обвинительное заключение, согласно УПК РФ, должно содержать: существо обвинения, место и время совершения преступления, его способы, мотивы, цели, последствия и другие обстоятельства, имеющие значение для данного уголовного дела (УПК РФ ст.220 ч.1 п.3), перечень доказательств, подтверждающих обвинение, их краткое содержание (УПК РФ ст.220 ч.1 п.5).

Так вот, ничего этого в обвинении нет! Уже писала, как изготавливаются обвинения: “Обвинение как форма отрицания Конституции” 20.07.2018. Только общие слова, без конкретики, применимые к ЛЮБОМУ работающему человеку: “С преступным умыслом совершал преступные действия в составе преступной группы”. :) Чем при этом отличаются преступные действия от выполнения должностных инструкций — неясно. В обвинении об этом ничего нет. В качестве доказательств “преступной деятельности” приводятся выдержки из показаний пайщиков: “услышал о кооперативе, пришёл, вступил, внёс деньги”. Но это доказательства того, что люди были пайщиками кооператива — доказательства, подтвержденные соответствующими документами. На этом конкретика в обвинительном заключении заканчивается. Следствие вообще избегало конкретики весь период “расследования”. Наши попытки добиться включения хоть чего-то конкретного в уголовное дело через ходатайства — потерпели неудачу. Подробно писала об этом: “Жёлтые ответы следователя” 14.05.2019.

Ни место, ни время, ни способ, ни действия каждого обвиняемого — обвинение не содержит. Оно вообще одинаковое для всех обвиняемых. Просто четыре раза (по числу обвиняемых) перепечатанное, что по закону в принципе не может быть. Но заместитель Генерального прокурора В.Я.Гринь — “не обратил на это внимания”. Этот уровень защиты от беззакония провален полностью.

Вся эта суета со следствием и судами направлена только на одно: аргументировать бесконечное заключение. И неважно — что мы делали — развивали сельское хозяйство или переписывали буквари — основание будет найдено.

Что дальше? Будем передавать ходатайство в суд о возврате дела прокурору в порядке ст. 237 УПК РФ п.1. “Обвинительное заключение, обвинительный акт или обвинительное постановление составлены с нарушением требований настоящего Кодекса, что исключает возможность постановления судом приговора или вынесения иного решения на основе данного заключения, акта или постановления”.

И суд будет вынужден решать — по какому пути пойдёт этот судебный процесс, будет ли соблюдаться закон или Фемида будет слепа к нарушениям.

Конституция РФ ст.49.

п.2. Обвиняемый не обязан доказывать свою невиновность.

п.3. Неустранимые сомнения в виновности лица толкуются в пользу обвиняемого.

Берегите себя.

*#Оттуда, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Тюремная переписка. 22.05.2019

Посмотрела свои журналы входящих/исходящих. За последние 9 месяцев я направила 200 запросов, жалоб, заявлений. За последние 8 месяцев я получила 140 ответов. Главные неответчики: прокуратура (см. пост «Кого защищает прокуратура», 20.05.2019) и ОНК (Общественная наблюдательная комиссия).

Ну и суды по жалобам и запросам реагируют очень неохотно. Приходится писать по 2-3 раза, даже ради простого получения протокола.

Такой вот документооборот тюремный.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Особый порядок — взгляд из-за решётки, часть 1. 23.05.2019

“Каждая ложь — это чья-то мечта. Настоящая ложь просто обязаны быть красивой, тогда в неё обязательно поверят. Лишь правда способна позволить себе роскошь уродства”.

С. Лукьяненко “Рыцари сорока островов”.

Периодически в газетах появляется информация, что рассмотрение дел в особом порядке вредит правосудию. Информация достаточно скупая и обычно сопровождается фразами, что отказ от особого порядка рассмотрения уголовных дел в суде приведёт к необходимости дополнительного финансирования. Вроде всё просто и понятно — если хочется получить дополнительное финансирование от государства — ищи варианты, придумывай “страшилки” и не забывай про образ рыцаря на белом коне.

В случае с особым порядком проблема серьёзнее, чем нам пытаются представить.

Особый порядок судебного разбирательства был установлен в 2002 году, чтобы сократить время на расследование и рассмотрение в суде. Уже тогда правозащитники били тревогу, указывая на ошибочность такого решения в существующей системе. Но правозащитники ошибались, последствия применения особого порядка оказались ещё страшнее.

При особом порядке рассмотрения дел — в суде дело по существу не рассматривается: не исследуются доказательства обвинения, не допрашиваются свидетели. При особом порядке обязательно признание вины обвиняемым, поэтому и доказательства защиты тоже не рассматриваются. Всё сводится к принципу: “Признание — царица доказательств”. В особом порядке рассматривается более 70% уголовных дел. Приговор выносится за 2-3 заседания.

А теперь конкретика — к чему приводит особый порядок рассмотрения дел в суде.

1. Деградация следствия

Особый порядок делает расследование вообще ненужным. Следователю достаточно просто зафиксировать признание обвиняемого. Всё. Для этих действий не нужно ни образование, ни сообразительность, ни опыт, ни умение расследовать преступления. Вполне естественно, что неиспользуемые функции отмирают за ненадобностью.

2. Деградация судей

Вместо кропотливого разбирательства в деле суды порой вынуждены играть роль лотереи, выкидывающей цифры сроков для обречённых подсудимых (см. пост “Крокодил или путь в один конец”, 24.01.2019). Помимо утраты чисто профессиональных качеств, судьи начинают жить в искажённом мире признавших вину. Если судья вынужден бОльшую часть рабочего времени штамповать приговоры в особом порядке, то люди, не признавшие вину, начинают казаться воплощением зал, что отражается и на результатах судебных процессов.

3. Стремление к сплошному особому порядку

Уже даже Верховный суд отметил, что процент дел, рассмотренных в особом порядке, растёт уже несколько лет. И этот рост вполне логичен. И следствие, и суды стараются любыми путями привести дело к особому порядку. Инструментов достаточно. У следствия — это, в первую очередь, всё, связанное с арестами (см. “Большая разница” от 17.04.2018), различного рода угрозы и посулы.

Про судейские методы уже писала. И, конечно, непризнание вины сильно утяжеляет сроки наказания. Но при нынешней ситуации, отражённой в тюремных историях, это происходит не на базе логики и справедливости, а на основе запугивания.

Любая некачественная и некомпетентная работа следствия или суда прикрывается особым порядком. Меняется и отношение в принципе к расследованиям уголовных дел: важность установления истины и виновных заменяется на необходимость признания вины и применения особого порядка.

Таким образом сформирована возможность для тех, кто любой ценой желает смягчить себе срок: надо “всего лишь” оговорить других и взять особый порядок. И никто не будет разбираться — сколько правды в словах тех, кто заключил со следствием соглашение.

4. Судебный процесс в особом порядке практически лишает человека возможности оспорить приговор

. И хотя по закону любые нарушения процессуальных норм при вынесении приговора могут быть оспорены, но на практике это бесполезно: человек, признавший вину, больше не интересен — он пойманный преступник.

5. Главное зло от особого порядка: он подрывает веру в правосудие

Правоохранительная система (см. “Обзор 1” 18.04.2019) становится похожей на конвейер, поставляющий кадры криминальному миру. Постепенная подмена целей следствия не имеет отношения к закону и плодит любой произвол (“Большая разница” 17.04.18) органов. Отсутствие РАССЛЕДОВАННЫХ дел в суде вынуждает порой судей участвовать в этом дьявольском спектакле (“Судейские пытки”), имеющем малое отношение к правосудию.

Исходники понятны. Теперь о решениях.

Продолжение: Особый порядок — взгляд из-за решётки, часть 2.

*#Правоохранительная система, Репост, Решения*

## Малыши за решёткой. 24.05.2019

Социальная изоляция меняет химическую структуру мозга и приводит к накоплению в нём особого вещества — нейропептидов.

Уже писала (см. пост “Недосмотр патриарха” от 25.04.19) на тему младенцев, растущих в заключении. Чуть дополнила, оформила в виде обращения и в начале апреля разослала всяким уполномоченным. Ответов пока нет, да и обращений необходимо больше, чтобы дело сдвинулось.

Обращение.

Обращение по поводу детей - часть 1

Обращение по поводу детей - часть 2

Неизвестно, сколько обращений понадобится, но именно Ваше может стать решающим.

Для начала — надо направить всем, кто по вашему мнению способен менять жизнь к лучшему.

Защищая других, защищаем себя. Надо спасать детей.

*#обращения, Правоохранительная система*

## Первый блин или суд без обвиняемых. 25.05.2019

«Решения выносились тройкой заочно — по материалам дел, представляемым органами НКВД, а в некоторых случаях и при отсутствии каких-либо материалов — по представляемым спискам арестованных. Процедура рассмотрения дел была свободной».

Из статьи «Тройки НКВД СССР» в Википедии.

Крепкие стены СИЗО надёжно защищают меня от холода, голода и разврата. И, как выяснилось, и от участия в судебном процессе.

Что у нас творилось на этапе следствия, можно прочитать по тэгу “уголовное дело”. И вот, преодолев прокуратуру (о прокурорских чудесах — публикация “Кого защищает прокуратура”, 20.05.2019), дело поступило в суд. Было назначено предварительное слушание.

Нарушения сопровождают часто работу правоохранительной системы (См. «Обзор-1» 18.04.2019), поэтому мы бы уже удивились, если бы всё вдруг пошло по закону.

Итак, первый судебный пакет нарушений

1. Нарушение территориальной подсудности

Смотрим УПК РФ ст.32 п.2: “Если преступление было начато в месте, на которое распространяется юрисдикция одного суда, а окончено в месте, на которое распространяется юрисдикция другого суда, то данное уголовное дело подсудно суду по месту окончания преступления”.

Нам вменяется период преступления до 22.08.2017. В 2017-м году Кооператив работал по адресу: Санкт-Петербург, ул. Садовая, 92. Это юрисдикции Октябрьского суда СПб. Закон написан очень однозначно. Изменения территориальной подсудности без согласия обвиняемых не допускается. И, согласно ст. 228 УПК РФ, первое, что должен сделать судья по поступившему уголовному делу — выяснить, подсудны ли уголовные дела данному суду. Почему дело оказалось в Невском суде, можно только гадать: то ли судья не выяснил подсудность, то ли не захотел выяснить, то ли выяснил, но не смог противостоять давлению Генеральной прокуратуры. Вариантов много, но пока это лишь догадки.

2. Обвиняемые не были уведомлены в срок о дате заседания

УПК РФ ст. 234 п. 2: “Уведомление о вызове сторон в судебное заседание должно быть направлено не менее чем за трое суток до дня проведения предварительного слушания”. Нас уведомили за двое суток. Это называется “ограничение права на защиту”. О равноправии и состязательности сторон скажу в следующем пункте.

3. Заседание было назначено в режиме видеоконференции

Это вообще нонсенс. УПК РФ ст. 240 говорит о такой возможности только для свидетеля и потерпевшего. На этом нарушении от права на защиту у обвиняемых практически не остается. Как при этом заявлять ходатайства и приобщать документы к делу — не очень понятно. Такая форма “равноправия и состязательности сторон” нам ещё не встречалась.

4. Обвинительное заключение не соответствует требованиям УПК

Подробно писала об этом в “Обвинительное заключение. Вот и сказочки конец, 19.05.2019”. Это прямое основание для возврата дела прокурору. Статья 237 ч.1 п.1 УПК РФ.

5. В суде — не то дело, с которым мы знакомились

Уже касалось этой темы в “Волокита от СД”, 26.02.2019. Те документы, что нам приносили, вообще по закону уголовным делом не являются: не прошиты, не заверены и т.д. А вот в суде — дело в жестких обложках, и что там внутри — нам неведомо.

Нарушений значительно больше, но уже и этого достаточно, чтобы назначенное заседание не состоялось. Но заседание состоялось. Просто без двух обвиняемых. Ну правда, если обвиняемые чем-то недовольны, то проще, конечно, обойтись без них. Никто мешать не будет.

По итогам состоявшегося заседания — два постановления

1. О рассмотрении вопроса по мере пресечения в отсутствие обвиняемого.

Прокурор считал возможным на основании части 13 и 14 ст. 109 УПК РФ рассмотреть вопрос о мере пресечения в отсутствие обвиняемых.

Суд посчитал, что раз техника не позволяет установить видеосвязь с московским изолятором, значит, причина уважительная — можно заседать. Что помешало, как требует закон, доставить обвиняемых в суд — мы пока не поняли. Дело поступило судье 7 мая 2019 года. Времени было достаточно. Во всяком случае, больше, чем сейчас. Возможно, подобнаые ситуации создаются искусственно, чтобы без помех продлевать аресты.

2. О назначении предварительного слушания.

Здесь же рассматривался и вопрос о дальнейшей мере пресечения обвиняемым. И тут прокурор “внезапно забыл” положение УПК РФ. Прокурорское обоснование необходимости дальнейшего содержания под стражей блистательно: “Необходимо оставить без изменения, так как указанные меры были избраны с учетом данных о личности каждого из обвиняемых и тяжести инкриминируемого преступления”. То есть — если кто-то когда-то арестовал, негоже и менять.

Ну и стандартно: суд не находит оснований для изменения меры пресечения. В соответствии со статьей 255 ч.2 УПК РФ продлили арест на 6 месяцев до 7 ноября 2019 года (от даты поступления дела в суд). И абсолютно неважной оказалась невозможность обвиняемых себя защищать.

Последние дни часто слышу по ситуации с судом слова “не может быть”. Но во всём, что касается правоохранительной системы (Обзор-1» 18.04.2019), эти слова надо употреблять очень осторожно. Когда ситуация доходит до абсурда, она страшна, но и смешна одновременно. Как в анекдоте:

— Дорогой, ты меня не понял.

— Да я и не собирался.

Апелляцию написала. Практика показывает полную бесполезность этого дела, но это не повод опускать руки.

Предварительное слушание назначено на 29 мая 2019. До этого нас доставят в Петербург, где мы опять будем: парни — в СИЗО-6, девушки — в СИЗО-5 Санкт-Петербурга.

Следите за новостями.

Берегите себя.

*#Оттуда, суды, Уголовное дело*

## Особый порядок — взгляд из-за решётки, часть 2. 26.05.2019

Начало статьи: Особый порядок, часть 1.

Генеральная прокуратура видит решение в “установлении законодателем ограничений на расследование в особом порядке только дел о преступлениях небольшой и средней тяжести”.

Но это — из категории тех решений, которые рождают еще больше проблем. И дело даже не в недостатке информации у руководства правоохранительных органов о реальном положении вещей (см. “Кого защищает прокуратура”, 20.5.2019) и утерянных специалистах, способных анализировать информацию. Градация применения особого порядка в зависимости от тяжести преступлений в корне неверна.

Предлагаемое решение от Генерального прокурора можно понять так: “Давайте позволим оговаривать себя и других только до пяти лет лишения свободы”. Понимаете?

Но… уже прозвучали слова, которые могут послужить главной причиной грядущих изменений: “При увеличении количества дел, рассматриваемых в общем порядке, возрастут расходы бюджета на осуществление правосудия”. Такие знаки позволяют предположить, что любые изменения ситуации имеют под собой одну цель: получить больше денег из бюджета. А что при этом будет происходить с правосудием (см. Обзор-2, 6.5.2019) — уже не так важно.

Что же позволит сохранить плюсы особого порядка и прекратить губить жизни выбиванием признания?

Ответ предельно простой: соблюдение закона. Особый порядок обязывает и прокурора, и судью убедиться в том, что, кроме признания вины, есть и другие доказательства совершения преступления.

Обвинительное заключение должно содержать информацию о вменяемом деянии, включая доказательства вины. Конкретные данные и конкретные доказательства. Прокуратура, к

сожалению, допускает подписание обвинительного заключения, даже не глядя на уголовное дело. Как это произошло у нас: см. “Обвинительное заключение” — 21.5.2019.

I. Суды

И даже при неработающей прокуратуре, судья должен прийти к “выводу, что обвинение, с которым согласился подсудимый, обосновано, подтверждается доказательствами, собранными по уголовному делу” (УПК ст. 316 п.7). Пока, на основании практики (“Перед рассветом” — 19.4.18), можно предположить, что судье проще ничего не выяснять и в случае особого порядка вынести приговор, что ускоряет процесс деградации судов — см п.2 в первой части публикации.

II. Прокуратура

Позиция Генерального прокурора кажется непонятной, но можно предположить четыре причины такого поведения:

1. Некомпетентность.

Ни стаж работы, ни опыт, ни звёзды на погонах не спасают от профессионального выгорания. А оно очень быстро приводит к неспособности анализировать информацию и принимать решения.

2. Отсутствие информации для принятия верных решений

Статистика — женщина лукавая и зависит от ракурса подачи информации. Статистикой можно обосновать абсолютно всё, без исключений. Значит, статистика — это не та информация, на основании которой можно принимать решения. А вот другой информации у Генерального прокурора может и не быть. Что ж, этот сайт ему в помощь. :)

3. Нежелание наводить порядок в органах прокуратуры

Ни для кого не секрет, что правоохранительные органы снизу доверху связаны взаимными обязательствами. И иногда очень непросто указать нижестоящему прокурору на недостатки работы. А если это “недостатки работы” по всей системе? Руководитель, взявшийся наводить порядок, очень сильно рискует, и рискует не только рабочим местом, но часто и свободой.

4. Выбивание ресурсов

Внешне здравые предложения, влекущие дополнительное бюджетное финансирование — очень популярный товар. И чем больше страха вызывает презентация этого товара, тем дороже его можно продать.

III. Следствие

И главное: работа следственных органов. Она лежит в основании возможного беспредела. И, как ни странно, именно её проще всего изменить. Сделать это можно так:

Продолжение следует…

*#Правоохранительная система, Репост, Решения*

## Уголовное дело “Семейного капитала”. Обзор-3.26.05.2019

История возбуждения уголовного дела по «Семейному Капиталу» проста.

После введения Центробанком Временной администрации в КПК “Семейный капитал” сложилась патовая ситуация. Руководитель Временной администрации заблокировал счета Кооператива, ограничил выплаты пайщикам до 50 тыс. руб. в день на все регионы (при тысячах пайщиков это равносильно отказам от выплат), и на этом деятельность закончилась: не платились налоги, зарплата сотрудникам, руководитель Временной администрации в принципе ничем не руководил.

Представители Временной администрации с пайщиками не были ласковы. Обычно отвечали: “Ничего не знаем, денег нет и не будет”.

Искусственно создавалось банкротное состояние КПК. В этой ситуации пайщики начали писать заявления в полицию на действия Временной администрации. Писали заявления и руководителя Кооператива. Но все уходило, как в болото.

И вот наследница одного из пайщиков добилась возбуждения уголовного дела в отношении “неустановленного круга лиц”. Причём сначала возбудили дело 29.03.2015 по заявлению умершего пайщика. Без нарушений не обошлось, перевозбудили дело уже 05.05.2015 под тем же номером (что по закону быть не может) по заявлению наследницы. И пошло расследование.

Отстранённое руководство КПК пыталось судиться за отмену приказа Центробанка о введении Временной администрации, вялотекущие действие следственных органов шли своим чередом. Руководителя Временная администрация даже не допрашивали. КПК был обанкрочен, НПО “Семейный капитал” пытался выжить. Пайщики разделились на три лагеря в соответствии со своими убеждениями.

«Слово о пайщике», 17.02.2018

Давление было беспрецедентным. Органы шли на любые методы поиска виноватых, ведь тысячи людей остались ни с чем.

«Версия», 03.03.2018

«Свободная пресса», 27.06.2018

Всех интересовали деньги: где они и как до них добраться. Никто не пытался разобраться в сути работы кооператива.

«Пирамиды и фараоны», 08.04.2018

Ответ на вопрос “Где деньги” лежал на поверхности, но никого не устраивал.

«Золотой песок», 03.04.2018

Недовольство пайщиков ситуацией начало перерастать в недовольство расследованием. Нужно было срочно что-то предпринять, ведь делом уже заинтересовались в Москве. Трактовка событий, излагаемая руководителями Кооператива, было логична и подтверждалась документами, в отличие от позиции следователей, использующих стандартные фразы о мошенничестве, о заводах

и магазинах, целую пятилетку работавших “для видимости”. Погоны оказались под угрозой, так появилось обвинение руководителя “Семейного капитала”. Прошли аресты. Для надёжности воздействия были арестованы жена и сын Белоусова.

«Сговор», 27.05.2018

Арестованных было четверо: сам И.Н.Белоусов, его жена, сын и финансовый директор Ходыкин. Жизнь в СИЗО, особенно для новичков, очень опасна. Ходыкин признал “вину” и ушёл на домашний арест.

«Ходыкин», 08.11.2017

Так меня арестовали. Предъявили обвинения. Из обвинения преступления не было видно. И только на одном из судов судья вытащил из следователя слова — в чём же меня обвинили, чтобы арестовать.

«Суть обвинения», 06.12.2018

Суд по мере пресечения был достаточно абсурдным.

«Воспоминания о суде», 10.12.2017

Даже на третьем году расследования следователи упорно не интересовались кооперативным законодательством, отчего следственные действия несли ощущения бесполезности и безнадежности.

«Председатель правления», 30.03.2018

«Арестовали 500 р.», 18.03.2018

«Развод и девичья фамилия», 06.04.2018

Расследование шло, обвиняемые сидели, видели следователя только на судах по продлению меры пресечения. Суды эти были абсолютно однотипны.

«Суд о продлении заключения», 24.01.2018

Чтобы не выпускать обвиняемых на свободу был придуман ход с выделением уголовного дела в отношении обвиняемых.

«Попрать закон с суровой рожей», 14.05.2019

Соответственно, расследование закрыли, предъявили обвинение. Как и расследование в целом, так и обвинение было практически бессодержательно.

«Обвинение как форма отрицания Конституции», 20.07.2018.

Процесс ознакомления с материалами уголовного дела следствие так и не сумело организовать, поэтому пошло проторенным путем беспредела.

«Волокита от СД», 26.02.2019

В самих материалах уголовного дела обнаружилось много интересного: и экспертизы по делу

«Экспертизы по уголовному делу», 18.12.2017,

и позиция руководителя Временной администрации

«Ответственность от ЦБ», 17.04.2019

Был материал, и чтобы подумать — можно ли было избежать всей этой истории с ЦБ.

«Дело о нормативах», 27.10.2018

«Банковская риторика», 12.11.2018

Безграмотность местных органов порождала немало веселых моментов.

«Следствие и предметы», 01.04.2019

«Цифровые технологии в МВД», 01.04.2019

Добавляла эмоций и деятельность арбитражного управляющего НПО.

«Арбитраж для СИЗО», 01.04.2019.

Очень серьёзно относясь к изучению материалов уголовного дела, на нарушения и недостатки документов мы подавали ходатайства. Но у следствия не было таких задач — устранять недостатки и нарушения.

«Жёлтые ответы следователя», 14.05.2019

Прокуратура тоже предпочитала не вмешиваться.

«Кого защищает прокуратура», 20.05.2019

Ознакомление закончено, нам предъявлено обвинительное заключение, но ясность — что же за законы мы нарушили — это не добавило.

«Обвинительное заключение», 21.05.2019

Такое вот получилось уголовное дело. Теперь дело за Невским районным судом Санкт-Петербурга.

«Первый блин или суд без обвиняемых», 25.05.2019

Следите за новостями.

Берегите себя.

*#обзор, Семейный капитал, Уголовное дело*

## Дневничок. Цветная пропаганда. 28.05.2019

Девчонки рассказали: в передачах не пустили летнюю фотографию — на пляже, с бокалом вина — пропаганда спиртных напитков. Видели бы они — что за фотографии нынче в газетах печатают! :)

#дневничок, Оттуда

## Оценка блога. 29.05.2019

Этот блог читают по обе стороны решётки. Забавна разница оценок. Читатели снаружи говорят о чрезмерной жёсткости информации, а читатели внутри сетуют, что информация слишком мягкая. Выводы очевидны.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Суррогатное материнство в трактовке уголовного кодекса. 29.05.2019

Жила-была девушка. Очень хотела ребёнка, но здоровье не позволяло. Решила она воспользоваться услугами суррогатной матери. Составила договор, взяла на себя расходы по содержанию. Сложность ещё была в том, что яйцеклетку пришлось взять чужую, лейкоз не оставил шансов своей. Девушка была успешной. бизнес неплохо кормил. И партнёр по бизнесу решил, что настал удачный момент получить всё. написал заявление в полицию, что девушка покупает ребёнка. Закрутилась машина правосудия.

Обвинение: покупка человека с целью воспитания.

Девушка и суррогатная мама получили по три года реального срока. Малыша забрали в детдом. Девушка выйдет и заберёт его оттуда. “Я просто хотела быть мамой”, — говорит она.

Ситуацию с наказанием детей за ошибки матерей надо менять. Решения есть: см. пост “Малыши за решёткой”, 24.05.2019. Простые, честные и справедливые. Подключайтесь!

Берегите себя. И детей.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Дневничок. Как не умереть на шконке. 31.05.2019

Слушала спор девчонок — в какую сторону головой лучше спать — к окну или к двери. Аргумент: “Не хочу я спать ногами вперёд”.

Анекдот вспомнился:

Сидели, культурно отдыхали. Драка началась после слов: “Семантика этюдности в прозе Пришвина неоднозначна”

*#дневничок, Оттуда*

## Почта России. 02.06.2019

Жила-была девушка. Работала в большой гос. организации в одном из управлений. Среди должностных обязанностей девушки было сводить цифры из разных отделений и передавать итог в управление.

Преступную схему, которую использовали нехорошие люди ради жажды наживы, рассказывать не буду. Возможно, позже. Но девушку сделали крайней. Поставили ей в вину хищения, не особо вдаваясь в невозможность этого на её должности и при её полномочиях.

На предварительном заседании суда судья сказал (это отражено в протоколе): если признаешь вину и возьмёшь особый порядок — дам условный срок. Девушка подумала и согласилась — ведь сам судья предложил — наверное, так полагается. Признала вину и даже готова была выплатить ущерб — лишь бы этот ужас закончился. И… получила три года реального срока. Была арестована в зале суда, сидит в СИЗО, ждёт апелляцию. И уже не верит никому.

Берегите себя.

*#суды, Тюремные истории*

## Формула тюрьмы. 04.06.2019

«Украл — выпил — в тюрьму!» — эта формула давно устарела. Есть два глобальных фактора, изменивших уголовный мир.

Обо всём по порядку.

1. Ехали мы как-то в автозаке с воровкой. И она рассказывала про следствие, доказательства и т.д. Очень радовалась, что удалось «отбить» абсолютное большинство эпизодов, поскольку не было ни доказательств, ни видеозаписей, ни свидетелей. По нашему притихшему «мошенническому» сообществу она поняла, что что-то не так, что почему-то никто не в силах разделить с ней радость законной защиты от беспредела.

Вздохнув… мы рассказали ей — как «расследуются» дела о мошенничестве, особенно связанные с бизнесом.

Никто. Ничего. Не доказывает. Ты просто называешься преступником. И не нужны ни факты, ни доказательства, ни свидетели. В сложных случаях достаточно одного досудебщика (обвиняемого, заключившего досудебное соглашение со следствием), который всех оговорит, а в простых случаях… ничего не нужно. Осудят и посадят без всяких формальностей, просто со слов следователя.

Теперь притихла воровка. Её потрясение было столь… беззащитным, что уже мы принялись её утешать, что законы всё же существуют, что надежда на справедливость всегда есть.

Это первый фактор: расследование, как вид деятельности правоохранительных органов, почти ушло.

2. Всё больше случаев, когда осуждённые по статье «мошенничество» за 2-3 месяца до условно-досрочного освобождения, этапируют в СИЗО «за добавкой». По сути — судят второй раз за то же самое. Такие случаи начинают приобретать системный характер.

Время не властно над методами произвола. Цитата из Е. Гинзбург. Это про сталинские репрессии:

«Почти никто не питал иллюзий. Настоящей воли нет и не будет. Мы заложники. И достаточно сгуститься… нет, не то чтобы каким-то реальным тучкам, а просто — достаточно сгуститься дымку, клубящемуся из знаменитой трубки, чтобы нас снова загнали за колючую проволоку».

Сколько десятилетий прошло? Что изменилось? Кто об этом знает?

Страшные цифры видела в газете. За последний год в два раза снизилось число людей, получающих доход от предпринимательской деятельности. И значительно выросло количество тех, кто получает доход от государства. Будущий тупик предсказать несложно. Нужны ли кому-нибудь какие-нибудь доказательства того, что за экономические преступления должны быть экономические наказания?

Прочитайте — во что превратилась правоохранительная система. Там же есть и решения, которые могут разорвать этот замкнутый круг, который в каждом веке приводит только к насилию и упадку.

Поделитесь информацией с этими людьми. Привлечение внимания неизбежно приведёт к решению проблемы.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система*

## Особый порядок — взгляд из-за решётки. Часть 3. 06.06.2019

Начало статьи: часть 1 и часть 2.

И главное: работа следственных органов. Она лежит в основании возможного беспредела. И, как ни странно, именно её проще всего изменить.

Сделать это можно так:

1. Изменить критерии оценки работы

Подробно об этом писала: «Четвёртая власть», 26.10.2018. Понятно, что нужные показатели достигаются любыми путями. Это очевидно. И если награждают за пойманных преступников — со временем преступниками станут все. Если поощряют раскрытие тяжких преступлений — преступления будут искусственно утяжеляться. За примерами далеко ходить не надо: «Энцефалит против наркотиков», 10.06.2018. Если почётно раскрывать преступные группы, то их найдут повсюду. Этот процесс уже идёт: «Черно-белое кино», 16.04.2018.

По нашему делу преступной группой именуется семья: «Сговор» — 26.10.2018. Что поощряем, то и получаем. Другая система показателей есть: «Четвёртая власть», 26.10.2018. Она, возможно, трудна к внедрению тем, что почти не требует затрат, объективна и универсальна. Но мы всё равно к ней придём. Иначе быть не может. И чем раньше, тем быстрее станем процветающей и уважаемой страной.

2. Исключить безнаказанность следственных органов

Ни следователь, ни прокурор не несут ответственности за свою некомпетентность, невнимательность, фальсификации и т.д. У нас следствие, к примеру, подделало множество заявлений и показаний пайщиков. Это доказано. Что будет за это следователю? Скорее всего — ничего. Ничего не бывает и в более серьёзных случаях: «Нападение» — 06.05.2018. И это опять к теме круговой поруки органов: «Связи» — 11.06.2018. Но недостаточно наказывать правоохранителей за нарушения закона, нужно изменить ситуацию, чтобы убрать максимальное число возможностей для таких нарушений. Как это сделать — тоже уже написано: «Манифест» — 21.09.2018.

Можно начать и с мелочей: «Решение по незаконным арестам» — 27.10.2018, «Малыши за решёткой» - 24.05.2019.

Есть и комплексные варианты решений: «Письмо В.И.Матвиенко» — 05.12.2018.

И это только кажется, что преступники — отдельно, остальные — отдельно. Нет. Правоохранительная система во многом определяет идеологию государства.

Когда-то Войнович написал в колонке «Сноба»:

«Я уже где-то ссылался на высказывание человека, испытавшего на себе методы дознания немецкого гестапо и советского НКВД. Он говорил, что методы у тех и других были похожи, но разница в том, что в гестапо, пытая человека, добивались правды (признаться, что он еврей, коммунист или шпион), а в НКВД — лжи (признаться, что вредитель или шпион, не будучи ни тем, ни другим)».

К сожалению, мало что изменилось. Особый порядок ломает людей. Это очень и очень непросто — признать вину за то, что не совершал. Но математика проста: признаешься — получаешь четыре года или не признаешься — и получаешь семь лет лишения свободы. По практике цифры и пропорции именно такие. А ведь эти сломанные люди не только идут в колонию, они потом выходят из неё. Как это влияет на наше общество? Кто об этом задумывается?

Идеология, построенная на страхе, обречена. И пусть введение такой процедуры — особого порядка судебного рассмотрения уголовного дела — и было придумано с благими намерениями, но получился ад.

У Дмитрия Быкова это отлично описано:

Историю для наших ребетят
Изложим нелукавыми устами.
Одни сажают, прочие сидят,
Потом они меняются местами.
И дружно валят всё на времена,
А списывает всё опять война.

Очень важно заняться уже сбережением народа. Нынешняя правоохранительная система губит экономику. Пора меняться. Как — тут всё изложено. А то так и будем асфальт по обочине объезжать.

Изменить ситуацию может каждый. Необходимо донести информацию до этих людей.

Всё получится. Берегите себя.

#Правоохранительная система, Репост, Решения

## Дневничок. Брови. 08.06.2019

Брови — очень важная часть лица — они долго остаются мокрыми даже в страшную жару.

Наши прохладные лица смеялись над выщипанными бровями сокамерниц.

*#дневничок, Оттуда*

## Тайная кнопка журналистов. 09.06.2019

“Хорошо бы родиться с солнцем в крови”. М.Горький

Второй год мне интересно безразличие СМИ к материалам этого блога. Ни самостоятельный интерес, ни реакция на направляемые им статьи и письма просто отсутствуют. И недавно получила из разных источников два практически идентичных ответа. Ответы настолько совпадают, что позволяют предположить истинность.

Итак, журналистам можно многое: можно ругать власть, живописать ужасы коррупции, проводить расследования, заниматься анализом, историческими параллелями и т.д. Нельзя только одно: предлагать здравые решения. Чтобы никто не мог задаться вопросом — почему такие решения не применяются. Чтобы можно было любые статьи журналистов использовать для нагнетания ужаса и обоснования “сложности проблем” и, соответственно, оправдывать неспособность к действиям и требовать дополнительных бюджетных вливаний.

В этом блоге слишком много решений (http://freeverhova.ru/tag/solutions/). И журналистам для публикации этих решений требуется смелость другого уровня. Этой смелости пока нет. Но она обязательно будет. Поможет каждый, кто донесёт информацию до этих людей: http://freeverhova.ru/help/people-help/.

Смелых людей много. И среди этого списка — тоже. А там и журналисты подтянутся.

Берегите себя.

*#Репост, Тюремные хроники*

## Разбойники. 14.06.2019

Девушку обидел парень. Недолго думая, она попросила своего знакомого заступиться. Знакомый не отказал: пошёл, стукнул незадачливого кавалера по голове, забрал выпавший телефон и ушёл. Кавалер пошёл домой, засвидетельствовал сотрясение мозга и написал заявление в полицию.

Итог: знакомому за разбой — 9 лет колонии, а девушке, как организатору «разбоя» — 10 лет колонии.

Аккуратнее с разборками и кавалерами! Это раньше можно было сражаться за прекрасную даму. Нынче нравы не те, да и кавалеры тоже.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Чатлане и пацаки. Это наша страна. 15.06.2019

«Если ты хочешь видеть перемену в будущем — стань этой переменой в настоящем».

Б.Вербер, «Третье человечество».

Приморский район Петербурга широко известен своим беспределом в отделах полиции. И бьют, и пытают. Прокуратура пока бессильна. Периодически кого-то увольняют, сажают, но ситуация в

целом меняется мало. Из недавних историй: задержали девчонку — 18 лет. Ребёнок-ребёнком. Держали в отделении, не давали спать, пока не подпишет признание. На третьи сутки подписала.

Сталин, говорите, плохой? Или полицейские не в курсе, что пытать нельзя? К сожалению, в курсе. Но другие способы раскрытия преступлений им недоступны в силу образования и мировоззрения. Главное — поместить человека в СИЗО, а там система (см. «Обзор-1, Правоохранительная система и ФСИН», 18.04.2019) разберётся («Большая разница», 17.04.2018).

Необходимо срочно менять показатели работы полицейских. В статье «Четвёртая власть» (26.10.2018) описана простая доступная понятная и рабочая система показателей, готовая к внедрению хоть «завтра».

Что держит глубоко дефектную палочную систему — понятно. Финансовые потоки снизу доверху отлажены и передаются «по наследству» от уволенных и посаженных. Совести и внутреннего убеждения судей недостаточно, чтобы противостоять этой системе. Система мер, прописанная в «Манифесте» (21.09.2018) требует срочного воплощения. У нас в стране пока нет традиции беречь свой народ. Правоохранительная система вносит посильный вклад в дело «истребления» («Старые песни», 31.01.2019).

Оттого и переполнено питерское женское СИЗО. Оттого и сидят девчонки, понемногу меняясь («Тюрьма, краткое содержание», 09.06.2018) и в мировоззрении, и в физической форме, и в желании жить. И при этом… любят свою страну, верят в хорошее и надеются на лучшее.

Отрывок из письма домой той девчонки из Приморского района:

«Мне страшно бороться с этой системой непробойной. В России всё против людей.

Только в России сантехник может отложить замену унитаза, из-под которого всё течёт, считай, в туалет ходим на пол, из-за ремонта отопления в преддверии лета. В итоге мы третью неделю с дырявым унитазом.

Только в России в СИЗО-5 можно вставать в 6:00 и ложиться в 22:00, при этом целый день не ложиться и не сидеть на кровати, дабы весь день важной фигнёй пострадать, конечно, мы же не успеем за 16 часов.

Только в СИЗО-5 прогулка может проходить в пятнадцати квадратных метрах бетонной клетки, в которой видно небо лишь в клеточку, в которой гуляют пятнадцать гражданок (итого: один квадратный метр на человека). Это слишком много!

Только в СИЗО-5 могут быть 15-20 тряпочек в туалете для всех предметов, находящихся в нём, а также выкачивать воду с унитаза губкой, дабы помыть его.

Только в СИЗО-5, когда ты хочешь стать умнее, у тебя отбирают все книги, дабы те 16 часов стали ещё интереснее.

Только в СИЗО-5 можно зайти здоровым, а выйти в предсмертном состоянии и без зубов.

И этот список можно продолжать вечно. Знаешь, я уже ничему не удивляюсь, именно здесь я полюбила Россию, вкусила её соки и не только…»

Берегите себя.

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система*

## Для кого прямая линия президента. 16.06.2019

Объявили о прямой линии. Всё, как обычно — нужен телефон и интернет. :)

Прошу направить мой вопрос — вдруг заметят.

“Как донести информацию о решениях для правоохранительной системы с сайта freeverhova.ru до заинтересованных лиц?”

Заранее спасибо!

*#Оттуда, развитие государства, Репост*

## Суд идёт, а мы сидим. 17.06.2019

Забавно, но и второе заседание суда по нашему уголовному делу (см. “Обзор-3”, 26.05.2019) состоялось без обвиняемых. Хотя мы тут, в СИЗО-5, практически в шаговой доступности. Но нас даже не позвали.

Подумала несколько дней о вариантах причин такого течения событий. Вот что получилось:

1. Всё случайно. Цепь случайностей не пускает обвиняемых на заседания. Но в этом случае заседания должны переноситься, а этого не происходит. Меру пресечения продлили нам без нас (“Первый блин”, 25.05.2019).

2. Дело к Невскому суду не имеет никакого отношения (“Первый блин”), но отправить его по назначению почему-то не получается. Потому — просто тянется время.

3. Присутствие обвиняемых вынудит суд (а Генеральная прокуратура идёт на всё) совершать более грубые нарушения закона по такому “дефектному” уголовному делу (“Обзор-3”). А так — нарушение только одно — суд без обвиняемых.

В условиях недостатка информации можно только гадать. Следующее заседание назначено на 24.06.2019. Может, нас пригласят. А может и нет.

Несмотря на серьёзность ситуации не удержусь от анекдота:

“Доктор — пациенту:

— Что-то вас давно не было…

— Болел…”

Берегите себя.

*#Оттуда, Семейный капитал, суды*

## Арсеналка — профилактика туберкулёза. Гиппократ против погон. 18.06.2019

Вечером открылась кормушка (см. «Тюремный словарь», 13.01.2018), и мы увидели кучу пакетиков с таблетками. В каждом пакетике по 9 таблеток (4+2+2+1).

Почитав названия, подумав и сопоставив факты, мы поняли, что та зелёная, плохо державшаяся на ногах девушка с мокрыми ладонями, которую заводили в камеру, видимо, была туберкулёзницей. А этот набор таблеток — терапия.

Умиляет в данной ситуации даже не то, что всем выдали одинаково, не заморачиваясь по поводу индивидуальных заболевания и аллергий. Умиляет то, что просто выдали таблетки — и всё. И как принимать эти таблетки осталось неизвестным. Когда мы вежливо через дверь попытались выяснить, нам ответили: «Записывайтесь ко врачу — там всё узнаете». Логика есть. :) Только люди тут годами записываются ко врачу. И не попадают.

Медицина в СИЗО. Выживает сильнейший.

Берегите себя.

*#Медицина в СИЗО, Оттуда, ФСИН*

## Как раскрыть преступление за пять минут. 19.06.2019

“Безотказным инструментом генерирования безотчетного страха всегда был террор”.

П. Крашенинников “Страсти по праву”.

В соответствии с требованиями УПК обвинительное заключение должно содержать перечень доказательств, подтверждающих обвинение. Все полтора года в СИЗО было интересно — как можно доказать предъявленное обвинение в хищении денег? Ведь при расследовании была возможность убедиться, что деньги никто на личные счета не выводил, всё направлялось на реализацию заявленных проектов.

А теперь, внимание — доказательства из обвинительного заключения! Идёт перечисление вещественных доказательств по каждому потерпевшему:

— удостоверение пайщика;

— соглашение о внесении паевого взноса;

— соглашение об участии в хозяйственной деятельности;

— квитанции.

И… две строчки ниже: “Подтверждают хищение денежных средств, внесённых пайщиком КПК и НПО “Семейный капитал”.

Что и требовалось доказать! :)

То есть приём пайщика в кооператив и заключение с ним договора является доказательством хищения денег. Ну или другими словами: “Во всех кооперативах страны работают преступники”.

Делайте вывод о возможном развитии кооперации. Следственный департамент МВД РФ и Генеральная прокуратура: “Докажем всё!”

Вспомнился недавний анекдот из газеты:

“Какой смысл развивать российскую экономику, когда можно ввести уголовное наказание за отрицание её величия”.

Берегите себя.

*#Оттуда, прокуратура, Уголовное дело*

## Тэги. 19.06.2019

Описания рубрик блога Наталии из СИЗО.

159 статья

Заметки про 159 статью (мошенничество). Есть версия, что по этой статье была выпущена брошюра для следователей, что явилось причиной использования её направо и налево во всех удобных следствию случаях

вопросы без ответов

Иногда вопросы позволяют понять больше, чем ответы. А серия вопросов порой рождает неожиданные ответы. Периодически надо не только задаваться вопросами, но и не бояться искать ответы.

в одиночке

Заметки Наталии Верховой, написанные во время пребывания в одиночной камере.

дневничок

После записок Славы Сэ и Дневника домового (ЧеширКо) поняла, что мир современной литературы не полон без дневничка доброй зэчки. Придется создать. :)

Здесь — совсем короткие заметки — с улыбкой из СИЗО :)

женщины в сизо

Здесь собраны заметки, посвящённые женщинам и реалиям тюремной жизни женщин в СИЗО.

ИВС

Заметки, относящиеся к пребыванию Наталии в ИВС — изоляторе временного содержания.

книги

Заметки, посвящённые книгам. В дальнейшем планируются обзоры прочитанных в СИЗО книг.

конституционный суд

Заметки, относящиеся к Конституционному суду.

Карчава

Статьи блога и материалы дела, имеющие отношение к следователю 4 отдела следственного управления Санкт-Петербурга.

медицина в СИЗО

О медицинской помощи в СИЗО, а также об её отсутствии. Из личного опыта Наталии Верховой во время пребывания в СИЗО-5 Санкт-Петербурга и СИЗО-6 Москвы.

Москва-Шестёрка

Хроники, относящиейся к пребыванию Наталии Верховой в СИЗО-6 Москвы, куда её перевели весной 2018 в связи с переводом дела в Москву. На момент перевода в камере было 53 человека, абсолютное большинство — курящие. Вскоре в СИЗО началась эпидемия кори.

манифест

Программный документ — самые важные шаги для правоохранительной системы из тупика.

нарушения

Очевидные нарушения законов.

небайка

Истории, которые кажутся неправдой, тем не менее — реальные.

отец

Более полугода следствие не позволяло Наталии позвонить отцу-блокаднику, которому скоро 90 лет. Несмотря на то, что Наталия готова разговаривать на любых условиях: по заранее согласованному сценарию, в пристутствии следователя…

оттуда

Под меткой «оттуда» — все заметки Наталии, написанные во время пребывания в заключении.

обзор

Обзоры самых важных материалов сайта.

обращения

Тут обращения в различные инстанции, ответы, анализ и комментарии. Понемногу собирается база документов, доступная для использования. Как занести в протокол нужную информацию, как сменить прокурора, кому и как и в каком случае жаловаться — всё это в разделе «Обращения», который постоянно пополняется.

прокуратура

Питер-Арсеналка

Заметки Наталии, относящиеся к СИЗО-5 Санкт-Петербурга, известном как «Арсеналка». В этом СИЗО Наталия провела почти полгода с ноября 2017 г. , а после вернулась уже в 2019-м.

правоохранительная система

Анализ, диагноз и решения. Простые и надёжные. Систему изнутри вилят только люди за решёткой и люди в погонах. Но у людей в погонах слишком много ограничений, а людям за решёткой обычно не до этого. Тут — уникальная информация и абсолютно рабочие решения задач, связанных с правоохранительной системой.

Вы можете загрузить архив заметок в одном файле:

развитие государства

Мы хотим жить в сильном самодостаточном разумном заботливом и динамично развивающемся государстве. Всё реально и неизбежно. Здесь — о путях, решениях и способах ускорения.

репост

Ключевые статьи и заметки, которые Наталия просит по возможности распространять всеми способами.

решения

В этом разделе собраны предлагаемые Наталией Верховой решения всевозможных проблем, с которыми приходится сталкиваться многим гражданам.

суды

В этой рубрике — про суды Наталии Верховой.

СИЗО

Заметки Наталии Верховой, относящиеся к проблемам СИЗО в целом.

Семейный капитал

Штрихи деятельности уникального кооператива «Семейный капитал», опередившего время.

тэги

Расшифровки рубрик блога.

тюремные истории

Маленькие страшные кусочки чужих судеб. Этот раздел обязательно надо читать законодателям, чтобы понимать — какие недостатки законов позволяют ломать жизни. Все истории абсолютно реальные.

тюремные хроники

Двухминутки дневника Наталии Верховой из женского СИЗО. Текущие дела, события, забавные мелочи.

тюремный фольклор

уголовное дело

Заметки Наталии Верховой, относящиеся к кооперативу «Семейный капитал».

ФСИН

Людям на свободе трудно представить — какая же среда формирует преступников. Истории взаимоотношений заключённых с «исправительной» системой позволяют острее почувствовать ежедневные ощущения и полноту жизни на свободе.

ФСИН — это Федеральная служба исполнения наказаний.

чужие мысли

Размышления Наталии о высказываниях других людей применимо к её ситуации.

экономические преступления

Материалы, относящиеся к экономическим преступлениям.

*#Оттуда, Тэги*

## Банковский АУЕ. 20.06.2019

«Что же вы хотите, путаница кругом».

«Алиса в стране чудес.

Первый пост из серии «Вопросы без ответов».

Вначале немного исходных данных. Сведения взяты из открытых официальных источников.

ЦБ образован 13.07.1990.

Эльвира Набиуллина назначена главой ЦБ в июне 2013.

«Агентство по страхованию вкладов» (АСВ) создано в январе 2004

Гендиректор АСВ — Юрий Исаев — с января 2013.

За последние пять лет ЦБ отозвал лицензии у более чем 400 кредитных организаций. Доходы топ-менеджеров ЦБ ~35-45 млн.руб. в год, у отдельных ~80 млн. руб. в год.

Цитаты высокопоставленных сотрудников ЦБ:

1. Если организация не подпадает под надзор ЦБ, регулятор обращается в правоохранительные органы.

2. Мы ограничиваем всё, что может способствовать разрастанию схемных операций.

3. Причины недобросовестных действий банков:

— специфическая ментальность россиян;

— невозможность проверки контрагента;

— недостатки регулирования.

4. Мы активно вводим систему поощрения разоблачений.

Примерно с 2013 г. экономику стало потряхивать по отраслям: строительный кризис, кризис туроператоров, кризис перевозчиков и т.д. И… экономика стала регулироваться уголовными делами. «От банкира зрящего до лагерного смотрящего».

Переходим к вопросам. Для удобства восприятия вопросы разбиты на группы.

I. Как объяснить феномен, что у всех банков с отозванными лицензиями абсолютно одинаковые проблемы?

Как абсолютно разные люди совершали абсолютно одинаковые преступления? Да ещё в одном периоде 2014-2016? А ведь это не фирмы-однодневки. Это банки с серьезной историей и длительным периодом работы. У нас что, есть какое-то тайное общество для подготовки последующего внедрения в банки (видимо, изначально устойчивые), преступников? Или банковская система подбора кадров требует людей с менталитетом преступников? Какие учебные заведения готовят банкиров-расхитителей?

Как можно иначе объяснить, что абсолютно разные люди в абсолютно разных организациях совершают одинаковые преступления?

II. Почему арестованные банкиры, как правило, признают свою вину, но не знают, где же находятся «украденные» миллиарды? Практически никто из фигурантов последних банковских дел не обладает вообще никакими активами.

Может, они элементарно умеют считать? Признаешь — получишь 5 лет колонии, не признаешь — 10. или, как прекрасно образованные люди (а других на высших должностях нет), понимают бесперспективность доказывания очевидных вещей людям, не понимающим не только элементарных законов экономики, но и терминологии?? Или… что-то мешает осваивать гигантский бюджет, заложенный на ликвидацию экономической безграмотности?

III. Как можно считать банки суверенными институтами? Развивающимися отдельно от всех. Если кризис системный, как можно винить в этом отдельных топ-менеджеров отдельных банков? Если банкротятся крупные компании, которые, конечно, являются заемщиками банков, как банки переживают невозвращенные кредиты? А когда банкротства массовые?

Как банки покрывают убытки, имея низкую рентабельность? как банки могли пережить отраслевые кризисы, когда профильные фирмы сыпались сотнями?

IV. Неужели руководители ЦБ не знаю законов экономики? Или очень удобно объяснить собственное бессилие в попытках надзора назначением виновных? И назначить виновными даже не собственников бизнеса или топ-менеджеров, а просто абсолютно любого сотрудника банка. А уж пресловутая ст.210 УК РФ (организация преступного сообщества) вообще открывает безграничные возможности по устранению людей.

Почему не слушают Президента, призывающего быть внимательнее к признанию вины и особому порядку (см. «Особый порядок», 23.05.2019)?

Почему идут почти ежедневно бодрые рапорты от очередном раскрытии очередного многомиллиардного типового хищения в банках, успешно работавших более 20 лет?

Не оказались ли сотрудники банков, работавшие в репрессивные годы, заложниками системных ошибок не только своих предшественников, но и банковской системы в целом, во главе с регулятором?

* * *

В бодрых газетных отчетах часто встречается: «Растет доверие к банкам». Последний вопрос на сегодня:

Разве можно безысходность назвать доверием?

Берегите себя.

*#банки, вопросы без ответов, Оттуда, развитие государства, Репост*

## Дневничок. Тюремный аскетизм. 21.06.2019

Сначала у нас отобрали всё, не соответствующее Правилам внутреннего распорядка (см. Приказ Минюста №189).

Затем из камеры изъяли _все_ книги и журналы.

Потом у нас переписали/пересчитали одежду, изъяв лишнее с точки зрения ПВР (см. “Обращение в Минюст”, 13.02.2018).

Следующим шагом стало изъятие _всех_ лекарственных препаратов, включая витамины, йод и перекись водорода. Учитывая принципиальную невозможность дозваться мед. работника, что бы ни случилось, стало страшновато.

Думаем о следующих возможных шагах к полному аскетизму: изъятие еды, документов, бумаг.

СИЗО — Арсеналка. Всегда неожиданно.

*#дневничок, Медицина в СИЗО, Оттуда, Питер-Арсеналка*

## Тюремный глянец. 22.06.2019

Всё-таки питерское женское СИЗО очень дикое место. :) Отбирают не только журналы, но и любые цветные картинки. Надо бы поправить эту ситуацию :)

Друзья, мне нужна ваша помощь! Подпишите меня, пожалуйста, на разные глянцевые журналы. Они придут ко мне с отметкой цензора, и никто не сможет их отобрать. Постепенно они разойдутся по разным камерам. Сотрудники постепенно привыкнут к наличию журналов и перестанут кидаться на них на обысках и проверках. А девушки, женщины и бабушки получат возможность не просто читать, сохраняя себя от падения в тупое безразличие, а будут наслаждаться красивыми картинками, впитывая яркие цвета, мечтать о будущем.

Можно смело подписывать до конца года. Даже если случится чудо, и я покину эти стены, приходящие журналы (а я оставлю необходимые распоряжения) продолжат менять жизнь к лучшему в женском СИЗО Санкт-Петербурга.

Мы можем это сделать.

P.S.

На сайте Почты России (https://podpiska.pochta.ru/collection/women) можно оформить подписку на адрес Наталии в СИЗО: 195009, Санкт-Петербург, Арсенальная ул, 11

Наталия Дмитриевна Верхова, 6.12.1969

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, Тюремные хроники*

## Аксиома. 23.06.2019

В СИЗО содержатся невиновные, для которых выбран строгий режим изоляции от общества.

Будем опираться на законы:

Конституция. Ст.49 п.1.

Каждый обвиняемый в совершении преступления считается невиновным, пока его виновность не будет доказана в предусмотренном федеральным законом порядке и установлена вступившим в законную силу приговором суда.

Уголовно-процессуальный кодекс.

Ст.14 п.1

Обвиняемый считается невиновным, пока его виновность в совершении преступления не будет доказана в предусмотренном настоящим Кодексом порядке и установлена вступившим в законную силу приговором суда.

Ст.97 п.1

Дознаватель, следователь, а также суд в пределах предоставленных им полномочий вправе избрать обвиняемому, подозреваемому одну из мер пресечения, предусмотренных настоящим Кодексом, при наличии достаточных оснований полагать, что обвиняемый, подозреваемый:

1. Скроется от дознания, предварительного следствия или суда.

2. Может продолжить заниматься преступной деятельностью.

3. Может угрожать свидетелям, иным участникам уголовного судопроизводства, уничтожить доказательства либо иным путём воспрепятствовать производству по уголовному делу.

Таким образом, цели содержания под стражей следующие:

1. Не дать скрыться.

2. Исключить продолжение преступной деятельности. Причём если человек обвиняется по экономическому преступлению, неправильно его ограничивать с целью, чтобы он кого-нибудь не убил. Так что действия могут быть направлены только на исключение продолжения именно той преступной деятельности, в которой он обвиняется. Это важно.

3. Взять под контроль все контакты обвиняемых, исключив противоправные действия в отношении этих контактов.

4. Обеспечить законность действий обвиняемых для исключения воспрепятствования производству по уголовному делу.

Никакие другие цели не могут преследоваться заключением в СИЗО. Никакие запреты и ограничения, не соответствующие целям содержания в СИЗО, не могут быть введены.

Многое, что сейчас существует в правилах внутреннего распорядка СИЗО (см. Обращение в Минюст 13.02.2018) является наследием темного гулаговского прошлого и не имеет отношения к законности.

Наведением порядка с подзаконными актами как раз и исключается большинство незаконных целей заключения в СИЗО (см. Большая разница, 17.04.2018).

А убрав огромное количество абсурдных запретов, мы ограничим издевательства над невиновными людьми (Обращение в Минюст, 13.02.2018).

Поэтому любой закон или нормативный документ, затрагивающий права обвиняемых, должен опираться на аксиому:

В СИЗО содержатся невиновные люди, для которых выбран строгий режим изоляции от общества.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Репост*

## Аргамак. Что мы думаем про небо. 24.06.2019

“Героизм — это не поединок с врагом, а стоическое терпение, отрешение от собственных страданий во имя счастья грядущих поколений”.

В. Пикуль “Через тернии к звёздам”.

Эти хорошие добрые люди не были мне друзьями. Хорошие знакомые, получающие взаимное удовольствие от общения. Их сын погиб рядом с домом под колёсами грузовика. Боль оказалась для них непереносимой. Они ушли вслед. Сами. Их можно было спасти. Нужно было быть рядом. Просто рядом. Может. и недолго, но именно тогда. Поддержать после страшного удара.

Среди впервые попавших за решётку примерно половина остаётся без поддержки. Среди повторных “посетителей” мест лишения свободы — уже около 90% могут надеяться только на себя. Эта проблема не решается внутри СИЗО. Не помогут ни штатный психолог, ни воспитатель. СИЗО предназначено для ломки людей (см. пост “Большая разница”, 17.04.2019). Необходимо в разы сократить заключения под стражу. Для статей, не связанных с насилием, для тех, кто не объявлялся в розыск, для преступлений, совершённых впервые — исключить меру пресечения — содержание под стражей. Потребности изоляции, прописанные в УПК, решаются и другими способами. Мера социальной защиты не должна быть орудием недобросовестных

правоохранителей и вариантом превентивного наказания. Не понимаете, что такое СИЗО? Читайте! “СИЗО как мера пресечения”, 08.04.2019.

Реформа ФСИН бесполезна, пока там такое количество заключённых, пока связка следствие-прокуратура-суд поставляет виновных и не очень (см. “Обзор 2. Тюремные истории”, 06.05.2019). Прекратить незаконные аресты просто. Тут — “Решение по незаконным арестам” — 27.10.2018 — написано, как это сделать.

Необходимо дать людям возможность защищаться. Дать им возможность не покидать общество. Сохранить людей (“Старые песни”, 30.01.2019). В минуту трудности людей надо поддерживать, а не добивать.

Посмотрите на небо. Только в сказке после кипящего котла можно выйти молодым и здоровым. В жизни так не всегда.

В советское время унижения порой шли фоном, люди к ним привыкали, не замечали. Сейчас есть возможность изменить это. Документ (“Манифест, 21.09.2018) о необходимых действиях должен быть у всех, кто принимает решения в правоохранительной системе. Эти люди помогут. До них надо донести информацию этого блога. нужна ваша помощь в этом.

Небо просто есть. Большое и разное. Иногда бывает дождь, иногда снег. Но мы живём. А ежедневный героизм… он в простых действиях. Потому и конец света не так важен, как конец тьмы. Поддержка вместо агрессии делает мир лучше. Мир, где будут жить наши дети и внуки. И смотреть на небо.

Действуйте.

И… берегите себя. Вы нужны этому миру.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Решения*

## Дневничок. СИЗО на страже морали. 25.06.2019

Радио звучит с утра до вечера. Что слушать и с какой громкостью выбираем не мы, а дежурный по СИЗО. Слушали Европу-плюс. По случаю пятницы была передача про качественный секс. :) На теме «как женщину настроить на секс» дежурный спохватился и сменил волну. :))

*#дневничок, Оттуда*

## Хранители планеты. 27.06.2019

Полгода назад сформулировала национальную идею России (см. пост “Национальная идея России”, 01.02.2019). С обоснованием. Мы — хранители планеты. Во всех смыслах.

И вот. Смотрю новости про Петербургский Международный Экономический Форум. Упоминают слова президента: “Нам пора задуматься о сбережении планеты”.

Ура! Что тут скажешь…

Взрывы в крюйт-камерах воздействуют гораздо сильнее, чем любые атаки снаружи.

Необходимо доносить информацию из этого блога до людей, способных действовать (К кому и куда стучаться).

Помощь каждого из вас- бесценна.

Мы сами формируем своё будущее.

Всё хорошее получится.

Берегите себя. И действуйте.

*#Оттуда, развитие государства, Репост*

## Инструменты пыток, доступные судьям. 28.06.2019

Если пред бедами случайными

Ты упадаешь духом,

То где же философия твоя?

Шекспир, “Юлий Цезарь”

Общепринятое представление о том, что пытки людей практикуются следствием и учреждениями ФСИН, недооценивают роль судей. А зря.

“Квалифицированный» судья владеет целым арсеналом средств доведения обвиняемого до нужной кондиции. Рассмотрим некоторые из них.

1. На судебной стадии разрешения на звонки и свидания с обвиняемыми дается судьей, ведущим дело. Или не дается. И то, что в законе не прописано — в каком случае можно отказывать в разрешениях — даёт очень широкие возможности для любых решений. Без всякого объяснения. Годами не иметь возможности поговорить с близкими — нередкая ситуация.

2. Отношение судей к ходатайствам защиты во многом определяет исход процесса. Допросы свидетелей, проведение экспертиз, приобщение доказательств — всё может быть отклонено. А ещё можно отклонять вопросы защиты свидетелям и потерпевшим — у судьи есть такие возможности. И можно лишить обвиняемого всех шансов на защиту, просто “грамотно” ведя процесс. Многие вещи можно будет оспорить только на апелляции, но обычно это уже поздно.

3. График заседаний. Это самая простая и действенная пытка. И практически в рамках закона. Можно, например, назначить заседания на каждый день. И тогда уже на третий день обвиняемый становится практически безразличен к процессу.

Вставать в пять утра, многие часы проводя в автозаках (см. “Легализованные пытки” 08.12.2018) и тесных конвойках, возвращаться в камеру сильно за полночь — адекватно бороться за свою защиту более, чем трудно. Обычно люди ломаются. А можно и поиграть — назначить выезды три дня в неделю: один через один и два подряд — очень эффективный способ выматывания. Восстанавливаться практически не успеваешь, не то что готовиться к заседаниям. Две-три недели и… люди ломаются.

А можно и не отменять заседание, даже если известно, что, например, адвокат не придёт. Всё равно покатать человека из СИЗО в суд и обратно. Просто так.

А можно доставить человека в суд и… перенести заседание. По любой причине. Но обвиняемый уже получает очередную дозу пыток (у сокамерницы переносили заседание шесть (!) раз, и каждый раз вывозили в суд).

Так что игры с графиком судебных заседаний — очень надёжная пытка.

Есть и другие судейские возможности. О них — в другой раз. Пока достаточно, чтобы задуматься — каково это — быть обвиняемым в СИЗО. Впрочем, СИЗО сейчас — именно для этого и используется (см. “Большая разница”, 17.04.2018).

Решения есть (“Манифест”, 21. 09.2018). Помочь тоже легко — например, донести информацию с этого сайта до этих людей. Будущее определяем мы. Здесь и сейчас.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Репост, суды*

## Глухонемая переписка. 29.06.2019

Сначала анекдот. Просто анекдот. В «Комсомолке» прочитала. :)

— С чем связана твоя работа?

— С идиотами.

Стандартная ситуация, когда следователь приносит для ознакомления неоформленные тома уголовного дела. К сожалению, слишком стандартная ситуация. Помимо жалоб на конкретно мою ситуацию решила посмотреть, насколько этот бардак глобален.

16.09.18 написала запрос в МВД с просьбой сообщить реквизиты документа, регламентирующего содержание и оформление томов уголовного дела (на это есть соответствующая инструкция МВД по делопроизводству). 29.10.18 получила ответ от 03.10.18 из МВД, где было сказано, что мой запрос отправлен в следственный департамент, где расследуется моё уголовное дело (хотя давно уже ясно, что следственный департамент не компетентен в оформлении уголовных дел :)).

Следственный департамент ответил 05.10.18, я получила ответ только 29.10.18 (подозреваю, что дело не только в Почте России :) ). Следователь указал, что в ст. 217 УПК РФ «приведён исчерпывающий перечень требований, предъявляемых к материалам уголовного дела.» Потрясающе! Просто новое слово в юриспруденции! :)

Закончив удивляться (странно, но меня и правда всё ещё удивляет глубина необразованности и непрофессионализма отвечающих мне на запросы), написала вежливый ответ в ГУ МВД, где указала на несоответствие ответов моему запросу. Это было 5.11.18. И вот: 11.02.19 я получила ответ ГУ МВД от 27.12.18, где разговор достиг своего апогея. Мне не могут ответить, поскольку я не указала номер своего уголовного дела! Вуаля! А если бы у меня вообще не было уголовного дела? Со мной и разговаривать не стали бы? :)

Теперь я эту чудесную переписку уже отправлю по нескольким адресам: прокуратура, руководство МВД, ОНК, уполномоченным по правам человека, да и прессу в стороне не оставлю.

На окнах вечные решётки

В прекрассном стиле рококо.

Котлета, щи, гуляш и пшёнка.

Но как же пишется легко.

А. Розенбаум.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Революция правосудия. 01.07.2019

«Что касается революции, то в буквальном переводе этот термин означает „полный оборот, приводящий к отправной точке“. Для тех, кто желает идти вперёд, в качестве цели она не представляет никакого интереса».

Б.Вербер «Третье человечество».

Уже не в первый раз пишу про революцию. Считаю, что революция как общественное явление недостаточно изучено. И ещё цитата. От Розы Люксембург: «Революция — единственный вид войны, где победа приходит после целого ряда сокрушительных поражений».

Какую революцию хотели заложить, рассчитывая на молодежь, привлечённую Навальным? К чему хотели толкнуть людей, ударив полицией по первомайской демонстрации на Невском? К какой точке хотят вернуться организаторы революций?

Правосудие сломалось не у большевиков. Значительно раньше. Когда целью наказаний стало не благо общества и каждого из граждан, а банальная месть и банальный страх.

Революция — это когда боль от потерь и поражений становится невыносимой, и тогда готов идти любым кругом, пусть даже с возвратом в исходную точку, но только не дальше — честно и прямо. Начинаю думать, что великий круг Ленина — просто от боли за погибшего брата. Что ж, мы прошли этот круг. Пора вернуться к нормальному созиданию.

Нас мало. Нас действительно мало на такую огромную территорию. Двадцатый век — век человеческих потерь. И старая страшилка: «На землю без народа придёт народ без земли», — давно зовёт не к словам, а к действиям.

Нынешняя правоохранительная система («Обзор 1», 18.04.2019) губит не только экономику («Обзор 2», 06.05.2019), она косит ряды граждан («Старые песни», 30.01.2019).

И сейчас необходимо вернуться к бережности. Беречь людей. Поддерживать оступившихся, помогать сильным работать лучше. Пенитенциарная система — это крайняя мера. Правоохранители должны предупреждать преступления. А задачей должно быть — не наказать преступников, а помочь им вернуться в общество. Никто и никогда не выходил из мест лишения

свободы лучшим членом общества, чем зашёл туда. По данным «Руси сидящей» — 83% рецидивов. А в 2016-м их было 53%. Понимаете? Какие ещё доказательства неправильной системы наказаний нужны? Средний срок заключения в Европе — 8 месяцев, в России — 5-6 лет. И это совсем не потому, что у нас преступники более опасны. Мы не бережём людей. Такая у нас революция была.

И надо начинать движение. Не по кругу, а вперёд. Необходимо исключить лишение свободы для впервые преступивших закон и не связанных с насилием. У людей должен быть шанс остаться в обществе.

Первоочередными задачами являются:

1. Запретить арест по преступлениям, не связанным с насилием. Достаточно других инструментов, обеспечивающих соблюдение законных интересов следствия. Арест — крайняя мера. Даже простое соблюдение закона уже освободит многих из СИЗО («Решение по незаконным арестам», 27.10.2018).

2. Сделать обязательным применение ст.82 УК РФ (отсрочка наказания до совершеннолетия детей) для родителей несовершеннолетних детей. Это не только даст шанс родителям, но и освободит малолетних узников колоний («Малыши за решёткой»).

3. Обязательно условно-досрочное освобождение. Сейчас удовлетворяются менее половины ходатайств. Система выталкивает людей из общества, лишая их шансов. После зоны это и так очень непросто. Как изменить ситуацию — написано («Жизнь после», 04.06.2019).

Перечень необходимых прямо сейчас действий прописан в «Манифесте» (21.09.2018) — это очень эволюционный документ. не надо революций в правосудии. Нужна последовательная работа на благо общества. Пусть это банально, но люди — это самое дорогое, что есть у страны. Людей надо беречь. Всех. Всегда.

И если не доводить до криминальной жизни в тюрьме впервые оступившихся, то через несколько лет ситуация с преступностью в корне изменится в лучшую сторону. Это будет путь к обществу. достойному наших детей и внуков.

Делать надо уже сейчас.

Берегите себя.

*#Оттуда, Правоохранительная система, Решения*

## Судебная небайка. Отношения обвиняемых. 02.07.2019

На суде допрашивают свидетеля (сотрудника органов).

Судья: В каких отношениях состояли обвиняемые?

Свидетель: Они подельники.

*#небайка, Оттуда, суды*

## Тэг #суды. 02.07.2019

Право на судебную защиту у нас прописано в Конституции. Но на деле жалобы в суд практически бесполезны (см. Судебная защита, 21.01.2019). Абсолютное большинство жалоб в суды в порядке ст.125 УПК РФ отклоняются даже без рассмотрения.

Следствие, прокуратура, суд. Вот три формально независимых органа, которые регулируют уровень справедливости в стране. Профессиональная деградация затронула многих. И судьи не остались в стороне от этого процесса. Не спасает ни кодекс судейской этики, ни “защищённость” судей. Но всё же, через суды видится самый быстрый путь исправления ситуации в правоохранительной системе (см. Обзор-1, 18.04.2019). Этот тэг — для облегчения работы тем, что хочет наладить судебную систему.

*#суды, Тэги*

## Модный приговор в СИЗО. 03.07.2019

В конце рабочего дня девчонки встают у окон и смотрят, как сотрудники СИЗО уходят домой. Уходят они уже в гражданской одежде. И… начинаются обсуждения. :) Кто как одет, кто как ходит, обувь, аксессуары — всё разглядывается и комментируется. Некоторые в форме выглядят лучше, а некоторые расцветают в гражданском.

И, конечно, рассматривание людей в гражданской одежде выдаёт тоску по свободной жизни, где люди могут сами выбирать себе одежду и даже гладить её. :)

А тут… наказание авансом, лишение права на нормальную жизнь часто просто по прихоти следователя (см. Большая разница, 17.04.2018).

И мы обязательно придём к тому, что женских СИЗО не будет. Просто потому, что так должно быть (Манифест, 21.09.2018).

Берегите себя.

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Тюремные хроники*

## Системник на крови. 04.07.2019

Жила-была семья. Мать да взрослые дети: брат с сестрой. Девушка-студентка, училась, работала. А брат, в основном, сидел дома да играл на компьютере в онлайн игры. Что-то выигрывал, что-то продавал, и в какой-то момент взял у сестры телефон да продал его. Сестра возмутилась — всему есть границы. Забрала у него системный блок компьютера, потребовала вернуть телефон.

Брат думал недолго — написал заявление в полицию о краже. Следователь, переживая за девушку, а ведь суть дела очевидна, предлагал ему подписать мировую — парень ни в какую. Предлагал и девушке — написать встречное заявление на брата. Но девушка отказалась — неправильно это — на брата в полицию заявлять. Суд. И получила девушка три (!!!) года реального срока. Судьба поломана, зато брату теперь никто не мешает играть дальше.

Что тут можно сказать. В сторону следователя — ничего. А вот по поводу суда — невесёлые размышления. 80% уголовных дел сейчас рассматриваются в особом порядке: обвиняемый

признаёт вину, и дело по существу не рассматривается — никакие факты и доказательства не имеют значения.

Помимо предположений о деградации следственных органов напрашивается и предположение о деградации судов. Ведь если идут сплошным потоком признавшие вину и соглашающиеся с любыми, даже абсурдными, обвинениями, то неизбежно “замыливание” и изменение отношения к подсудимым. И никто уже не хочет разбираться в деталях, выясняя, что и почему случилось, кто виноват и насколько.

Но за каждым делом — человеческие судьбы. И каждое решение — необратимо меняет жизнь. И планируемая сплошная кассация даёт надежду на справедливость. Пусть даже чуть позже, чем надо.

По большому счёту, для исправления недостатков правоохранительной системы (см. Обзор-1) достаточно, чтобы суды заработали так, как прописано в законах, чтобы они не просто соглашались со следствием и слушались прокуратуру (Волокита от СД, 26.02.1029). И чтобы начиная с ареста (Большая разница, 17.04.2018) и до приговора (Обзор-2) судьи не допускали не то что прямого нарушения закона (Судебная защита, 21.01.2019), а даже толкования законов не в пользу обвиняемого (Клетка правосудия, 01.05.2019). И очень надо, чтобы не было рутинных посадок. Это очень и очень вредит стране (Путь к счастью, 12.11.2018).

Берегите себя.

*#суды, Тюремные истории*

## Дневничок. СИЗО. Советы врача. 05.07.2019

— Гипертония? Зачем вам тонометр? Просто пейте таблетки.

— Холецистит? Белые сухарики решат все ваши проблемы.

— Желудок беспокоит? Промокайте суп туалетной бумагой, снимайте жир.

— На здоровье жалуетесь? Езжайте на зону и сдохните там.

Медицина в СИЗО. Выживает сильнейший.

*#Медицина в СИЗО, Оттуда, Питер-Арсеналка, ФСИН*

## Небайка. Что курил Пушкин. 07.07.2019

Едем этапом в Столыпине. Мужики за стенкой обсуждают Пушкина. Кот… по цепи… сказку говорит… Вывод: Пушкин точно употреблял. Скорее всего, судя по картинкам — траву курил.

Такое вот видение классика от наркодельцов.

*#небайка, Оттуда*

## Смертельный арест. 08.07.2019

Сидела у нас девушка в СИЗО. Жаловалась на недомогания. Врачи честно осматривали, симптомы списывали на климакс. Добилась девушка изменения меры пресечения — ушла на домашний арест. А через две недели умерла. Дома. Невиновная. Это был рак.

Есть ли вина врачей СИЗО? Вряд ли. При тех возможностях, что есть в СИЗО, наверное, они сделали всё. А вот о дикости (см. Тюрьма — краткое содержание, 09.06.2018) применения заключения в СИЗО всем подряд (Решения по незаконным арестам, 27.10.2018) — не устану повторять. И планы по необходимым действиям давно написаны (Манифест, 21.09.2018).

СИЗО — не место для невиновных людей, физически не опасных для общества. Всё можно решить другими мерами пресечения (Большая разница, 17.04.2018). А заключение в СИЗО в абсолютном большинстве случаев служит только интересам следователей, которые разучились расследовать и умеют только ломать. Непрофессионализм следственных органов бывает смертельным.

Родители и дети умершей девушки никогда не смогут понять — за что и ради чего её убили.

Помочь с изменением ситуации может каждый. Нужно донести информацию с этого сайта до этих людей: http://freeverhova.ru/help/people-help/.

Чужих проблем не бывает.

Берегите себя.

*#Медицина в СИЗО, Правоохранительная система*

## Дважды снятые трусы унижением не считаются. 09.07.2019

Помимо автозаковских пыток (см. Легализованные пытки, 08.12.2018), нарушения режима сна и питания, каждый выезд в суд сопровождается регламентными унижениями.

Рассказываю. Выходим утречком из камеры, в сборном отделении ждём конвоя в суд. По прибытии в суд подвергаемся полному личному обыску, с раздеванием и перетряхиванием вещей. Как будто мы не из СИЗО прибыли, а с воли зашли.

Принцип презумпции невиновности заглушается межведомственными разборками (СИЗО относится к ФСИН, а конвой — к МВД) и историческими традициями 30-х годов.

По возвращении вечером в СИЗО — та же история — полный личнй досмотр с обнажением. Не могу не вспомнить реакцию МИДа (см. Бревно, 02.09.2018) про Бутину: “…неоднократно унижающе досматривали”. Ха-ха. Жизни не знают, наверное, в МИДе. Ежедневной жизни российских СИЗО, где находятся невиновные люди (СИЗО и зона — два фокуса нелогичности, 17.02.2019).

В СИЗО абсурд раздевания усиливается наличием “технических средств” досмотра — есть установка, как в аэропортах, просвечивающая с заданной степенью детальности. Но: есть инструкции “для служебного пользования” и те же исторические традиции.

Написала письмо в УФСИН по Москве — а то, может, ребята не знают? :)

Теперь знают.

Надо исправлять ситуацию. Мелочей нет. В отношении к таким деталям проявляем лучшее и худшее, что в нас есть.

Берегите себя.

*#Москва-Шестёрка, ФСИН*

## Дневничок. Свободное время. 10.07.2019

С утра свет помигал и пропал. С шумным хлопком взорвался конденсатор в блоке питания антенны. Когда вечером свет появился, мы печально убедились, что телевизор больше не показывает.

Пожаловались на вечерней проверке. Получили совет: читайте книжки.

Ага. После этого (см. Тюремный аскетизм, 21.06.2019) полная сарказма фраза должна была звучать так: “Съешьте таблетку, оденьтесь потеплее и читайте книжки”.

*#дневничок, Оттуда, Питер-Арсеналка*

## Что мы можем, когда ничего не можем. 11.07.2019

*Слеп тот, кто не хочет видеть.*
*Стивен Кинг.*

Хочу познакомить вас с одним человеком. И не так важно, что наше с ним знакомство — очень заочное. Иван Бакаидов. Он программист. ДЦП. Не говорит. Его действия и программы помогают людям жить. Просто жить. Он много ездит, выступает, пишет стихи, рассказы. Почитайте это:

*Я сел на общественный транспорт. Это случилось из-за того, что такси главная статья моих расходов, а пришло время много перемещаться и экономить. Я послан за письмо про соц такси на четверть ставки помощником логопеда по а-коммуникации, в реаб центр Прим района. Как будут вторые результаты — отпишусь.*

*Я лихо гоняю зайцем туда на двух маршрутках. Нахожу зрительный контакт с водителем, улыбаюсь, он не трогается, пока не сяду, а перед остановкой просто кричу звук ААА, что имеет смысл: “Извозчик, великой любезностью вашего рассудка приостановите бренную телегу на следующей остановке и не трогайте, пока я не покину вас с раной на сердце”. Моноальтернативная коммуникация…. Ведь мое ААА можно понять только так?*

*Если путешествую на коляске, пользуюсь автобусами и троллейбусами, уже приходится платить, работают там русские, а проездной делать лень, ибо русский. Заезжаю туда по пандусу, который откинул водитель, перед этим ткнув в подстекольный пункт маршрута, на котором не буду кричать ААА.*

И это:

*Сегодня мы начали заниматься с Даней в паре с психологом. Даня клевый парень с ДЦП. Не говорит, руками почти не работает. Рекомендую всему детскому центру коммуникацию с помощью ладошек (когда перед ребенком расставляют две руки, левая ладошка обозначает один вариант, а другая второй и куда посмотрит), это поможет Дане быть вовлеченным в коммуникацию. Сегодня же мы тренировались работать с кнопкой. А делали мы это с помощью моей игрушки DisCoin, ведь все дети любят играть. Задача Дани была нажимать кнопку, когда кубик под монеткой становился зеленым. Сначала мы положили кнопку под руку, но мальчику было тяжело нажимать и отпускать кнопку, и я предложил перенести кнопку под затылок, Даня смог нажимать кнопку. Очень важно не создавать двигательные трудности*

*при освоении новой коммуникации. Но у Дани пока нет навыка фокусироваться на экране и ему было тяжело различить монетку (да еще и я накосячил с контрастом в игре, буду исправлять).*

*После занятия Даня светился радостью, и радостно курякал на вопрос воспитателей: “Ты на компьютере, как взрослый, работал?”. Я верю в то, что Даня освоит кнопку, а в дальнейшем и джойстик, и всем нам покажет, что хочет сказать.*

*Потом был еще один клиент, малюсенькая девочка с РАС. Пока только познакомились.*

*В перерывах я наполнял фразами Ванилин, свою коммуникативную доску, на основе китайской мини-клавиатуры, за которую я вновь взялся, ибо очень хочется говорить быстрее… Уже готовы категории Приветствия, комплименты, согласие/несогласие, и ванилин (фразы о штуке). Очень забавно было опробовать функцию случайного выбора фраз, Когда я жму “9” (на этой кнопке согласия) и tab и получаю случайное “вы абсолютно правы” или же “безусловно” (как завещал Илья Утехин). Смог быстро здороваться утром с коллегами и говорить им комплименты (естественно случайные).*

*Маршрутка, не в ту сторону сел, кольцо, поехали, пересадка, маршрутка, дом, одинокие макароны.*

И вообще всё: https://vk.com/ibakaidov и https://www.facebook.com/ibakaidov.

Не буду писать очевидные вещи про возможности каждого. Это был просто мой подарок вам на сегодня.

Не всегда нужно беречь себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Берлинское СИЗО. Почувствуйте разницу. 13.07.2019

Сущность человека — совокупность всех общественных отношений.

К.Маркс

У нас появилась новенькая. В 2014 г. в Питере она работала в небольшом КПК менеджером. Уволилась, уехала в Германию. Когда полгода назад её арестовали в Берлине, узнала, что есть уголовное дело, но руководители остались в стороне, она- единственная обвиняемая. До экстрадиции в Россию сидела в тюрьме в Берлине.

После наших лишений (см. Тюремный аскетизм, 21.06.2019) было очень познавательно послушать, как у немцев всё устроено.

В Германии три тюрьмы. Каждая тюрьма — 70-8 чел. Тюрьма разделена на секции по 10 человек — 10 камер. На этаже — две секции. Деления по преступлениям нет. Раздельно содержат только обвиняемых и осужденных.

**Режим**

6:00 — подъем

6:15-7:00 и 12:15-13:00 открыты двери на этаже — все идут на кухню-столовую.

15:00 — 21:15 двери в секции открыты, можно выходить в холл, можно играть в настольный теннис, можно ходить в “офис” — там есть большие ножницы, утюг, ножи.

Есть бесплатные курсы немецкого языка для желающих. Спортзал ежедневно, можно два раза в день. Есть групповые занятия йогой.

**Прогулки**

Зимой — 1 час.

Летом — 2 раза по 1,5 часа.

Гуляют по две секции. Двор большой. много зелени, цветов, ландшафтный дизайн, волейбольная площадка, настольный теннис.

**Камера**

Камеры небольшие, примерно 2,5 х 5 м, но на одного. Полутороспальная кровать, два больших шкафа, два стола (один для телевизора). Мебель “икеевская”. Чайник, тостер, телевизор, DVD. Телевизор — три бесплатных канала, можно подключить более ста — это будет стоить 15 евро в месяц. DVD — 2 евро в месяц. Диски можно заказывать в библиотеке (фильмы, музыка). В камере туалет, душевая кабина, раковина, коврик.

**Обеспечение**

В кухне-столовой есть вся бытовая техника: миксеры, блендеры и т.д. Есть небольшие острые ножи. Посуду каждый моет за собой самостоятельно. Бумага, ручка выдаются.

Психотерапевт выдает цветные карандаши, игрушки и т.д.

**Выдаётся**

Футболка (белая или оранжевая — на выбор), кожанные кроссовки, носки, трусы, штаны, свитер, куртка.

4 банных полотенца, 2 полотенца поменьше, 2 салфетки, 2 пачки бумажных салфеток еженедельно.

Вилка, ложка столовая и чайная, нож для масла с закругленным концом. посуда фарфоровая, столовые приборы — керамические.

Это всё бесплатно.

Мобильный телефон иметь нельзя, но он и не нужен, поскольку возможность звонить есть в каждой камере — разговаривай, пока деньги не закончатся. Нельзя только звонить тем, кому суд запретил звонить. Остальным — можно.

**Еда**

Горячее: супы разные, котлеты/мясо, четверть курицы.

Прочее: нарезка колбасы/мяса, фрукты (киви, бананы, апельсины, мандарины, яблоки), чай (чёрный, красный) — 25 пак. 2 раза в неделю, хлеб черный, батон — по полбуханки ежедневно, молоко, масло, сыр. На выходных выдаются булочки (две белых, две серых) и джем.

Отдельное питание для вегетарианцев и мусульман.

**Магазин**

В магазине можно купить практически всё, включая декоративную косметику, краску для волос, электронику (но в ней нет смысла, поскольку и так всё есть в доступе).

Можно купить различную еду: турецкую, халяльную, русскую, вегетарианскую.

Доставка покупок 2 раза в месяц.

**Прочее**

Если нет денег, то ежемесячно выдается 38 евро на “карманные расходы”.
При выезде в суд выдаётся сухой паёк: яблоко, тосты — 2 шт., белый хлеб+масло+сыр, 1 л. воды.
Если задерживаешься в суде, то получаешь там первое и второе блюдо.

**Главное**

В Германии не сажают за первое преступление!

Человек, первый раз преступивший закон, получает условный срок или штраф.

За хранение, употребление наркотиков — не уголовная ответственность. За распространение — шесть лет считается очень большим сроком.

По прошествии половины отбытого срока наказания отводят в другую тюрьму, где только ночуешь.

Я писала об этом много раз: Манифест, 21.09.2018, Революция, 02.08.2018, Малыши за решёткой, 24.05.2019, Жизнь после, 15.06.2018.

Вот, вкратце, всё.

Посмотрите, вот наша система содержания:

- Обращение в минюст, 13.02.2018
- Тюрьма. краткое содержание. 09.06.2018
- Тюремное питание, 15.06.2018.

При этом… у России САМЫЙ большой бюджет ФСИН в мире.

Надо действовать (см. К кому и куда стучаться, http://freeverhova.ru/help/people-help/)
Каждому. Не зарекайтесь (см. Обзор 2. Тюремные истории, 06.05.2019). Берегите себя.

*#Оттуда, Репост, ФСИН*

## Тайны конвоек в судах. 14.07.2019

Визиты в суд для арестованных всегда сопровождаются пребыванием в конвойных помещениях суда. Это очень небольшие камеры без окон. как правило, в подвале. Стены исписаны-изрисованы многими поколениями арестантов. Бездна информации! :)

Рисунки, стихи, характеристики судей, информация о подставных свидетелях, о продажных полицейских (с фамилиями и должностями) и много-много всего. Просто музей инфографики! :)

В последней посещенной мною конвойке нашла на стенах аж три упоминания адреса моего блога. В разном оформлении на разных стенах. В такие моменты я вспоминаю про город трёх революций. :)

Насколько я помню теорию, надо всего 10% людей. поддерживающих твою точку зрения, чтобы твоя идеология стала господствующей в обществе.

Ну и немного полезной информации: у кошки, падающей с 12 этажа, больше шансов выжить, чем у кошки, которая падает с 7-го.

Берегите себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Широко закрытые глаза как подтверждение шизофрении. 16.07.2019

*Нигде нет столько раскаявшихся*
*разбойников и злодеев, как в нашей стране.*
*М. Горький*

В каждой камере местного СИЗО — свои правила. Разной степени абсурдности. В одной из камер — старшая имеет диагноз “шизофрения” с какими-то… параноидальными отклонениями. Диагноз подтвержден уже в тюрьме. И её своеобразная реальность воплощается в правилах поведения в камере. Из забавного: человек, сидящий больше года, имеет право лежать днём на койке, но глаза закрывать запрещается. Не самый страшный запрет. Как-то была в камере, где процесс дефекации, извините, разрешался только с 10 до 11 утра.

Жизнь в камере во многом определяется компанией, что туда собралась. И, конечно, наркоманы с сожженными порой мозгами, алкоголики и психически больные люди могут украсить любой досуг. :)

Чем меньше народу в СИЗО, тем здоровее обстановка. Надо избавляться от “чекистского” наследия, где правосудие возможно только через насилие. Когда-то считалось, что детей невозможно ни учить, ни воспитывать без телесных наказаний. Осознали. Исправили. Надо двигаться дальше (см. пост Большая разница, 17.04.2018), шаг за шагом (Манифест, 21.09.2018).

Берегите себя.

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, Правоохранительная система*

## Как забеременеть в СИЗО. 17.07.2019

В СИЗО СПб и ЛО действует удивительный документ. Его создали начальник УФСИН по СПб и ЛО Потапенко И.В. и начальник ФКУ 3 МСЧ-78 УФСИН Дамаданов Б.Э.

В документе много удивительного, начиная вообще с факта: собрались два парня и решили отредактировать федеральный закон. Круты, что тут скажешь. В числе прочего, документом запрещается приём в посылках и передачах молочных продуктов. Молочные продукты допустимы только с разрешения врача. Ладно, сходила я к врачу. Получила ответ: молочные продукты только для беременных. Я, конечно, мечтаю о сливках и всяких творожках, но пока не готова к таким кардинальным изменениям в личной жизни ради этого.

Написала в местную прокуратуру. Молчат.

Вздохнула, написала в прокуратуру города. Тут явная ст. 286 УК РФ — «Превышение должностных полномочий». Но, думаю, что и ст. 133 «Понуждение к действиям сексуального характера» тут тоже недалеко. :)

Чувствуете драматизм тюремной жизни?

Берегите себя.

*#Оттуда, Питер-Арсеналка, прокуратура, ФСИН*

## Газлайтинг [1] от СИЗО. Велкам. 20.07.2019

Через какое-то время, проведённое в тюрьме, базовые понятия искажаются. Начинает казаться, что:

- баланда три раза в день — отличное социальное обеспечение;
- обыски — воспитание с целью приучения к порядку;
- утренние и вечерние проверки — забота о заключённых и их потребностях;
- куча народу в камере — движение к дружбе и пониманию;
- решётки на окнах — внимание к нашей безопасности;
- передачки, посылки и магазин — вершина роскоши;
- набор одежды, описанный в ПВР — достаточен для жизни;
- отсутствие желаний и стремлений — признаки правильной и спокойной жизни.

Это к вопросу о целях содержания в СИЗО.

Берегите себя.

*#Оттуда, ПВР, Тюремные хроники*

[1] Газла́йтинг (от английского названия пьесы «Газовый свет») — форма психологического насилия, главная задача которого — заставить человека сомневаться в адекватности своего восприятия окружающей действительности. Психологические манипуляции, призванные выставить индивида «дефективным», ненормальным.

## Тюремная сказка на ночь. 22.07.2019

*Скотч делает прозрачным матовое стекло. :)*

Вечерами я порой рассказываю о жизни в СИЗО Москвы.

О возможности заказать еду, о разрешенной косметике, о магазине, где можно купить всё необходимое, о телефонных звонках раз в неделю, о руководстве, которое еженедельно ходит по камерам и решает накопившиеся вопросы. О молочных продуктах, доступных ежедневно, о свежих салатах, бывающих с баландой. О двориках, в которых можно бегать и играть в мячик. О спортзале, парикмахерской, услугах по стирке и глажке. О душе в камерах.

Из СИЗО Питера это кажется чем-то далёким и нереальным, хотя всё это можно сделать и здесь, было бы желание. Но местная прокуратура, кажется, защищает не закон, а свое спокойствие. Написала им. :) Жду ответа.

Но это будет уже другая сказка. Берегите себя.

*#Москва-Шестёрка, Оттуда, Питер-Арсеналка, Тюремные хроники*

## Зубы на полку. 25.07.2019

У девушки заболел зуб. Сильно. Заявления в санчасть — никакой реакции. Промучившись неделю, написала заявление, что отказывается от приёма пищи, поскольку от боли всё равно не может есть. Реакция оперативника: “Вы не можете отказаться от приёма пищи, вы в большой камере”. А на реплику: “Что же теперь, помирать?”, опер ответил достойно: “Без проблем”.

А заявления в Прокуратуру из СИЗО не выходят.

Медицина в СИЗО. Выживает сильнейший.

*#Медицина в СИЗО, Оттуда, Питер-Арсеналка*

## Потерянные герои. 27.07.2019

Познакомилась с академиком. Учёный-физик. Всех званий, регалий, научных трудов, наград и премий я не запомнила. Их очень много. Дело было по ст.159 (мошенничество), когда с мошенничеством не сложилось, переквалифицировали на ст.160 (растрата). О себе говорит просто: “Всю свою сознательную жизнь я работал ради обеспечения безопасности нашей Родины”. Он из тех учёных-фанатиков, что нередко ночуют на работе.

Академику в следующем году будет 70. Болезней хватает. Подобные диагнозы, и то по одному, я слышала только в сериале про доктора Хауса у умирающих людей. Необходимы практически постоянные медицинские процедуры. Каждый день в СИЗО может быть для него последним. На вопрос про планы отвечает: “Я бы хотел завершить свою пятитомную монографию, которая послужит научному развитию нашей страны”. По его учебникам учатся студенты.

Знаете, у меня есть много версий происходящего с правоохранительной системой (см. Обзор-1): и бардак, и коррупция, и борьба за власть, и историческая судьба, но, пожалуй, впервые я серьёзно подумала над… “вражьими происками”. Кому нужно, чтобы блестящий учёный-физик умер в СИЗО? Кому нужно уничтожать бизнесменов, учёных, да просто мыслящих людей, приносящих пользу стране? В ситуации неработающих законов и бессилия судей очень велико искушение как

ручного управления, так и диктатуры. Но это тупиковые решения. Надо удержаться. Решения должны быть системными. Здесь, в блоге, есть всё: и диагноз с решениями (Обзор-1), и национальная идея (см. пост Национальная идея, 01.02.2019), и… читайте, делитесь. Чем больше людей будут владеть информацией, тем быстрее ситуация будет меняться к лучшему.

Берегите себя и свою страну.

*#Тюремные истории*

## Фантастика из СИЗО. 28.07.2019

*В грозы, в бури,*
*В житейскую стынь,*
*При тяжелых утратах*
*И когда тебе грустно,*
*Казаться улыбчивым и простым —*
*Самое высшее в мире искусство.*
*С. Есенин*

Получила недавно отзыв о сайте от человека, который сам сталкивался и с необразованностью, и с произволом, и с предвзятостью различных сотрудников различных органов.

И вот этот бывалый человек прочитал подборку постов (Обзор-3, 26.05.2019) про наше уголовное дело и последние новости о делах судебно-прокурорских.

Отзыв: «Я не буду говорить, что этого не может быть. Раз написано, значит, так оно и есть. Но из-за позитивной подачи материала всё воспринимается как фантастика, как параллельная реальность, как розыгрыш с непонятной целью. Нельзя улыбаться, когда рассказываешь о ТАКИХ нарушениях закона».

Возможно, человек и прав. Только… я имею право улыбаться, потому что я иду вперёд. А через чёрные очки белый свет виден плоховато. :)

А ещё мне анекдот нравится:

«Интересно, люди, которые всё время жалуются на жизнь, не боятся, что их могут добить из милосердия?»

Так что… читайте взгляд из-за решётки и помните — это не фантастика. Это сейчас так. Но можно всё поправить к лучшему. Если самим не получается — подключить людей (см. К кому и куда стучаться).

Держитесь. Жизнь меняется. А куда — решать вам.

Не всегда нужно беречь себя.

*#Оттуда, Тюремные хроники*

## Вопросы без ответов. Наркотики. 31.07.2019

*Страх — это отсутствие помощи со стороны разума. Царь Давид.*

Тема наркотиков достаточно проста, а потому — опасна. Сейчас — только вопросы. Для кого-то ответы очевидны. А для кого-то и вопросы будут непонятны.

1. Почему при арестах практически всегда часть наркотиков пропадает?

2. Почему при официальном уничтожении изъятых наркотиков часто уничтожаются вместо них безвредные смеси?

3. Почему максимальное количество заключённых по статьям, связанным с наркотиками?

4. Почему так просто посадить за наркотики любого?

5. Почему ходят упорные слухи, что главный торговец наркотиками — ФСБ?

6. Почему закон допускает употребление наркотиков- уголовной ответственности за это нет?

7. Почему обвинение предъявляют по количеству смеси, а не по количеству наркотиков, содержащихся в ней?

8. Почему за наркотики дают такие огромные сроки даже при полном отсутствии доказательств?

9. Почему не применяется программа, позволяющая исключить употребление наркотиков школьниками?

10. Кто формирует “ставки налога”, который требуется платить отделениям полиции за право торговли наркотиками на территории?

11. Есть ли в бюджете страны доходы от торговли наркотиками?

Делается много правильных шагов в борьбе с наркотиками, но остаётся главный вопрос: «Какую цель преследует тот, кто лоббирует наличие наркотиков для наших детей в свободном доступе?»

*#вопросы без ответов, Оттуда*

## Дневничок. Размышления. 29.07.2019

Фаина Раневская хранила свои ордена и медали в коробке с надписью «похоронные принадлежности».

Может, свидетельства заслуг и правда нужны людям только на похоронах, чтобы избавить провожающих от чувства досады за бесполезно прожитую жизнь?

*#дневничок, Оттуда*

## Подгоревшая вода. 01.08.2019

После прямой линии Президента многие структуры оживились в желании решать озвученные проблемы. Сразу же ФСИН провела совещание по поручению президента по улучшению условий содержания под стражей обвиняемых в совершении преступлений.

Совместно с Советом при Президенте РФ по развитию гражданского общества и правам человека подготовлены предложения по возможному внесению изменений в законодательство РФ.

Ознакомление с этими предложениями оставляют странное впечатление: как будто предложения нужны для сиюминутного отчёта об их существовании, а то, что последствия реализации таких предложений, возможно, расхлебывать будет гораздо сложнее, чем решать нынешние проблемы — понятно не всем. Это как… закапывать мусор, не зная, куда его девать. В ответ на предложения ФСИН и СПЧ родился этот документ:

———————-

Совет при Президенте РФ по развитию гражданского общества и правам человека
103132 Москва, Старая пл., д.4.
Копия: Начальнику государственного правового управления Президента
Копия: ФСИН РФ

от Верховой Наталии Дмитриевны
1969 г.р., содержащейся в ФКУ СИЗО-5 УФСИН РФ по СПб и ЛО
freeverhova.ru

**ОБРАЩЕНИЕ**

По информации из прессы ФСИН совместно с Советом при Президенте по развитию гражданского общества и правам человека подготовили Президенту предложения по возможному внесению изменений в законодательство РФ.

Нахожусь в СИЗО более полутора лет, поэтому изнутри вижу ситуацию и последствия возможных решений.

Информация о состоянии СИЗО, ФСИН и правоохранительной системы изнутри с формулировкой проблем и решениями публикуется у меня на сайте freeverhova.ru.

На основании опыта взаимодействия с ФСИН и правоохранительной системой хочу донести до Вас информацию о плюсах, минусах и недоработанности выдвинутых ФСИН и Советом предложениях.

***1. Введение нормы, которая предполагала бы возможность УДО из СИЗО.***

Предложение своевременное и необходимое, но не в полной мере защищает права находящихся в СИЗО.

Необходимо ввести норму обязательного рассмотрения судами возможности изменения режима отбывания наказания при вынесении приговора и при рассмотрении апелляции для тех, у кого, с учетом отсиженного, подошёл срок возможности изменения режима отбывания наказания.

Кроме того, лица находятся в СИЗО до вступления приговора в законную силу, а значит, срок отбывания наказания еще не зафиксирован. Вопрос УДО необходимо также в обязательном порядке рассматривать при вынесении приговора и рассмотрении апелляций.

***2. В случае назначения судом реального срока лишения свободы в отношении тех, кто находился на свободе, применять до вступления приговора в законную силу — домашний арест.***

Предлагаемая норма не проработана и не в полной мере учитывает права обвиняемых.

До вступления приговора в законную силу — человек невиновен, а значит, мера пресечения должна выбираться индивидуально.

Если до приговора — домашний арест, то и после приговора он не должен изменяться. В период от приговора до апелляции человек максимально нуждается в возможности защищаться. Лишение свободы почти исключает эту возможность. Приговор не должен нести с собой более строгую меру пресечения, чем была до приговора. Только эта норма сохранит право человека на защиту.

***3. При переполненности СИЗО — арестантов держать в ИВС до 30 суток.***

Это предложение сродни предложению пытать обвиняемых, чтобы ускорить следствие.

ИВС не предназначены для длительного содержания: нет возможности организовать прогулки, медпомощь, обслуживание в магазине. В большинстве ИВС нет горячей воды, нет возможность совершать звонки и реализовывать иные права обвиняемых, предусмотренные Законом.

***4. Начальник СИЗО вправе отказать в приёме обвиняемых при нарушении норм содержания.***

Начальник СИЗО не может нарушать решение суда, это предложение внесёт хаос в работу судов, которые вместо рассмотрения оснований для заключения под стражу, предусмотренных УПК, будут вынуждены рассматривать информацию о наполненности СИЗО. К тому же в нынешней ситуации переполненности СИЗО предложение вообще не имеет смысла — надо долго никого не арестовывать, чтобы прийти к соблюдению нормы 4 кв. м на человека.

***5. Запретить содержать под стражей инвалидов 1 и 2 группы.***

Абсолютно правильное предложение, но не учитывает права тех, кто, не являясь инвалидом, тем не менее нуждается в постоянных медицинских процедурах: диабетики, гипертоники, онкобольные в начальных стадиях и т.д.

Необходимо запретить заключение под стражу лиц, нуждающихся в постоянном медицинском контроле.

***6. Запретить содержать под стражей женщин, имеющих детей в возрасте до 3 лет.***

Дети и старше трех лет отчаянно нуждаются в матери. Стресс, вызванный органами опеки, остаётся на всю жизнь.

Необходимо запретить заключение под стражу беременных женщин и женщин, имеющих несовершеннолетних детей.

Необходимо помнить, что СИЗО — для невиновных, он не для наказания, а для изоляции. Матерей необходимо ограничивать другими способами, соблюдая при этом интересы детей.

***7. Исключить применение заключения под стражу в отношении лиц, обвиняемых в совершении преступления, предусматривающего до 5 лет лишения свободы.***

Таких лиц и так достаточно редко сажают под арест.

Необходимо исключить заключение под стражу лиц, совершивших впервые ненасильственные преступления.

**Вывод:** заявленные ФСИН и СПЧ предложения не решают проблем СИЗО, а в некоторых случаях добавляют их.

Отдельно прошу обратить внимание на недопустимость заключения женщин в СИЗО, поскольку строгий режим содержания исключен для женщин законом.

Необходим комплексный подход по соблюдению законодательства, регулирующего заключение под стражу. Прокуратура не выполняет своей надзорной функции на суде по избранию и продлению меры пресечения, что позволяет сажать обвиняемых в СИЗО без соблюдения оснований, прописанных в УПК.

Соблюдение требований УПК уже может разгрузить СИЗО не менее, чем на 30%, а принятие предложений с предложенными корректировками окончательно решит проблему переполненности СИЗО. С подробными решениями и обоснованиями изложенных предложений прошу ознакомиться на сайте freeverhova.ru, поскольку, ввиду нахождения в СИЗО, не имею возможности распечатки приложений к Обращению.

Существенно снизить число содержащихся в СИЗО позволит простое и не требующее затрат:

Решение по незаконным арестам — опубликовано 27.10.2018

Вы об этом знаете, но это есть:
Малыши за решёткой — опубликовано 24.05.2019

Очевидная вещь, которую не учитывают ни суды, ни законодатели:
Аксиома — опубликовано 23.06.2019

Почему у нас такая ситуация с правосудием и как это быстро исправить, соблюдая интересы всех:
Революция правосудия — опубликовано 01.07.2019

Дополнительная информация о состоянии правоохранительной системы и решениях:
Правоохранительная система и ФСИН. Парадоксы и решения — опубликовано 18.04.2019

Прошу внимательно рассмотреть предложения, поскольку они затрагивают десятки тысяч людей. проблемы копились десятилетиями, и очень хочется качественных решений. Готова ответить на любые вопросы. Буду благодарна за личную встречу и обсуждение решений.

Материалы этой переписки могут быть опубликованы в печатных и интернет-изданиях.
Верхова Н.Д.

19.07.2019. freeverhova.ru

Надо уходить от соблазнительной логики быстрых решений, изначально прорабатывая варианты последствий.

Тема важная, решать её, и правда, следует быстро, но не в ущерб будущему.

Необходимо включить профессионализм, дальновидность и ответственность перед будущим. Нужные кадры в обеих структурах есть.

Ждём реакции на обращение.

Прошу неравнодушных помочь донести документ до адресатов. Всё получится.

Оригинал обращения: http://freeverhova.ru/wp-content/uploads/2019/07/247.pdf

*#Оттуда, Правоохранительная система, Решения*

## The usual end. 03.08.2019

Время идёт. Многие тюремные истории уже дошли до приговора суда и дальше.

**Турфирмы и ст. 159 УК РФ** — 16.02.2018
Девушка получила три года колонии. Несмотря на решения ЕСПЧ о чрезмерном сроке содержания под стражей, её так и не выпустили из СИЗО. Ушла после приговора за отсиженное.

**Тюремные истории. Показатели** — 18.05.2018
Апелляция прошла без изменений. Уехала бабудя на зону. Здоровье ухудшилось. Почти не встаёт. Ждёт амнистии.

**Мать Тереза** — 26.05.2018
Апелляция без изменений. Зона. Сейчас уже дома. Не связывает своё будущее с Россией.

**Корысть — 30.05.2018**
Дали директору 3,7 колонии. Не помогли ни решения арбитражного суда о законности действий, ни отсутствие фактов и доказательств. 2,5 года в СИЗО позволяют уйти за отсиженное. Потерянный кусок жизни — необратимо….

**Энцефалит против наркотиков — 10.06.2018**
Апелляция оставила приговор без изменений. Женщина уехала в колонию. Ребёнок остался без отца и вырастет без матери.

**Фотомодель — 27.08.2018**
Провела 9 месяцев в СИЗО, получила 1,5 года колонии-поселения. Ушла за отсиженное.

**Ещё одна небайка — 19.09.2018**
Девушка до сих пор в СИЗО. Суды по повторному делу всё идут. Несмотря на весь абсурд происходящего и ст.50 Конституции РФ.

**Тюремные истории. Защита клиента или статья для юристов. — 07.10.2018**
Было непросто, но отпустили на домашний арест к детям. Суды идут.

**Перегрызть пуповину или роды по-ФСИНовски — 23.10.2018**
Судьба аналогичных родов: апелляция снизила срок с 10 до 8 лет колонии. Уехала девушка этапом вместе с ребёнком.

**Квартирный вопрос — 06.11.2018**
дали девушке 5 лет колонии. Квартиру отобрали. Деньги за квартиру признали не внесенными. Почти два года в СИЗО. Впереди апелляция.

**Взятка — 05.01.2019**
Расследование идёт, обрастает деталями, предъявляются всё большие суммы. Надежд выйти из СИЗО нет.

*#Оттуда, Тюремные истории*

## Вести из СИЗО. 05.08.2019

В Питере дожди и холодно. Пришла новенькая. С соплями. Принесла вирусов. :) Первыми подхватили те, кто дольше сидит, иммунитет всё-таки уже не тот, что у людей с воли. Горло, кашель, насморк.

Порадовала реакция сотрудников: информация о заболевших уходит в медчасть, фельдшер приходит не с пустыми руками. И пусть лекарства простенькие, но они есть. Даже капли в нос. Будем жить.

Ну а какая жизнь без анекдотов? :)

— Корнет, послушайте, какое стихотворение я сочинил:
«Употребляйте маракуйю, она приносит пользу организму!»
— Но, позвольте, поручик, где же рифма?
— И вы туда же, корнет! Сначала провоцируете на рифму, а потом всем рассказываете, какой Ржевский пошляк-с!

*#дневничок, Оттуда*

## Дневничок. Дорогие гости. 07.08.2019

Из-за длительного пребывания в СИЗО порой у заключённых возникает ощущение, что они живут здесь, а сотрудники — приходят в гости. Ну и дикие же гости порой бывают! :) Роются в вещах, раскидывают всё, порой не очень вежливы. :)

Но хозяева — добрые. :))

*#дневничок, Оттуда*

## Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР). 09.08.2019

*Кто громоздит злодейство на злодейство,*
*Свой множит страх.*
*Сенека*

Можно предположить, что никто не создавал этот документ с нуля. Взяли старую НКВД-шную инструкцию и подчистили от наиболее явных издевательств. Оставили кучу скрытых.

Бесполезно ориентироваться на ФСИН при доработке правил. ФСИН — Федеральная служба исполнения наказаний. Исполнения наказаний. Наказаний. Удобство работы ФСИН — чтобы прав у заключенных было как можно меньше и сидели они — как можно дольше.

Цели государства — другие. Если вспомнить Платона: «Справедливое государство — это государство, в котором будет счастлив не один какой-то общественный слой, а общество в целом. В целом несчастное общество не является признаком справедливости».

СИЗО — отдельная тема во ФСИН. Хотя бы потому, что там содержатся НЕ преступники. Отельно эта тема раскрыта в «Аксиоме» (23.06.2019).

Невиновные люди должны обладать всеми правами, прописанными в Конституции и УПК, но с учётом режима изоляции.

А теперь — подробный разбор Правил Внутреннего Распорядка с указанием нарушений федеральных законов, возможностей для издевательств и злоупотреблений.

*#Оттуда, ПВР, ФСИН*

## Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР) — часть 2. 11.08.2019

**Положения ПВР, противоречащие Федеральному Законодательству**

**П.25. К запрещенным к хранению и использованию относятся предметы, которые представляют опасность для жизни и здоровья или могут быть использованы в качестве орудия преступления.**

Пункт в данной формулировке позволяет объявить запрещенным любой предмет. Если посмотреть статистику преступлений по орудиям преступлений, то можно убедиться — орудием преступления может быть всё абсолютно, в том числе ложка, миска, одеяло, подушка, банные тапочки — вообще всё.

Кроме того, пункт противоречит ст. 49 п.1 Конституции РФ — презумпция невиновности. Нельзя запрещать гражданам пользоваться какими-либо предметами без достаточных на то оснований.

Если человек обвиняется в убийстве, то не следует давать ему нож, хотя как раз давать в пользование нож закон разрешает (п.41 ПВР). Но запрещать обвиняемым по статьям, не связанным с насилием, пользоваться элементарными предметами со ссылкой на возможность — противоречит Конституции (п.1 ст.49).

Обеспечение изоляции требует охраны, соответственно, и безопасности для этой охраны. Есть прекрасный образец запрета опасных предметов во имя безопасности: правила авиаперевозок. Обозначено конкретно: что является опасным. Именно так и должно быть отредактировано в СИЗО; а не «всё железное запрещено».

Об этом говорит с ст.15 103-ФЗ: «В местах содержания под стражей устанавливается режим, обеспечивающий соблюдение прав подозреваемых и обвиняемых, их изоляцию., а также выполнение задач, предусмотренных УПК».

**П.40. Обвиняемые обеспечиваются полотенцем.**

Одно полотенце на всё! представьте себе жизнь с одним вафельным полотенцем с использованием ежедневно, и для похода в душ. Помимо несоответствия элементарной гигиене, это нарушает положение Конституции:

Ст.21. п.2 «Никто не должен подвергаться пыткам, насилию, другому жестокому или унижающему достоинство обращению и наказанию».

Ст.41 п.1 «Каждый имеет право на охрану здоровья».

п.2 «Сокрытие должностными лицами фактов и обстоятельств, создающих угрозу для жизни и здоровья людей, влечет за собой ответственность в соответствии с федеральным законом».

Куда смотрят должностные лица, когда видят в законе для невиновных людей одно полотенце на все случаи жизни? О чём думает прокуратура? Почем не возбудился следственный комитет?

**Далее в п. 40 ПВР: «При отсутствии необходимых денежных средств на лицевом счёте обвиняемого выдаются индивидуальные средства гигиены»**

А если деньги на счету есть, а возможность купить в СИЗО отсутствует? Ситуация нередкая. Работа магазинов СИЗО далека от идеальной и по ассортименту, и по обслуживанию.

**П.41. В СИЗО допустимы только следующие настольные игры: шашки, шахматы, домино, нарды.**

На каком основании выбраны эти четыре игры? Как выбор этих игр соотносится с целями содержания под стражей, прописанными в УПК?

**Далее в п.41. «Могут быть выданы иглы, ножницы, ножи для резки продуктов»**

Ключевое: могут быть. А могут и не быть. Неопределенность положений этого пункта позволяет лишать невиновных людей возможности поддерживать цивилизованный образ жизни.

П.41 нарушает Конституцию:

Ст.21 п.2. «Нельзя подвергать унижающему человеческое достоинство обращению».

Ст.44 п.1. «Каждому гарантируется свобода литературного, художественного, научного, технического и других видов творчества».

**П.42. «Камеры оборудуются шкафом для продуктов, вешалкой для верхней одежды, полкой для туалетных принадлежностей»**

Не определено — ни объём шкафа, ни количество вешалок, ни площадь полок. Это позволяет толковать любым способом эти параметры.

Бачок для питьевой воды давно уже никем не используется по назначению. Но обязательное его наличие обрекает и заключенных, и сотрудников на бесконечную возню с этим громоздким и неудобным предметом.

*#Оттуда, ПВР, ФСИН*

## Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР) — часть 3. 13.08.2019

В следующей части показано — как при помощи ПВР может быть блокирована возможность человека защищаться. И как лишить его способности думать.

**П.68. «Посылки, бандероли и передачи подвергаются досмотру»**

Досмотр заключается во вскрытии упаковки, разрезании продуктов. При этом отсутствуют нормативы разрезания, поэтому порой в передачах приходит разрезанное абсолютно всё, соответственно, всё портится за 2-3 дня.

Особенно абсурдно выглядит вскрытие упаковок и разрезание продуктов из посылок, заказанных в интернет-магазине (например, в Озоне). Необходимо исключить вскрытие упаковок товаров, поступающих из интернет-магазинов, поскольку технология обезличенной сборки заказов, используемая в интернет-магазинах, исключает возможность вложения предметов, кроме заказанных.

**П.73. «Обнаруженные запрещённые предметы из посылок передаются на хранение либо уничтожаются»**

Практика показывает тотальное уничтожение предметов, которые, на взгляд сотрудника, выдающего посылки, является запрещёнными.

Необходимо время на обжалование решения по уничтожению, чтобы исключить произвол сотрудников.

П.68 и п.73 нарушают права заключённых, закреплённые ст.17 109-ФЗ*

**П.82. «Почтовые принадлежности (конверты, марки, бланки телеграмм) обвиняемые приобретают в магазине СИЗО»**

Не прописан механизм отправки писем в случае отсутствия марок и конвертов в магазине с указанием срока отсутствия, при котором письма будут отправляться за счёт СИЗО.

Нарушение: Конституция РФ

ст. 45 п.2. Право на защиту — 103-ФЗ*

ст.4. Содержание под стражей не должно сопровождаться действиями, причиняющими физические и нравственные страдания.

Отсутствие возможности переписки лишает как права на защиту, так и причиняет нравственные страдания.

**П.99. «Поступившие в СИЗО ответы на заявления и жалобы объявляются обвиняемым под роспись». «За счёт средств обвиняемого администрация СИЗО делает копию ответа и выдаёт на руки».**

Тут опять нарушение права на защиту (Конституция ст.45п.2) и ещё несоблюдение состязательности процесса. (УПК ст.15).

Не имея документов на руках, очень трудно защищаться и оспаривать их. Понятно, что у стороны обвинения таких проблем нет.

И не указано — в какой срок СИЗО обязано сделать копию, что делает обязательства СИЗО совсем призрачными.

**П.125.1. Приобретение литературы в розничной торговой сети — единственная возможность, кроме библиотеки, доступа к книгам — отнесена к необязательным платным услугам.**

Это положение нарушает целый ряд федеральных законов.

Нарушается право на образование (Конституция ст.43 п.1).

Нарушается право на самообразование и использование для этого специальной литературы (103-ФЗ ст.17 п.15).

Также нарушается и условие состязательности процесса (УПК ст.15), т.к. юридическая литература и даже актуальные тексты законов недоступны в СИЗО.

Необходимо сделать книги доступными, поскольку запрет на их получение не соответствует целям содержания в СИЗО.

Должна быть возможность заказа книг родственниками и иными лицами через интернет-магазины, что исключает возможность передачи запрещённой литературы.

**П.130. «По просьбе обвиняемого либо его защитника им выделяется копия заключения медицинского освидетельствования».**

При решении вопросов с НЕоказанием в СИЗО медицинской помощи, необходимо иметь копию медицинской карты, но право её получения, даже за свой счёт, не закреплено за обвиняемым и его защитником.

Нарушение ст.24 Конституции РФ — право ознакомления с документами и материалами, непосредственно затрагивающими права и свободы гражданина.

**П. 136. «Во время прогулки несовершеннолетним предоставляется возможность для физических упражнений и спортивных игр».**

Необходима обязательная возможность физических упражнений для всех, содержащихся в СИЗО, независимо от возраста.

Лишение возможности обвиняемым заниматься физическими упражнениями на прогулке ведет к ухудшению их здоровья, трактуется как запрет на оснащение прогулочных двориков спортивными снарядами.

Нарушение Конституции ст.41

п.1 «Каждый имеет право на охрану здоровья».

п.3 «Сокрытие должностными лицами фактов и обстоятельств, создающими угрозу для жизни и здоровья людей, влечет за собой ответственность в соответствии с Федеральным законом».

**П. 137. «На прогулку выводятся одновременно все подозреваемые и обвиняемые, содержащиеся в камере. Освобождение от прогулки дается только врачом»**

Нарушение 103-ФЗ, в котором прописано, что прогулка является правом обвиняемых, а не обязанностью.

Не прописан норматив площади дворика на одного заключённого. Это приводит к «прогулкам» на 15 кв.м., например, 18 человек.

Нарушение Конституции ст.41 (см. п. 136)

**П. 139. Обвиняемым может быть предоставлено не более двух свиданий в месяц с родственниками и иными лицами.**

Невиновные люди обречены на разлуку с семьей. Нарушение Конституции ст.38 п.1 — Защита семьи.

**П.150. Телефонные звонки предоставляются только при наличии технических возможностей. И не прописана периодичность.**

Поэтому, например, в женском СИЗО СПб только раз в месяц. Только один раз в месяц женщина может поговорить с ребёнком. А если детей двое, то с каждым — раз в два месяца, поскольку один звонок — одно разрешение — один телефон.

Нарушение Конституции ст.38 п.1 — Защита семьи.

Нарушение требований УПК ст.97, где прописаны основания для содержания под стражей. В случае оформления разрешения на звонок органом, за которым числится обвиняемый. не должно быть ограничений в общении с семьёй со стороны СИЗО.

Ссылка на технические возможности позволяет полностью лишить права обвиняемых на телефонное общение с семьей.

**П.160. Важные документы не выдаются на руки обвиняемым — только объявляются**

См. п.99.

**П. 161. «Обвиняемые должны иметь опрятный внешний вид»**

Пункт выглядит издевательством при отсутствии возможности в СИЗО стирать и гладить одежду, вешать одежду на плечики, пользоваться косметикой, пользоваться услугами парикмахера. Всё это либо запрещено, либо входит в необязательные к исполнению платные услуги.

Нарушение 103 — ФЗ ст.4

Вынужденное нахождение в мятой одежде, с неухоженной прической и невозможностью пользоваться косметикой — проявление неуважения человеческого достоинства, причинение нравственных страданий.

**П.162. Личный прием начальником СИЗО**

Не прописано, в течение какого времени начальник обязан принять обвиняемого по его заявлению. Это позволяет неограниченно долго игнорировать просьбы о личном приёме.

*#Оттуда, ПВР, ФСИН*

## Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР) — часть 4. 15.08.2019

**Приложение 1**

**П.1.«Содержать одежду в чистоте и порядке»**

См. п.161.

**«Называть сотрудников СИЗО «гражданин» и «гражданка»**

Абсолютно непонятное требование для невиновных людей. Наследие гулаговского прошлого. СИЗО — не для наказания, а для изоляции. И излишнее ограничение гражданских прав — недопустимо.

Нарушение 103 — ФЗ ст.4. Проявление неуважения человеческого достоинства, причинение нравственных страданий.

**«По требованию иных должностных лиц сообщать им свою фамилию»**

Что за иные лица, разгуливающие по СИЗО без сопровождения сотрудников и как понять, что лицо должностное? Иные лица недопустимы в режимном учреждении, а данная формулировка дает возможность дополнительного давления на обвиняемого.

**П.3. «Принимать лекарственные препараты без предписания врача СИЗО, иметь их в камере больше, чем выдано на один день»**

Должен быть список допустимых медикаментов в камере: йод, зеленка, перекись водорода, мазь от ожогов, обезболивающее, уголь активированный и т.д.

Отсутствие набора первой помощи приводит к ненужным конфликтам в ожидании вызова к врачу за назначением и физических страданий от невозможности, например, принять таблетку от головной боли.

*#Оттуда, ПВР, ФСИН*

## Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР) — часть 5. 15.08.2019

**ПВР. Приложение 2.**

Перечень одежды противоречит целям содержания под стражей, унижает человеческое достоинство, ограничивает право на здоровье, пренебрегает презумпцией невиновности.

Нарушение Конституции ст. 49, 41;

Нарушение УПК ст.97;

Нарушение 103-ФЗ ст.4.

Есть прописанное ограничение по допустимому весу вещей заключённого — 50 кг. Содержание этого имущества обвиняемый должен быть вправе определять сам.

Должен быть перечень конкретных запрещенных предметов, угрожающих безопасности. Не «может быть орудием преступления» или «всё железное», а конкретно, по примеру аэропортов.

**Одежда без ремней —** нарушение 103 ФЗ ст.4 — унижение людей. Люди сидят в СИЗО иногда даже не месяцами, а годами, порой худеют. И постоянно ходить либо в спортивных штанах, либо с падающими штанами — только повод для дополнительных унижений людей, которые лишь обвиняются в преступлении.

Если потребуется совершить противоправные действия, либо суицид — отсутствие ремней и шнурков не остановит. Практика свидетельствует именно об этом. Зато тысячи обвиняемых вынуждены ходить, шаркая обувью без шнурков и поддерживая спадающие штаны. Требования безопасности не должны идти вразрез с презумпцией невиновности. «Может сбежать» — обвинение, требующее фактических доказательств. Иначе следует отобрать простыни (их можно порвать на ленточки), спички, еду (можно подавиться) и т.д. А! Ещё ноги можно отрубать — ведь сбегают именно на них!

Нельзя ограничивать список разрешенного невиновным людям. Нельзя запрещать канцелярские товары, ограничивая право на защиту и состязательность.

Нельзя выбрать всего четыре настольных игры для невиновных людей. Нельзя женщинам запрещать косметику, фен, утюг — это унижение и издевательство. Железная миска как орудие преступления не уступает утюгу, а вот гладить ею одежду — неудобно.

При наличии телевизора и требованиях соблюдения режима нельзя запрещать оборудование камеры часами. Ещё раз: противоправные действия отсутствие часов не остановят, но тысячи людей терпят это унижение. Не преступники — обвиняемые в преступлении.

Списком разрешенных предметов невозможно предусмотреть всё. Именно поэтому в нынешней редакции Правил иголка разрешена, а нитки — нет; карандаш разрешен, а точилка и ластик — нет и т.д.

Для работы с уголовным делом и большим объемом документов (а это необходимо для реализации своего права на защиту) нужны стикеры, закладки, текстовыделители, скрепки, копирка, зажимы для бумаг, штрих-корректоры, скотч и т.д. Ведь процессы тянутся годами. Невиновные люди подобными ограничениями лишаются права на защиту и состязательность процесса.

Ссылки на использование услуг адвоката — неправомерны, поскольку право на защиту не должно зависеть от материального благосостояния и возможности платить адвокату.

Правила допускают пользование электронными устройствами, стоящими на балансе СИЗО, но это прописано в необязательных платных услугах, и, соответственно, практически недоступно. А ведь использование компьютера (без выхода в интернет), использования принтера — это всего лишь соблюдение права на защиту и состязательность процесса. Написание документов от руки

существенно ограничивает возможности их подготовки, усложняет их дальнейшую обработку, не дает возможности копировать их.

Компьютер и принтер в камере — это не фантастика, это требование времени — пора оторваться от гулаговских представлений о СИЗО как о месте, где требуется издеваться над людьми.

Почему надо придумывать, чем намазать масло, нарезать колбасу, если почему-то забыли разрешить пластиковые ножи? Почему те месяцы и годы, что невиновным приходится проводить в СИЗО, нужно жить в дикости?

Есть ограничение по весу и конкретное ограничение по опасным предметам. Всё. Иное — нарушение Конституции РФ и УПК — несоблюдение права на защиту, личную жизнь, здоровье и т.д. Ведь пока запрещено всё, позволяющее поддерживать здоровье — даже простой гимнастический коврик.

**Документы и литература не должны входить в запрещенный вес. Они** должны быть доступны без ограничения. Книги — это не только возможность образования и самообразования (право, закрепленное 103-ФЗ ст.17), это доступ к юридической литературе, необходимой для защиты. Сборники пленумов Верховного суда, юридические практики, УК и УПК с комментариями — это очень тяжелые книги. Ограничение их веса — нарушение права на защиту, образование и т.д.

Цели содержания под стражей прописаны в УПК. И среди них нет цели: «Сделать из обвиняемого дикое тупое животное».

*#Оттуда, ПВР, ФСИН*

## Правила внутреннего распорядка СИЗО (ПВР) — часть 6. Окончание. 19.08.2019

**ПВР. Приложение 3.**

**П.1. Платные услуги оказываются только “при наличии соответствующих условий”.**

Это нарушает права обвиняемых. Создания условий — в полномочиях ФСИН, их отсутствие — просто нежелание работать.

В ЛЮБОМ случае обвиняемым должны быть доступны услуги:

Подбор очков; стирка и глажка одежды; стрижка и окраска волос; ксерокопирование; использование компьютера и принтера.

Это жизнеобеспечивающие услуги, неполучение которых лишает людей права на здоровье, права на защиту, права на отсутствие унижений, права на состязательность процесса и т.д.

**ПВР. Окончание.**

Таков краткий анализ документа, по которому живут около 100 000 заключённых в СИЗО.

Правила внутреннего распорядка сделаны так, чтобы ограничить любое движение человека внутри СИЗО: движение тела, движение рук. движение мысли… Максимально обрезаны

возможности сохранить физическое и душевное здоровье. Практически заблокирована возможность защищаться.

Около 100 000 человек в стране ежедневно вычеркиваются из жизни, подвергаются физическим и нравственным унижениям, теряют здоровье и будущее.

Прочитайте ещё раз Аксиому (см. пост от 23.06.2019).

Невиновные люди попали в систему, которую определяют сложившиеся стереотипы и традиции. Формирование пополнения криминального мира начинается в СИЗО. Необходимо менять ситуацию. Уже сейчас. А чего ждать? Такие мины, заложенные в обществе, как ядерные снаряды в проржавевшем корпусе — начинают отравлять все вокруг.

Пора действовать. Это наша страна.

Не всегда нужно беречь себя.

*#Оттуда, ПВР, ФСИН*

## Почта России — удивительная организация… 29.08.2019

Почта России — всё-таки удивительная организация. Подписаться на газеты со следующего месяца — проблема, их больше устраивает следующее полугодие. Переадресовать подписку из Москвы в Питер — нельзя. :) Как будто разные гильдии ямщиков обслуживают. Удивительная организация — Почта России.

*#Оттуда, Тюремные хроники*